२७०
२१८
25/1/84

मिंथिला-भाषा
॥ रामायण ॥

(कवीश्वर चन्दाझा विरचित)

मैथिली अकादमी, पटना

मिथिलाभाषा रामायण

कवीश्वर चन्दा झा

मैथिली अकादमी
पटना

मैथिली अकादमी प्रकाशन—१५

प्रकाशक

मैथिली अकादमी,

श्रीकृष्णपुरी, पटना—८००००१

© मैथिली अकादमी, पटना

अकादमी संस्करण : अक्तूबर, १९७७

प्रति—२२००

मूल्य—

१४ रुपैया (साधारण)
१७ रुपैया (सजिल्द)

मुद्रक

मुरलीधर प्रेस

पटना—८००००६

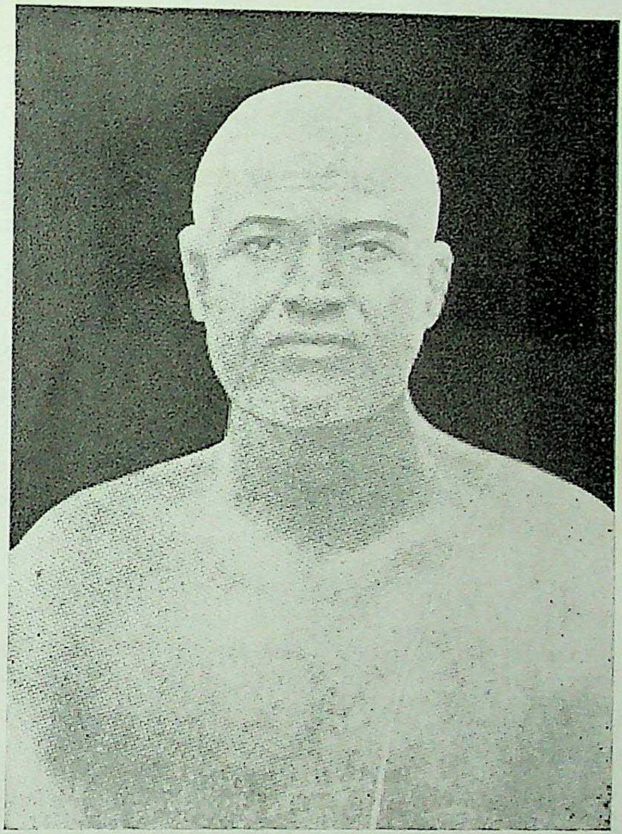

कवीश्वर चन्दा (चन्द्र) झा

प्रकाशकीय वक्तव्य

मैथिली साहित्यक प्राचीन अनुपलब्ध गौरवशाली ग्रन्थक पुनर्मुद्रण करायब सेहो मैथिली अकादमीक एक मुख्य कार्य अछि। प्रस्तुत ग्रन्थक प्रकाशन एहि क्रमक दोसर कड़ी थिक।

कवीश्वर चन्दा झा आधुनिक मैथिली साहित्यक युगप्रवर्तक मानल गेलाह अछि तथा हिनक रामायण मैथिलीक अमूल्य निधि सिद्ध भेल अछि। एकर लोकप्रियताक प्रमाण इयैह थिक जे पाँचसँ बेसी संस्करण भेलाक बादो एम्हर ई अनेक वर्षसँ अनुपलब्ध अछि। मैथिली साहित्यक अध्येता-लोकनिक कठिनताक अनुभव कऽ अकादमी एकर पुनर्मुद्रणक निर्णय लेलक।

पूर्वक संस्करणसभमे अनेक स्थलपर पाठ-भेद पाओल जाइछ। एखन धरिक संस्करणसभमे पण्डित बलदेव मिश्र ओ पण्डित रमानाथ झाक संयुक्त संपादनमे प्रकाशित चारिम संस्करणकेँ सभसँ प्रमाणिक मानल गेल अछि। विद्वान् सम्पादक-द्वय पूर्ण अनुसन्धानपूर्वक पहिलुक संस्करणक पाठ-भेदक निराकरण कऽ शुद्ध पाठ देबाक प्रयास कयलनि, संगहि पाद-टिप्पणीमे पूर्वसंस्करणक पाठकेँ, गवेषकलोकनिक लेल, सेहो अंकित कऽ देलनि। हिनकेलोकनिक द्वारा सम्पादित संस्करणकेँ आधार मानि अकादमी एकर पुनर्मुद्रण करओलक अछि। अतः एहि दुनू महानुभावक स्मृतिमे अकादमी अपन श्रद्धा निवेदित करैत अछि।

विद्वद्वर्गक अतिरिक्त अल्पशिक्षितोलोकनि रामायणक पाठक होइत छथि। हुनकालोकनिक सुविधाकेँ दृष्टिमे राखिकऽ पैघ टाइपमे एकरा छापल गेल अछि। पूर्ण सचेष्ट रहलो उत्तर मुद्रण-जन्य किछु त्रुटिकेँ अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ। विद्वान् पाठकवर्ग लग तदर्थ क्षमा-प्रार्थना अछि।

आशा अछि, मैथिली अकादमीक एहि प्रकाशनकेँ पाठकलोकनिक व्यापक समर्थन प्राप्त हो यतैक।

श्रीकान्त ठाकुर

अध्यक्ष
मैथिली अकादमी

पटना,
२६ **अक्तूबर १९७७**

भूमिका

जीवन :— विद्यापतिक पश्चात मैथिली साहित्याकाशक सर्वाधिक जाज्वल्यमान नक्षत्र भेलाह कवीश्वर चन्दा झा । हिनक आविर्भाव खृष्टाब्द १८३१ मे दरभंगा जिलान्तर्गत पिण्डारुछ ग्राम मध्य मड़रय रजौरा मूलक मॉडर वंशीय नैष्टिक ब्राह्मण-परिवारमे भेल । ई ग्राम दरभंगा रेल जंकशन सँ ११-१२ किलोमीटर उत्तर-पूर्व दिस मुहम्मदपुर स्टेशनक निकट अवस्थित अछि । कवीश्वरक पिता म० म० भोला झा आदर्श विद्वान ओ मान्य तपस्वी छलाह । साधुत्व एवं वैदुष्य उपलब्ध भेल हिनका पैतृक संपत्ति-स्वरूप ।

कवीश्वरक प्रारम्भिक शिक्षा मातृ-ग्राम बड़गाँव (सहर्षा जिला)मे भेल। अल्पकालहिमे ई व्याकरण, साहित्य, दर्शन, योगादिक अध्ययन पूर्ण कयल । किछु काल लेल हिनक अध्ययन-पीठ वाराणसीअहुँ छल । पछाति ई अपनहि जन्मग्राममे वास कऽ अध्ययन-अध्यापनमे निरत रहलाह । हिनक प्रतिभा-ज्योति दिस नरहन राज्यक विश्वेश्वर सिंहक ध्यानाकृष्ट भेल ओ हुनक आमंत्रणपर ई दस-पन्द्रह वर्ष धरि हुनक दरबारक शोभा-वृद्धि कयलनि ।

१८८० (खृष्टाब्द)मे (दरभंगा राज्यक प्रतिपालक अधिकारसँ मुक्त भेला उत्तर) चन्दा झा लक्ष्मीश्वर सिंहक दरबारमे पधारि साहित्य-विभागक अध्यक्ष बनलाह । जीबन-पर्यन्त एहि राज्यसँ हिनक घनिष्ठ सम्बन्ध बनल रहल । एही ठाम हिनक काव्य-प्रतिभाक पूर्ण विकास ओ समादर भेल ।

पारिवारिक जीवन :—कवीश्वरक विवाह ठाढ़ी ग्राम-निवासी वीर मिश्रक पुत्री कुनकुन दाइमे भेल, जाहिसँ हिनका पाँच सन्तान प्राप्त भेल; चारि पुत्र ओ एक कन्या । प्रसिद्ध अछि जे कविक वंश नहि चलैछ । तीन बालकक मृत्युक उपरान्त बचि गेलथिन चारिम पुत्र—विश्वनाथ, जे बड़ प्रतिभाशाली छलाह । पिताक संग राजदरबारहुँ जाथि । मुदा दैव-दुर्विपाकसँ ईहो कवीश्वरक लेल पुत्र-शोकक भागी बनलाह । विश्वनाथक मृत्यु-प्रसंग बड़ मार्मिक छनि । श्रुति अछि जे अस्वस्थ होइतहि कवीश्वरकेँ हिनक मृत्युक पूर्वाभास भऽ गेलनि । रुग्नावस्थहिमे हिनका बेलक गाछतर पाड़ि ई स्वकृत महेशवाणीक पाठ प्रारंभ कऽ देल । किछु काल पश्चात पिता द्वारा मुँहमे गंगा-जल पड़ितहि विश्वनाथ प्राण त्यागि देलनि । महेशवाणीक पाठमे लीन पिता दाहक्रियामे नहि गेलाह । किछु दिनक पश्चात मुसहरनी (पुत्रीक दुलारक नाम)क मृत्यु सेहो भऽ गेल । विद्याव्यवसाय ओ साहित्य साधनामे लीन कवीश्वर त एहि व्रजाघात सभकेँ दृढ़तापूर्वक सहन कऽ लेलनि, किन्तु हिनक धर्मपत्नी संतति-शोकसँ विक्षिप्त भऽ गेलीह । कवीश्वरक पारिवारिक जीवनक ई लघुकथा हिनक धैर्य, दृढ़ता ओ भक्तिक सूचक अछि ।

व्यक्तित्व :—"खूब नाम—गौरवर्ण, माथपर पाग अंगा-दोपटा । बड़ भव्य ओ प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व । इऐह दर्शन प्रथम ओ अंतिम" ई शब्द थिकनि ज्योतिषाचार्य पण्डित श्री बलदेव मिश्रक, जे कवीश्वरकेँ रमेश्वरलता विद्यालयमे देखने छलथिन । हिनक सहचर राजपण्डित बलदेव मिश्रहुँक स्वरूपांकन, प्रायः एतादृश अछि—

"हुनक भव्य आकृति, प्रसन्न मुखमण्डल, प्रतिभोदीप्त नेत्र एवं विनोदशील स्वभाव एहू क्षण स्मृतिपटपर सजीव अछि।" —(चन्द्रपद्यावलीक प्राक्कथन)।

कवीश्वरक वाह्य रूप जतबा आकर्षक छल ओहुसँ बेशी प्रभावपूर्ण ओ महनीय छल हिनक आभ्यन्तर व्यक्तित्व। हिनक व्यक्तित्वमे मिथिलाक विद्वत्ता, चारित्रिक पवित्रता, सदाशयता ओ धर्मप्राणताक समन्वय भेटैछ। निर्धनता एवं दैवी प्रकोपहुँक बीच ई कथमपि किंचित दीनता व्यक्त नहि कयलनि। कवीश्वरक व्यक्तित्वक विभिन्न पक्षक प्रकाशक किछु प्रसंगक उल्लेख अनपेक्षित नहि होयत।

कवीश्वरक वासस्थानक निकट रमेश्वरलता विद्यालयक छात्रावास छल। किछु छात्र हिनक बाड़ीसँ केराक पात काटि लैत छल। कवि एहि उत्पातक साहित्यिक समाधान कयलनि कदली-वृक्षमे अधोलिखित पद टाँगि —

"आब जे सज्जन कटताह पात।
तनिका घरमे हैत उत्पात॥"

'उत्पात'क भयसँ छात्रलोकनिक उत्पात वन्द भऽ गेल।

एक बेर बरगोरियाक बाबू साहेब नह कटा रहल छलाह। ओहि काल कवीश्वरक आगमन भेल। तत्काल किछु सुनयबाक आग्रहपर प्रत्युत्पन्नमति कवीश्वर नहरनीपर एक श्लोक सुना देलनि —

"अनन्त चरणोपांगी तारिणी मलहारिणी।
पुनर्भवच्छेदकारी गंगेव नखरंजनी।"

महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहकें जे (चन्द्रपद्यावलीक प्राक्कथन) कवीश्वर निवेदन-पत्र पठौने छलथिन, ओहिसँ हिनक विद्याभिमान विज्ञापित होइछ—

"क्षुधा ओ तिखा जन्य बाधा करै अछि।
नृप-द्वार तें आबि वृत्ते चहैं छी।
वेदान्त-सिद्धान्त शास्त्रे बजै छी।
कहू की अहाँकें अहाँ सन अहीं छी।'

(अनुसंधानक क्रममे ई वार्ता हमरा कवीश्वरक ग्रामवासी श्री महाप्रसाद चौधरीसँ १९६८ मे ज्ञात भेल) कवीश्वरक स्वाभिमान एवं आत्मविश्वासक परिचय हिनक जन्मग्राम-त्याग-प्रसंगसँ भेटैछ। गामक किछु धनिकलोकनिक उपद्रवें जखन ई श्वशुर-ग्रामवास करऽ बिदा भेलाह, तखन जन्मग्राम-त्यागक सजह खेदक संग एतबाक आत्मविश्वास अवश्य छलनि जे कतहु रहब, यश धरि अक्षुण्ण रहत—

कतहु रहब हम आनन्द नहि कम सुयश छपत की नाम
'चन्द' सुकवि भन निश्चय धरु मन सुख-दुख हो सब ठाम॥

साहित्य-सेवी तँ ई रहबे करथि, समाज-सेवा ओ सार्वजनिक कार्यहुमे ई कम रुचि नहि लैत छलाह। स्वयं अपना हाथसँ माँटि काटि कऽ कवीश्वर एक बान्ह बनौने छलाह (हम स्वयं १९६८ मे देखने छी)। सत्य ओ सत्यपरायणताक त अवतारे छलाह—

अनृत वचन नहि भाषथि चन्द्र।
सत्य वचन भन द्विज कवि चन्द ॥"

अन्त :—कवीश्वरक यश:शरीर त' आचन्द्र-दिवाकर अमर रहत, मुदा हिनक भौतिक जीवनक अन्त तीर्थोत्तम काशीमे भेल। महेशवाणीक गायकलेल एहिसँ बेशी उपयुक्त स्थल आओर की भऽ सकैत छल? रमेश्वरलता विद्यालयमे वार्षिकोत्सवक अवसरपर राजपरिवार ओ विद्वत्‌मंडली मध्य हिनक काव्यपाठ समाप्त भेलहि छल कि (राजपण्डित बलदेव मिश्रक साक्ष्यपर) अचानक कवीश्वर मूर्च्छित भऽ गेलाह। पक्षाघातक वार्ता महाराज रमेश्वर सिंहकेँ सूचित भेलनि। तुरत हिनका काशी लऽ जयबाक व्यवस्था भेल। स्वयं महाराजा विदा करऽ स्टेशन धरि आयल छलाह। किछु दिन काशीवासक पश्चात कवीश्रक स्वर्गारोहण भेल।

साहित्य-साधना :—कवीश्वरक प्रतिभा बहुमुखी छल। महाकाव्य, नाटक, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, अलंकार एवं छंद-ग्रन्थ, महेशवाणी, आदि कोटिक रचना द्वारा ई मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि कयलनि। इतिहास, इतिवृत्ति, तत्वविमर्श, अनुवाद, संकलन ओ सम्पादनहुँक क्षेत्रमे हिनक योगदान ककहुसँ कम नहि। सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक दुहू कोटिक प्रतिभाक एतादृश मणिकांचन संयोग विरल होइछ। अवकाशाभावेँ सम्प्रति कवीश्वरक प्रकाशित-अप्रकाशित किछु रचनाक मात्र उल्लेख संभव अछि।

(१) पुरुष-परीक्षाक अनुवाद, (२) अहल्या-चरित्र नाटक, (३) महेशवाणी, (४) गीतसुधा, (५) गीत सप्तशती, (६) लक्ष्मीश्वर विलास, (७) वाताह्वान, (८) चन्द्रपदावली, (९) मूलग्राम विचार, (१०) रस कौमुदी, (११) राजावली, (१२) छन्दो ग्रंथ, (१३) शाम्ब पुराण, (१४) जानकी-परिचय, (१५) मिथिलाभाषा रामायण।

मौलिक रचना आओर अनुसंधानक अतिरिक्त अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन कविगणक कृतिक संकलन ओ सम्पादन करबाक श्रेय कवीश्वरकेँ छनि। गोविन्ददासक भजनक संकलन हिनका द्वारा भऽ पछाति डॉ० अमरनाथ झाक सम्पादनमे प्रकाशित भेल। भक्तकवि साहेब रामदासक भजनक सर्वप्रथम संग्रह एवं सम्पादन, हर्षनाथ-रचित 'उषाहरण नाटक' तथा तेजनाथकृत 'भक्ति प्रकाश'क सम्पादन इएह कयलनि। एकरा अतिरिक्त मिथिलाक इतिहास, संस्कृत ओ साहित्यसँ सम्बद्ध पुष्कल सामग्री हिनका द्वारा एकत्रित भेल।

किन्तु कवीश्वर चन्दाझाक यश: पताकाक स्तम्भ थिक हिनक मिथिलाभाषा रामायण। हिन्दी क्षेत्रमे जाहि रूपेँ तुलसीक रामचरितमानस, बंगालमे कृत्तिवासी रामायण एवं ओड़िया क्षेत्रमे बलराम दासकृत दाण्डि रामायणक महत्त्व ओ प्रचार छैक, ओहि भाँति मिथिलांचल मे मिथिला भाषा रामायणक।

मिथिलाभाषा रामायणक महत्त्व :—एहि ग्रन्थक प्रथम एवं द्वितीय संस्करण म० म० मीमांसक चित्रधर मिश्रक निरीक्षणमे भेल छल। तृतीय ओ चतुर्थ संस्करणक सम्पादन राजपण्डित श्री बलदेव मिश्र कयलनि। चतुर्थमे स्व० रमानाथहु झाक सहयोग भेटलनि। एक गुटका संस्करण सेहो प्रकाशित भेल। ई षष्ठम संस्करण मैथिली अकादमीक श्रेय-सौभाग्यक सूचक थिक।

विकासशील महाकाव्यक प्रणेता अपन साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपराक ऋणी होइछ। तेँ मि० भा० रा० क रचनाक्रममे चन्दाझा परवर्ती काव्य सभक मनन-मंथन कयलनि। बहुतरास

ग्रहण कयलनि । तथापि एहि ग्रंथरत्नकेँ कोनो अन्य ग्रन्थक अनुवाद वा अनुकरण कहब कवीश्वरक प्रति अन्याय होयत । आधिकारिक कथा-वस्तुक प्रस्तुतीकरण, प्रासंगिक कथा-चयन-संशोधन, नव प्रसंगक उद्भावना ओ प्रसंगवार्ताक संदर्भ-नियोजन द्वारा मि० भा० रा० क रामकथा केँ मौलिकता प्रदान कयल गेल छैक । प्रबंधकारक मौलिकताक अर्थहि थिक कोनहु प्रख्यात कथावस्तुकेँ साजि-सँवारि ओ सुष्टपुष्ट बना ओकरा अभिनव रूप प्रदान करब । मिथिलाभाषा रामायणक वैशिष्ठ्य चरित्र-चित्रण एवं चिरपरिचित पात्रक व्यक्तित्वमे नव आयामक संयोजनहुमे द्रष्टव्य अछि ।

कथा-चयन एवं संशोधनक उदाहरण स्वरूप अहल्या तथा सुलोचना-प्रसंगपर ध्यान देल जाय । अहल्या-प्रसंग रामकथाक बड़ तन्नुक, बड़ मार्मिक प्रसंग छैक । एहिसँ संबद्ध छैक गंभीर नैतिक-सामाजिक प्रश्न । वाल्मीकिक अहल्या छद्मवेशधारी इन्द्रकेँ त्रिन्हलो उत्तर सहवास-प्रस्तावकेँ कुतूहलात ओ सुखभोगक लोभेँ स्वीकार कऽ लैछ—

मुनिवेष सहस्राक्ष विज्ञाय रघुनन्दन ।
मतिं चकार दुर्मेधा देवराज कुतूहलात ॥१.४८.१८

मुदा कवीश्वरक अवला, अज्ञान अहल्याकेँ सुरपतिक कुमतिक बोध नहि भऽ पबैछ—ओ गौतम वेशधारी इन्द्रकेँ अपन पति बूझैछ—

"सुरपति कुमति विदित भेल कतए न हम अवला की ज्ञान । ।॥

ई एकपद अहल्याक समस्त पाप ओ कलंकक प्रक्षालन कऽ ओकरा निर्दोष सिद्ध कऽ दैछ । प्रस्तुत प्रसंग कविक, सहृदयता-उदारताक परिचायक अछि । अन्य कोनहुँ रामायणमे अहल्या-चरित्रक निष्पापत्व ओ धवलताक, निष्पादन एहि रूपेँ नहि भेल अछि ।

एही भाँति लंकाकाण्डक सुलोचना-प्रसंग अछि । वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण एवं रामचरितमानसमे एहि प्रसंगक अभाव छैक । एकरा माध्यमसँ वैधव्य दुखसँ अनुतापित नारी हृदयक व्यथाक चित्रण मि० भा० रा० क खास विशेषता थिक ।

लक्ष्मण-शर-प्रेरित पति-भुजाक आँगनमे निपात होइतहिँ सुलोचनाकेँ वस्तु-स्थितिक ज्ञान भऽ जाइछ । ओ करुण विलाप करैत रावणक निकट जाइछ । रावण ओकरा पतिशिरक संग शत्रुशिर आनि देबाक आश्वासन दैछ । एहिपर सुलोचनाक उत्तर होइछ—एहिसँ अहाँकेँ तऽ रण-विजय-जन्य यश-लाभ होयत मुदा हमरा लेल पतिहीन जीवनसँ तऽ " बरु, भल रौरव नरक समाज" ओकर एक मात्रआकांक्षा छैक पतिक मुण्डक संग सतीत्व-लाभ ।

आनन्द रामायणसँ उद्धृत एहि संक्षिप्त प्रसंगकेँ चन्दाझा अपन प्रतिभाक योगदानसँ बड़ चमत्कारपूर्ण वना देलनि अछि । प्रासंगिक कथाक संशोधन-परिवर्द्धनक ई उत्कृष्ट उदाहरण थिक ।

आनन्द-उल्लास, रोष-क्षोभ, शोक-संताप आदिक प्रकाशनक दृष्टिएँ मि० भा० रा०क पात्र अधिक मानवीय, अधिक संवेद्य छथि । मात्र एक उदाहरण—सीता-परित्याग प्रसंगमे लक्ष्मणक मनःस्थितिपर विचार कयल जाय ।

रघुनाथादेशसँ लक्ष्मण सीताकेँ छलपूर्वक मुनिवन लऽ जाइत छथि । आसन्नप्रसवा भाउजक भावी कष्टक कल्पनासँ हुनक नेत्र नोरपूर्ण भऽ जाइछ । सीता द्वारा "नयन जल धार"क कारण पुछितहिं ओ कातर वाणीमे कहैत छथि—"हा, न हमर किछु दोष" । सीताकेँ असंग एवं असहाय छोड़ि बिदा भेल लक्ष्मणक विह्वलताक शब्दांकन देखल जाय—

लक्ष्मण कहि धर चलला धुरि नहि ताक।
पहुँचलाह रघुवर-तट, नहि मुख बाक ॥ पृ०३९६

कर्त्तव्य हेतु वज्रादपि कठोर लक्ष्मण व्यक्तित्वमे नवनीततम कोमल पक्षक संयोजन चन्दा झाक विशेषता थिक।

मि० भा० रा०क अनेक विशिष्टतामे एक मुख्य विशिष्टता थिकैक घटना एवं परिस्थितिकें मिथिलाक संस्कृति, संस्कार, आचार-विचार, रीति-नीतिक परिवेश देब। रामराज्याभिषेकक हेतु वशिष्ठ द्वारा निर्दिष्ट वस्तु-विधानमे कुमारि पूजाक प्रधानता (प्रातःकाल सकल भूषणयुत सत्कुल बहुत कुमारी-पृ०५९) लंका-विजयोपरान्त अयोध्यागमनपर रामक चुमाओन (प्रभु चुमाओन विविध उत्सव, भेल विधि तेहि ठाम-पृ० ३२८). सीता-राम-विवाह-प्रसंगमे जनकपुरोहित शतानन्दक घटकैती करब (घटना शतानन्द लयलाह-पृ० ४५), दशरथक स्वीकृतिपर 'सिद्धान्त' लिखायब, मिथिला पहुँचलापर रामक 'परिछन' (जनिकर परिछनि गबइत गीत-पृ० ४५), सीताक पितृगृह त्यागक समय करुणाविह्वल कंठसँ स्त्रीगणक 'समदाउनि' गायब आदि मि० भा० रा०क राम-कथापर मैथिल संस्कृति प्रभाव निर्दिष्ट करैछ।

भाषा ओ शैलीक दृष्टिसँ तँ मिथिलाभाषा रामायणक महिमा अपरिमेय अछि। वर्णविषय जाहि भाँति महान् रघुकुल ओ रामक उदात्त चरित्रसँ संबंधित छैक, ताहि भाँति छैक मि० भा० रा०क शैलीक गांभीर्य ओ वैविध्य, प्रसंगानुकूल माधुर्य ओज आओर प्रसाद गुणसँ युक्त भाषा-शैलीक प्रयोग करबामे कवीश्वर परम पटु छलाह। रामक रूप-सौन्दर्य-वर्णनक्रममे कोमल-मधुर शब्दावलीक विन्यास अवलोकित हो—

"पुरवासी जन सकल निहार। दुर्वादल-श्यामल सुकुमार।
रत्नकोरीटालंकृत अंग। शोणकमलदल लोचन रंग ॥
पीताम्बर वरमुक्ता-हार....। भाग्य मपन मन प्राण विचार ॥

ओजपूर्ण भाषा-शैलीक सफल प्रयोग युद्धवर्णनमे भेलैक अछि—

भालु ओ प्रचण्ड कीश जाय जाय झट्ट झट्ट।
राक्षसेन्द्र वीर काँ पछाड़ि मार पट्ट पट्ट ॥
शैलखण्ड वृक्ष हाथ सौं उखाड़ चट्ट चट्ट।
राक्षसेन्द्र-सैन्य-झुण्ड-मुण्ड फोड़ फट्ट फट्ट ॥

ठेठ शब्द यथा—'लाथ', कछमछ', 'घाड़', 'बूच', 'बताह', 'अजगूत', 'छपकल', 'कन्नारोहट' आदि एवं परघर नाथि मूसरचन्द" (पृ०५८) और "टेंगरा पोठी चाल दै, रोहुक शीर बिसाय" (पृ०५७) सदृश लोकोक्तिक प्रयोगसँ मैथिली भाषा कें नव अर्थवत्ता, नव प्राणशक्ति भेटलैक अछि। भाषा शैलीक संस्कार-परिष्कारक संग मि० भा० रा०मे शास्त्रीय एवं देशी दुरूह कोटिक शताधिक छंद तथा अलंकारक प्रयोग कऽ कवीश्वर अलंकार-योजना आओर छंद-विधानक कलाक परिचय देलनि अछि।

सर्वतोभावेन विचार कयलाक उपरान्त मि० भा० रा० भक्ति, काव्य ओ मिथिलाक जातीय गरिमाक समवेत रूपेण प्रतिनिधि ग्रन्थ थिक। एहि कोटिक रचना कोनहु भाषालेल गौरवक विषय, गौरव-चिह्न भऽ सकैछ।

अन्तमे कवीश्वरक विषय भिन्न भाषा ओ संस्कृतिक तीन पण्डितक मूल्यांकन प्रस्तुत अछि।

डा० जार्ज एब्राहम ग्रियर्सनक कवीश्वरक प्रति उक्ति छनि........

"....Pandit Chandra (or Chanda) Jha, Whom I know to be one of the most learned men in that part of India."

—वैदेही (चन्दाझा-स्मृति-अक, पृ० १२८)

नगेन्द्रनाथ गुप्त हिनका अपन गुरु मानैत 'विद्यापति पदावली'क भूमिकामे लिखैत छथि—

"कवीश्वर चन्दाझा (चन्द्रकवि) विद्यापतिर पदावली संबंधे अद्वितीय तत्वविद् एवं अर्थ पारदर्शी ओ मिथिला-भाषाय स्वयं सुकवि छिलेन।......विद्यापति भाषाय तिनि आमार शिक्षा गुरु........"।

—मि० भा० रा० (चतुर्थ संस्करण) दुइ शब्द।

डा० अमरनाथझा महेशवाणीक भूमिकामे कवीश्वरक मूल्यांकन अधोलिखित शब्दमे कयलनि अछि—

"कविक वंशक वृद्धि नहि होइ छैक से परम्परासँ सुनल अछि, किन्तु विशिष्ट कविक मृत्यु भाषाक मृत्युक संग होइछ। यावत् धरि मैथिली भाषाक अस्तित्व अछि तावत धरि कवीश्वर चन्दा झाक नाम आदरणीय रहत।"

—वैदेही (चन्दाझा-स्मृति-अंक) पृ० १२८

पटना,
२१ अक्तूबर, १९

डा० रमाकान्त झा, एम० ए० (द्वय)
निदेशक
मैथिली अकादमी, पटना-१

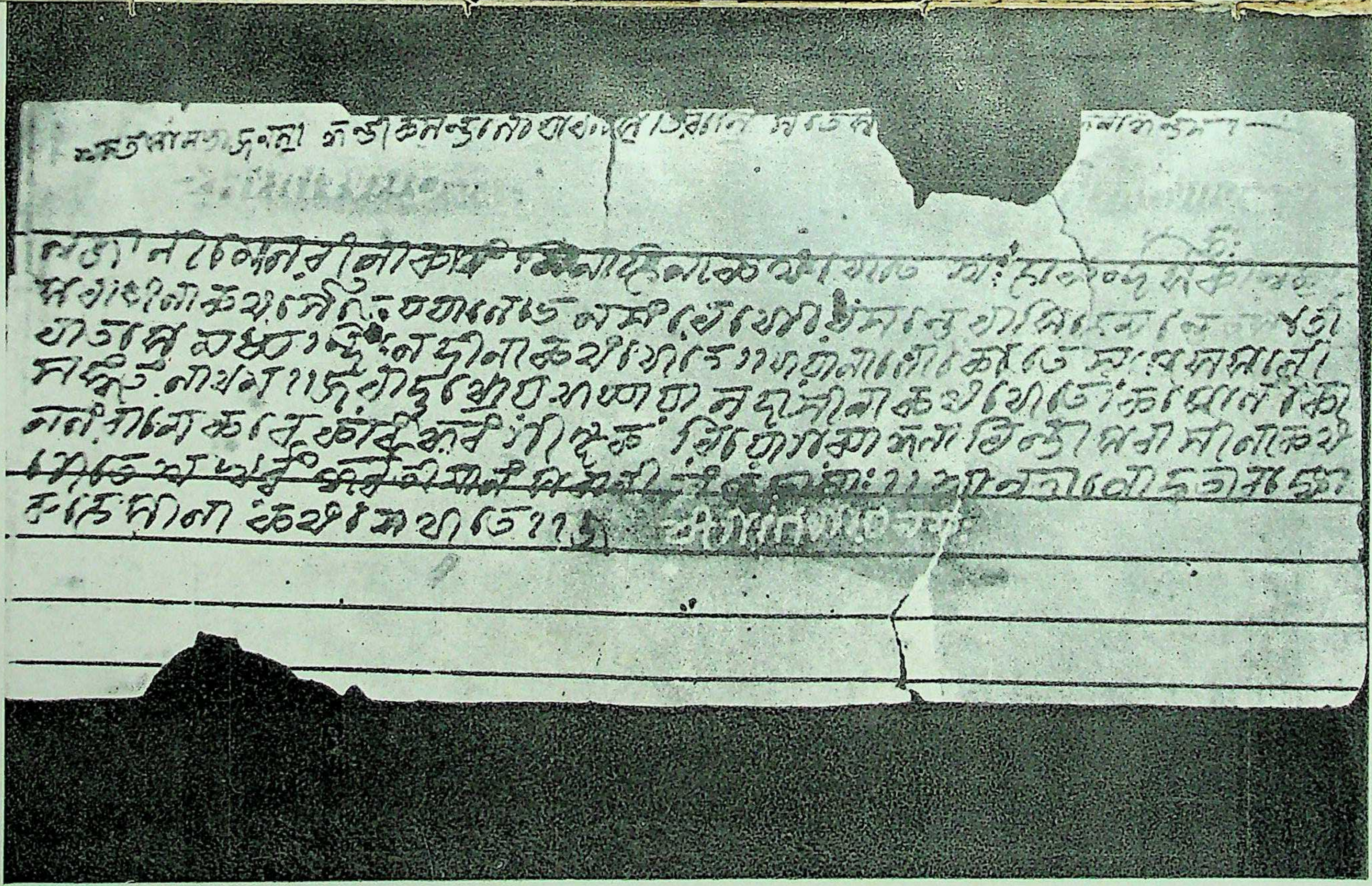

कवीश्वरक हस्तलिपि (मिथिलाक्षर)

डॉ० रमाकान्त झाक शोध-प्रबंध (चन्दाझाकृत मिथिलाभाषा रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन)क सौजन्यसँ । कापीराइट सुरक्षित ।

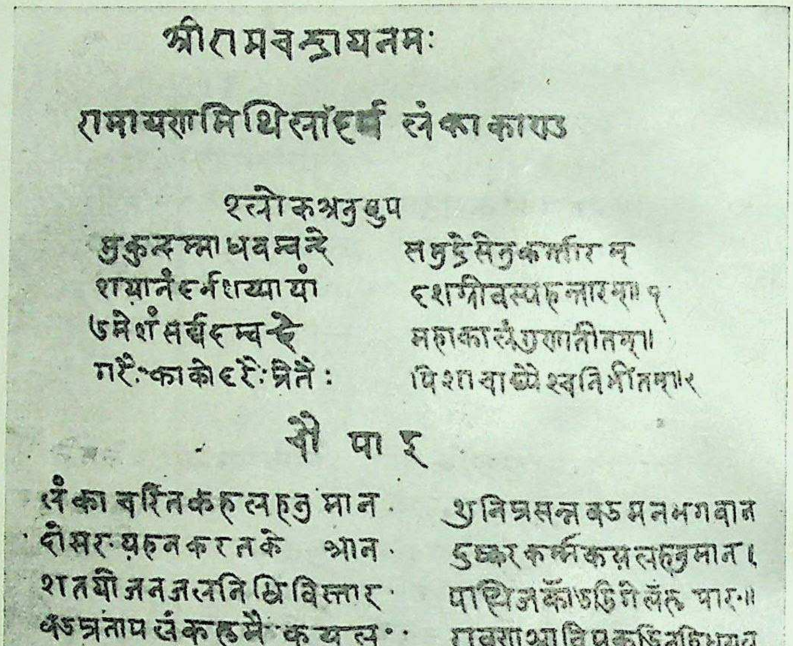

श्रीरामचन्द्रायनमः

रामायणमिथिला[illegible] लंकाकाण्ड

श्लोक अनुष्टुप

मुकुन्दं माधवं वन्दे । समुद्रे सेतुकारिणम्
शयानं दर्भशय्यायां । दशग्रीवस्य हन्तारम् ॥१
उमेशं सर्वदं वन्दे । महाकालं गुणातीतम् ॥
गरैः काकोदरैः प्रीतैः । पिशाचाद्यैः [illegible] ॥२

चौपाइ

लंका वरनि कहल हनुमान । सुनि प्रसन्न भउ मन भगवान
दोसर यहन करतके आन । दुष्कर कर्म्म कयल हनुमान ।
शतयोजन जलनिधि विस्तार । [illegible] गेल लंघि पार ॥
कउ प्रताप लंकहुमे कयल । रावण आदि पकडि नहि धयल
सभहिक रक्षक मारुत पूत । दोसर यहन हयत के दूत ॥
मनमे हो रघु समुद्रक ध्यान । उतरब कुन गन [illegible] नहि ज्ञान ॥
कौनपरि देखब जानकि जाय । रिपुकाँ मारब समर बढ़ाय ॥
सुनि सुग्रीव प्रभुक ई उक्ति । कहल सुनिअ हमर अछि युक्ति
[illegible] मकराकुल तरब । लंका गर्व सर्व हम हरब ॥
जिवइतकी छाडब दशभाल । हे रघुपति हम तनिकर काल ॥
चिन्ता भजउ कउ श्री रघुनाथ । विजय माल लिखल अपन हाथ
वानर भालु बहुत रण शूर । तनिकाँ लंका अछि की दूर ॥
नरब समुद्र न करम निकरिय । रावण [illegible] यहन अति वरिय ॥
धरब धनुष सभ सुरके हयत । [illegible] यमघर जयत
अपनेक बड़ हमरा विश्वास । श्री रघुनन्दन विश्व निवास
वानर रहत [illegible] प्रभु आस । आगि पानिमे [illegible] ॥

कवीश्वरक हस्तलिपि (लंकाकाण्डक प्रथम पृष्ठ)

डॉ० रमाकान्त झाक शोध-प्रबंध (चन्दाझाकृत मिथिलाभाषा रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन)क सौजन्यसँ । कापीराइट सुरक्षित ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मिथिला-भाषा रामायण

॥ बालकाण्ड ॥

सरसमधुसुधातो गद्यपद्यन्नवीनं
वचनजनिधरायाश्शारदाया अधीनम् ।
सकलजननमस्यास्सन्नमस्यन्ति यस्याः
पदयुगलमतोऽस्या नौमि नित्यं सुभक्त्या ॥१॥
वन्दे वारणवदनं विघ्नध्वान्तप्रणाशने सूरम् ।
शाङ्करिमतुलोदारं विधिगणशरणं गुणातीतम् ॥२॥

॥ चौपाइ ॥

वन्दे गिरिपति-कन्याकान्तं । अप्रमेयमगणितगुणशान्तं ॥
राजत[1]-भूधर-द्युति-हर-भासं । श्रितकैलासं जगन्निवासं ॥
भुक्तिमुक्तिदं गणपति-तातं । परमोदारतया विख्यातं ॥
श्रीपतिरवनिभारसंहर्त्ता । सेव्यो विभुः स्वतन्त्रः कर्त्ता ॥
कर्त्तुरीप्सितं कर्म्म च येन । मखमवता प्रभुतातस्तेन ॥
तस्मै नमो यतो निर्भीताः । मुनयो भुवन-शान्तये प्रीताः ॥
भक्त्या तस्य च नामस्मरणे । मरणे भयमपि नान्तःकरणे ॥
हे रघुनन्दन दुर्गति-खण्डन । पालय मां दिनकर-कुलमण्डन॥

श्रीमन्महीजनिमही-जनि-जानिगीर्ति
वैदेह-देश-वचसा रुचिरां सुरीतिम् ।
रामायणीय-चरितस्य सदर्थधारां
चन्द्रः प्रगृह्य वतनोति शुभैकसाराम् ॥३॥
जनुरिह मम जातं जानकी-जन्मभूमौ
बुधसदसि निवासात्प्राप्तविद्यस्य सौख्यं ।

१ र (२, ३)

अनुभवत उदार-श्रीललक्ष्मीश्वरैश्शं
श्रृणुत श्रृणुत धीराः श्रीलचन्द्रस्य वाचम् ।।४।।
इह जगति यदस्ति स्थावरं जंगमं य-
त्तदतिशयनमस्यं ब्रह्मतो नापि भिन्नम् ।
भवति भवतु लोके सत्कथायाः प्रचारो
जनकनृपति-पुत्री-मातृभाषाञ्चितायाः ।।५।।

।। चौपाइ ।।

शौनक पुछल कहल भल सूत । अति आनन्द मगन मन पूत ।।
नारद जोगी पर उपकार । करक हेतु सञ्चर संसार ।।
सत्य लोक मुनि पहुचल जखन । देखल विरञ्चिक वैभव तखन ।।
जनिकर सिरिजल सब संसार । तनिक विभव के वरनय पार ।।
बाल दिवाकर सन छवि भास । मार्कण्डेय प्रभृति तट वास ।।
स्तुति करइत छलछथि छल हीन । ककरहु ततय देखल नहि दीन ।।
ब्रह्मा संग शारदा दार । सकल अर्थ जानल व्यवहार ।।
देव चतुर्मुख विश्वक नाथ । तनिका नारद जोड़ल हाथ ।।
भक्ति दण्डवत चरण प्रणाम । कयलनि स्तुति वचनैं अभिराम ।।
तुष्ट कहल तनिका खग-केतु । कहु नारद अयलहुँ की हेतु ।।
कहलनि नारद देव समाज । अयलहुँ प्रभु अछि बड़ गोट काज।।
सकल शुभाशुभ जे किछु रहल । हमरा अपनैं[1] पूर्वहि कहल ।।

।। दोहा ।।

कहू कृपा कय भय-हरण, सम्प्रति अछि श्रोतव्य ।
कमलासन मङ्गल-करण, दुष्ट समय भवितव्य ।।

।। चौपाइ ।।

होयत कलियुग जखना घोर । सभ जन लम्पट सभ जन चोर ।।
सत्य कथा ककरहु नहि[2] नीक । दुराचार रत मन सबहीक ।।
पर अपवाद मध्य मन निरत । पर-धनमे अभिलाषी फिरत ।।
आनक वनितामे मन सटल । पर हिंसाक परायण पटल ।।

1 ने (३), २ हिँ (२, ३)

आत्मा भिन्न देह नहि जान । नास्तिक गति मति पशुक समान ॥
माय बापमे द्वेष अलेख । अपने[1] संसारी सुख देख ॥
वनिता बूझत देव समान । कामक किङ्कर कुत्सित ज्ञान ॥
ब्राह्मणकाँ[2] बाढ़त बड़ लोभ । वेदक विक्रय नहि मन क्षोभ ॥
धनक उपार्ज्जने[3] व्याकुल चित्त । विद्या पढ़ता मोह निमित्त ॥
सभ जन त्यागत निज निज जाति । वञ्चक व्यवहारी दिन राति ॥
क्षत्रिय वैश्य स्वधर्म्मक त्याग । करता कि कहब तनिक अभाग ॥
नीचक उन्नति हयत अपार । शूद्र-निरत ब्राह्मण आचार ॥
बहुतो होइति धृष्टा नारि । पतिकाँ[4] विपति देति कत गारि ॥
श्वशुरक मन्द-कारिणी हयति । स्वेच्छा[5] सुपथै कुपथमे जयति ॥
तनिकाँ[6] सबहिक की गति हयत । जखना[7] ई परलोक मे जयत ॥
कहल जाय की तकर उपाय । सभ ज्ञाता विधि नाम कहाय ॥
शुनि मुनि कथा विरंचि उदार । ई भल कथा कयल सञ्चार ॥
भल अहँ पुछल[8] कहै छी नीक । शुभ गति कारक जे सबहीक ॥
एक समय गिरिराज-कुमारि । राम-तत्त्व पूछल त्रिपुरारि ॥
भक्ति-वत्सला विनयक धाम । बूझल कथा चित्त विसराम ॥
विश्वजननि नित पूजन करथि । लोचन मन आनन्दित धरथि ॥
लोकक जखन होयत गय भाग । रामायणक बढ़त अनुराग ॥
पढ़इत नर सदगतिमे जयत । जिबइत पूर्ण मनोरथ हयत ॥
एकादशि तिथि कय उपवास । सभा रमायण करथि प्रकास ॥
वर्ण वर्ण गायत्री जेहन । पुरश्चरण फल पाबथि तेहन ॥
राम-नवमि दिन कर उपवास । रात्रि जागरा[9] मन उल्लास ॥
कुरुक्षेत्र तीर्थादि निवास । सूर्य्य-ग्रहणमे पाप विनाश[10] ॥
आत्मतुल्य धन द्विजकाँ देथि । व्यासक सम द्विज दान से लेथि ॥
तनिकाँ से फल लाभ अनन्त । सत्य कहल छल गिरिजा-कन्त ॥
प्रति दिन रामायण कर गान । सुरपति आज्ञा तनिकर मान ॥
रामायणक कथा बड़ गोटि । पढ़लय फल पाबी[11] गुण कोटि ॥

1, ने (३), 2 कां (२), 3 ते (३), 4 कां (३), 5 छा (१, २), 6 कां (२, ३), 7 न (३), 8 पु (३), 9 रना (३), 10 निवास (३), 11 बि (३)

हनुमानक प्रतिमाक समीप । राम हृदय शिव मानस दीप ॥
तीनि बेरि मौनी जे पढ़त । पूर्ण मनोरथ सुखचय बढ़त ॥

॥ सवैया ॥

करथि प्रदक्षिण पीपर तुलसिक, राम हृदय पढ़इत जे भक्त ।
ब्रह्मघात पातक सभ छूटय, भक्ति भावना मन अनुरक्त ॥

॥ चौपाइ ॥

कहल महात्म राम-गीताक । जानथि एक कान्त गिरिजाक ॥
तकर आध गिरिजा पुन जान । तकर आध हमरा अछि ज्ञान ॥
से हम किछु कहइत छी आज । सावधान सुनु सकल समाज ॥
जनितहिँ मन निर्म्मल भय जाय । श्रीपति गीता देल पढ़ाय ॥
उपनिषदुदधिक मन्थन कयल । गीता-सुधा राम से धयल ॥
से लक्ष्मणकाँ कहि देल कान । अमर भेला से शुनि से ज्ञान ॥

॥ रूपमाला ॥

धनुर्विद्या पढ़य कारण शैलजेश समीप ।
कार्त्तवीर्य्यक नाश-कारण पूर्व्व भृगुकुल-दीप ।
पार्व्वती ओ शम्भुकाँ से छल कथा संवाद ।
शुनल धारण कयल मनमे भेल अति आह्लाद ।
ब्रह्महत्या आदि पातक शीघ्र होय[1] विनास ।
राम-गीता पाठसौँ मन भक्तिसौँ एक मास ।
दुःप्रतिग्रह निन्द्य भोजन असद्भाषण पाप[2] ।
नाश हो एक मास पढ़लेँ[3] रामचरित[4] प्रताप ।

॥ नरेन्द्र दोबय हरिपद ॥

शालग्राम तुलसि यति सन्निधि गीता पाठ जे करथी ।
वचन अगोचर से फल पाबथि भव जलनिधि से तरथी ।
निराहार एकादशि[5] दिनमे द्वादशि संयम कारी ।
वृक्ष अगस्तिक निकट वासकर तनिकर फल बड़ भारी ।

1 थ (२), 2 त (२, ३), 3 लोँ (३), 4 त्र (३), 5 सि (१,२)

जानि लेब तनिकाँ रघुनन्दन सकल देव कर अर्च्चा।
जीवन्मुक्त भक्तिसौँ संयुत यम घर तनिक न चर्च्चा।
विना दान सौँ विना ध्यान सौँ विना तीर्थ मे गेले।
राम गीत[1] अध्ययन मात्रमे फल अनन्त अछि धैले।
शुनु मुनि नारद बहुत कहब की श्रुति स्मृति सकल पुराणे।
रामायणक कथा तुलना नहि ई गति अछि किछु आने।

॥ हरिपद ॥

कमलासन नारद सौँ कहलनि रामायण तहिठाम।
श्रद्धासौँ पढ़ि सुनि जन जायत सुर पूजित हरिधाम।

॥ चौपाइ ॥

पृथिवी काँ बाढ़ल बड़ भार। चिन्मय पुरुष लेल अवतार॥
कयल प्रार्थना ई सुर-लोक। कहलनि धरणी काँ बड़ शोक॥
पृथिवी मे रघुकुल अवतार। धय प्रभु हरलनि पृथिवी भार॥
पुन ब्रह्मत्व पदहि चल गेल। पाप विनाशि वृहत यश भेल॥
जानकि-नाथक करिय प्रणाम। भुक्ति-मुक्तिप्रद जनिकर नाम॥
कारण उत्पत्ति स्थिति नाश। माया-बाहर माया-वास॥
मूर्त्ति अचिन्त्य सान्द्र आनन्द। अमल सुबोध-रूप सुख-कन्द॥
विदित-तत्त्व सीतेश प्रणाम। हम करइत छी मन सुख काम॥
पढ़ शुन नित्य रमायण जैह। सकल पाप हर गुणमय सैह॥
नारायण पद सुख सौँ जयत। तनिकाँ कष्ट लेश नहि हयत॥
जौँ इच्छित भव बन्धन मुक्ति। पाठ रमायण अछि बड़ युक्ति॥
कोटि-कोटि जे कर गोदान। से फल सम जे पढ़ इ पुरान[2]॥
पुरुब समय शिव विश्व-निवास। छल छथि बसइत गिरि कैलास॥
मणि सिंहासन बैसल ध्यान। यति-वर एहन दोसर के आन॥
सिद्ध संघ सौँ सेवित चरण। अभय त्रिनेत्र सकल अघ हरण॥
गिरिजा प्रश्न[3] कयल तहि ठाम। वास जनिक शंकर तन वाम॥
हे परमेश्वर जगन्निवास। सकल चराचर अहँक विलास॥

1 ता (३), 2 ण (१, २), 3 ष्ण (१, २)

कय प्रणाम हम पूछिअ सैह । परम इष्ट अपनैँ काँ जैह ।।
भक्त छोड़ि अनका नहि कहथि । बुध विज्ञानि लोक जे रहथि ।।
ईश्वर अपनैँक ईश्वर राम । जनिक जपैत रहैछी नाम ।।
स्त्री स्वभाव सौँ पूछल फेरि । राम तत्त्व विभु कहु[1] एक बेरि ।।
मानुष रूपक धारण कयल । दशरथ नृपक पुत्र बनि अयल ।।
तृण दिव्यास्त्र जयन्तक बेरि । शिव धनु तोड़ल तृण सम फेरि ।।
गौतम-गेहिनि छलि पाषाण । तनिकर कयल राम कल्याण ।।
अगम जलधि मे बाँधल सेतु । बानर योधा रावण हेतु ।।
मानुष रूप अमानुष काज । एक कथा पुछइत हो लाज ।।
निर्गुण ब्रह्म सगुण अवतरल । दुष्टभार धरणिक सभ हरल ।।
जनिकाँ सुख दुख लेश[2] न व्याप । सीता-कारण कयल विलाप ।।

।। रोला छन्द ।।

पुछल भक्ति सौँ जखन कथा ई गिरिवर-कन्या ।
अति प्रसन्न शिव कहल प्रिया अपनै अति धन्या ।।
जनु मयूर आनन्द मेघ-माला धुनि शुनि शुनि ।
रामचन्द्र काँ कय प्रणाम तनि तत्त्व कहल[3] पुनि ।।
प्रकृतिहु[4] सौँ पर छथि अनादि पुरुषोत्तम रामे ।
अद्वितीय आनन्द सकल कारण विश्रामे ।।
तनिके सभ चैतन्य दृश्य सकलावच्छिन्ने[5] ।
लिप्त कतहु नहि होथि गगनवत पुन से भिन्ने[6] ।।
सृष्टि सकल व्यवहार करथि जनिकर वर माया ।
मिथ्या सत्य प्रतीति[7] यथा जल गगनक छाया ।।
विषयी जन काँ भास दोष सौँ दूषित दृष्टी ।
उत्तर दक्षिण कहथि विपर्य्यय भय गेल सृष्टी ।।
होइछ दिवा न रात्रि भानु काँ गिरिजा जहिना ।
नहि तम सम अज्ञान राम चिद्घन रवि तहिना ।।

1 हृ (३), 2 स (१, २), 3 य (२, ३), 4 त (३), 5 छि (१, २), 6 न्न (२, ३), 7 त (३)

जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति सकल साक्षी से निष्फल।
तनिकर सेवा विना जन्म काँ मानब निष्फल ॥

॥ चौपाइ ॥

कति बेरि राम लेल अवतार। कति बेरि हरलनि अवनी भार ॥
ओ रामायण अछि शत कोटि। ब्रह्मलोक महिमा बड़ि गोटि ॥
सबल सपुत्र दशानन[1] मारि। धरणी भार सकल देल टारि ॥
मारुत तनय प्रभृति महावीर। ज्ञान भक्ति शूरत्व गभीर ॥
सीता लक्ष्मण कपिपति सहित। अयला निजपुर विधि शिव सहित ॥
गुरु वसिष्ठ विधि सौँ अभिषेक। पाओल राज्य राम नृप एक ॥
सिंहासन संस्थित महिपाल। कोटि सूर्य्यसम कान्ति विशाल ॥
अञ्जनि-सुतकाँ भक्ति न थोड़ि। आगाँ ठाढ़ भेल कर जोड़ि ॥
प्रभु जानथि हनुमानक धर्म्म। अतिशय अद्भुत हिनकर कर्म्म ॥
लोभक रहित कयल सभ काज। ज्ञान चहै छथि से पुन आज ॥
शुनु[2] वैदेही कहिऔनि ज्ञान। अधिकारी सेवक हनुमान ॥
हमरहि निकट सुचित भय रहिय। हमर तत्त्व[3] हिनका अहँ कहिय ॥
वैदेही प्रभु आज्ञा पाय। कथा कहल हनुमान बुझाय ॥

॥ सोरठा ॥

जानब[4] अहँ हनुमान, परब्रह्म श्रीराम काँ।
ई निश्चय करु ज्ञान, मूल प्रकृति हमहीँ थिकहुँ ॥
उद्भव पालन नाश, हमहिँ स्वतन्त्रा कारिणी।
हमरहु हुनके आश, तनिके सन्निधि मुख्य बल ॥

॥ चौपाइ ॥

राम अयोध्या वर रघुवंश। जन्म लेल शिव मानस हंस ॥
मुनि मख रक्षा भेलनि तखन। कौसिक मुनि संग गेला जखन ॥
छली अहल्या पाथर भेलि। शाप छुटल उत्तम गति गेलि ॥
जनक-पुरी मे शिव धनु भंग। कयलनि बहु विधि सज्जन संग ॥
परिणय हमर भेल प्रभु संग। परशुराम[5] अयला भल रंग ॥

---

1 सा (१, २), 2 सु (३), 3 त्व (३), 4 जीवत (३) जीनब (२), 5 सु (३),

परिचय पाबि गेला तप भूमि । क्षत्रिय अरि नहि भेला घूमि ।।
वास अयोध्या बारह वर्ष । नित नव नव अनुभव हिअ[1] हर्ष ।।
केकयि[2] कहल भेल वनवास । दशरथ छोड़ल जीवन आश[3] ।।
चित्रकूट सौँ दण्डक गहन । कयल निवास बहुत दुख सहन ।।
निधनि विराध तथा मारीच । यति बनि आयल रावण नीच ।।
कयलक माया सीता हरण । युद्ध जटायुक भय गेल मरण ।।
मोक्ष कबन्ध[4]हुकाँ भेल तेहन । मुनि लोकहुकाँ दुर्ल्लभ जेहन ।।
शवरी भक्ति सुपूजन कयल । तनिकाँ मुक्ति युक्ति छल धयल ।।
सुग्रीवक[5] संग मैत्रीकरण । तनिक हेतु बालिक भेल मरण ।।
सीतान्वेषण कपि प्रस्थान । लंका दग्ध कयल हनुमान ।।
रावण काँ रण मारण हेतु । बाँधल[6] गेल समुद्रहु सेतु ।।
लंका घेंड़ल[7] बजरल मारि । रावण मरण सुरण मे हारि ।।
तनिकर पुत्र प्रभृति नहि रहल । बहुत अवज्ञा प्रभुवर सहल ।।
देल विभीषण जनकाँ राज । प्रभुवर शरण धयल निर्व्याज ।।
पुष्पक चढ़ि प्रभु हमरा सहित । जनपद अयला अरिसौँ रहित ।।
राजा राम नाम अभिषेक । कहल कथा संक्षेप विवेक ।।
सकल कयल हमहीँ सब कर्म्म । ज्ञानी जानथि एकर मर्म्म ।।
निर्व्विकार अखिलात्मा राम । ई आरोप कि तनिका ठाम ।।

॥ सोरठा ॥

सुनि गिरिजा वृत्तान्त, महादेव कहलनि कथा ।
तखना सीताकान्त, मारुतनन्दन सौँ कहल ।।

॥ दोहा ॥

यथा जलाशय त्रिविधि[8] नभ, देथि पड़ै अछि जैह ।
महाकाश[9] ह्रद मे तथा प्रतिबिम्बहु मे सैह ।।
एक पूर्ण चैतन्य मे जीव भ्रम आरोप ।
त्रिगुणा मायाकृति सकल, तत्त्वज्ञान सौँ लोप ।।

---

1 य (३), 2 कै (३), 3 स (३), 4 न्धु (२, ३), 5 ग्रि (२, ३), 6 बान्ह (३), 7 र (३), 8 धि=ध—तीनू सांस्करणमे पाठ एहने अछि। 9 ई तथा एहिसँ आगांक ई दू पंक्ति द्वितीय ओ तृतीत संस्करणमे नहि अछि।

तत्त्वमसि प्रभृतिक श्रुतिक, महावाक्य सौँ ज्ञान।
निश्चय मन भेलैँ तहाँ, ब्रह्म जीव नहि आन ।।
मननशील जे हमर जन, जानि जाथि मद्भाव।
ज्ञान विना हो मोक्ष नहि, बहुत जन्म जौँ पाब ।।
ई रहस्य अहँ काँ कहल, हम अपनहि शुभ ज्ञान।
भक्तिहीन काँ देब नहि, जौँ हो इन्द्र समान ।।

।। चौपाइ ।।

गिरिजा शंकर काँ संवाद। रघुपति हृदयक बड़ मर्य्याद ।।
ई गोट पढ़लए रहए न पाप। गोपनीय थिक प्रबल प्रताप ।।
पढ़थि भक्तियुत जे मन लाय। ब्रह्म-बधादिक पाप मेटाय ।।
बहुजन्मार्ज्जित पापक नाश। यमक यातनाकृत नहि त्रास ।।

।। घनाक्षरी ।।

जाति पाति नष्ट भ्रष्ट पापी पर-धन-रत ब्रह्मघाती उतपाती[2] मित्रजन नासी जे। कुल में कलंकि ओ कुलघ्न[3] हेमचोर चाढ़ योगिवृन्द-अपकारी धर्म्म मे उदासी जे ।। रामचन्द्र पूजिकैं[4] करय जे हृदय-पाठ योगीन्द्र अलभ्य पदहीक होथि वासी से। 'चन्द्र' भन सर्व्व लोक विजयि[5] विभूतिमान पढ़थि[6] न कदापि कठोर जम फाँसी से ।।

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे प्रथमोऽध्यायः।

1 जा (१, २), 2 त (२, ३), 3 न्ध (२), 4 के (३), 5 यं (२, ३), 6 ढ़ (३), ।

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

शिव शिव कहल शुनल हम कान । रामायण वर अमृत समान ॥
पिबइत पिबइत तृप्ति न भेल । भव[1] सन्ताप सकल चल गेल ॥
धन्य भाग्य थिक मन मे गुणल । रामतत्त्व संक्षेपहि शुनल ॥
कयल अनुग्रह संशय छुटल । अपनेसौँ शुनि[2] रामक पटल ॥
शुनब कथा सम्प्रति विस्तार । कहु कहु प्रियतम परम उदार ॥
अति आनन्द शम्भु शुनि चित्त । राम-चरित दुखहरण निमित्त ॥
पूर्व्व काल हमरा गुणधाम । कहलेँ छल छथि अपनहि राम ॥
संप्रति हम कहइत छी सैह । दुख अज्ञान निवारक जैह ॥
चिरजीवी सन्तति अति ऋद्धि । श्रोता हाथ सकल गोट सिद्धि ॥

॥ दोवय छन्द ॥

एक समय भयदीना अवनी भारेँ व्याकुल भेली ।
सुरभिरूप बनि कनइत कनइत धाम विरञ्चिक गेली ॥
सकल देवगण तनिकाँ संगे[3] पुछलनि विधि कहु धरणी ।
सञ्च सञ्च से सबटा[4] कहलनि दुष्ट दशानन करणी ॥

॥ चौपाइ ॥

यजन सुजप मुनि तप[5] जे करथी । तनिकर राक्षस प्राणे हरथी[6] ॥
हरि हरि अनइछ अनकर नारि । डरसौँ के कर हुनि सौँ मारि ॥
थर थर काँपथि सब दिकपाल । रावण जनमल भल-जन-काल ॥
धारण धर्म्मं देल समुझाय । भार अपार सहल नहि जाय ॥
सकल दुःख हम देल जनाय । अपनहि बुड़लै युग बुड़ि जाय ॥
जौँ अपने नहि टारब भार । होयत अकालहि लय संसार ॥
कमलासन शुनि ध्यानावस्थ । सकल देवगण छला तटस्थ ॥

---

1 य (३), 2 सु (३), 3 गै (१), 4 भ (३), 5 ३ मे तपक आवृत्ति, 6 थि (१) ।

कहलनि विधि चलु हमरा संग । अहँक दुःख सब होयत भंग ।।
क्षीरसमुद्र तीर मे जाय । ब्रह्मा बैसला ध्यान लगाय ।।
स्तुति कयलनि पढ़ि श्रुति सिद्धान्त । जय नारायण लक्ष्मीकान्त ।।
स्तोत्र पढ़ल जे पठित पुराण । गद गद वचन परम विज्ञान ।।
हर्षक नोर बहल जलधार । प्रभु प्रसन्न भेल करुणागार ।।
जोति-प्रकाश[1] भानु सम भेल । श्रीनारायण दर्शन देल ।।
इन्द्रनीलमणि छविमय अंग । स्मित-मुख लोचन पङ्कज रंग ।।
हार किरीट तथा केयूर । कटकादिक शोभा भरि पूर ।।
श्रीवत्सान्वित कौस्तुभ राज । सनकादिक स्तुति करथि समाज ।।
पार्षदलोक सकल छल ततय । प्रकट भेला(ह)[2] पुरुषोत्तम जतय ।।
शंख रथाङ्ग गदा जलजात । कनक-जनौ कनकाम्बर गात ।।
लक्ष्मीसहित गरुड़पर चढ़ल । देखितहि विधि मन आनन्द बढ़ल।।

।। वानिनी छन्द ।।

शत शत शत नमस्कार देवदेव आजे ।
दीना पृथिवीक[3] दुष्टभारनाश काजे ।।
अपनैक त्रिगुणात्म सृष्टि सर्व्वमान्य माया ।
रचना-प्रतिपाल-नाश-कारिणी अकाया ।।१।।
निर्गुण सगुणावतार भूमि-भार-हर्त्ता ।
स्वेच्छासौँ[4] एकसौँ अनेकरूप धर्त्ता ।।
संसृति-जलराशि-तरण नावकल्प भक्ति ।
सकल-पदार्थदा अनन्तसारशक्ति ।।२।।

।। चौपाइ ।।

स्तुति करइत विधिकाँ विभु कहल । अपनैँ सबहि दुःख बड़ सहल ।।
विधि कहु की करु हम उपकार । शुनि विधि मन भेल हर्ष अपार ।।
परमेश्वर शुनु[5] रावण नाम । राक्षसेन्द्र बस लङ्का-धाम ।।
ओ पौलस्त्यक तनय महान । संप्रति दुष्ट एहन नहि आन ।।
हम वर देल भेल अन्याय । हमरहि सबकाँ भेल बलाय ।।

---

1 स (१, २), 2 'ह' बेसी बूझि पड़ैछ । 3 थ (३), 4 छा (१), 5 नू (३) ।

के कह तनिका नीति बुझाय । उचित न बिरनी-वृन्द जगाय ।।
तीनि लोक मे से के लोक । जनिका रावण देल न शोक ।।
एक गोट अछि तनि मे आश । मानुष हाथेँ तनिक विनाश ।।
राखल जाय देव संसार । अपनेँ धरु नर-वर अवतार ।।
दुख शुनि तखन कहल भगवान । नीक नीक होयत कल्यान ।।
हम सन्तुष्ट देल वरदान । तकरा मध्य कथा नहि आन ।।
कश्यप बहुत तपस्या कयल । विष्णु होथु सुत ई मन धयल ।।
संप्रति दशरथ से तप वेस[1] । छथि से उत्तर कौशल देश ।।
तनिकर पुत्र होयब हम जाय । कौशल्या सौँ शुभ दिन पाय ।।
चारि रूप हम अपनहि हयब । केकयि सुमित्रा पुत्र कहयब ।।
माया हमरे आज्ञा पाय । सीता नाम कहौतिह जाय ।
तनिकाँ संग हरब महि भार । माया लीला अति विस्तार ।।
बहुत कयल विधि प्रभु-गुणगान । ई कहि[2] भेला अन्तर्धान[3] ।।
होयत रघुकुल विभु-अवतार । माया मानब गुण-विस्तार ।।
अपनहुँ सबहिँ एहन मति करब । वानर भालु रूप भल धरब ।।
यावत प्रभु महि मण्डल रहथि । होयब सहाय जतय जे कहथि ।।
ई सब देव सकल शुनि[4] लेल । दृढ़ भरोस धरणी काँ देल ।।
धरणी धरु धरु धीर सुचित्त । विभु अवतरता अहँक[5] निमित्त ।।
मनवांछित अहँकाँ अछि जँह । सकल-शक्तियुत होयत सैह ।।
सुख सौँ विधि गेला निज लोक । ई शुनि काश्यपीक कृश शोक ।।

॥ हरिपद ॥

पर्व्वत वृक्ष अस्त्र वानरतन कयल अमर-गण धारण ।
विभुक बाट तकइत नित[6] सबजन रण सहायता कारण ।।

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे द्वितीयोऽध्यायः ।

1 श (३), 2 ह्तां (३); 3 र्ध्यां (३), 4 सु (३) एवं अन्यत्रहु, 5 हाँ (३), 6 'नित' ३ मे नहि ।

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

राजा दशरथ बड़ श्रीमान । सत्य-पराक्रम एहन न आन ॥
पुरी-अयोध्याधिप अति वीर । सकल-लोक-विश्रुत रणधीर ॥
पुत्र-हीन चिन्तातुर चित्त । गुरु-समीप-गत तकर निमित्त ॥
कयल सविधि गुरु-चरण प्रणाम । कहलनि पुत्र-हीन धिक धाम ॥
गुरु अपनेँ सन राज्य पवित्र । पुत्र-हीन की कर्म्म विचित्र ॥
कयल जाय गुरु तेहन उपाय । श्री-परमेश्वर होथि सहाय ॥
पुत्रहीन केँ राज्यक भोग्य । लुप्त-पिण्ड-क्रिय पुत्र न योग्य ॥
लक्षण-लक्षित पुत्र अनेक । हमरा होथि से करू[1] विवेक ॥
गुरु वसिष्ठ[2] कहलनि तत्काल । चिन्ता मन जनु करु महिपाल ॥
चारि पुत्र अहँकाँ नृप हयत । जनिक सुयश त्रिभुवन मे जयत ॥
शान्ता-स्वामी मित्र जमाय । आनू तनिकाँ अपनहि जाय ॥
काम-यज्ञ करु विधि सौँ भूप । हमरा सब मिलि कर्म्म अनूप ॥
अङ्ग देश मे भाग्य विशाल । रोमपाद नामक महिपाल ॥
पुत्र न तनिकहु गत कत वर्ष । चिन्तातुर मन रहल न हर्ष ॥
तनिकाँ कहलनि सनत्कुमार । पुत्र होयत करु एहन विचार ॥
श्रृङ्गीऋषि[3] जौँ एहि थल आब । तनिका सौँ बाढ़य सद्भाव ॥
शान्ता कन्या तनिकाँ देब । मनवांछित फल हुनि सौँ लेब ॥
श्रृङ्गी रहता घरहि जमाय । साध्य कार्य्य पुत्रेष्टि कराय ॥
मंत्री सभ काँ पुछल नरेश । श्रृङ्गीऋषि आबथि एहि देश ॥
मन्त्रीगण भण सुनु[4] महराज । बड़ गड़बड़ सन लगइछ काज ॥
ओ वनचर व्यवहार न जान । सभकाँ मानथि एक समान ॥
वनिता पुरुष भेद नहि चित्त । जाएत के वन तनिक निमित्त ॥

1 तीनूमे'रू' पाठ । 2 शि (१), 3 बि (२), 4 सुनु भण (३) ।

बड़ क्रोधी मुनि तनिकर बाप । अनुचित देखलें देथिनि[1] शाप ॥
सुमरि[2]-सुमरि तनि पुण्य-प्रताप । हे महिपति जिव थर-थर काप ॥
शृङ्गी पिता विभाण्ड स्वभाव । साध्य न मन्त्री देल जबाब ॥

॥ दोबय छन्द ॥

भूपति तखन वार-वनिता कें[3] अपना निकट बजाओल ।
अपन निमित्त शृङ्गिऋषि आबथि सब कहि काज शुनाओल ॥
मुनि-मन-मोहिनि तोहरि सनि के जौं ओ मुनि कें लएबह[4] ॥
हमर मनोरथ-सिद्धोत्सव मे कोटि-कोटि धन पए[5]बह[6] ॥
हाथ जोड़ि गणिकागण बाजलि साधक कार्य्य विधाता ।
आनब हम ठानब प्रपञ्च बड़, स्वस्थ चित्त रहु दाता ॥
तकइत तकइत सभ जनि[7] पहुचलि पाओल तनिक ठेकाना ।
रतिपति-वर्द्धन राग अलापय रतिचेष्टा कर नाना ॥
सञ्च सञ्च शृङ्गी लग सभ जनि गणिका ओ संप्राप्ता ।
तनिसौं अतिथि-सपर्य्या पाओल तनिक जनक भय-व्याप्ता ॥
गाबि गाबि नित गीत मनोहर मिलि मिलि मुनि तन जाथी ॥
कन्द मूल फल प्रीति सौं देथि जे मुनिहिक सोझाँ[8] खाथी ॥

॥ सोरठा ॥

फल हमरो मुनि खाउ, लाइलि छी बड़ि दूर सौं ।
कि कहब आश पुराउ, उचित कहल वेश्योक्ति शुनि ॥

॥ हरिपद ॥

मोदक मधुर मनोजविवर्द्धन सुधा-समान विलक्षण ।
गणिका देथि वनी नहि जानथि लगला करय सुभक्षण ॥
एक वर्ष सहवास नियत छल छल न बुझल दुर्ल्लक्षण ।
रतिपति-गति संप्राप्त जानि मुनि लय गेली पुर तत्क्षण ॥
बड़ उत्सव महिपाल कयल तत शान्ता कन्या देलनि ।
शृङ्गी मुनि जमाय सौं मख-विधि पूर्ण मनोरथ भेलनि ॥
रोमपाद पुत्रोत्सव पाओल[9] ओ नृप अहँकाँ मित्रे ।
शान्ता सहित तनिक पति आबथि कार्य्य-सिद्धि की चित्रे ॥

---

1 न (३), 2 मि (३), 3 कैं (३), 4 य (३), 5 य (३), 6 पएब (२), 7 न (३), 8 झा (१,२), 9 तीनू मे पाठ 'यो' अछि ।

॥ चौपाइ ॥

गेला रोमपाद नृप देश । श्रीयुत दशरथ विदित नरेश ॥
मित्र-भवन रहला किछु काल । कहल प्रयोजन निज महिपाल ॥
शान्ता कन्या श्रृङ्गि जमाय । तनिकाँ दिऔनि[1] अयोध्या[2] जाय ॥
कयल लेआओन कन्या जानि । रोमपाद घर सब[3] लेल मानि ॥
जाथु अवश्य अपन घर नीक । हिनका गेले[4] निश्चय नीक ॥
चलला कन्या-संग जमाय । दशरथ हर्ष कहल नहि जाय ॥
पहुँचलाह नृप अपना नगर । भेल हकार नगर मे सगर ॥
तनिक चुमाओन उत्सव गीति । सुता जमाइक सन सब रीति ॥
सभ रानी मन हर्ष अपार । नित नव कन्या वर[5] व्यवहार ॥
दशरथ यज्ञ कयल तत गोट । इन्द्रक विभव देखि पड़[6] छोट ॥
महिमे जतेक महीप छलाह । दशरथ-यज्ञ-समय अयलाह ॥
सभहिक कयल परम सन्मान । गुरु वसिष्ठ वसु[7]-मन्त्रि-प्रधान ॥
यज्ञारम्भ वसन्त विचारि । सहस्राक्ष मन मानल हारि ॥

॥ हरिपद ॥

दशरथ नृपति विष्णु मतिसौँ तत श्रृङ्गी मुनिकेँ अनलनि ।
मन्त्रीसहित नृपति अति शुचिसौँ सविधि[8] काम-मख ठनलनि ॥
पापरहित चित मुनि श्रुति-पारग बहुत यज्ञमे अयला ।
होम अनल सौँ दिव्य पुरुष एक स्वर्ण-वर्ण बहरयला ॥
पायसपूर्ण पात्र कर लेलय कहि गुण नृपकेँ देले ।
थोड़हि दिनमे परमेश्वर सुत मन मानू अछि भेले ॥
पायस लेल नृपति आनन्दित मुनि-गुरुपद कय वन्दन ।
अन्तर्द्धान अगिन कहि भेला आधि भेत्र सब खण्डन ।
गुरु वसिष्ठ श्रृङ्गी ऋषि कहलनि रानी पायस खयती ।
की विलम्ब शुभ अवसर नृप अछि पूर्ण-मनोरथ हयती ॥
कौशल्या केकयी छली तँह दूइ भाग कय देलनि ।
ततय सुमित्रा पाछाँ अइली तनिकाँ नहि किछु भेलनि ॥

1 श्रो (३), 2 जो (२), 3 भ (१), 4 लैं (३), 5 वर कन्या (१,२), 6 ब (३), 7 रु (३), 8 २-३ मे 'ब' वेसी ।

अपन भागसौँ दुनु जनि रानी अर्द्ध भाग पुनि कयलनि ।
देल सुमित्रा काँ तीनू जनि पायस से तहँ खयलनि ।।
सभ जनि भेलि सगर्भा तनिकहि छवि सौँ मन्दिर शोभित ।
जगन्निवास वास जत कयलनि कोटि भानु शशि क्षोभित ।।

॥ हंसगति छन्द ॥

भक्तक वश भगवान एहन मति फुरलनि ।
दशम मास मधु मास आश प्रभु पुरलनि ।।
कौशल्या थिकि धन्य जनिक सुत भेलाह ।
ब्रह्मानन्दानन्दे दोष दुख गेलाह ।।
शुक्लपक्ष नवमी शुभ कर्क्क उदित हित ।
मध्य दिवस नक्षत्र पुनर्व्वसु अभिजित ।।
पञ्चग्रह उच्चस्थ मेषमे दिनकर ।
सृष्टि त्रिगुण उतपत्ति[1] शक्ति कर जनिकर ।।

॥ चौपाइ ॥

वारिद वरिसल तखना फूल । जन्म लेल सभ सम्पति मूल ।।
नीलोत्पलदल श्यामल राज । चारि सुभुज कनकाम्बर भ्राज ।।
अरुण जलज वर सुन्दर नयन । कुण्डल मण्डित शोभा-अयन[2] ।।
सहस सूर सन सुछवि प्रकास । कुटिल अलक सुमुकुट भल भास ।।
शंख रथाङ्ग गदा जल-जात । वनमाली स्मितमुख अवदात ।।
नयन करुण रससौँ परिपूर । इन्दीवर शोभा कर दूर ।।
श्री श्रीवत्स हार रमणीय । केयुर नूपुर गण कमनीय ।।

॥ दोहा ॥

कौशल्या देखल सकल, अदभुत बालक भेल ।
कहलनि से कर जोड़िकेँ, कनइत हर्षक लेल ।।

॥ चौपाइ ॥

वार वार हम करिय प्रणाम । हम अबला अज्ञानक धाम ।।
वचन बुद्धि मन[3] पहुँच न जतय । स्तुति हम कि करब फुरय न ततय ।।

1 त्त (३), 2 न (३), 3 ३ मे 'मन' नहि ।

रचना पालन प्रलय स्वतन्त्र । विश्व चढ़ल भल माया-यन्त्र ॥
ब्रह्म अनामय हर्षक मूल । हमरा पर से प्रभु अनुकूल ॥
अहँक उदर-वर वस संसार । हमर तनय बनलहुँ व्यवहार ॥
कहइत छी प्रभु हम कर[1]जोड़ि । रूप अलौकिक ई दिअ छोड़ि ॥
एहि रूपक हमरा रह ध्यान । बनल रहय नित ई हित ज्ञान ॥
सुन्दर शिशु सरूप अँह धरिय । दिन दिन देव कृतार्थित करिय ॥

॥ रोला छन्द ॥

तखन कहल श्रीनाथ अम्ब वांछित अछि जेहन ।
किछु नहि करब विलम्ब रूप करइत छी तेहन ॥
भूमि भार हरणार्थ विधि स्तुति बहुत शुनाओल ।
अँह दशरथ तप कयल तकर फल दर्शन पाओल ॥
हमर होथु श्रीनाथ पुत्र पूर्व्वहि मँगलहुँ वर ।
दुर्ल्लभ दर्शन हमर लाभ अछि नहि संसृति डर ॥
ई संवाद जे पढ़त शुनत सारूप्य हमर से ।
दुर्ल्लभ हमरे[2] समरण अन्तमे पाओत नर से ॥

॥ चौपाइ ॥

ई कहि बनला सुन्दर बाल । इन्द्रनील छवि नयन विशाल ॥
बाल अरुण तन दिव्य प्रकास । जनिकर माया विश्व विलास[3] ॥
पुत्र जन्म शुनि मुदित महीप । सत्वर गेला (ह) गुरुक समीप ॥
सहित वसिष्ठ देखल नृपतनय । हर्षे[4] किछु नहि कहइत बनय ॥
जय जय शब्द सकल थल सोर । नृपति नयन वह हर्षक नोर ॥
तखन कयल नृप जातक कर्म्म । उत्तम कुलक उचित जे धर्म्म ॥
केकयि सौँ उतपति सुत भरत । कमल कि लोचन-समता करत ॥
पुत्र सुमित्राकाँ दुइ गोट । लक्ष्मण ओ शत्रुघ्न सुछोट ॥
देल विप्र काँ गाम हजार । बड़ गोट उत्सव चारि कुमार ॥
कनक रत्न पट ओ गोदान । करथि नृपति जैँ हो कल्यान ॥

1 तीनूमे 'ल' । 2 र (३), 3 तीनूमे पाठ 'विसाल' अछि जे असङ्गत, 4 र्ष (३) ।

॥ घनाक्षरी ॥

मगन महीप मन देखि याचकक गन, देव देव करथि अनन्त रत्न वरषन ।
कत रथ चढ़ि कत चढ़ि गजराज पीठ कत वाजिराजि न रहल चित्त धरषन॥
सोहर मनोहर सुगाब किन्नरी नरीक बनलि सुरुप एत जन केओ परख न॥
देव-दुन्दुभीक धुनि गगन प्रसून-वृष्टि रामचन्द्र जनम उत्सवकी प्रहरषन ॥

॥ चौपाइ ॥

रमित होअ मुनि-मन जहि ठाम । तनिकर नाम धएल मुनि राम ॥
कारक भरण भरत तेँ नाम । लक्षण युत लक्ष्मण गुण-धाम ॥
करता गय शत्रुक संहार । नाम धयल शत्रुघ्न उदार ॥
रामक सह लक्ष्मण रह सतत । शत्रुघ्नो भरतक संग निरत ॥
दुइ दुइ जन पायस अनुसार । बाल सुलीला कर सञ्चार ॥
बालक वचन सुधाक समान । राजा रानी शुनि शुनि कान ॥
मन आनन्द कहल की जाय । वचन[1] मनोहर चारू भाय ॥
बाल विभूषण शोभा वेश । से देखि रानी मुदित नरेश ॥
नाचथि गाबथि नाना रङ्ग । सम वय बालक लय लय सङ्ग ॥
नृपति बजाबथि भोजन बेरि । हँसि पड़ाथि लग जाथि न फेरि ॥
कौशल्याकाँ कह तह भूप । पकड़ि लाउ बालकका़ँ चूप ॥
हसइत कहुखन अपनहि आब । कादो माटि हाथ लपटाब ॥
किछु किछु नृपतिक रुचि सौँ खाथि । चञ्चल खेड़िक हेतु पड़ाथि ॥
बालक कौतुक जे प्रभु कयल । से शिव गिरिजा मानस धयल ॥
बरुआ भेला चारु कुमार । उपनयनक गुरु कयल विचार ॥
चारू जन विधि सौँ उपनीत । सभ विद्या पढ़ि परम विनीत[2] ॥
धनुर्वेद - विद्या - निष्णात । शास्त्र न एक तनिक अज्ञात ॥
राम संग लक्ष्मण नित रहथि । आज्ञा करथि राम जे कहथि ॥
शत्रुघ्नो भरतक संग तेहन । लक्ष्मण राम रीति मति जेहन ॥
अश्व चढ़ल कर धनुष सुबाण । नित्य सिकारक[3] हेतु प्रयाण ॥
मेध्य मेध्य मृग मारथि जाय । पिता निकट से देथि पठाय ॥

1 ३मे 'प' बेसी । 2 पु (३), 3 शि (३) ।

उठि सबेरि[1] स्नानादिक कर्म्म । करथि सनातन जे कुल-धर्म्म ।।
राज काज कर आलस थोड़ । लागथि नित्य पिताकाँ गोड़ ।।
बन्धु सहित गुरु आज्ञा पाय । भोजन करथि तखन नित जाय ।।
धर्मशास्त्र विधि शुनि व्याख्यान । करथि सतत मन उत्तम ज्ञान ।।

।। दोहा ।।

मानव-लीला करथि प्रभु, निर्गुण रहित विकार ।
जानथि ब्रह्मा प्रभृति नहि, विभु माया विस्तार ।।

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे तृतीयोध्यायः ।

1 र (३) ।

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

कौशिक[1] रामक दर्शन काज । गेला दशरथ नृपति समाज ॥
दशरथ कयल तनिक सन्मान । मुनि वसिष्ठ सन गुरु मतिमान ॥
अपनेक[2] सदृश जाथि जन जतय । संपति सकल पहुँच सच ततय ॥
बहुत कृतार्थ कएल मुनि आज । अभ्यागत सत हमर समाज ॥
कोन हेतु गुरु मुनि संचार । कहल जाय करु तकर विचार ॥
शुनि मुनि कहल सुनिय महिपाल । कार्य्य उपस्थित ई एहि काल ॥
यज्ञारम्भ करी हम जखन । अबइत अछि राक्षस-गण तखन ॥
नाम सुबाहु तथा मारीच । दुहु प्रधान अज्ञानी नीच ॥
यज्ञ-विघ्न-कारक अवतार । मरत ककर सक कयल विचार ॥
लक्ष्मण राम ततय जौँ जाथि । हिनक त्रास सौँ दुष्ट पड़ाथि ॥
देल जाय होयत कल्यान । रक्षा करत कहू के आन ॥
गुरु वसिष्ठ सौँ करू विचार । अनुमति सुजस होयत संसार ॥
हँ[3] की नहि नहि बजला भूप । हुनि मुनि आगाँ रहला चूप ॥
नृप एकान्त कहल निज आधि । मुनि-कृत बाढ़ल बहुत उपाधि ॥
गुरु कहु करब कि देब न तनय । क्रोधी मुनि मनता नहि विनय ॥
राम विना नहि जीवन रहत । नहि जौँ देव लोक की कहत ॥
बहुत सहस गत भै गेल वर्ष । चारि तनय विधि देल[4] सहर्ष ॥
सभ जन से छथि अमर समान । रामचन्द्र छथि हमरा प्राण ॥
जौँ नहि देब देता मुनि शाप । हृदय हमर गुरु थर थर काँप ॥
कहु कर्त्तव्य उचित हो कर्म्म । हम सपनहु नहि करब अधर्म्म ॥
कहल वसिष्ठ सुनू[5] महिपाल । कि कहब अपनैँक भाग्य विशाल ॥
ई वृत्तान्त कतहु नहि कहब । पुछलंहु उतर[6] सु-मौने रहब ॥

1 सि (१,२) एवं अन्यत्रहु । 2 तीनू मे पाठ 'नै' । 3 हौँ (१,२), 4 ब (३), 5 नु (२,३), 6 त्त (३) ।

हरण हेतु भूमिक सभ भार । विधि-प्रार्थित नर-वर अवतार ।।
नारायण छथि जानब राम । चिन्मय सकल विश्व-विश्राम ।।
अहँ कश्यप तप कयल अपार । अदिति थिकथि कौशल्या दार ।।
भेला प्रसन्न देल वर-दान । पुत्र अहाँक भेला भगवान ।।
तनिकर माया सीता भेलि । मान्य मही मिथिलामे गेलि ।।
रामक होयत[1] ततय विवाह । कौशिक तेहि कारण अयलाह ।।
ई वक्तव्य कतहु नहि थीक । होयत नृपवर अहँइक नीक ।।
कौशिक पूजन करु दय चित्त । आएल छथि मुनि जनिक निमित्त।।
लक्ष्मण सहित रामकाँ देब । सुयश विश्व भरि भूपति लेब ।।
कहल वसिष्ठ शुनल महिपाल । कृत-सुकृत्य आनन्द विशाल ।।
लक्ष्मण राम काँ भूप बजाय । वार वार उर कण्ठ लगाय ।।
सजल नयन नृप दूनू भाय । कौशिक मुनि कें देल सुमुझाय ।।

॥ रोला छन्द ॥

आनन्दित मुनि भेल नृपतिकाँ आशिष देलनि ।
राम सुमित्रा-पुत्र दुनू जन संग कैं लेलनि ।।
धनुष बाण तूणीर जुगल भ्राता करें धयलनि ।
मुनि-मण्डलि-महि जाय सकल आनन्दित कयलनि ।।

॥ हरिपद ॥

चलइत बार ताटका[2] दौड़लि कौशिक देल चिन्हाय ।
रघुवर शर मारल एक तनिकाँ जे मुनि-जनक बलाय ।।
बड़ पापिनि मुनि-प्राणक सापिनि[3] छलि करुणा सौं रहिता।।
सिद्धाश्रमक सङ्कटा मुइलें मुनि[4]-मंडलि सुख[5]-सहिता ।।

॥ अनुष्टुप् छन्द ॥

बला अतिबला विद्या देव-निर्म्मित देल से ।
क्षुधा-तृष्णादि-शान्त्यर्थं राम सानन्द लेल से ।।

---

1 य (३), 2 ड़ (३), 3 पा (३), 4 सु (२,३), 5 मु (२,३) ।

॥ छन्द मालिका ॥

कण्ठ अङ्कमे लगाब । कौशिकादि सौख्य पाब ।
धन्य धन्य भूप-बाल । दुष्ट राक्षसीक काल ॥

॥ पादाकुल दोहा ॥

विश्वामित्र चरित्र राम-कृत देखल प्रमुदित चित्त ।
मन्त्र सहित सर्व्वास्त्र राम काँ देलनि समर निमित्त ॥

॥ चौपाइ ॥

मुनि-संकुल कामाश्रम राम । एक राति कयलनि विश्राम[1] ॥
उठि प्रभात गेला मुनि सङ्ग । सिद्धाश्रम देखल भल रंग ॥
सब सौँ कहलनि विश्वामित्र । अतिथि एहन के आन पवित्र ॥
हिनकर पूजन मन दय करिअ । दुष्ट-निशाचर-भय सौँ तरिअ ॥
विश्वामित्र कहल मुनि जेहन । रामक कयल से पूजा तेहन ॥
रामचन्द्र कौशिक आवेश । कहलनि दिक्षा करू प्रवेश ॥
राक्षस दुहु काँ दिअओ देखाय । सावधान हम दूनू भाय ॥
तेहन कयल तत मुनि-समुदाय । यज्ञारम्भ कयल मुनि जाय ॥
काम-रूप राक्षस दुहु फेरि । खल आयल मध्यान्हे बेरि ॥
तनिकाँ ज्ञात न दोसर सृष्टि । शोणित हाड़ कयल खल वृष्टि ॥
रामचन्द्र दुइ शर सन्धानि । मारल दुष्ट निशाचर जानि ॥

॥ हरिपद ॥

रामचन्द्र-कर-धनुष-मुक्त-शर-परवश खल मारीच ।
शत योजन घुमि मृतक सदृश जुमि खसला जलनिधि बीच ॥
ठामहि वीर सुबाहु भस्म भेल रघुवर मख रखबार ।
अति अद्‌भुत नर-वर रण-लीला अविकल सकल निहार ॥

॥ बरवा ॥

तदनुयायि[2] अततायिकँ हनिहनि तीर ।
सभकेँ लक्ष्मण मारल बड़ रणधीर ॥

---

1 सरा (१,२), 2 तीनू मे पाठ 'जा', ।

॥ रोला ॥

पुष्प-वृष्टि सुर कयल देव दुन्दुभी बजाओल ।
जय-जय ध्वनि उच्चार सिद्ध-चारण गुण गाओल ॥
हर्षित विश्वामित्र ततय पूजा विधि कयलनि ।
सानुज श्रीरघुनाथ भक्ति सौँ हृदय लगओलनि ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रायायणे चतुर्थोध्यायः ।

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

तिन दिन प्रभु रहला ओ देश । कन्द मूल फल भोजन बेश ॥
कहलनि कौशिक कथा पुराण । पुरुष पुराण सहज सब जान ॥
चारिम दिन कहलनि औ[1] राम । नव उत्सव मिथिलाधिप-धाम ॥
तिरहुति सन नहि दोसर देश । विज्ञानी मानी मिथिलेश ॥
थापित शंकर धनु तहि ठाम । अपनेहुँ[2] काँ देखक थिक राम ॥
देखब तनिँ मर्य्यादा जाय । जनक नृपति सौँ पूजा पाय ॥
शुनि मुनि संग चलि लछमन राम । गंगा उतरि विदेहा नाम ॥
दिव्य फूल फल भल तरु पाँति । खग मृग रहित भेल दिन राति ॥
मुनि केँ पुछलनि से देखि राम । एहि आश्रमम कहू की नाम ॥
अति आह्लादित करइछ चित्त । पुण्याश्रम की एहन निमित्त ॥
विश्वामित्र कहल से शूनि । आश्रम छल छथि गौतम मूनि[4] ॥
तप-ब्रल सौँ तेजस्वी भेल । कन्या तनिकाँ ब्रह्मा देल ॥
नाम अहल्या तेहनि न आन । कयलनि विधि वनिता निर्म्मान ॥

॥ रूपक दण्डक ॥

न्याय-सूत्र-कर्त्ता गौतम मुनि, ब्रह्मचर्य्य-व्रतधारी, बड़ भारी ।
कोनहु लोक एहनि के सुन्दरि, तनिक अहल्या नारी, सुकुमारी ॥
वासव काम-विवश रस-लम्पट, रूप तनिक मन धारी, छलकारी॥
गौतम आश्रम राति रहथि नहि, तिय पातिव्रत टारी, अव भारी॥

॥ तीरभुक्ति-सङ्गीतानुसारेण स्मरसन्दीपन कोडार छन्दः ॥

धाता लिखल जेहन भाल ।
से फल भेलैँ से पथ गेलैँ क्रमहिँ कालेँ काल ॥

---

1 ओ (३), 2 (३), 3 ३ न मे 'क' वेशी, 4 मु (३) ।

गमहि गमहि गौतम जखन गेहक निकट धाओल ।
परक कारन नरक परक[1] तरक तेहन पाओल ।।
देखल चरित बुझल दुरित दारक मारक दोषे ।
शान्तिक पटल सकल हटल सटल अटल रोषे ।।

॥ रूपक दण्डक ॥

अति-अनर्थ-कर्त्ता कह के तों, शून्याश्रम-सञ्चारी, हठकारी ।
क्षणमे दुष्ट भस्म हम कय देब, हमर रूप की धारी, छल भारी।।
कहल इन्द्र अपराध कयल हम, कामक भेलहुँ दासे, मति नाशे ।
विधिक पुत्र ! करु क्षमा इन्द्र हम, सकल लोकमे हासे, अति त्रासे ।।

॥ हरिपद ॥

इन्द्रक वचन शुनल जेहि खन मुनि कोप लाल बड़ आँखि।
भग हजार टा तनमे होयतहु उठला गौतम भाखि ।।
आश्रम जाय अहल्या देखल कपइत जोड़ल हाथ ।
मिथ्यालाप शाप डर कयल न[2] रहल उपाय न[3] लाथ ।।

॥ चौपाइ ॥

गौतम कहल रहह गय जाय । पापिनि पाथर भितर समाय ।
जल जनु पीबह अन्न न[4] खाह । आश्रम[5] छोड़ि कतहु जनु जाह ।।
जन्तु मात्र सौँ आश्रम हीन । होएतहु यावत पातक क्षीण ।।
दिवारात्र[6] तप करह सहिष्णु । हृदय ध्यान परमेश्वर विष्णु ।।
राम राम मन मनमे कहब । बहुत सहस्र वत्सर एत रहब ।।
जखन होयत रामक अवतार । हरण हेतु अवनिक सभ भार ।।
सानुज से एहि आश्रम आबि । तोर भल करता ई अछि भावि ।।
पाथर परसहि रामक चरण । तोहरा अभय दुरितचय-हरण ।।
तनिकर पूजन भक्ति प्रणाम । लोचन-गोचर प्रभुवर राम ।।
सेवा हमर पूर्व्व सम करब । कोक समान संग सञ्चरब ।।
ई कहि गेला मुनि हिमवान । आश्रम भै गेल आनक आन ।।
गेलथिनि गौतम एतहि राखि । हिनका दोसर देखथि न आँखि ।।

1 २ ओ ३ मे 'परक' नहि । 2 कयलनि (३), 3 ने (३), 4 ने (३), 5 छा (२,३), 6 त्रि (३) ।

अपनैक चरणक चाहथि धूरि । हिनकर दुःख-निकर करु दूरि ।।
कौशिक रामक धय लेल हाथ । करु उद्धार देव रघुनाथ ।।
विधि-तनयाक विपति-तति-हरण । परस भेल तेहि[1] पाथर चरण ।।
अपन रूप पाओल[2] तहि ठाम । तनिकर राम कयल परनाम ।।
दशरथ-तनय राम थिक नाम । ब्रह्म-पुत्रि अयलहुँ एहिठाम ।।
से देखल पीताम्बर वीर । लक्ष्मण सहित हाथ धनु तीर ।।
स्मित मुख-पंकज पंकज-नयन । श्रीवत्सांकित शोभा-अयन ।।
वर-माणिक्य-कान्ति श्रीराम । देखि अहल्या आनन्द-धाम ।।
हर्ष लेल लोचन बड़ गोट । तन रोमाञ्च प्रपञ्च न छोट ।।
मन पड़ि आएल गौतम कहल । कर लगली परमेश्वर टहल ।।
कहइत बाढ़ विपुल स्वर[3]-भंग । हर्ष न[4] अटय अहल्या अंग ।।

।। गात ।।

हमर गति अपनैँ सौँ के आन[5] ।
करुणागार दीन-प्रति-पालक रामचन्द्र भगवान ।
पिता विधाता धुरि नहि तकलनि पति-मति भेलहु पषान ।।
सुरपति कुमति विदित भेल कतए न हम अबला की ज्ञान ।
जन्तु मात्र सौँ वर्ज्जित आश्रम नहि भोजन जल पान ।।
वरष हजार बहुत एत गत भेल रामचरण मे ध्यान ।
सगुन[6] ब्रह्म अपनैकाँ देखल निर्गुन[7] मन अनुमान ।।
चन्द्र सुकवि भन लाभ एहन सन त्रिभुवन शुनल न कान ।।

।। गीत पुनः ।।

हमर सनि[8] भाग्यवन्ति के नारि ।
निर्गुण ब्रह्म सगुण बनि अएलहुँ अपनहि सौँ असुरारि ।।
अपनैक चरण सरोज सौँ सुरसरि उतपति पावन वारि ।
सकलो तीर्थक मूल चरण से देखल आँखि पसारि ।।
जे चरणक धूली लय धन्धित रहथि देव त्रिपुरारि ।
से धूलीक प्रकट फल पाओल कर्म्म शुभाशुभ जारि ।।

---

1 त (३), 2 यो (१,२), 3 रस्व (३), 4 क (३), 5 ान अ (३), 6 ण (१), 7 न (३), 8 स (३) ।

रामचन्द्र कहलनि सुनु शुभमति अहँक हाथ फल चारि ।
हमर भक्ति अहँकाँ से होएत सकल सिद्धि देनिहारि ॥

॥ संगीते सूहव नाम[1] छन्दः ॥

श्रीमन्नारायण विष्णो ।
शापादुद्धर शापादुद्धर दुर्द्धर[2] दनुज विष्णो ॥
विधेर्व्विधे दयानिधे विधेरहं कन्या ।
तपस्विनी मनस्विनी यशस्विनी धन्या[3] ॥
आसं दैवाद्दुराचारा मारद्वारा जाता ।
कष्टस्थाने भवानेव प्रभो विभो त्राता ॥

इति श्री मैथिल चन्द्र-कवि-विरचिते मिथिला-भाषा-रामायणे पञ्चमोऽध्यायः ।

1 मना (३), 2 द्ध (३), 3 यधन (३) ।

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

गौतम-घरणि सरणि भल गेलि । गौतम सङ्ग पूर्व सनि भेलि ॥
कौशिक कहल कुशल-मति राम । गुण कि कहब अपनै गुणधाम ॥
ज्ञान-समुद्र नृपति मिथिलेश । तिरहुति सन नहि दोसर देश ॥
जीवन्मुक्त जतय बस लोक । ज्ञान प्रताप चित्त नहि शोक ॥
सीता कन्या ततय कुमारि । धनुष-यज्ञ नृप कयल विचारि ॥
शिवक धनुष तोड़त जे आय । एहि कन्या मे सैह जमाय ॥
पत्र पठाओल तैँ सभ देश । एकहि ठाम देखि पड़त नरेश ॥
जायब ततय अँहउ चलु संग । देखक योग्य सभा भल[1] रङ्ग ॥
गुरु आज्ञा शुनि चलला राम । देखइत शोभा पथ वन गाम ॥

॥ वरवृत्त[2] ॥

आनन्दित मन चलला प्रभु[3] दुहु भाय ।
जनकक जनपद मुनि पुन देल देखाय ॥
सुनितहिँ छल छी लक्ष्मण तिरहुति राज ॥
कहलनि रघुवर अयलहुँ देखल[4] आज ॥

॥ वसन्त-तिलका ॥

की दिव्य भूमि मिथिला हम आबि गेलौँ ।
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौँ ॥
की दिव्य फूल फल वृक्ष अनन्त धान ।
पक्षी विलक्षण करै अछि रम्य गान ॥

1 भे (३), 2 प (३), 3 प्रभु चलला (३), 4 ष (१,२) ।

॥ नाराच ॥

प्रपूर्ण सन् तडाग की सुधा समान वारिसौँ
विचित्र पद्मिनी-वनी विहङ्ग वारि-चारिसौँ ।
द्विरेफ गुञ्जि गुञ्जि केँ महा मदान्ध घूमिकेँ
सरोजिनीक अङ्ग सुप्त वार वार चूमिकेँ ॥

॥ चञ्चला ॥

शालि-गोप गीतिकाँ सुप्रीति रीति शूनि शूनि ।
खेत शस्य खाथि नै[1] कुरङ्ग आँखि मूनि मूनि ॥
सत्य तीरहूति यज्ञ-भूमि पुण्य देनिहारि ।
शास्त्र केँ बजैत बेस कीर बैँसि डारि डारि ॥

॥ रूपमाला ॥

नदी-मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्य सौँ सम्पन्न ।
समय सिर पर होय[2] वर्षा बहुत सञ्चित[3] अन्न ॥
दयायुत नर सकल सुन्दर स्वच्छ सभ व्यवहार ।
सकल-विद्या-उदधि मिथिला विदित भरि संसार ॥

॥ षट्पद ॥

कनक सुमणि सौँ खचित रचित नृप विमल अटारी ।
नन्दन-सोदर सुवन रती रम्भा सनि नारी ॥
भद्र[4] भद्र पर्य्याय भद्र-कर करि ओ करिणी ।
सभ गुण नियत निवास कनक-रत्नाकर धरणी ॥
उत्तम हिम-गिरिवर निकट सुलभ रत्न औषधि सकल ।
पुरि महती मिथिला-पुरी ककरहु नहि देखल[5] विकल ॥

शुभ लक्षण संयुक्त मनागति सुन्दर सुन्दर ।
उच्चैःश्रवा समान अश्व नृप जेहन पुरन्दर ॥
राज-कुमार उदार सकल विद्या काँ जनइत ।
शौर्य्यशील सन्तोष धर्म्मवेत्ता स्मृति मनइत ॥
सकल प्रजा आनन्द-मन विहित गृहाश्रम धर्म्ममत ।
नृपतिक शुभ-चिन्तक सतत नीति-निपुण मन कर्म्मरत ॥

1 तैँ (३), 2 अ (१,२), 3 मंचि (२,३), 4 म (३), 5 ष (१)।

पशु पक्षी सभ हृष्ट पुष्ट नहि दुष्ट कुलक्षण ।
कृष्णसार मृग बहुत नृपति कर सभहिक रक्षण ॥
अतिशय जन सौजन्य देश मुनिजन-मनरञ्जन ।
जे ताकी से भेट कतहु नहि सृष्टि एहन सन ॥
नारि सुनयना शुभमती कुलदैवत लज्जावती ।
सकल रसज्ञा नतिमती[1] मत्त-मतङ्गजवर-गती ॥

॥ चौपाइ ॥

कौशिक सङ्ग ततय दुहु भाय । धनुष-यज्ञ थल देखल जाय ॥
जनकपुरी मे कयल प्रवेश । कौशिक अयला शुनल नरेश ॥
उपाध्याय काँ सङ्ग लगाय । अति आतिथ्य कयल नृप जाय ॥
मुनि-पद-पङ्कज अतिशय प्रीति । कयल दण्डवत नृपति सुरीति ॥
पुछलनि देखलनि जुगल कुमार । नर नारायण जन अवतार ॥
श्यामल गोर मनोहर देह । चन्द्र सूर्य्य सन निस्सन्देह ॥
सब दिश[2] होय[3] प्रकाशित आज । के ई थिकथि कुमर द्विजराज ॥
मनमे होइछ प्रीति अपार । देखइत बालक परमोदार ॥
मौन महीपति भेल ई भाखि । एक टक ताटक लागल[4] आँखि ॥
नृपतिक वचन विनयमय शूनि । प्रश्नोत्तर कहलनि मुनि पूनि[5] ॥
परिचय हिनकर अगम अपार । थिकथि दुहू जन विश्वाधार ॥
राम श्याम-घन लक्ष्मण गोर । दशरथ नृपतिक जुगल किशोर ॥
आनल माँगि नृपति सौँ जाय । हमरा भेला बहुत सहाय ॥
भेटलि ताटका अबितहिँ मात्र । राम हनल एक शर तनि गात्र ॥
छटपटाय छन छोड़लक[6] प्रान । हिनकर सन रन-सूर न आन ॥
आश्रम आबि कयल विसराम । कयल पराक्रम बड़ गोट राम ॥
यज्ञारम्भ कयल मुनि-वृन्द । भेलि उपस्थित राक्षस निन्द[7] ॥
पौरुष हिनक देखल हम नयन । वैरि-विहीन विपिन भेल चयन ॥
रावण अनुचर अति बलवान । सिंह समक्ष शृगाल समान ॥
गेल सुबाहु प्रभृति भट नास । बहुत पड़ाएल बड़ मन त्रास ॥

1 ति (२,३), 2 स (१, २), 3 अ (१,२) 4 लागल ताटक (३), 5 पु (३), 6 छा (३)
7 वृ (३) ।

खसल समुद्र बीच मारीच । बड़ कठजीव मुइल नहि नीच ॥
गौतम आश्रम गङ्गा-तीर । अयला जखन ततय रघुवीर ॥
पतिक शाप दुख कारागार । कैलनि रघुवर ततय उधार ॥
अहल्याक प्रभु कयल प्रनाम । रघुवर कहल अपन वर नाम ॥
प्रभु-पदधूलि पड़ल उड़ि अङ्ग । भेल अहल्या पूर्व्वक रङ्ग ॥
महादेव धनु देखय काज । आयल[1] छथि अपनैँक समाज ॥

॥ सोरठा ॥

विश्वामित्रक उक्ति, मिथिलापति मन दय शुनल ।
कार्य्यसिद्धि वर युक्ति, मानल मन सर्व्वज्ञ बुध ॥

॥ चौपाइ ॥

बड़ बड़ नृपति गेल छथि आबि । टुटल न धनुष नीक फल भावि ॥
जनक कहल पण हमर न व्यर्थ । मुनिवर अघटन घटन समर्थ ॥
कयल कृपा अयलहुँ मुनि आज । सिद्धि भेल मानल[2] मन काज ॥
बहुत हर्ष नहि हृदय समाय । कहल सचिव सौँ जनक बुझाय ॥
ई बालक महिमा के जान । आगत जेहन स्वयं भगवान ॥
हिनकर करू वृहत सत्कार । युगल[3] बन्धु छथि परमोदार ॥
बाढ़ल नृप मन बहुत सनेह । पूजा विधिवत कयल विदेह ॥
कौशिक केँ दय उत्तम वास । समुचित उचिती कयल प्रकास ॥
गेल जाओ नृपकाँ मुनि पूनि । कहलनि कार्य्य-भार मन गूनि ॥
घर थिक अपन कहल नृप फेरि । हम आएव घुमि फिरि कय बेरि ॥
कौशिक युगल[4] बन्धुकेँ कहल । वत्स करक थिक एकटा टहल ॥

॥ वसन्ततिलका ॥

राजा विदेहक वृहत् फुलबाड़ि जाउ ।
हे राम लक्ष्मण अहाँ फुल तोड़ि लाउ ॥
देव प्रदोष शिव पूजन मुख्य काज ।
राजन्य-वीज चरमाचल-मौलि राज ॥

1 यआ (३), 2 स (३), 3 तीनूमे पाठ 'जु' । 4 फू (३) ।

॥ चौपाइ ॥

गुरु आज्ञानुसार श्रीराम । चलला लक्ष्मण सङ्ग घनश्याम ॥
नन्दन-मद-गञ्जन वनवेश । शतमख शतगुण विभवि नरेश ॥
लक्ष्मी जतय लेल अवतार । तनिक विभव के वरनय पार ॥
देखल जखन जनक-वन जाय । बड़ मन हर्षित दूनू भाय ॥
माली सौँ पुछलनि फुल[1] लेब । पूजा हेतु गुरू[2] केँ देब ॥
मालि कहल फुलबाड़िक भाग । बड़ आश्चर्य एक गोट लाग ॥
सभ ऋतु फूल[3] फुलायल आज । प्रकट[4] एतय सभ दिन ऋतुराज ॥
कुमुदिनि कमलिनि गत-सङ्कोच । रवि-विधु बुधि अपनहिक किरोच ॥
अपने युगल मूर्त्ति गुणधाम । हमर भाग्य अयलहुँ एहि ठाम ॥
दुहु जन गल देल सुमनक[5] माल । अञ्जलि-बद्ध कहल नयपाल ॥
रामचन्द्र शुनि पुनि बजलाह । निजगुणशालि मालि तोह जाह ॥
अपन काज कर स्वामि निमित्त । हम वन देखब टहलि सुचित्त ॥

॥ कवित्त ॥

उपवन मध्यमे तड़ाग हंस चक्रवाक जल[6]-खग सरस सुरस कलगान ।
देखि शुनइत मुनिहुक चित्तवित्त[7] हर मानस समान[8] जल एहन न आन ॥
अमल कमल कमला निवास भासमान गुञ्जित मधुप-पुञ्ज मत्त मधुपान।
गान कान पड़इ चामर चारु ढरइछ देवता-निवास मणिदीपक समान ॥

॥ चौपाइ ॥

सीता चलली अवसर ताहि[9] । युगल[10] बन्धु छल छथि वन जाहि ॥
गिरिजा देवी पूजि मनाउ । माय कहल जानकि अहँ जाउ ॥
ततय सखी सङ्ग बहुत कुमारि । विधुर पूर-विधु सुमुख निहारि ॥
कमल हरिण खञ्जन ओ मीन । तनि-लोचन-जित सोचहि दीन ॥
मानस बासा कयल मरालि । उत्तम देखल जनि जनि चालि ॥
जनिक बाहु-जित मञ्जु मृणाल । लज्जित लपटाएल जलथाल[11] ॥
तुल्य न कनक कदलि कह[12] काँपि । जघनक हम छी हिनक कदापि ॥
अति कृश कटि करकश कुचभार । सुन्दरता सौँ जित संसार ॥

---

1 फू (३), 2 तीनूमे पाठ 'रू', 3 फु (३), 4 ग (३), 5 व (३), 6 लज (३), 7 ३मे 'वित्त' नहि, 8 ना (१,२), 9 नही (३), 10 लयुग (३), 11 पा (३), 12 हँ (२) ।

कुटिल सुचिक्कन केश विशाल। अंग अलङ्कृत शोभित माल ।।
जनिकर शुनल पिकी निक गान । गान-मानहत अङ्ग मलान ।।
शुनि नूपुर हंसक धुनि सार । उपवन राम नयन सञ्चार ।।
लक्ष्मण काँ पूछल छल-हीन । श्रुति मानस भेल धुनिक अधीन ।।

।। हरिपद ।।

बाल हंस कल श्रवण मनोहर एतय कतय सौँ आयल ।
जनक-पुरी युवतीक[1] गमन-जित मानस व्यथित नुकायल ।।
सैह थिकथि जनु देवि अवनिजा अबइत छथि सखि सङ्ग ।
नूपुर धुनि सुनला जाइत अछि बुझलाँ जाइछ रङ्ग ।।

।। बरवा तिरहुति गीत ।।

अबइत छथि वैदेही[2] सखि मिलि सङ्ग ।
जित-जग-सेना जेना रचित अनङ्ग ।।
फरकै अछि सुनु लक्ष्मण दहिना आँखि ।
तन पुलकित प्रभु हरषित उठला भाखि ।।
गबइत अबइत छथि सब गौरी-गीति ।
सकल रागिनी तस धरु जेहन सुप्रीति ।।

।। हरिपद ।।

धनुष यज्ञ जेँ कारण होइछ उत्सव सकल समाजे ।
दर्शनीय तनिका हम देखल[3] एक पन्थ दुइ काजे ।।
लोचनमे[4] घन-सार-शलाका सनि लगइत छथि आबी ।
सुधा रसैक छटा सनि तनमे के बुझ की अछि भावी ।।

।। चौपाइ ।।

उपवन पहुँचलि सकल कुमारि । तोड़थि फूल नबाबथि डारि ।।
तरु तरु छाया क्षण विसराम । देखथि चलि चलि भल आराम ।।

1 ति (३), 2 हि (३), 3 व (१), 4 भे (३)।

सीता कहलनि हित-सखि कान । अहँकाँ अछि सभ सगुनक ज्ञान ।।
जखनहि सौँ अयलहुँ आराम । बेरि बेरि फरकै अङ्ग वाम ।।
सखि कहलनि शुभ[1]-सूचक थीक[2] । सगुनक गुन[3] कहलनि मुनि नीक।।
मज्जन कयल तड़ाग मे जाय । गिरिजा काँ पूजल मन लाय ।।
फुलहर थल शोभा[4] भल राज । विष्णुरमा[5] जत सहित समाय ।।

॥ सुन्दरी छन्दः कमला छन्दश्च ॥

जय देव महेश-सुन्दरी । हम छी देवि[6] अहाँक किङ्करी ।।
शिव-देह-निवास-कारिणी । गिरिजा भक्त-समस्त-तारिणी ।।
हम गोड़ लगैत छी शिवे । जननी भूधरराज-सम्भवे ।।
जनता-मन-ताप-नाशिनी । जय कामेश्वरि शम्भुलासिनी ।।

॥ भुजङ्ग-विजृम्भित छन्द ॥

महादेव-रानी सती श्री मृड़ानी सदा सच्चिदानन्द-रूपा अहैँ छी ।
अहाँ शैल-राजाधिराजाक पुत्री धरित्री सवित्रीक कर्त्री कहै छी ।।
अहाँ योगमाया सदा निर्भया छी दया विश्व चैतन्य रूपे[7] रहै छी ।
सदा स्वामिनी सानुकूला जतै छी धनुर्भङ्ग-चिन्ता ततै की सहै छी ।।

॥ उपजाति सुन्दरी छन्द ॥

अपने काँ हम गौरि की कहू । अनुकूला जनि मे सदा रहू ।।
हमरा जे मन मध्य चिन्तना । सभटा पूरब सैह प्रार्थना ।।

॥ चौपाइ ॥

देखलनि एक जनि युगल-कुमार । हरषहि रहल न देह सँभार[8] ।।
गेल छल छथि से सखि सङ्ग फूटि । तनिक भेल जनु मन धन लूटि ।।
कहु की देखल कहु की भेल । पुछलहु क्षण नहि उत्तर देल ।।
किछु न उपद्रव किछु नहि व्याधि । सहजहि लागल मदन समाधि ।।
सभ उपचार करथि भरि पोष । चेतए कहल आन नहि दोष ।।

---

1 तीनूमे 'सु', 2 थि (३), 3 २ ओ ३ मे 'गुन' नहि, 4 सो (१,२), 5 ष्णू (३), 6 वी (२,२), 7 पै (१,२), 8सं (३), ।

विद्यमान एत युगल-कुमार । देखल तनि शोभा-विस्तार ।।
रहितहुँ देवि सरस्वति शेष । कहि सकितहुँ सौन्दर्य्य विशेष ।।
विश्व-मनोहर वयस किशोर । अति सुन्दर वर श्यामल गोर ।।
जौँ गिरि-नन्दिनि होथि सहाय । देथि जनक-गृह योग्य जमाय ।।
देखल न एहन शुनल नहि कान । नहि परतक्ष विषय परमान ।।
दर्शनीय छथि एहि आराम । जनिक कान्ति सौँ निर्ज्जित काम।।
जे कहि गेला नारद मूनि । मन से पड़ल समय से शूनि ।।
यदपि अपन सखि-जनिक समाज । तदपि जानकी मन भेल लाज ।।
स्वेद स्थम्भ पुलक वर अङ्ग । भाव सरस धर गर स्वर-भङ्ग ।।
देह काँप वैवर्ण्य शरीर । युगल जलज-लोचन धरु नीर ।।
प्रलय भाव जागल भल आठ । मनसिज प्रथम पढ़ाओल पाठ ।।
तनिक भाव बूझल सखि एक । जनि मनमे छल गूढ़ विवेक ।।
चलु जानकि देखू आराम । नीलक कुरवक[1] तरु जँहि ठाम ।
कहलनि से परिहरु परिहास । अहँक रहै अछि बड़ मन आश ।।
सखि हँसि कहलनि शुनु सुकुमारि । वनछवि देखू आँखि पसारि ।।
नव-घन-श्यामल छथि नहि दूर । घन विनु बजइछ मत्त मयूर[2] ।।
वन घन शोभा कहु[3] की आज । सगुन सिद्धि मन-वाञ्छित काज ।।
हंसी[4] देखल विपिन समाज । चतुर सखीक उकुति तनि बाज ।।

।। शिखरिणी छन्द ।।

अये हंसी[1] चिन्ता चित परिहरू सुस्थिर रहू
वियोगेँ व्यग्रा की विरह दिन धीरा अहँ सहू ।
विशालाक्षी देखू अछि न शिशुता अङ्ग धयले
सुशीला साध्वी छी निकट छथि प्राणेश अयले ।।

---

1 वृक्षद्वय काँ स्त्रीक आलिङ्गन सौँ पुष्पोद्गम होइछ (प्रथम संस्करणमे कवीश्वरक टिप्पणी परन्तु एहि उक्तिक मूल नहि भेटल अछि । व्यङ्गय तँ श्याम-गौर राम-लक्ष्मण छथि से स्पष्टे अछि) 2 तीनूमे पाठ 'जू' । 3 हू (३), 4 हँ (२,३) ।

॥ बरबा ॥

नारद मुनि जे कहलनि से दिन आज ।
आरामक परिशीलन करु तजु लाज ॥
कहल राम काँ लक्ष्मण दुअ कर जोड़ि ।
दर्शनीय नृप-उपवन लिअ फुल तोड़ि ॥

॥ वसन्ततिलका ॥

हे नाथ सार्थ नदिनाथक बालिका मे
श्रीनाथ-मानस-निवास-मरालिका मे ।
राजा-विदेह-दुहिता धरणीसुता मे
की भेद-बुद्धि वर-लक्षण-संयुता मे ॥

॥ चौपाइ ॥

राम जानकी मन नहि चयन । उत्कण्ठित दर्शन विनु नयन ॥
लता ओट सौँ राम समक्ष[1] । मनसिज-सुषमा-हारक दक्ष[2] ॥
सखी देखाओल अवसर जानि । नारद मुनिक वचन अनुमानि ॥
तनि विनु एहन होएत के आन । राजकुमार विष्णु भगवान ॥
चलि नहि सकथि थगित[3] भेल देह । बाढल ततय परस्पर नेह ॥
सीता रामचन्द्र-मुख हेरि । अनिमिष-आँखि निमिष नहि फेरि॥
प्रेम-विवश विसरल मन शोच । लोचन त्यागल पल संकोच ॥
रामहु काँ नहि चित-चैतन्य । साहस सञ्चर नरवर धन्य ॥
रमा विष्णु ओ थिकथि सभाग । उचित निमेष न लोचन लाग[4] ॥
अग्रज श्याम गोर छोट भाय । शोभा जनिक कहल नहि जाय ॥
नख शिख जनिकर देखल रूप । चित्र लिखित सनि सब जनि चूप॥
एक जनि सखि बड़ साहस कयल । सीता-कर-सरसीरुह धयल ॥
अयि सखि सुमुखि स्वस्थ रहु चित्त। मुनिक कहल फल-प्राप्ति निमित्त॥

1 लक्ष्मण (२,३), 2 टण (३), 3 मि (३), 4 जा (३) ।

कत जन उपवन कर सञ्चार । सुचित कि उचित कहत व्यवहार।।
चलु बरु गिरिजा-मन्दिर जाउ । चलब भवन किछु समय जुड़ाउ ।।
गिरिजा-चरण पूजलहिँ आस । पूरत हयत चित्त निस्त्रास ।।
सखी-वचन हित तखना शूनि । युगल बन्धुकेँ देखल पूनि ।।
प्रभु छवि देखि धयल मन ध्यान । तन्मय विश्व वस्तु नहि आन ।।
देखि देखि सखि युगल-कुमार । आधि विषाद हृदय विस्तार ।।
पण की नृप कएलनि मन जानि । बुझि सुझि लेल न[1] हित ओ हानि।।

॥ घनाक्षरी ॥

महाराज जनक उचित पण कैल नहि बुद्धिमान लोक बुद्धिमान कतै कहतैनि।
महादेव धनुष मनुष बूत टूट कत बल देवासुरक जतय ने निबहतैनि ।।
धनुष भञ्जन मन काम भूप वीर गन एकहु जनक दाप चापमे न लहतैनि ।
घुरि वीर आगत नगर निज जयताह घरमध्यक न्यका कुमारि कोना रहतैनि।

पुलकित तन घन आनन्द उदित मन बेरि बेरि मिथिलेश आँगनमे अबितहुँ।
कन्या वर मङ्गलदायक युवती-समूह गणपति गिरिजा गिरीश[2] गुन गबितहुँ।
'चन्द्र' भन रामचन्द्र पूर्णचन्द्र-मुख देखि अनिमेष लोचन चकोरीकेँ बनबितहुँ।
कोटि काम छवि अभिराम घनश्याम राम जानकीक योग्य जौँ मनोज्ञ वर पाबितहुँ।

॥ मालिनी छन्द ॥

सभ जनि पुनि गौरी पूजबा काल ऐली ।
नव नव फुल-माला मालिनी गाँथि लैली ।।
सुविधि कयल पूजा जानकी विश्व-धन्या ।
तखन मन प्रसन्ना भेलि शैलेन्द्र-कन्या ।।

॥ गीतिका छन्द ॥

कहि देल जे मुनि भेल से दिन इष्ट देवि कृपा करू ।
अभिलाष-पूरण-कारिणी जनकार्य्य मे मन दै परू ।।
सकलेष्ट-साधन-शक्ति-सकला भूधरेन्द्र-सुता अहाँ ।
कत किङ्करी शरणागता रहिता मनोरथ सौँ कहाँ ।।

---

1 ने (३), 2 रि (१,२),

॥ चौपाइ ॥

गौरि पूजि पद कयल प्रणाम । फरकल बेरि[1] बेरि अङ्ग वाम ॥
तखन खसल भल फूलक माल । ओ प्रसाद लय राखल भाल ॥
पुन प्रसाद से हृदय लगाब । मन कह वाञ्छित होयत आब ॥
भूधर[2]-नन्दिनि हर्षित चित्त । कहलनि वैदेहीक निमित्त ॥
चिन्ता परिहरु अवनि-कुमारि । नयन सफल करु[3] निकट निहारि ॥
सुन्दर श्याम मही-पुरहूत । शिवक धनुष टुट[4] हिनकहि बूत ॥
जे वर नारद कहि गेलाह । लोचन-गोचर से भेलाह ॥
गिरिजा-वचन शुनल से कान । सकल सखी करु[5] तनि गुनगान ॥

॥ गीत ॥

रहू देवि दासी-विषय सहाय ।
जय जय जगदीश्वर-वामाङ्गी जय जय गणपति- माय ॥
अतिशय चिन्ता मनमे छल अछि नृपति कठिन पण पाय ।
दरशन देल भेल मन-वाञ्छित चिन्ता गेलि मिटाय ॥
सकल सृष्टि-कारिणि जनतारिणि महिमा कहल न जाय ।
जगदम्बा अनुकूला अपनहि हम की देब जनाय ॥
रामचन्द्र सुन्दर वर जै विधि होथि महीप[6]-जमाय ।
जय जय जननि सनातनि सुन्दरि तेहन रचब उपाय ॥

॥ चौपाइ ॥

गिरिजा-वचन सकल जनि शूनि । हर्षित चललि भवन सभ पूनि ।
गुरुक निकट गेला पुन राम । लक्ष्मण-सहित देखि आराम ।
देखल उपवन हर्ष न थोड़ । लगला जाय गुरू कें गोड़ ।
गुरु पुछलनि नृप उपवन केहन । कहल विदेहक होइनि जेहन ॥
गुरुपूजार्थ धयल भल फूल । नन्दन-वन न नृपक वन तूल ॥
चरमाचल चुम्बन कर सूर । कुमुदिनि-कुलक मनोरथ पूर ॥
सरसीरुह-मुह सम्पुट कयल । चटकाली गुरु-भूरुह धयल ॥
समुदित विधु-मुख विधु-वदनाक । दिवस अन्ध खग सञ्चर[7] ताक ॥

---

1 वार वार (१,२), 2 भू (३), 3 रू (३), 4 तीनूमे पाठ टूट, 5 रु(२,३), 6 हि (३) 7म(२,३)।

सानुज सन्ध्या-वन्दन कयल । गुरुपद-कमल विमल उर धयल ॥
कह रघुवर विधुबिम्ब निहारि । कत विधु कतय विदेह-कुमारि ॥
तनि मुख समता शशि की पाब । प्रति तिथि व्यतित[1] अतिथि बनिआब॥
तनि पदसमता वारिज कहब । असमञ्जस अपयश जन सहब ॥
रजनि विकास न हिमसौँ हानि । जानकि ममा देब कि जानि ॥
कन्यारत्न प्रकट महि-फूल । उपमा विधि नरचल निधि मूल॥
जतय जतय भय पड़इछ दृष्टि । ततय ततय सीतामयि सृष्टि ॥
एहन न अछि एको प्रस्ताव । सीतास्मरण जतय नहि आब ॥
गुरुप्रसाद अयलहुँ एहि ठाम । शुनितहिँ छलछी तिरहुति नाम ॥
छथि गुरु देव विधाता तूल । काज होइत[3] अछि चित अनुकूल ॥
टुटि[4] छिड़िआएल तारा-हार । रजनीकाँ[5] शशि सङ्ग विहार ॥
बीतल रातिक दोसर याम । निद्रा[6] सेवित लक्ष्मण राम ॥
हृदय कमल मे रमा निवास[7] । विद्रावित निद्रा तैँ त्रास ॥
चललि रजनि जनि विधु तजि सङ्ग । अरुणित अम्बर कुसुमक रङ्ग ॥
खग-कल भल भूषण-झणकार[8] । समटि लेल तारावलि हार ॥
परसल छल जनु कच अंधकार । धूसर विधु विरही व्यवहार ॥
कुमुदिनि[9] मलिनि कमल वन राज । उदय अस्त दिनकर द्विजराज ॥
क्लेश कटित भेल कोकवधूक । दिवस-अंध मनधंधित धूक[10] ॥
कत प्रभात-सूचक खग कूज । मुनि मानस-विधि गुरु केँ पूज ॥
शिव शिव धुनि शुनि पड़ चहु ओर । स्नान करथि संयमि जन भोर ॥
घण्टा शंखनाद आनन्द । विकच कमल कैरव मुख बन्द ॥
प्रेम-बद्ध अलि नलिनी-कोष । भ्रमित भ्रमर मधु पिबि भरिपोष॥
गणिका चललि नृत्य अवसान । नील नलिन दल नयन समान ॥
वन्दी विरुद रटथि नृप-द्वार । भैरव राग सरस सञ्चार ॥
वाद्य विविध धुनि मृदुल मृदङ्ग । शयित अवनिपति निद्रा भङ्ग ॥
अगनित[11] महिपति जनक-समाज । आगत शिव-धनु-भञ्जन काज ॥
यथा यथा भूपति जन आब । तथा जनक सौँ आदर पाब ॥

1 थि(१), 2 की(२,३), 3 ए(२,३), 4 तीनूमे पाठ "टूटी"। 5 नि(२,३), 6 न्द्रा(१,२), 7 धा(३), 8 न् (३), 9 न (३), 10 धू (३), 11 णि (१)।

रथ तुरङ्ग[1] गज पथ नहि सूझ । अर्थी दिन रजनी नहि बूझ ॥
यज्ञभूमि मे थल निर्म्माण । कयल मनोहर जनक-प्रधान ॥
प्रातःकृत्य स्नान कय राम । गुरु-पद-पंङ्कज कयल प्रणाम ॥
आशिष दय गुरु कहलनि आज । सत्वर चलु जत नृपति विराज ॥
मञ्च अनेक बनल छल वेश । तेहि पर बैसथि जाय नरेश ॥
सकल मञ्च[2] मे एक प्रधान । बैसल कौशिक सह भगवान ॥
नृपति सुमति तति तत बैसलाह । जनक-प्रधान कहय लगलाह ॥
शतानन्द मुनि गौतम-तनय । कहल सभा मे जनकक विनय ॥
कन्या रमा-रमा मिथिलेश । तप-बल पाओल तिरहुति देश ॥
धरणी-तनया अति सुकुमारि । छविमयि रती-विजयि अवतारि ॥
त्रिभुवन देखल शुनल नहि कान । वनिताजन विरचल विधि आन ॥
आगत नृपवर जनक-समाज । जनकक कहल शुनल हो काज ॥
शिवक धनुष भञ्जन कर जैह । वैदेही वर होयता(ह)[3] सैह ॥
शुनि तनि कथा हर्ष नृप-चित्त । आएल छी एत सैह निमित्त ॥
तोड़ब धनुष हमहि अगुआय । पाछाँ रहब मरब पछताय ॥
बड़ बड़ बलगर गलगर जाथि । टूट न धनुष मनुष पछताथि ॥
एहि गत कत कत नृप गत-गर्व्व । धनुष न टार हार मन सर्व्व ॥
परिचित बलक हजार हजार । शङ्कर धनुष समुख मन हार ॥
धनुष निकट माचल महाघोल । सभ जन पाओल माथक मोल ॥

॥ सोरठा ॥

आब न रहल उपाय, वनिता-गण मन विकल कह ।
भूपति-गण अन्याय, कतय शम्भु-धनु मनुष कत ॥
कन्या रहलि कुमारि, अनुचित एहन न भेल छल ॥
सभ बैसलि मन हारि, नृपति सकल बल बुझि पड़ल ॥
शतानन्द बजलाह, अहह आह निर्व्वीर मही ।
भल करइत अधलाह, होमय न बूझ विदेह[4] काँ ॥

1 ग (३), 2 ञ्चेमँ (३), 3 तीनूमे, "ह" सेहो अछि । 4 मिथिलेश,

॥ घनाक्षरी ॥

टुटल न धनुष विमुख तुष नृपगण,
साहस सौँ सहस सहस छल लटकल ।
वीर सौँ विहीन भेलि अवनी[1] से ज्ञात भेल,
गेल जाओ वीरवृन्द व्यर्थ छी कि अटकल ।
विधिक लिखल कन्या रहली कुमारी मान्या,
जनकक उक्ति शतानन्द सभा फटकल ।
लछमन कुमर सकोप शुनि बजलाह,
आकृति जनिक देखि[2] सभ जन सटकल ॥

॥ झूलना छन्द ॥

देव-रघुनाथ-पद-वारिरुह-दास हम सर्व्वदा भ्रातृ-आज्ञानुसारी ।
मेरु उद्दण्ड भुजदण्ड तट गण्य नहि जीर्ण शिव-चाप कहु कोन भारी ॥
पाबि रुचि चाप धय देब कय खण्ड कय रहित भय सञ्चरब वीर मानी॥
कोप मन बाढ़ जनकोक्ति कटु गाढ़ शुनि विश्व के ठाढ़ संग्राम[3] प्राणी ॥

॥ वरबा ॥

स्मित-मुख राम न बजला, अनुज निहारि ।
चेष्टहि कयल निवारण, समय विचारि ॥
कौशिक कहलनि रघुवर धनुष उठाउ ।
पूरिअ जनक-मनोरथ आधि मिटाउ ॥

(धनुर्व्वन्ध, २० पत्र कमलबन्ध, १० दल कमलबन्ध,
चारमबन्ध, करमुष्टिबन्ध, गो-मूत्रिका-बन्ध इत्यादि ।)

॥ दोहा ॥

राम राम छम काम-सम मसम मसम सम धाम ।
रोम रोम भ्रम सोम हिम सुमम महिम सम[4] नाम॥

॥ मालाबन्ध घनाक्षरी ॥

कत कत जत जत जन मन मन भन बड़ गड़बड़ पड़ गोपचाप भूपकाँ ।
ग़ाम धाम धाम राम-गीति अतिप्रीति रीति बर[5]गर हार धर जप तप रूपकाँ॥

---

1 नि (३), 2 षि (१,२), 3 ३ मे 'के' अधिक 4 श (१,२), 5 न (३) ।

सुर नर पुर दार सकलक एक टक आँखि भाखि भाखि सखि भल भेल भलकाँ।
भल फल भेल देल सिधि विधि[1] निधि सुधि गेल चल चल बलशाल भेल खलकाँ।।

॥ चौपाइ ॥

जनक कयल कौशिक काँ विनय । खण्डन धनुष करथु नृपतनय ।।
कौशिक कहल कहल नृप वेश । धनु भञ्जन नहि एक नरेश ।।
अहँक मनोरथ पुरता राम । अयले छथि धनु-खण्डन-काम ।।
रमानाथ पुरुषोत्तम शूर । करिय विदेह-मनोरथ पूर ।।
गुरुक वचन शुनि कह प्रभु नीक । कञ्जबन्धु-कुल कृति हित थीक ।।
परिकर बाँधल दृढ़तर राम । राखल धनुष बाण तहिठाम ।।
मञ्चक उपर सहज प्रभु ठाढ़ । अतिशय हरष जनक मन बाढ़ ।।
रानि[2] मनाबथि देव बहूत । धनु भञ्जन हो हिनकहि बूत ।।
जनिक दृष्टि पड़ युगल कुमार । विबुध विलोचन सम व्यवहार ।।
घण्टाशत-युत मणि ओ वस्त्र । स्थापित छल त्रिपुरारिक अस्त्र ।।
देव सकल छल भल नर वेष । रघुवर शोभा टक टक देख[3] ।।
इन्द्राणी-गण गायिनि सर्व्व । रमा-रमेशक परिणय पर्व्व ।।
लक्ष्मण तत्क्षण रक्षण काज । कहल आबिकैँ धनुषसमाज ।।
राम वामकर धनु[4] धरताह । जन देखइत कौतुक करताह ।।
श्रमकर नृपवर छल छथि व्यर्थ । देखथु रामक कर-सामर्थ्य ।।
गुरु देथि आशिष पढ़ि शत बेरि । कौतुक ततय देखल जन ढेरि ।।

॥ अमृतध्वनि ॥

अहँ धरणी धीरा रहब सहब धरणि-धर भार ।
दलन हेतु शङ्कर-धनुष उद्यत राम उदार ।।
दार-सहित जयकार करथि सुर भार अवनि हर ।
वर्ष सुमन मन हर्ष बहुत प्रभु कर्ष धनुष कर ।।
भङ्ग धनुष रव चङ्ग भुवन सब रङ्ग अवनि पुनि ।
चाप टुटल परिताप छुटल कह लोक अमृतधुनि[5] ।।

1 ३ मे 'विधि' नहि । 2 नी (३), 3 तीनूमे 'ष' । 4 ३ मे "ष" वेशी । 5 ध्व (३) ।

॥ चौपाइ ॥

प्रभु कर परस धनुष टुटि गेल । शब्द प्रचण्ड भुवन भरि भेल ॥
फणिपति-फण फट फट कय फाट । कच्छप[1] कछमछ मानस आँट ॥
कलमलाय उठलाह वराह । कसमस कयल दशन निर्वाह ॥
दिग्गजचय कयलन्हि चितकार । सहि नहि शक महि दुर्भर भार ॥
डगमग अवनी अद्‌भुत लाग । सात समुद्र रहित मर्य्याद ॥
दिनकर-रथ-हय त्यागल बाट । जय-जय कर मिथिलेश्वर-भाट ॥
मैथिल मानव उठला भाखि । विधि मर्य्यादा लेलनि राखि ॥
मनहुँक संशय-चय भेल दूर । कयल मनोरथ ईश्वर पूर ॥
जनकक लोचन हरषक नोर । राम धनुष तोड़ल भेल सोर ॥
अति[2] चिन्ता चिन्तामणि पाय । जनक कनकमणि देथि लुटाय ॥
जनकक पण निवहल भल हूब । रङ्क न एक महघ मणि छूब ॥
राजा मिलल राम भरि अङ्क । वत्स छोड़ाओल हमर कलङ्क ॥
रानी हर्ष[3] कहल नहि जाय । अन्तःपुर धन रहलि लुटाय ॥
कयल जानकिक दिव्य शिङ्गार[4] । दक्षिण कर देलनि वर हार ॥

॥ गीत—कमल-छन्द ॥

कुशल जगदम्बिका करथु घनश्याम काँ ।
जनक-पण-पूर्त्तिमे प्रबल-बल-धाम काँ ॥
कहथि तिरहुति मे सकल जन राम काँ ।
कयल अहाँ विश्व मे अचल निज नाम काँ ॥
कमल-वर-लोचना जनक-सुकुमारिक ॥
कहथि सखि लोक की हृदय-दुख-धारिका ॥
कयल विधि सिद्धिओ मनक अभिलाष काँ ॥
अहँक वर देखि कें नयन-सुख लाख काँ ॥
दिवस-पति-वंश मे एहन[5] सखि आन के ।
त्रिपुर-हर-चाप काँ दलन भगवान के ॥

---

1 तीनूमे केवल 'छ' । 2 एहिठाम सँ "महघ मणि छूब" धरि २ पंक्ति ३ म नहि अछि । 3 रष (२,३) : 4 शृ, (३), 5 पयन (३) ।

॥ लक्ष्मीधर स्त्रग्विणी[1] छन्द ॥

जानकी हाथमे माल लक्ष्मी धरू । श्रीघनश्यामकाँ देखि चिन्ता हरू ॥
जे धनुभङ्गकर्त्ता ततै सञ्चरू । ऐ महानन्दसौँ स्वान्तकेँ सम्भरू ॥

॥ चौपाइ ॥

स्मितमुख सखि सङ्ग बाढ़ल लाज । बड़ उतसव बड़ लोक समाज ॥
रामक उपर देल से माल । त्रिदश-दुन्दुभी बाज विशाल ॥
सकल नगर-जनि जनकक दार । वार वार वर कुमर निहार ॥
ज़नक कहल कौशिक काँ न्याय । दशरथ ओतय निमन्त्रण जाय ॥
रानी-सुत-युत नृप अओताह । जाति बराति बहुत लओताह ॥
पत्र सहित तत पहुँचल दूत । जतय अयोध्याधिप पुरहूत ॥
दशरथ बुझल राम-कृत चरित । जेहन सुखायल तरु हो हरित ॥
मिथिलेशक जे आयल दूत । तनिकाँ देलनि वित्त बहुत ॥
हरषि हरषि अपनहिँ कर काज । वजबाओल सभ मन्त्रि समाज ॥
बाँचि शुनाओल सभ काँ पत्र । जाएब तत सुत सहित कलत्र ॥
जनक समधि निरवधि सुख थीक । एहिँ सौँ कार्य्यं होएत की नीक॥
गज तुरङ्ग-वर वर-रथ पत्ति । महती सेना बड़ सम्पत्ति ॥
अग्नि सहित गुरु चलला अग्र । हमरा हर्षहिँ मन भेल व्यग्र ॥
हुनि संग चलली रामक माय । हम रथ चढ़ि जाएब[3] अगुआय ॥
प्राप्त जनकपुर दशरथ भूप । अयला जनक समधि अनुरूप ॥
आनल दूरहि सौँ अड़िआति । से व्यवहार विहित छल जाति ॥
शतानन्द गौतम-मुनि-बाल । अति सत्कार कयल तत्काल ॥
उत्तम भवन देल नृप वास । सुरपति-सदन समान सुभास ॥
लक्ष्मण सहित आबि तत राम । पिता-चरणमे कयल प्रणाम ॥
उत्कण्ठित छल चित्त बहूत । युगल कमल-मुख[4] देखल पूत ॥

॥ सोरठा[5] ॥

गुरुक अनुग्रह तात, कार्य्यं सकल सम्पन्न अछि ।
अपनै छलछी कात, बालक प्रति-पालक सुमुनि ॥

1 स (३, 2 य (३), 3 ये (३), 4 रि (३), 4 सु (३) । 5 सो (१, २) ।

दशरथ हृदय लगाब लक्ष्मणयुत रघुनाथ काँ।
अनिर्व्वचन सुख पाब, ब्रह्मानन्दक प्राप्त जनु ॥

॥ चौपाइ ॥

वास अयोध्याधिप[1] आगार । राजकुमर वर दशरथ-दार ॥
जनक मुदित मन देल निवास । यथायोग्य काँ स्थल विन्यास ॥
सामग्रीक बूझ के थाह । लक्ष्मी-नारायणक विवाह ॥
विधि समान मुनि विश्वामित्र । विदित भुवन भरि जनिक चरित्र॥
दशरथ नृपति निकट अयलाह । घटना शतानन्द लयलाह ॥
हे नृप-वर एत नृपति विचार । राजकुमर सभ होथु सदार ॥
जनकात्मजा उर्म्मिला नाम । लक्ष्मण परिणय विधि तहिठाम ॥
जनक-भ्रातृ-कन्या दुइ[2] गोटि । जेठि[3] श्रुतिकीर्त्ति माण्डवी छोटि[4] ॥
भरत तथा शत्रुघ्न जमाय । यथासंख्य होमहि बुझ[5] न्याय ॥
से शुनि कहल अयोध्याधीश । अघटन घटना कर जगदीश ॥
जे अनुमति रति नृपति विदेह । हमरो अनुमति निस्सन्देह ॥
कहल पुरोहित नृपकाँ जाय । चारू कन्या वृत्त जमाय ॥
शुभ सिद्धान्त नगर भेल ख्यात । हर्षयँ पड़य न पृथिवी लात ॥
आयल सुदिन सुलग्न सुयोग । हलचल सकल चलल उद्योग ॥
जनि कर परिछनि गबइत गीति । विधि कर विधिकरि तिरहुति रीति॥
बहुत सुवासिनि नगर हकार । जनक कयल भल कुल-व्यवहार ॥
भेरी दुन्दभि घन निर्घोष । गीत नृत्य नृपपुर[6] भरि पोष ॥
मण्डप अतिशय शोभित देश । मुक्ता-पुष्प-फलान्वित वेश ॥
रत्नस्तम्भ बहुत बड़ गोट । वर वितान तोरण नहि छोट ॥
रत्नाञ्चित वर आसन[7] कनक । बैसक[7] देल राम काँ जनक ॥
गुरु वसिष्ठ कौशिक सत्कार । शतानन्द कयलनि व्यवहार ॥
रामक निकटहि[6] बैसक[7] देल । बहुत गीत हो हर्षक लेल ॥
अग्निस्थापन विहित विवाह । मण्डप सीता काँ लयलाह ॥
नाना-रत्न-विभूषित काय । सीता शोभा कहल न जाय ॥
रानी-सहित जनक महराज[8] । बैसला कन्या-दानक काज ॥

---

1 प (३), 2 ई (३), 3 ठ (३), 4 ठि (३), 5 बू (३), 6 नु (३), 7 श (३)।
8 हा (१,२)।

॥ दोहा ॥

पङ्कज-लोचन-राम-पद, लेलनि जनक धोआय ।
बिधिवत से जल भक्ति सौँ, माथा लेल चढ़ाय ॥

॥ सोरठा ॥

जे जल गौरीनाथ, मुनिजन-सहित विरञ्चिगण ।
मुदित चढ़ाओल माथ, हमरहु प्राप्ति से भाग्यवश ॥

॥ चौपाइ-मणिगण ॥

नरवर-वर[1]-सुत-कर-जलरुह पर । नरवर धरणि-सुजनि-कर-वर धर ॥
अछत उदक धर श्रुति विधि अनुसर । तनि अरपल भल वर[2] रघुवर कर ॥

॥ रूपक घनाक्षरी ॥

जनक कहल न रहल अभिलाष मन ज्ञान ध्यान मध्य देल दिवस गमाय ।
मन्दिरमे इन्दिरा कहाय बालिका छलीह आज भगवान विष्णु पाओल जमाय॥
दशरथ समधि विदित निरवधि यश जगतक जननीक जनक कहाय ॥
कहु भगवान की ग्रहण करु मैथिलीक हम भाग्यवान् तिरहुति राज्य पाय ॥

॥ चौपाइ ॥

सीता अरपल रामक हाथ । रमा[3] जलधि जकँ[4] जनक सनाथ ॥
लक्ष्मणकाँ निज कन्या देल । नाम उर्मिला हर्षित भेल ॥
विख्याता श्रुतिकीर्त्ति कुमारि । देल भरत काँ जनक विचारि ॥
माण्डवि प्रस्थित कयल जमाय । श्रीशत्रुघ्न समय शुभ पाय ॥
चारु कुमार दार-सम्पन्न । लोकपाल सन लोक प्रसन्न ॥
जनक कहल हरषित तहिठाम । सीता लाभ जना[5] एहि धाम ॥
शुनु वसिष्ठ मुनि विश्वामित्र । कहइत छी कन्याक चरित्र ॥
भूमि-विशुद्धि यज्ञ करबाक । नृपतिहुँ काँ भेल हर धरबाक ॥
देखल तत हम जोतइत भूमि । बहराइलि कन्या काँ घूमि ॥
चारि बरष वयसक परमान । कन्या एहनि देखल नहि आन ॥
के ई थिकथि कोना के जान । हृत भेल ज्ञान हिनक लेल ध्यान॥

---

1 ३ मे दोसर "वर" नहि । 2 ३ मे 'र' नहि । 3 रा (३), 4 कां (३), 5 ई "जेना" अर्थमे थीक ।

आनल घरमे पुत्री भाव । उपमा हिनक आन के पाव ॥
एक समय नारद सञ्चार । भ्रमइत अयला हमरा द्वार ॥
करइत महती बीणा गान । अनुरत भगवानक गुणगान ॥
पूजन कयल जे होमय बूझ । पूछल अपनेकाँ सभ सूझ ॥
उतपति कन्या[1] धरणी फोड़ि । के थिकि कहु दिय संशय तोड़ि ॥
शुनि मुनि कहलनि शुनु मिथिलेश । गोपनीय कहइत छी[2] वेश ॥
नारायण लेल नर अवतार । रावण मारि महिक हर भार ॥
चारिरूप मे[3] दशरथ गेह । सम्प्रति छथि से निस्सन्देह ॥

॥ रूपमाला ॥

योगमाया थिकथि सीता राम विभु भगवान ।
देव तनिकहि हिनक पति ओ थिकथि सत्य न आन॥
ई कथा ओ कन्यका[4] गुण कहल नारद मूनि ।
ताहि दिन सौँ रमा मानल भेल चरित जे पूनि ॥

॥ चौपाइ ॥

कोन परि हयता राम जमाय । दिन दिन चिन्ता बाढ़लि जाय ॥
चिन्तातुर मन कयल विचार । सभ महिपति आबथि जैँ द्वार ॥
स्मरहर त्रिपुर समर मे मारि । धनुष धयल की चित्त विचारि ॥
हमर पितामह घर छल[5] धयल । विद्यमान फल पण जे कयल ॥
सभहिक होइत मानक हानि । सकल निबाहल देवि भवानि ॥
लयलहुँ पङ्कज-लोचन राम । अपनैँ मुनिवर हमरा गाम ॥
सुफलित हमर मनोरथ गोट । सुयश भुवन भरि भेल न छोट ॥

॥ गीत 1 तिरहुति-प्लवङ्गम छन्द ॥

श्रीपति रविकुल-तिलक जानकीनाथ हे ।
लोचन शोच न एक चरण धय माथ हे ॥
कोन सुधन हम देब रमापति रामकाँ ।
की करु हम गुणगान सदानन्द धाम काँ ॥

---

1 ३ मे "कन्या" सँ पूर्व "काँ" । 2 थि (२, ३), 3 से (१,२), 4 न्याकाँ (२,३), 5 कु (३) ।

के अपन सौँ आन अधिक संसार मे ।
भानु इन्दु वर नयन ज्ञानि अवतार मे ।।
श्रीनारायण देव देखि छवि लेब हे ।
विश्वम्भर विभु एक देव-वर देव हे ।।

।। सोरठा ।।

जौतुक देवक थीक, पुत्रिक उचित द्विरागमन ।
सम्मति सभ मुनिहीक, विष्णु जमाय सुता रमा ।।

।। दोहा ।।

शत सहस्त्र देल अश्वरथ, अश्व नियुत पुन देल ।
दश सहस्त्र गज राम काँ, देलनि हर्षक लेल ।।
दासी देलनि तीनि शय, एक लक्ष देल पत्ति ।
दिव्याम्बर वरहार पुन, लक्ष्मी काँ सम्पत्ति ।।

।। चौपाइ ।।

मणिचय परखि परखि नृप लेथि । शय शय प्रति गहना पुनि देथि ।।
वसिष्ठादि मुनि जन सत्कार । जनक कयल उत्तम व्यवहार ।।
लक्ष्मण भरत कुमर जे सर्व्व । तनिकहु धन देल खर्व्व निखर्व्व ।।
सकल कन्यका कयल बिदाय । जनकक नयन नोर बढ़ि आय ।।

।। माधवीय वराड़ी छन्द ।।

तुअ विनु आज भवन भेल रे, धन विपिन समान ।
जनु ऋधि सिधिक गरुअ गेल रे, मन होइछ भान ।।
परमेश्वरि महिमा तुअ रे, शिव बिधि नहि जान ।
मोर अपराध छमब सब रे, नहि याचव आन[1] ।।
जगत जननि काँ जग कह रे, जन जानकि नाम ।
नहर नेह नियत नित रे, रह मिथिला धाम ।।
शुभमयि शुभ शुभ सभ दिन रे, थिर[2] पति अनुराग ।
तुअ सेवि पुरल मनोरथ रे, हम सुखित सभाग ।।

1 व (३), 2 ३ मे 'थिर सँ "मनोरथ रे" धरि नहि ।

॥ चौपाइ ॥

सजल-नयन जानकि मिलु माय । लोचन जल बह रहल न जाय ॥
देखब कोन परि पुत्रि जमाय । कहुखन नोर न आँखि[1] शुखाय ॥
समदाउनि गायिनि-गण गाब । ककरा नयन नोर नहि आब ॥
शाशु श्वशुर पद सेवन करब । पतिव्रत मे तन मन अहँ धरब ॥
जानकि केँ रानी करु चूप । कहि परबोध सुवचन अनूप ॥
वरष दूइ छल अहँ सहवास । अहँ विनु जानकि भवन उदास ॥
चलल सवारी डंका बाज । सहित बराति चलल महराज ॥
उचिति विनति कति सहित सनेह । दशरथ समधि समान विदेह ॥

॥ सोरठा ॥

नाना बाजन बाज, नभ सुरराज-समाज मे ।
जय जय जय महराज, वन्दी मागध लोक कह ॥

॥ चौपाइ ॥

मिथिलापुर सौँ योजन तीन । पहुँचलाह उत्साह नवीन ॥
कयल वसिष्ठक नृपति प्रणाम । घोर निमित्त देखि तहि[2] ठाम ॥
असकुन गुनि मन चिन्ता आब । कहु गुरु शान्ति अनिष्ट प्रभाव ॥
अछि किछु भयक योग तत्काल । अचिरहि हो सुख हे महिपाल ॥
हरिण अनेक प्रदक्षिण जाय । एहि सौँ संकट विकट मेटाय ॥
एहि विचार मे उठल बसात[3] । सहित मूल तरु रहल न पात ॥
धूरा उड़ ककरहु नहि सूझ । उत्पातक गति के जन बूझ ॥
देखल किछु दुरि आगाँ जाय । कोटि सूर्य सम भासित काय ॥
नील जलद सन जटा विशाल । दशरथ आगु ठाढ़ की काल ॥
दशरथ मन कह हे भगवान । धर्म्महि धाधर शुनल न कान ॥
तनिकर पूजा वहुबिधि कयल । चिन्हल दण्डवत पद-युग धयल ॥
त्राहि त्राहि कहि जोड़ल हाथ । अभय प्रदान करिअ[4] भृगुनाथ ॥
राम हमर छथि प्रणाधार । मन नहि थिर कर देखि कुठार ॥
धर्म्मक कथा कोप कत मान । नृप कह आन कहथि मुनि आन ॥

1 खाँ (३), 2 ते (३), 3 ३ मे "ब" नहि । 4 य (३) ।

।। घनाक्षरी ।।

अस्त्र चोष कोष अछि मन महारोष अछि बल भरि पोष अछि रीति अनुसरबे।
नाम भृगुराम अछि समर न साम अछि गति सभ ठाम अछि अरि चोर धरबे।।
एहन के वीर अछि धनुष सतीर अछि कुलिश शरीर अछि हरि अरि गरबे।
विदित संसार अछि क्षत्रिय संहार अछि करमे कुठार अछि चोर मारि करबे।।

।। चौपाइ ।।

सहजहु भृगुपति गरजथि घोर। प्रलयकाल घन कृत जनु सोर।।
कहु कहु कौशिक की थिक काज। नृपजन जनक महीप समाज।।
कहलनि कौशिक नृप मिथिलेश। धनुषयज्ञ ठानल छल बेश।।
सिद्धि काज टूटल शिव-चाप। रामचन्द्र तत कयल प्रताप।।
भृगुपति कहलनि बाहु उठाय। ज्ञत्रियजन शुभ मन श्रुति लाय।।
अपराधिहि काँ करह फराक। नहि तौँ सब जन शिर पर डाक।।
क्षत्रिय-क्षय कय एकइश बार। कर मे जाग्रत कठिन कुठार।।
कातर नृप न उठाओल घाड़। अजक गोलजक निकट[1] हुड़ाड़।।
जनकक चित[2] चिन्ता नहि आब। धनुष भङ्ग कर विदित प्रभाव।।
मिथिलाधिप की चुक[3] व्यवहार। भृगुनन्दनक[4] कयल सत्कार।।
रामचन्द्र लक्ष्मण दुहु भाय। जनक अपन लेल सङ्ग लगाय।।
कयलनि सभ जन तनिक प्रणाम। जनक चिन्हाय कहल भल नाम।।
आशिष देल देखल छवि नयन। सुजन लोक मन हरषित चयन।।
शतानन्द अभिमान न थोड़। भृगुनन्दन केँ लगला गोड़।।
से पुछलनि मखविधि आरम्भ। कहल पुरोहित चित अतिदम्भ।।
चारि वर्ष वयसक एक गोटि। कोटि रती उपमा हो छोटि।।
कन्या-रत्न एहन के आन। लक्ष्मी थिकथि सिद्धि अनुमान।।
हरक अग्रसौँ उखड़लि जानि। सीता नाम अर्थ सौँ मानि।।
विज्ञानी मिथिला-महिपाल। कन्या बुद्धि कयल तत्काल।।
नारद मुनि तनि कहलनि आबि। कन्याकाँ बड़ गुण जे भावि।।
नारायण हिनकर वर सैह। भूमिक भार निकर हर जैह।।
तनि विनु धनुष दलन के आन। कयल जनक मन ई अनुमान।।

1 हू (३), 2 त्त (३), 3 चू (३), 4 ३ मे 'न' नहिं।

शिव धनु टुटत[1] परीक्षा लेब । ई कन्या हम हुनकहि देब ॥
जनक नृपति काँ होमहि बूझ । ब्रह्मज्ञाता काँ सभ सूझ ॥
रघु-कुल-कमल-बिकासक सूर । कयलनि राम मनोरथ पूर ॥

॥ बरबा ॥

परशुराम से शुनितहिँ, हँसि उठलाह ।
ब्राह्मण मर्क्कट काँ के, अछि चरबाह ॥

॥ चौपाइ ॥

कर्म्म पुरोहित अति स्वच्छन्द । पर घर नाचथि मूसर चन्द ॥
शान्त जनक भूपक नहि त्रास । सभहिक गुरू गोवर्द्धनदास ॥
जनकक सभा तोहर बड़ गाल । उपलक्षण ढोढ़ी[2] धरि माउ[3] ॥
शतानन्द तोँ छेँ बड़ भूच । ना बड़ ऊच कान दुहु बूच ॥
शतानन्द कहलनि खिसिआय । उचिते कहलेँ संग बिधुआय ॥
काटल कियक रेणुका-माथ । ई वकवाद वृथा भृगुनाथ ॥
ब्राह्मण काँ धिक क्षात्र प्रताप । तत्त्व विचार करी तौँ पाप ॥
आनक दोष अणुक परमान । देखथि अपन न विल्व समान ॥
परशुराम लोचन भेल लाल । जेहन रौद्र रस प्रकट विशाल ॥
जनक कयल सभ कार्य्य अनर्थ । भावी तनिक मनोरथ व्यर्थ ॥
हम क्षत्रिय-अरि से नहि चेत । दशरथ मरता अपटी खेत ॥
अति सुन्दर छल युगल-कुमार । कि करब कयलक बड़ अपकार ॥
हँसि हँसि लक्ष्मण कयल प्रणाम । कहलनि शुनितहिँ छल छी नाम ॥
लक्ष्मण मन रण अति उत्साह । देखि भृगुपति भेल जेहन बताह ॥
हास्य सदा थिक कलहक मूल । भृगुपति कथा कहल प्रतिकूल ॥
देखलैँ छैँ की[4] बाबू आँखि । मरय बेरि चिउटिहु[5] काँ पाँखि ॥
कहलनि लक्ष्मण शुनि[6] मुनि लेब । तखन दण्ड ककरहु अहँ देब ॥
अपनैँ भृगुपति कोप अगाध । एतगोट रोष कोन[7] अपराध ॥
भृगुपति कहलनि शुन[8] रे बाल । एखनहि सौँ तोँ बड़ वाचाल ॥

---

1 टू, 2 ढ़ि (३), 3 मो (३), 4 का (३), 5 हू (३), 6 शू (३), 7 काने (३), 8 शू (३) ।

हमरा चापाचार्य्य महेश । तनिक प्रताप विजय सभ देश ।।
तनिकर धनुष मनुष देत तोड़ि । जिबइत तनिकाँ देब कि छोड़ि ।।
लक्ष्मण कहलनि की अजगूत । क्षत्रिय क्षय कत अपनैँ बूत ।।
शिव-धनु टुटल[1] देत के जोड़ि । की होअ आब कपारे फोड़ि ।।
अपनैँ अबितहु एतय सबेरि । धनुष न छुबितथि एको बेरि ।।
सड़ल पड़ल छल चाप पुरान । से धनु तोड़ल की क्षति मान ।।
धनुष-भङ्ग-धुनि कतय न गेल । शिव शिव शिवमन रोष न भेल ।।
एक अपराध कहब कर जोड़ि । सीता लाभ धनुष केँ तोड़ि ।।

।। कुण्डलिया ।।

बालक ई कालक सदन, जयता हमरहि हाथ ।
अग्निकण्ठ पकठोस बड़, काटब हिनकर माथ ।।
काटब हिनकर माथ, परशु सौँ देरि न करबे ।
बालक बध अन्याय, अयश माथा बरु धरबे ।।
आबथु हमर समीप, हिनक जे छथि प्रतिपालक ।
त्याग करथु मन[2] शोच भाग्य एतबहि दिन बालक ।।

।। दोहा ।।

कयल उपद्रव सभ जनक, देखता भलैँ जमाय ।
टेँगरा पोठी चाल दै, रोहुक[3] शीर बिसाय ।।
लक्ष्मण कहल सरोष शुनि, भृगुपति मति अति छोटि ।
पर्व्वत मध्ये[4] ठेकलैँ, भाँगिय घरक शिलौटि[5] ।।

।। घनाक्षरी ।।

कालक न त्रास अछि अयोध्या निवास अछि,
अरिगण दास अछि शूर-गुण-धाम छी ।
धनुष समक्ष अछि शर कर दक्ष अछि,
निज लोक पक्ष अछि लक्ष्मण नाम छी ।

1 टू (३), 2 ,त (३), 3 रा (३), 4 ध्य (३), 5 सि (३) ।

रामचन्द्र भक्ति अछि बाहु पूर्ण[1] शक्ति अछि।
विप्र अनुरक्ति अछि स्वस्थ अष्टयाम[2] छी॥
वीर वर[3] वेष अछि मन बड़ तेष अछि।
कौशल विशेष अछि अपनैँ की वाम छी।

॥ सोरठा ॥

हम नहि वचनहिँ शूर, शुनि महि-सुर-वर समरमे।
करिअ मनोरथ पूर, कर कुठार वृतकण्ठ इह।

॥ चौपाइ ॥

रामचन्द्र हँसि लेल हटाय। लक्ष्मण जनु करु गुरु अन्याय॥
धरा धरणिधर भार सहिष्णु। फण एक देश शयन कर विष्णु॥
कुल-मर्य्यादा राखू वीर। द्विज पर धयल धनुष की तीर॥
राम कहल सभ हमरे दोष। बालक उपर करक नहि रोष॥
की[4] कर्त्तव्य कोप की काज। कहल जाय सभ सुनथि समाज॥
अयलहुँ एतय अन्य परसंग। हमरहि बुतैं धनुष भेल भङ्ग॥
परशुराम मन नहि भेल साम। कुपित कहल शुन अभिनव राम॥
क्षत्रिय अधम कहाबह नाम। हम एक राम आन के राम॥
तोड़लह शङ्कर धनुष पुरान। मनमे बाढ़ल बड़ अभिमान॥
हमरहि कर वड़ वैष्णव चाप। लैह चढ़ाबह करह प्रताप॥
भ्रमइत छह रघुवंशि कहाय। द्वन्द युद्ध कय दैह हटाय॥
नहि तौँ हमरा हाथहिँ सर्व्व। मारल जयबह रह नहि गर्व्व॥
पृथिवी डोललि तम परि पूर[5]। मन मन हर्षित लक्ष्मण शूर॥
रघुवर भृगुवर कर[6] लय चाप। अक्रिय भृगुपति थर थर काँप॥
धनुष चढ़ाओल करमे आनि। रघुवर कहलनि शर सन्धानि॥
लक्ष्य देखाउ अहाँ भृगुराम। की निज पद-युग की पर धाम॥
परशुराम मन बाढ़ल भीति। भय विनु कतहु शुनल नहि प्रीति॥
विकृत वदन सन क्षण भृगुराम। कोप लोप भेल ठामहि ठाम॥

1 र्णुं (३), 2 माय (२,३), 3 ल (२,३), 4 ई पंक्ति ३मे ६ पंक्ति नीचा मे अछि।

5 रि (३), 6 लय कर (३)।

स्मरण कयल पूर्व्वक वृत्तान्त । रहित रौद्र रस सञ्चरु शान्त ।
अनुचित कहल न ज्ञान प्रभाव । परमेश्वर परिचित चित आब ।
विष्णु महाप्रभु पुरुष पुराण । कहल जाय प्रभु संकट त्राण ।।
कहइत छी हम[1] अपन चरित्र । प्रभु दर्शन सौँ चित्त पवित्र ।।
बाल्य अवस्था मे तप कयल । ध्यान निरन्तर विष्णुक धयल ।।
चक्रतीर्थ मे कयल निवास । अगणित वर्ष दिवस ओ मास ।।
बहुत प्रसन्न विष्णु भगवान । कहलनि हमरा दयानिधान ।।
हमर चिदंश अहाँकाँ प्राप्त । करबनि हैहय प्राण समाप्त ।।
मारब क्षत्रिय एकइस[2] बेरि । कश्यप काँ काश्यपि देब फेरि ।।
हम त्रेतायुग दशरथ गेह । होयब पुत्र तपस्या स्नेह ।।
ततय भेट मिथिला मे हयत । हमर तेज घुरि हमरहि अयत ।।
तखन तपस्या कर अहँ[3] जयब । राम रूप सौँ निर्ज्जित हयब ।।
ई कहि भेला अन्तर्द्धान । ओ आज्ञा हम कयल विधान ।।
सैह थिकहु प्रभु परिचित आज । अनुचित कहल होइछ मन लाज ।।
जनम[4] सुफल भेल देखल चरण । छूटल क्षत्रिय प्राणक हरण ।।

॥ गीतिका संगोते रामकरी छन्द ॥

जय भक्ति-भावन विश्व-पावन रामचन्द्र दयानिधे[5] ।
धृतचाप-सायक सर्व्वनायक जानकीश विधेर्विधे ।।
जय पंचभूत-[6]विभूतिकारण सर्वचारण सद्गते ।
त्वयि सन्तु मन्नतयोथ मामिह पाहि पाहि जगत्पते ।।

॥ सोरठा ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश, मन मानल अपनहि थिकहु ।
अब प्रभु करिय निदेश, भरल तमोगुण सौँ छलहु ।।

॥ चौपाइ ॥

परशुरामकृत[7] स्तुति-तति शूनि । राम प्रसन्न कहल मन गूनि ।।
शुनु भृगुपति हम से वर देब । मन वाञ्छित माँगू से लेब ।।

1 प्रभु (३), 2 श (१,२), 3 तह (२,३), ४ क (३), 5 घे (३), 6 ति (३),
7 ३ सु (२,३) ।

भार्गव कहल अनुग्रह थीक । गत दुर्दिन आगत दिन नीक ।।
अपनैँ जनक सतत हो संग । अपनैँक पदमे प्रीति अभङ्ग ।।
ई वर छोड़ि[1] न माँगब आन । बाढ़ल छल बड़ मन अभिमान ।।
हमर कयल स्तुति नर जे पढ़त । अपनैँक भक्ति ज्ञान मन बढ़त।।
अन्त समय हो प्रभु पद स्मरण । अपनैँक विना आन नहि शरण ।।
राम तथास्तु कहल शुनि लेल । प्रभुक प्रदक्षिण शत शत देल ।।
गेला महेन्द्राचल भृगुराम । जय जयकार भेल एहि ठाम ।।

।। विष्णुपद छन्दः ।।

भजेहं जितरामं रामम् ।
राजन्यालिसमनभृगुपतिना परिवृतसङ्ग्रामम्[2] ।।
पङ्कजलोचनमतिकमनीयं कान्त्या जितकामम् ।।
सुखतो विश्वेषामपि रुचिरं प्रलये विश्रामम् ।।
पालितमुनिमखतुलमुदारन्नाशितदनुजकुलम् ।
हतताटकमथ गौतमवनिताकृतजीवनसफलम् ।।
जनकपुरेश्रित सकलावनिपे[3] किल भग्नाजगवम् ।
रामचन्द्रमगतीनां गतिमिह कृतचरिताभिनवम् ।।

।। हरिपद छन्द ।।

सकल पुन बाजन बाजय लाग ।
भृगुनन्दन[4] रघुनन्दन सौँ प्रभु बचला बड़ गोट भाग ।।
तोड़ल शङ्कर चाप जनकपुर एतदिन अद्भुत लाग ।
वैदेहीपति निकट परशुधर कयल प्रतापक त्याग ।।
देवार्चन फल आज फलित भेल कयल जे बहुविधि याग ।
रामचन्द्र काँ हृदय लगाओल दशरथ मन अनुराग ।।

।। मणिगुण-सरभ नाम छन्द ।।

अरिगण-रहित सहित निजजनसौँ ।
निजपुर पहुँचलसभ सुखि मन सौँ ।।
कर सुख रघुवर सहज सुधन सौँ ।
युवति सहित बर अपन भवन सौँ ।।

---

1 छा (३), 2 दा (३), 3 लो (३), 4 १ में "द" ओ २-३ मे 'न' नहि ।

वितरण कर कत मणि गुणयुत काँ ।
सुरवर सम सुख[1] दशरथ-सुत काँ ।।
सभ जन मन मन कह रघुवर काँ ।
थिकथिन मनुज सकल दुख हर काँ ।।

।। चौपाइ ।।

गाम युधाजित भरतक माम । भरत संग लय गेला गाम ।।
दशरथ नृप आज्ञा अनुसार । शत्रुघ्नहुँ काँ सैह विचार ।।
केकयिभ्राता हर्षित चित्त । भेल सम्पन्न जे छलनि निमित्त ।।
कौशल्यादिक रानी लोक । देवमातृ सनि रहथि अशोक ।।
इन्द्र शची सह शोभित जेहन । वैदेही संग रघुवर तेहन ।।
यशोगान रामक सभ ठाम । नित्यानन्द विमल सुखधाम ।।
कहि न सकथि ब्रह्मादिक विबुध । कत प्रभु चरित कतै हम अबुध ।।

।। गीत गौरी योगिया ।।

जय सगुणे त्रिगुणातीते-जय जय जन-तारिणि सीते ।
जय जय योगिजनानां ध्येये गेये च श्रुतिगीते ।।
परिपालय मां महामाये-जय जय परमेशसहाये ।
सकलशक्तिमयि मिथिलाभूमौ धृतकमनीयककाये ।।
कृतजनकयशोविस्तारे - सेवकहितकरुणागारे ।
रघुनन्दननवघनसौदामनि भगवति सकलाधारे ।।
जय भक्तगृहेर्प्पितवित्ते - कारितजननिर्म्मलचित्ते ।
प्रीतिरस्तु नो भवतीचरणे शरणे मुक्तिनिमित्ते ।।

इति श्रीमन्मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे षष्ठोऽध्यायः ।।

इति बालकाण्डः

1 त (२,३) ।

।। श्रीगणेशायनमः ।।

मिथिला-भाषा रामायण

।। अयोध्याकाण्ड ।।

।। श्लोक ।।

[शार्दूलविक्रीडित छन्दः]

भाले बालकलाकरं गलगरं वामाङ्गवामाधरं
चञ्चन्मौलिसरिद्वरं वृषचरं सर्व्वप्रदं निर्द्दरम् ।
वन्दे पिङ्गजटं मनोहरनटं विश्रान्तिभूसद्वटं
श्रीमन्निष्कपटं सुकृत्तिकपटं भ्राजद्विभूतिच्छटम्[1] ।।

।। मालिनीछन्दः ।।

अवतु जलदनीलस्सद्गृही[2] पुण्यशील-
स्त्रिभुवनखलजिष्णू रामचन्द्राख्यविष्णुः ।
रघुवरवरजाया सर्व्वसम्पन्निकाया
जनिरखिलसहायाः पातु मान्देवमाया ।।२।।

।। चौपाइ ।।

बारह वरष अयोध्यावास । वैदेही संग विविध विलास ।।
श्रीरघुनन्दन भूमिक भार । हरनिहार नरवर अवतार ।।
कहलनि मुनि नारद विधि कान । विधिहुक सभा आन नहि जान ।।
सुरधरणिक अहँ होउ सहाय । कहू सन्देश राम काँ जाय ।।
जे कारण लेलहुँ अवतार । एखनहुँ धरि धरती काँ भार ।।
सीतासहित विपिन कय वास । कयल जाय सुर-अरिक विनाश ।।
विधिक कहल शुनि मुनि मुदचित्त । चलला सुर-अचलाक निमित्त ।।
वीणा सरस राग भल बाज । अति उत्साह देखब विभु आज ।।
मुनि नारदक मनोरथ पूर्ण । अतिथि राम तट से भेल तूर्ण ।।

---

1 छ (१, २), 2 संगृ (३) ।

॥ दोहा ॥

अभ्यागत नारद जतय, गृही जतय श्रीराम ।
कीं अपूर्व आतिथ्य-विधि, विधिसुत[1] प्रभु गुणधाम ॥

॥ चौपाइ ॥

रामचन्द्र उठि कयल प्रणाम । कयल वरासन मुनि विसराम ॥
लेल जानकी चरण धोआय । पूजन कयल विहित सन्याय ॥
स्तुति मुनि कयलनि बहुत प्रकार । अपनैँ प्रभु-वर जगदाधार ॥
कहइतछी आगमनक काज । कहय कहल कमलासन आज ॥
कहलनि विधि संक्षेप समाद । राखथु अपन वचन-मर्य्याद ॥
राम कहल हम करब से काज । गेल जाय मुनि द्रुहिण समाज ॥
बिसरल नहि महि किछु वृत्तान्त । हसि[3] हसि कहलनि सीताकान्त ॥
प्रातहि हम जायब वनवास । भावी दशवदनादि विनाश ॥
चौदह वरष वनी बनि रहब । देखब चरित एखन की कहब ॥
तीनि प्रदक्षिण दण्ड प्रणाम । कय नारद गेल विबुधसुधाम ॥

इति श्रीमैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे

अयोध्याकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ।

1 शु (२, ३), 2 ता (३), 3 हँ (३) ।

मिथिला-भाषा-रामायण अयोध्याकाण्ड

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

दशरथ नृप वर परम उदार । गुरु वसिष्ठ संग कयल विचार ॥
विषय मनोरथ रथ आरूढ़ । उचित कि आब भेलहुँ बड़ बूढ़ ॥
रामचन्द्र भ्रातामे ज्येष्ठ । सकलगुणोपेतहुँ से[1] श्रेष्ठ ॥
तनिक सुयश जन के नहि बाज । रामचन्द्रकाँ करु युवराज ॥
प्रातहि रह सभ वृत्त सुधाम । मन्त्रित करु गुणशाली राम ॥
कहलनि तखन सुमन्त्रि बजाय । अहाँक अधीन कार्य्य समुदाय ॥
श्रीगुरु जे जत कहथि सुकाज । करु सम्पन्न शीघ्रतर आज ॥
सचिवं पुछल कहि देल सभ मूनि । नृपति-तिलक-पद्धति पढ़ि गूनि ॥

॥ हरिपद छन्द ॥

नानावर्ण पताका तोरण मणिमुक्तामय टाँगू ।
स्मारक पत्र लिखल अछि जेहन राजपुरुषसौँ माँगू॥
प्रातःकाल सकल भूषणयुत सत्कुल बहुत कुमारी ॥
मध्य कक्ष मे पूजन हेतुक पूर्व्वहि रह तयारी[2] ।
चतुर्दन्त ऐरावतवंशक कनक रत्नसौँ भूषित ॥
सोड़ह गोट महागज चाही शुभलक्षणनिर्दूषित ॥
कनक-कलस नानातीर्थोदक-पूरित रहै हजारे ।
दधि दूर्व्वाक्षत कुङ्कुम चाही मत्स्य प्रशस्तक[3] भारे ॥
करब थापना तहँ[4] अहँ[5] नव नव तीन गोट बघछाला ॥
रत्नदण्ड अवदात छत्रमणि दिव्य दिव्य वरमाला ॥
दिव्यवस्त्र ओ दिव्य आभरण पूर्व्वहि राखू आनि ।
सत्कृत मुनि पुन रहथि बहुत[6] गुनि वरणकाज कुशपाणि ॥

---

1 हे (२, ३), 2 तै (३), 3 २ ओ ३ मे "क" नहि । 4 तंह (१, ३), 5 अह (१, ३),
6 हूँ (३) ।

गायन वैदिक तथा नर्त्तकी लोक वृत्त भय आबथु।
वाद्यकार नाना बाजन लय नृपतिक द्वार बजाबथु॥
गज हय यान पदाति सज्जसौँ बाहर बहुत सिपाही।
रहथु करथु मन्दिर मन्दिर द्विज देवीपूजन ताही॥

॥ पादाकुलक दोहा ॥

नाना पूजा बलिविधि नाना, हसइत कहल वसिष्ठ।
करु सम्पन्न सुमन्त्र सुमन्त्री, जे जत अछि अवशिष्ट[1]॥

॥ चौपाइ ॥

जे सब कहल वसिष्ठ विधान। वृत्त[2] सकल भेल कहल प्रधान॥
कहि शुनि मुनि पुन कयलनि गमन। रथ चढ़ि रामचन्द्र वरभवन॥
तेसरहि खण्ड छोड़ि रथवेश। अन्तःपुर मुनि कयल प्रवेश॥
रोक टोक नहि बुझि अनिवार्य्य। द्वारपाल परिचित आचार्य्य॥
गुरु आगमन बुझल श्रीराम। कयल कृताञ्जलि दण्डप्रणाम॥
कनकालुका भरल भल[3] वारि। वैदेही लेल चरण पखारि॥
कनकासन पुन बैसक देल। से जल सीचि माथ बिच लेल॥
रामचन्द्र मुख शुनि मुनि वचन। उत्तर कहल उचिततर-रचन[4]॥
अपनैँक चरणोदक धय माथ। धन्य धन्य शिव गिरिजानाथ॥
कयल उचित जन हित उपदेश। अपनैँ रामचन्द्र परमेश॥
सीता-रमा सहित अवतार। हरण हेतु अवनिक दिक भार॥
हमरासौँ प्रभु करु जनु लाथ। रावण[5] मरता अपनैँक हाथ॥
हम गुरु अहाँ शिष्य आचार। करइत छी माया-व्यवहार॥
पितरक पितर गुरुक गुरु राम। देवदेव अपनहि सुखधाम॥
रहइत छी व्यवहारक व्याज। मर्म्म न बजइतछी सुरकाज॥
कहल विधाता हमरा कान[6]। मर्म्म तकर ककरहु नहि ज्ञान॥
ई इक्ष्वाकुवंश गुणधाम। अपनहि अवतरता विभु राम॥
सत्वर दुरित विनाशन कार्य्य। हमर ख्याति अपनैँक आचार्य्य॥
याचक कर्म्म निन्दिताचार। एहि लोभेँ कयलहुँ स्वीकार॥

1 सि (२, ३), 2 व (२, ३), 3 य (३) 4 व (३), 5 न (१, २), 6 म (२, ३),

प्रभुवर विभु अपनैँ मायेश । होयत नहि मायाक कलेश ॥
एतय पठाओल अहकाँ बाप । काज रहल अछि नहि चुपचाप ॥
आयल छी[1] आमन्त्रण काज । प्रातः काल होउ युवराज ॥
सीतासहित विहित उपवास । शुचिसंयम करु विश्व-निवास ॥
धरणी-शयन जितेन्द्रिय कर्म्म । करु करु कहइक थिक गुरुधर्म्म ॥
चललहुँ दशरथ नृप तट फेरि । अपने आयब भोर सबेरि ॥
रथ चढ़ि नृपतट गेला मूनि । राम कहल लक्ष्मणकाँ शूनि ॥
हम प्रातहि होयब युवराज । नाम हमर अहँइक सभ काज ॥
मुनि नृप काँ जे भेल विचार । शुनि एक जन मन हर्ष अपार ॥
कौशल्या काँ वार्त्ता देल । बड़ गोट हर्ष रहल नहि गेल ॥
शुनि आयल छी नृपति समाज । प्रातहि रामचन्द्र युवराज ॥
शुनल सुमित्रा मन सन्तोष[2] । धन दय बहुतक कर परितोष ॥
दुहु[3] जनि मिलि पुन राम निमित्त । लक्ष्मी-पूजा करथि सुचित्त ॥
बरु शशि उष्ण शीतकर भानु । घनसारक सम शीत कृशानु ॥
दशरथ कहल वितथ भय जाय । तौँ अकाल मे उदधि शुखाय ॥
कामुक नृप केकयी अधीन । ई गुनि गुनि मन होइछ दीन ॥
दुर्गार्च्चना करथि मन लाय । कौशल्या केकयि-भय पाय ॥

॥ गीत तिरहुति माधवीय बराड़ी छन्द ॥

से करु देवि दयामयि हे, थिर रह महराज ।
पूरिअ हमर मनोरथ हे, केकयि नहि बाज ॥
नृपतिक हृदय ककर वश हे, ककरो नहि मीत ।
सौतिनि सामरि सापिनि हे, मन हो भयभीत ॥
तुअ शङ्करि हम किङ्करि हे, यावत रह देह ।
तुअ पद-कमल नियत रह हे, मोर अचल सिनेह ॥
रामचन्द्र सीतापति हे, होयता युवराज ।
त्रिभुवन आन एहन सन हे, नहि हित मोर काज॥

1 ३मे "छी" नहि । 2 नतो (२, ३), 3 इ (३) ।

॥ सोरठा ॥

लेब जनम भरि नाम, रामचन्द्र बन जाथि जोँ ।
सुरमण्डलि एक ठाम, कहल सरस्वतिसौँ तहाँ ॥
बद्धाञ्जलि सभ ठाढ़, करु उपाय नहि काल अछि ।
संशय मन हो गाढ़, राज्य पाबिकेँ राजमद ॥

॥ रूपक-दण्डक छन्द ॥

शुनु शुनु देवि शारदा सुन्दरि, जाउ अयोध्या आजे, करु व्याजे
जाय उपाय तेहन करु सत्वर, राम न पावथि राजे, सुर काजे
प्रथम मन्थरा काँ अँहाँ मोहब, तखन केकयी रानी, ठकुरानी
दशरथ-नृपति-मनोरथ-पङ्कज, कानन-दलन-हिमानी, वनु वाणी

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला संगीतानुसारेण पर्व्वतीय वराड़ीय छन्द]

चललि शारदा सुर-हित-काज । दशरथ वनितागार समाज ॥
कय प्रवेश दाशी-गल-देश । पटु पण्डिता मन्थरा वेश ॥
रानिहुँ काँ वानी[1] नहि टेर । बाजवधू बुझ जेहन बटेर ॥
नृपतिक उच्च भवन आरूढ़ि । पुर शोभैँ संक्षोभित मूढ़ि ॥
अनमनि पुछलनि कहु कहु धाइ । बड़गोट उत्सव की थिक आइ ॥
हर्षित धन कौशल्या देथि । याचक विप्र लोक से लेथि ॥
कहल धाइ रामक अभिषेक । करता भूपति उचित विवेक ॥
केकयि रानिक गेलि समीप । भेम्ह[2] मन्थरा उत्सव दीप ॥
दासी भाभट कहल कि जाय । छाती पिटि पिटि भूमि लोटाय ॥
कहलनि केकयी कह की भेल । कनइत किछु नहि उत्तर देल ॥
मिथ्या दुःखक स्वाङ्ग अनूप । डरलै सौँ हटि भेलि से चूप ॥
कानब हम नहि कानत आन । सङ्कट ककर पड़ल[3] अछि प्राण ॥
पुछलनि केकयि कह हित काज ! पड़ल कि कूबड़ि संकट आज ॥
शुनु स्वामिनि विधिगति विपरीत । नृपकाँ छल अपनहि मे प्रीति ॥
से छल सभ छल भेल परिणाम । युवराजक पद पओता राम ॥
सकल वस्तु तिलकक भेल वृत्त । ककरो कृत नहि रहल निवृत्त ॥
शुनु शुनु[4] सुमुखि विमुख विधि भेल । भरतो अपनेक नैहर गेल ॥

1 नि (२, ३), 2 भेँम (१, २), 3 र (१, २), 4 शृ (१, २) ।

नृपतिक अनुमति सौतिनि[1] सङ्ग । दिन लग आयल देखब रङ्ग ।।
अहँ गर्वित पलँगहिँ पर शूति । अनकर किछु नहि मानिअ जूति ।।
गुण गौरव तामस विस्तार । डरसौँ कि कहब अपन कपार ।।
सुखिति[2] सुमित्रा रहती वेश । लक्ष्मण रामक मतहि प्रवेश ।।
अहँक अभाग्य कहल की जाय । सभ गुण गोबर अवसर पाय ।।
नीति-निपुणता शुनल पुरान । शुनलहुँ नृपति मित्र कहुँ कान ।।
चल-मति चढ़लहुँ स्वामिनि चाँच । घर उपवास द्वारपर नाच ।।
अन्तःपुर सम्प्रति अभिमान । बाहर घर घर आनक आन ।।

।। हरिपद छन्द ।।

[मिथिला संगीतानुसारेण श्रीछन्दोनामापि]

शुनि मन हर्ष केकयी रानी कहल माँग से पयबैँ ।।
रामचन्द्र युवराज सत्य तौँ तोँ अशोचि भय जयबैँ ।
अन्तःपुर मे कहल लोक के गीत समय शुभ गाबैँ ।।
कार्य्य-सिद्धि-कारण हर-गिरिजा-गणपति लगलि मनाबै ।।
नव नव वस्त्र विभूषण नव नव रानी सौँ जन पाबै ।।
हर्षक नोर[3] भरल रानी-दृग सरस सुराग सुनाबै ।।
महाविघ्नकारिणी मन्थरा ग्रहण न कर मणिमाला ।।
उत्सव गीति प्रीतिसौँ शुनय न हृदय लागु जनि भाला ।।

।। चौपाइ ।।

एक दोष नहि साधल मौन । बजला जाइछ खायल नोन ।।
नृप-चिन्तित होयत जौँ काज । क्षण मे स्वामिनि[4] छुटत समाज ।।
कत हम रहबं कि ककर कहाय । शीरा[5] बाँधल भाठ शुखाय ।।
जनि बल सौँ चलइत छल गाल । तनिके नृप की करता हाल ।।
हमहूँ[6] कुबड़ि रहब कहु चूप । आगि लाग घर खनब न कूप ।।
स्वामिनि[7] चरण कहैछी छूबि । अवश मरब सरयूमे[8] डूबि ।।
केकयि कहल केहन तोर ज्ञान । मन अबइछ बजइछ केओ आन ।।

1 ३मे 'क' बेशी । 2 त (३), 3 नी (३), 4 नी (३), 5 शो (३), 6 हुँ (३), 7 नी (३),
8 ३मे "ग" अधिक ।

बिन[1] पढ़लय[2] प्रतिभा अभ्यास । गण विशेष तन तोर निवास ॥
कूवड़ि कहल कहर भेल काल । व्यभिचरकतहु कि विधि-लिपि भाल॥
एखनहुँ धरि केकयि काँ काट । ई विवाह सौँ चिन्हल ललाट ॥
हमरा पर की पर उतपात । उच्चहि घर पर प्रबल बसात ॥
केकयि शुनल कहल खिसिआय । बजइतछेँ अनुचित अन्याय ॥
उत्सव समय कहैछेँ आन । कोनी गायक भिन्न बथान ॥
भरतहुसौँ प्रियकर मोर राम । कौशल्या छथि सौतिनि नाम ॥
सभ कर हमर हृदय-रुचि राखि । की होइत छौ अटपट भाखि ॥
दुस्सह कान करैछेँ घोल । डोकाकाँ फूजल मुह बोल ॥
एक किङ्करि काँ कहब बजाय । मारति तोरा कुबड़ तकाय ॥
बड़ि भभटिनि कपटिनि दुरि गेलि[3]। भवनमे रहय योग्य नहि भेलि ॥
से शुनि कुबड़ी कहइछ कानि । हा हा हित करइत हो हानि ॥
मारी[4] मरी हलाहल खाइ । धिक जीवन सौँ भल मरि जाइ ॥
राजभवन नहि कारागार । बुझल राग बाजल भल तार ॥
परइङ्गित जन जे नहि जान । तनिका[5] जानब पशुक समान ॥
छल भरोस अहँ किछु बुधिआरि । कहि शुनि स्वामिनि बैसलहुँ हारि॥
कण्ठ शुखाइछ पिउब न पानि । चट पट खसब अटासौँ फानि ॥
भरतो हयता रामक दास । की वन जयता लक्ष्मण त्रास ॥
सत्वर प्राण दैव लय लेथि । भल नहि सौतिनि स्वामिनि देथि ॥
शुध मति अपनै काँ नहि चाड़ि । हम दैछो सभटा मन पाड़ि ॥
दुइटा[6] वर नृप दशरथ देल । अछिए न्यासित अहँ नहि लेल ॥
सुरपति दशरथ केँ बजबाय । कहल धनुर्द्धर होउ सहाय ॥
असुर भयङ्कर समर विरुद्ध । नृप दशरथ सौँ माचल युद्ध ॥
दशरथ रथक अक्ष सौँ कील । समर खसल भय गेल छल ढील ॥
कील स्थान हाथ अहँ[7] धयल । स्वामिनि साहस अतिशय कयल ॥
नृप समरोत्सव से नहि जान । राखल सति नृपतिक तहँ प्रान[8] ॥

---

1 नु (३), 2 पढ़ने (३), 3 ल (३), 4 म (३) 5 क (२, ३), 6 'इ' तीनूमे दीर्घ, 7 हाँ (३), 8 ण (३)

असुरक प्राण नृपति रण हरल । तखन दृष्टि अपनै दिश पड़ल[1] ॥
कहि आश्चर्य्य लगाओल अङ्क । माँगु माँगु वर कहल निशङ्क ॥
अहँ तहँ कहल कृपाकर नाह । सत्य-प्रतिज्ञ वचन निर्व्वाह ॥
वर दुइगोट नाथ जौँ देब । अवसर पड़त[1] तखन हम लेब ॥
से लिय माँगि कतय किछु त्रास । मन पड़ि आयल कयल प्रकास ॥

॥ हरिपद छन्द ॥

[मिथिला संगीतानुसारेण नेपाल बराड़ीय छन्दोपि]

शञ्च शञ्च पुन देवि शारदा केकयि कण्ठ समयिली ।
दया क्षमा मति नति उदारता गुणतति दूर पड़यिली ॥
कोप-भवन मे केकयि करुणाशून्या गहना त्यागल ।
त्रेतामे कलि फलित-मनोरथ राजभवन मे जागल ।
अनृत-वचन-रचनाकर दासी निकट बजाओल रानी ॥
कहलनि कह कह की कहाँ के कर के कर मोर हित हानी ॥
कि कहब सुमति मन्थरा हमरा आँखि दुहुक तौँ तारा ।
कर से उचित उपाय मन्त्रिणी सभ तोहरहि शिर भारा ॥
तोहर पहिल विचार शुनल नहि बहुत अनादर सहलेँ ।
जे जानहि से सान आब तौँ बहुत कथा की कहलेँ ॥
जौँ स्वामिनि विश्वास हमर अछि बुद्धि-साध्य अछि काजे ।
सावधान रहु हमर बुद्धि-बल देखि लेब सभ आजे ॥
ठामहि ठाम सकल रहि जायत जे अछि तिलकक साजे ।
शपथ[2] करैछी दशरथ अपथैँ चलि शकता महराजे ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला संगीतानुसारेण केदार केदारीयं छन्दोपि]

करु करु स्वामिनि अवनी शयन । भृकुटी कुटिल रौद्ररस नयन ॥
मलिन वसन तन फूजल केश । हृदय कतहु नहि करुणक[3] लेश ॥
परिहरु मुख पङ्कज मृदु हास । सामरि सापिनि सन निश्वास ॥
वानीवश रानी मतिहीनि[4] । भय गेल दासी कुमति अधीनि[5] ॥

इति श्री मैथिल चन्द्र-कवि-विरचिते मिथिला-भाषा-रामायणे द्वितीयोऽध्यायः ।

---

1 र (१,२), 2 त (२,३), 3 २ ओ ३ मे "क" नहि । 4 न (३), 5 त (३) ।

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला संगीतानुसारेण श्री मालव छन्द]

काज मन्त्रि कें कहि नृप देल । अपनैं अन्तष्पुर मे गेल ॥
नृपति न देखल केकयि आँखि । की वृत्तान्त उठल नृप भाखि ॥
अबइत हसइत नित जे आब । केकयि काँ छल सिद्ध स्वभाव ॥
नृप चिन्तातुर चित्त नितान्त । पुछलनि दासी सौं वृत्तान्त ॥
स्वामिनि तोर कतय छथि आज । कोप-भवन मे जनु महराज ॥
आह आह की कोप निदान । सापक चरण साप नृप जान ॥
की भेल नृपतिक प्रबल प्रताप । कुबड़ि-कथा शुनि थरथर काँप ॥
शञ्च शञ्च केकयि तट जाय । थर थर कर कर परसल काय ॥
त्यागि पलंग की धरणी शयन । जिबइत हम देखइत छी नयन ॥
असमय त्यागु कलावति कोप । करु जनु हमर मनोरथ लोप ॥
चलु निज भवन कि भेलहुँ बताहि । बड़ उत्सव दिन दिअ निमाहि[1] ॥
मलिन वसन धारण धिक ज्ञान । अलङ्करण तन प्रत्याख्यान ॥
कहु निर्धन काँ बड़ धनि करिय । मानी धनी सकल धन हरिय ॥
नारी पुरुष अहित जे हयत । दण्डबद्ध जीवन सौं जयत ॥
सुन्दरि सुमति कहू की आन । हेतु अहाँक त्यागि देब प्राण ॥
रामक शपथ कहैछी खाय । करब न अहाँ विषय अन्याय ॥
सत्य पराक्रम शोभाधाम । प्राणहुँ सौं प्रियतम छथि राम ॥
कुबड़ी कल बल कहय इरोत । चोर सहथि की कतहु इजोत ॥
शुनि से नृपति देल अनठाय । बान्धल[2] सिंह जकाँ पछताय ॥
दासी चित्त भेल निर्भीक । कुकुरक भागें टूटल सींक ॥

1 निर्वाह (१,२) 2 न्ह(३) ।

॥ षट्पद छन्द ॥

राम शपथ[1] नृप कयल कहल शुनि केकयि रानी ।
शञ्च उघाड़ल आँखि सत्य बान्धल[2] नृप ज्ञानी ॥
देवासुर सङ्ग्राम मध्य वर अहँ दुइ देलहुँ ।
से अछि न्यासित हमर प्रयोजन विनु नहि लेलहुँ ॥
भरतँ होथु युवराज नृप राम जाथु दण्डक गहन ।
मुनिक वेष[4] चौदह बरष हमर याचना अछि एहन ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला संगीतानुसारेण सरसासावरीयं छन्दः]

हमर कहल नहि होयत भूप । डूबि मरब धसि पोखरि[5] कूप ॥
गरल अशन कय त्यागव प्रान[6] । सङ्कल्पित जौँ होयत आन ॥
केकयि कठिन वचन शुनि कान । नृप खसला मूर्छित अज्ञान ॥
अशनि पतन तरुगण गति जेहन । केकयि कथा श्रवणसौँ तेहन ॥
मूर्छित दशरथ नृप काँ जानि । अन्तःपुर जनि उठली कानि ॥
दशरथ मन मन करथि विचार । विषमय विषम विषय संसार ॥
की दुःस्वप्न भ्रमाकुल चित्त । बूझि न पड़इछ एकर निमित्त ॥
मन नृप कह निद्रा[7] नहि गाढ़ि । बाघिनि सनि रानी तट ठाढ़ि ॥
वचन न एहन शुनाबिय कान । चट पट दय उड़ि जायत प्रान ॥
सुमति सुदति सति की मति आज । भोगब अहाँ अकण्टक राज ॥
कौशल्या काँ नहि किछु काज । अहँइक[8] राम अहँक सम्राज ॥
भेल कुसङ्ग ज्ञान सभ नष्ट । हमरा शिर मरणाधिक कष्ट ॥

॥ मत्तगजेन्द्र छन्द ॥

निर्दय चित्त हलाहल घोरि कहू हम की बरु आनि पिआऊ ॥
श्याम भुजङ्गमसौँ अंग अंगमे केकयनन्दिनि आनि डसाऊ ॥
कण्ठ मे बाँधि शिला बड़ि गोटि समुद्रक मध्यमे जाय डुबाऊ ॥
दुस्सह राम-वियोग-कथा हमरा जनु कामिनि कान शुनाऊ ॥

---

1 त (२), 2 न्ह (२), 3 तीनूमे "थ" । 4 भे (३), 5 ष (१,२), 6 ण (३), 7 न्द्रा (१,२), 8 अहइछ (२) कहइछ (३) ।

॥ चामरछन्द ॥

केकयी अहाँक दोष रामचन्द्र कैल की
मन्थरा कुमन्त्रणा[1] सुबुद्धि कान धैल की
जीवनावल्लब सौँ अये वियोग भेल जौँ
लोकमे कलङ्क देह छोड़ि जीव गेल तौँ

॥ चञ्चला छन्द ॥

चञ्चला[2] समान गौरि रामकाँ रहै दिऔनि ।
राज पाट कोष ओ समस्त सैन्य लै लिऔनि ॥
नीक ई कहैतछी पतिव्रता-विचार-सार ।
स्पष्ट कष्ट नष्ट हैत छूट लोक मे अभार ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला संगीतानुसारेणेदं द्राविण्यासावरीयं छन्दः]

दशरथ-दशा कहल की जाय । केकयिक पअर धयल लपटाय ॥
कहु की रामचन्द्र सौँ भीति । कयल कसाइनि सनि की रीति ॥
कहलनि केकयि भेलहुँ बताह । शुनितहिँ वचन हृदय उठ दाह ॥
सत्य-प्रतिज्ञ सुयश बड़ गोट । भय जायब मर्य्यादा छोट ॥
रामक शपथ[3] कयल कय बेरि । वर माँगल हम अवसर हेरि ॥

॥ नाराच छन्द ॥

कहू कहू नृपेन्द्र की वरप्रदान देल जे
वृथा कथा करैतछी कि आइ माँगि लेल से ।
कनैतछी बजैतछी जनैतछी न की अहाँ
विना विचार काज मे प्रयत्न कैल की कहाँ ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिलासंगीतानुसारेणेदं शुद्धमलारीयं छन्दः]

धरणी शयन चयन नहि चित्त । दुर्गति कामिनि प्रीति निमित्त ॥
संज्ञाशून्य मृतक समतूल । केकयि कहथि वचन प्रतिकूल ॥

1 न्विणी (३), 2 २ न्विणी मे "ल" बेशी । 3 स (३) ।

विगत रात्रि जनु बरष समान । दशरथ आधि ज्ञान के आन ॥
बाहर उत्सव हर्षित लोक । अन्तःपुर पसरल बड़ शोक ॥
अरुणोदय भेल नृपति जगाब । वन्दी गायन गुणगण गाब ॥
केकयि शासन शुनि भयभीत । विरुद पढ़ी जनु गाबी गीत ॥
सम्प्रति स्वस्थ चित्त नहि भूप । की आयल छी घसकू चूप ॥
तिलक निमित्त वस्तु सभ धयल । मन्त्रि सुमन्त्र वृत्त सभ कयल ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यक जाति । निद्रा तनिकाँ आँखि न राति ॥
ऋषिकन्या-गण पाँतिक पाँति । बाल वृद्ध तिय भाँतिक[1] भाँति ॥
पीताम्बर सुन्दर श्रीराम । कखन देखब छवि शोभाधाम ॥
कटक किरीट सर्व्वाभरण । कोटि-मनोभव-शोभा-हरण ॥
नव घनश्यामल शोभागार । कौस्तुभ-शोभित परमोदार ॥
स्मितमुख गजवर-पीठ विराज । लोक कहत जय जय युवराज ॥
श्वेतछत्र धर लक्ष्मण सङ्ग । देखब कखन तखन जे रङ्ग ॥
उत्सुक चित्त सकल पुर लोक । द्वार दोसर धरि नहि छल रोक ॥
जागल छला राति महिपाल । उठला(ह[2])अछि नहि एतबहु[3]काल ॥
अनुदित दिनकर उठथि सदाय । आइ शुतल छथि की अलसाय ॥
भेल अबेरि शयन छथि भूप । मन्त्रि विचार कयल चुपचूप ॥
चिन्तातुर नृपतिक घर जाय । शञ्चहि जय जय शब्द शुनाय ॥
नृप अचेष्ट नहि शुन किछु शोर । मुद्रित[4] नयन युगल बह नोर ॥
धरणी शयन न नयन उघार । केकयि नयन कोप विस्तार ॥
करुण-रसादित दशरथ भूप । केकयि बनली रौद्र स्वरूप ॥
मन्त्री मन व्याकुल अथऊत । विधि गति टारि न ककरो बूत ॥
केकयि केँ कहलनि कर जोड़ि । कहु की थिक तामस केँ छोड़ि ॥
निन्द न सगर राति नृप नयन । विकल नृपति कीदहुँ छथि शयन ॥
बुझि कत पड़इछ की थिक आधि । देखल शुनल नहि एहन समाधि ॥
राम राम रटइत भेल भोर । बहल बहल चल नयनक नोर ॥
वारिज-नयन रामकाँ लाउ । सत्वर रामक वदन देखाउ ॥
स्वामिनि लायब राम बजाय । नृप-आज्ञासौँ से थिक न्याय ॥

1 भा (१,२) भां (३), 2 तीनूमे "उठलाह" अछि। 3 बा (३), 4 मुनल (३)।

देखब राम कहल नृप कानि । सत्वरतर तनिकाँ दिअ[1] आनि ॥
शीघ्र सुमन्त्र कयल शुनि गमन । जाय अवारित रामक भवन ॥
सरसीरुह-लोचन शुनु राम । चलु चलु सम्प्रति भूपति-धाम ॥
शीघ्र बजाओल अछि किछु काज । गड़बड़ सन मन लगइछ आज ॥
लक्ष्मण-सहित राम रथ हाँकि । नृप लग पहुँचल सभ दिश[2] ताकि ॥
कयल पिताक चरण परणाम । नृप जानल आएल छथि राम ॥
हुनकाँ हृदय लगाबक बेरि । सम्भ्रम उठला खसला फेरि ॥
रामचन्द्र बजला हा हाय । लेल पिता काँ अङ्ग लगाय ॥
राज-द्वार उच्चस्वर कान । नृपकाँ की भय गेल अग्यान ॥
राजतिलक संभृति भेल व्यर्थ । अन्तःपुर किछु भेल अनर्थ ॥
राम पुछल नृप-आधि-निदान । केकयि कहलनि हमरा ज्ञान ॥

॥ दोबय छन्द ॥

[राग-तरंगिणी-मतानुसारेण शुद्धकोडारीयं छन्दः]

शुनु शुनु राम काम-मद-मोचन, शोचहिँ भूपति मरता ।
काज-जहाज अधीन अहँक अछि, सङ्कट-जलनिधि तरता ॥
अहाँ सुपुत्र वंशमे भेलहुँ, पिता-धर्म सम राखब ।
अहँक पिताकाँ कहइत लज्जा, हम मिथ्या नहि भाखब ॥
वर दुइ गोट धयल छल पूर्व्वक, नृप सुकृती सौँ माँगल ।
अपना नीकक सभकाँ इच्छा, अयश-पताका टाँगल ॥
बापक जौँ सन्ताप हरब नहि, नरकक होएता[3] भाजन ।
सत्य-प्रतिज्ञ कथा कत जाएत, अयशक बाजत बाजन ॥
शुनु शुनु श्रवण[4]-शूल सम वाणी, जननी जानि सहैछी ।
भाखिअ[5] अनृत कथा न राम हम, शपथहिँ सत्य कहैछी ॥
पिता-काज जीवन[6] काँ त्यागब, विष भक्षण कय मरबे ।
सीता ओ कौशल्या त्यागब, राज पाट की करबे ॥
विन कहलहुँ जे पिताकार्य्य कर, से थिक उत्तम बालक ।
मध्यम कहलेँ करथि न कहलेहु, करथि अधम कुल-घालक ॥

1 य (३), 2 शि (३), 3 य (३), 4 शूल श्रवण (३), 5 य (३), 6 ३ मे "न" नहि ।

पिता कहल नहि करब अन्यथा सत्य प्रतिज्ञा कयलहुँ ।
तनिकर आज्ञा-पालन-कारण, कहु कि वृत्त भय अयलहुँ ।।
करुणारहित कहल शुनि केकयि, धन्य धन्य हे राम ।
जनक-अभीष्ट शिष्ट जन करइछ, त्रिभुवन तनिके नाम ।।
अहँ युवराज-काज राजा जे, मङ्गबाओल सम्भार ।
भरत होथु युवराज ताहिसौँ, ई सिद्धान्त विचार ।।
शुनु गुण-धाम राम कहइत छी, दण्डक-वन अहँ जाउ ।
चौदह वर्ष वनी भय रहुगय, कन्द मूल फल खाउ ।।
स्मितमुख राम कहल केकयि सौँ, भरत होथु युवराजे ।
हम दण्डक-वन गमन करैछी, नृप व्रत-पालन काजे ।।
बड़ गोट शोच पिता हमरासौँ, नहि बजइत छथि आजे ।
प्रजा पालना भरत करथु भल, भोगथु सभ सम्राजे ।।

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण शंकूकनाटीयं छन्दः]

देखलनि नृपति राम छथि ठाढ़ । कयल विलाप दुःख बड़ गाढ़[1] ।।
उतपथ-वर्त्ति भ्रान्ति मन जानु[2] । हम स्त्रीजितक वचन नहि मानु।।
बलसौँ भोगिअ समुचित राज । अनुचित कहत न[3] एक समाज ।।
एहि सौँ हमरहुँ होयत न पाप । हरु रघुनन्दन मन सन्ताप ।।

॥ रूपमाला छन्द ॥

[मिथिला संगीतानुसारेण केदारमालवीयं छन्दः]

जगन्नाथ अनाथ हमछी प्राण-वल्लभ राम ।
विपिन जायब त्यागि हमरा शून्य पापिनि-धाम ।।
कयल स्त्री-विश्वास जे हम तकर फल परिणाम ।
हमर मन-अभिलाष सभटा रहल ठामहि ठाम ।।
नृपति ई कहि रामकाँ निज हृदय लेल लगाय ।
उच्चस्वरसौँ करथि क्रन्दन दशा कहल कि जाय ।।

1 बा (३), 2 नू (३), 3 ने (३) ।

राम निजकर-कमल जलसौँ नयन देल धोआय ।
कयल जाय न पिता चिन्ता आब की पछताय ।।
हमहुँ पुनि घर घूरि आयब भरत छथि युवराज ।
राजसौँ वन कोटि गुण सुख लाभ मुनिक समाज ।।
कहब चिन्ता जननि करु जनु करब चरण प्रणाम ।
किछु विलम्ब न तखन जायब जनकतनया-धाम ।।
केकयी काँ आधि छूटल एतय आयब[1] फेरि ।
पिता-चरण-सरोज पर शिर धरब हम कय बेरि ।।
कय प्रदक्षिण तखन गेला जननि दर्शन राम ।
होम पूजा ध्यान बहुविध दान हो तहि ठाम ।।

॥ दोहा ॥

रामचन्द्र- आगमन किछु कौशल्या नहि जान ।
विभु विष्णुक कयले[2] छली राम-हेतु से ध्यान ।।

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे तृतीयोऽध्यायः ।

1 ए (१), 2 ने, (३) ।

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण मिथिला गौड़[1]-मालव छन्द]

जैँ[2] कौशल्या जानथि शञ्च । तेहन सुमित्रा कयल प्रपञ्च ॥
रामक छवि देखल भरि नयन । नील-कमल-निन्दक छवि अयन ॥
लेल अङ्क भरि लगइत गोड़ । सुत-मुख देखि हर्ष नहि थोड़ ॥
कौशल्या उठि कहलनि आउ । देव-प्रसाद मधुर किछु खाउ ॥
जननि न अवसर बड़ अगुताइ । चललहुँ अछि दण्डक-वन आइ ॥
केकयि-वरक विवश महिपाल । विकल पड़ल छथि चिन्ताजाल ॥
भरत एतय होयता युवराज । हमर कुटी मुनि वनी समाज ॥
कन्द मूल फल भल आहार । चौदह वर्ष एहन व्यवहार ॥
आयब अवश तदुत्तर फेरि । चिन्ता जननि न करु एहि बेरि ॥
शुनि मूर्च्छित उठि कहलनि हाय । हयहूँ वन जायब से न्याय ॥
अहँ[3] विनु कोन गति जीवन रहत । विषम वियोग प्राण कत सहत ॥
राज भरत नृप-अनुमति लेथु । अहँ काँ विपिन-वास जनु देथु ॥
केकयि भूपक[4] कयल न दोष । सुत सज्जन पर एतगोट रोष ॥
नृप छथि पिता हमहुँ छी माय । हमहुँ देव नहि कानन जाय ॥
वचन हमर जौँ धरब न कान । शुनु सुत त्यागब एखनहि प्राण ॥
शुनि लक्ष्मण कौशल्या-करुण । भृकुटी कुटिल नयन अति अरुण ॥
कहल शूरतासौँ से वाक । केकयि राजा देलनि डाक ॥
सभ जन शुनु किछु हमर न दोष । प्रलय-करण मन जागल रोष ॥
केकयि-वश उनमत्त बताह । बड़ अनुचित कर धरणी-नाह ॥
नृपकाँ देब हरी मे ठोकि । भरतक हृदय बाण देब भोकि ॥
एतटा दर्प्प केकयी-चित्त । रामचन्द्र वन वृथा निमित्त ॥

---

1 शङ्कूक नाटीय (३), 2 नै (३), 3 हाँ (३), 4 ष (२) ।

चलु चलु नाथ होउ युवराज । तखन देखब संसारी काज ॥
जनिकाँ अरुचि होयत मन आन । तनिक हृदय मे बेधब वाण ॥
राम कहल शुनु लक्ष्मण वीर । असमय त्यागु धनुष ओ तीर ॥
अहँक सत्त्व हमरा अछि ज्ञात । नहि कर्त्तव्य एखन उत्पात ॥
देखइत छी जे ई संसार । सकल भरल विष विषय-विकार ॥
विद्युत जेहन चमकि छवि जाय । जानब तेहन भोग्य[1]-समुदाय ॥
अनल-तप्त लौहक पर जेहन । वारि-विन्दु आयुक गति तेहन ॥
भेक व्याल-गलमे पड़ि जाथि । टप टप तँओ माछी खाथि ॥
काल-व्याल सौँ जन छथि त्रस्त । तदपि न विषय-मनोरथ अस्त ॥
माय बाप सुत भ्राता दार । प्रपा-मिलन सन सुख संसार ॥
देह भोग लय पल पल खिन्न । ई शरीर परुषहु[2] सौँ भिन्न[3] ॥
बन्धु-समूह-जनित सुख-भोग । जानब नदिया-नाव-संयोग ॥

॥ हरिपद ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण देवराज-विजय छन्दः ॥]

लक्ष्मी थिकि चपला छाया सनि तन-तारुण्य-तरङ्ग ।
स्वप्नोपम वनिता-सुख तेहन मन अभिमान अभङ्ग ॥
दिनकर-देव-गतागत[4] घटइछ आयु क्रमहि जन-तनसौँ ।
अनकर जरा मरण काँ देखथि किछु नहि बूझथि मनसौँ ॥
काँच-कलश-जल-उपमा आयुक जाइत छथि तनु तन सौँ ।
रोग प्रबल रिपु देह-हरण कर लपटायल मन धनसौँ ॥
व्याघ्री जरा धरय चाहै मृति सङ्गी समय तकै छथि ॥
विश्रुत राजा अहं[5]-भाव-वश देह समस्त कहै छथि ॥
त्वचा अस्थि[6] रक्तादि भरल जे तनमे कह की निष्ठा ।
अन्त समय मे देह होइछथि कृमि की भस्म कि विष्ठा ॥

1 भा (३), 2 ३ मे "हु" नहि । 3 म्न (३), 4 "न (३), 5 तीनू मे पाठ अछि "अहँ भाव" ।
6 स्ति (१,२) ।

आत्मा देह थिकथि नहि अह[1] काँ लोक दग्धकर इच्छा[2] ।
सकल लोक अभिमानहि होइछ दैछी लक्ष्मण शिक्षा ।।
हम छी देह एहन मतिकेँ अहाँ सदा अविद्या जानू ।
थिकहुँ चिदात्मा हम न देह छी ई मति विद्या मानू ।।
संसृति-हेतु अविद्या जानब विद्या संसृतिहरिणी[3] ।
विद्याभ्यास मुमुक्षु-काज थिक मननादिक कय करणी ।।
शत्रु काम क्रोधादि ततय छथि सभसौँ दुर्ज्जय क्रोधे ।
जै वश जननि पिता भ्रातादिक जन मारैछ अबोधे ।।
मूल मनस्तापक कोपे थिक संसारक से[4] बन्धन ।
धर्म्म-नाशकर कोपे मानब अनल बनल विनु इन्धन ।।
यम साक्षात कोपकाँ[5] जानब तृष्णानदि वैतरणी ।
नन्दन वन सन्तोष सदा थिक शान्ति कामगवि करणी ।।
शान्त-शील रहु कोप करिय जनु शत्रु केओ नहि हयता ।
शत्रु मित्र ओ उदासीन जन एक दिन सभ जन जयता ।।
देहेन्द्रिय[6] मन प्राण बुद्धिसौँ आत्मा थिकथि विलक्षण ।
स्वयं-ज्योति आकार-रहित छथि ज्ञाता शुद्ध विचक्षण ।।
देहेन्द्रिय-प्राणादि-भिन्न जन आत्मा बुझथि न यावत ।
जन्म-मृत्यु-संसार-दुःखसौँ पीड़ित होइछथि तावत ।।
बुद्ध्यादिक सौँ बाहर आत्मा एहन[7] भावना राखू ।
सुख दुख प्रारब्धक फल खेद न ज्ञानामृत केँ चाखू ।।
अन्तःशुद्ध-स्वभाव बनल रहु बाहर रहु व्यवहारी ।
कर्म्म-दोष किञ्चित नहि लागत बनल रहब संसारी ।।

---

1 तीनूमे पाठ इऐह अछि । कविकेँ प्रायः 'अहँ' अभिप्रेत छनि । 2 २ तीनूमे पाठ 'छा', 3 हा (३), 4 ३मे "से" नहि, 5 की (३), 6 स(३), 7 य (१,२) ।

कहल भावना जननी राखब दुःख[1] न होयत मन मे।
हमर आगमन करब प्रतीक्षा जाइत छी हम वन मे॥
चौदह वर्ष अर्द्ध क्षण सन मन भासित होयत ज्ञाने।
आज्ञा देल जाय वन जायक मानब नहि मन आने॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण धनछीशाम्भवी छन्दः]

वननिवास मन हर्षित करण। कयल प्रणाम[2] जननि-युग-चरण॥
कौशल्या पुनि[3] अङ्क लगाय। आशिष देलनि देव मनाय॥
ब्रह्म[4] विष्णु शिव सुर गन्धर्व्व। रक्षा अहँक करथु मिलि सर्व्व।
रौदहि माँटि होअ जत झाम। तेहि वन चललहुँ अछि अहँ राम॥
स्थित चलइत करयित वन शयन। रवि शशि राखथु अहँपर नयन॥
पुन पुन जननी हृदय लगाय। आशिष देल कहल वन जाय॥
रामक लक्ष्मण कयल प्रणाम। नोर भरल लोचन अभिराम॥
देव कयल मन संशय नाश। हमहु करब गय कानन वास॥
आज्ञा देल जाय प्रभु आज। अपनैक त्यागब हम न समाज॥
हम न रहब एत पापी धाम। नव नव रीति होयत सङ्ग्राम॥
अनुचित सहब न होयत मारि। क्रोधेँ धरब तीर तरुआरि॥
भरत सहित तनिकर हित जानि। मारब समर धरब निज बानि॥
त्यागि चलब तौँ त्यागब प्राण। हे रघुनन्दन करु दुख त्राण॥
चलु चलु लक्ष्मण कहलनि राम। गेला जनकनन्दिनी[5] धाम॥
प्राणनाथ काँ अबइत जानि। सीता कनकपात्र लय पानि॥
पति-पद-पङ्कज लेल धोआय। सिंहासन पर बैसला जाय॥
नृपति किरीट आदि नहि अङ्ग। सेवा गज वाजी जहि सङ्ग॥
बाजन बाज न छत्र न श्वेत। कुशल सकल अछि नृपनि-निकेत॥

1 दु (३), 2 प्रा (१,२), 3 न (३), 4 ह्मा (१,२), 5 तीनूमे पाठ 'न्द'।

पअरहि चलइत अएलहु[1] कान्त । कहल जाय थिक की वृत्तान्त ॥
सीताकाँ कहलनि हँसि राम । त्यागब हम एखनहि ई धाम ॥
पिता कहल दण्डक वन जाउ । चौदह वर्ष व्यतीतहि आउ ॥
सीता पुछल बहुत मन त्रास । कहु कहु नृप किय देल वनवास ॥
कहल राम कारण नहि आन । केकयि पाओल दुइ वरदान ॥
एक वर भरत होथि युवराज । दोसर हमर वन-वासक काज ॥
पिता धर्म्म-व्रत राखब[2] टेक । विघ्न करिय जन गुणवति एक ॥
सीता कहल चलब सङ्ग लागि । सहब न शोक विरह-जर-आगि ॥
शुनि उत्तर कहलनि श्रीराम । हठक समय नहि थिक ई ठाम ॥
साहस तजु मिथिलेश-कुमारि । उचित कि हमर वचन दिय टारि ॥
भल नहि थिक लय जायब सङ्ग । घोर विपिन अछि भूमि कुरङ्ग ॥
भूख पियासेँ[3] होयब आँट । गड़त पअर-पङ्कज मे काँट ॥
दौड़त बाघ सिंह मुह बाय । कत जन काँ राक्षस धय खाय ॥
गड़बड़ बड़ बड़ विषधर साप । स्मरण होइत जिब थरथर काँप[4] ॥
बहुत बुझाओल अपनहि राम । ठानल हठ सीता तहि ठाम ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण कोड़ार[5] भेदे सूहबछन्दः]

प्रिये हम जाइतछी वनवास ।
सत्य-प्रतिज्ञ पिता कहलनि अछि, केकयि कयल प्रयास ।
कौशल्या सन सासु सदन मे, राखब नियत निवास ॥
तनिकर सेवा उचित करक थिक, धैर्य्यहि विपतिक नाश ।
ई संसार असार सर्व्वदा, माया सकल विलास ॥
सुख दुख मनमे सम कय मानब, मन जनु करब[6] उदास ।
कन्द मूल संय्योँगहि भेटत लागत भूष पियास ॥
रामचन्द्र कह कानन अति दुख, राक्षस लोकक त्रास ।

□

1 ह (१,२) एवं अन्यत्रहु, 2 ल (३), 3 आ (१,२), 4 का (३), 5 कोड़ (३), 6 करिय (३), 7 करिय (३) ।

वचन शुनि जिव मोर थर थर काँप ।
हम नहि भवन रहब शुनु प्रियतम, देखब की सन्ताप ।
सर्व्वसहा जननी धरणी थिकि, जनक नृपति थिका बाप ।।
शमता-सहन तेहन अछि तनि काँ, सम मणिमाला साप ।।
त्रिभुवन बली प्रभुक सन के अछि, तोड़ल शङ्कर-चाप ।।
ई गोट आज्ञा हम नहि मानब, धर्म्म होएत[1] की पाप ।
चन्द्र चन्द्रिका घन विनु दामिनि, रहय न पृथक मिलाप ।।
कनइत जनक-नन्दिनी कयलनि, कोटि विलाप-कलाप ।।

□

वचन प्रिय ई गोट मानल जाय ।
हम किङ्करी चलब कानन संग, अपने रहब सहाय ।
नैहर मध्य सकल फल कहलनि, वृद्ध ज्योतिषी आबि ।।
कानन पति संग जानकि जाएब, भाल लिखल अछि भाबि ।
बहुत रमायण[2] कथा शुनल अछि, शङ्कर-वचन प्रमाण ।।
कतहु न लिखल त्यागि सीता गृह, कानन देव प्रयाण ।।
जौँ अन्यथा प्राण परित्यागब, अपनैँक आगाँ आज ।
चलु चलु विपिन सङ्ग वैदेही, हसि कहलनि रघुराज ।।

।। चौपाइ ।।

[मिथिला-संगीतानुसारेण देवकामोद छन्दः]

कि करब हार आभरण आब । विपिन बनब वनि मुनि शन भाव ।।
अरुन्धती काँ गहना देब । नहि पाथेय एतय सौँ लेब ।।
करब द्विजार्प्पण[3] हम निज वित्त । राखब नहि किछु विपिन निमित्त ।।
लक्ष्मण द्विज-गण काँ बजबाय । बहुत देल धन बहुतो गाय ।।
अपन सकल धन सीता देथि । गुरु-गृहिणीसौँ आशिष लेथि ।।
कहल राम मन करु जनु शोक । जे जननिक अन्तःपुर लोक ।।
हमर जतेक धन से लय जाउ । चौदह वर्ष सुखी सौँ खाउ ।।
कौशल्या भरल भण्डार । माँगव[4] सहब न पर-उपकार ।।
कौशल्या ओ सुमित्रा माय । तनिकर टहल करब मन लाय ।।

1 य (१,२), 2 रा (२,३), 3 र्प्यं (१,२), 4 र्गां (२,३) ।

शुनितहि तहाँ सुमित्रा सकल । वृद्धजननि मन अतिशय विकल ।।
लक्ष्मण कहल रहब एक ठाम । सम्पति भरल सकल अछि धाम ।।
निर्द्धन विषय करब नित दान । जनु करु दुओ जनिं चित्त मलान ।।
सेवक-जन नहि बिलटय पाब । देखब कतहु न लोक हसाब ।।
शुनल सुमित्रा आशिष ढेरि । वन सौँ सुख सौँ अयबे फेरि ।।
करबे[1] की थिकि केकयि माय । भरत सेहो छथि अहँइक भाय ।।
हमर तुल्य जानकि काँ जानि । रामचन्द्र काँ दशरथ मानि ।।
विपिन अयोध्या मध्य कि भेद । सुखी जाउ वन वत्स कि खेद ।।
कर धनु कोप न बाहर काढ़ । लक्ष्मण रामक आगाँ ठाढ़ ।।
की[2] विलम्ब कहि चलिअ[3] गणेश । जतय पड़ल छथि विकल नरेश ।।
नृपतिक भवन गमन प्रभु कयल । सीता लक्ष्मण प्रभु संग धयल ।।

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिलाभाषा रामायणे अयोध्याकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ।

1 ब (३), 2 का (३), 3 य(३) ।

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

[राग-तरङ्गिणी-ग्रन्थानुसारेण मंगलराज-विजय छन्दः]

केकयि कयल कुठाठ कठोर । गुपचुप रहल न भय गेल सोर[1] ॥
केकयि-कृत शुनि शुनि उतपात । कह पुरजन बड़ कयलक घात ॥
देति राम काँ विपिन पठाय । देखल न एहन कसाइनि माय ॥
कतहु कि केओ कहत भल लोक । शुनितहिँ सभकाँ होइ छ शोक ॥
ककरा नयन बहय नहि नोर । धिक धिक जीवन केकयि तोर ॥
मूढ़ि मन्थरा कहलक जैह । महरानी भय मानल सैह ॥
बसय योग्य नहि ई थिक देश । जतय रहल नहि नीतिक लेश ॥
वनिता-कारण सुत वनवास । कत गोट दशरथ नृपकाँ हास ॥
चलु चलु सभ जन रामक सङ्ग । राजा रानीक जानल रङ्ग ॥
वर दुख गौरव रौरव जाइ । एहन समाज बसिअ नहि भाइ ॥
पयरहि चलती जनक-कुमारि । अति सुकुमारि स्वकीया नारि ॥
आब रहल नहि ककरो शक्क । केकयि डाकिनि दशरथ ठक्क ॥
की सुख मे भेल आनक आन । विधिगति अछि सभ सौँ वलवान ॥
पशु पक्षी तृण भक्ष्य न खाय । लता वृक्ष सभ गेल सुखाय[2] ॥
केकयि-हृदय अशनि सन थीक । कयलक ककरो ई नहि नीक ॥
यमराजा सौँ कहथि मनाय । एखनहि जौँ केकयि मरि जाय ॥
पूजा करब लेब नित नाम । घरमे रहता सीता-राम ॥
साधुवृन्द[3] भेल व्याकुल-चित्त । वामदेव मुनि कहल निमित्त ॥
शोच न करिअ धरिअ मन धीर । विष्णु अनादि थिकथि रघुवीर ॥
लक्ष्मी माया जानकि जानु । वासुकि लक्ष्मणकाँ जिअ मानु ॥

1शो (३), 2 शु (१,२), 3 न्द्र (१,२),

विधि हरि हर छथि त्रिगुण सरूप । कि कहब हिनकर चरित अनूप ॥
प्रलय[1] मे धयल मत्स्य अवतार । वैवस्वत मनु पालन-हार ॥
मथन समुद्र भेल जेहि बेरि । मन्दर गेल सुतलमे फेरि ॥
कमठ-रूप बनि पर्व्वत धयल । उदधि सुरासुर मन्थन कयल ॥
धरणी जखन रसातल जाय । शूकर-तन बनि लेल उठाय ॥
फाड़ल कनककशिपु हठ वक्ष । विधि प्रभृतिक दुखहरण मे दक्ष ॥
नारसिंह-तनु नख अति चोष । दुष्ट सहत के तनिकर रोष ॥
वामन-तन बलि-छलनक काज । अदितिक अनुमति सुरपति-राज ॥
परशुराम पुन एक अवतार । क्षत्रिय-क्षय-कर हर महि भार ॥
रावणादि वध करता जैह । राम थिकथि परमेश्वर सैह ॥
बड़ तप कयलनि दशरथ भूप । पुत्र-कामना देखल स्वरूप ॥
सीता माया थिकि तिनि सङ्ग । जे चाहथि से करथि तरङ्ग ॥
लक्ष्मण रामक थिकथि सहाय । वन जयताह सङ्ग दुहु भाय ॥
राजा-केकयि-कृत नहि दोष । कथिलय शोक हेतु की रोष ॥
पूर्व्वहि दिन नारद कहि गेल । भूपहु[2] काँ मति ईश्वर देल ॥
रामचन्द्र कयलनि स्वीकार । चिन्ता त्यागिअ करिय विचार ॥
नित्य रामजप[2] निर्म्मल चित्त । रवि-सुत-भय नहि तनिक निमित्त ॥
शुनु पुन कलिमे आन न युक्ति । राम राम रटलहिँ हो मुक्ति ॥
काल जनिक डर थर थर काँप । दुख शङ्का[3] की तनिका व्याप ॥
मुनि गेल अनत[4] बुझल सभ लोक । किछु किछु छूटल मानस शोक ॥
भूपक निकट मुदित सुखधाम । अविकल कहल जाय श्रीराम ॥

॥ दोहा ॥

लक्ष्मण सीता सहित हम, अयलहुँ केकयि माय ।
नृप-आज्ञा सुनि लेब किछु, अपनैक साध्य उपाय ॥
पिता वृद्ध सौजन्यमय, सत्य-प्रतिज्ञ उदार ।
वन-गमने[5] अयलहुँ निकट, सह-लक्ष्मण सह-दार ॥

1 प्रथम (३), 2 जय (२,३), 3 स (१,२), 4 अतत (३), 5 ने ।

[गीतछन्दस्तु मिथिलासंगीतानुसारेण धनछीमालवीयम्]

[१]

पिता रहु हमरा उपर दयाल।
सीता लक्ष्मण सहित विपिन हम जाइत छी यहि काल।
परिहरु शोक शरीर वृद्ध अछि कर्म्म लिखल फल भाल॥
प्रजा-दुःख सभ भरत हरत नित कि कहत जन वाचाल।
कन्द मूल फल वन बसि खायब ओढ़ब हम मृगछाल॥
गुरु गारुड़िक मन्त्र जनइत छी वाधा करत न व्याल।
वन जायक हमरा भेल आज्ञा दुइ हठि आगत हाल।
हाहा रामचन्द्र नृप कहलनि मनमे आधि विशाल॥

[२]

चरणमे जानकि गेलि लपटाय।
गुरु सङ्कोच शोच बड़ भारी, कहलनि किछु न लजाय॥
कहलनि लक्ष्मण थिकथि जनकजा केकयि दुर्ग्रह पाय।
बड़ हठ ठानल कहल न मानल कि करथु बड़का भाय॥
नव-पल्लव पङ्कज-दल सन पद, शिरिस[1] सुमन मृदु काय॥
से पुन पयरहि कानन जयती, कि कहब केकयि माय॥
दशरथ कहलनि हम बड़ पापी कयल कठिन अन्याय।
हाय सकल सुख नाशि बैसलहुँ, शोक-समुद्र समाय॥

॥ चौपाइ॥

[मैथिललोचनशर्म्म-संगीतानुसारेण धनछी-पञ्चस्वरा छन्दः]

शुनि केकयि उठि सत्वर जाय। मुनिक चीर काँ लइलि उठाय॥
देलनि तिनुजनकाँ ओ चीर। प्रथमहि पहिरल श्रीरघुवीर॥
अपन वसन कयलनि परित्याग। कह केकयि हसि[2] सुन्दर लाग॥
सीताकाँ मन उपगत लाज। पहिर न जानथि गुरुक समाज॥
धयल दुहूटा रामक हाथ। मुख देखलनि बुझलनि रघुनाथ॥

1 शिरसि (३), 2 हँसि (३) एवं अन्यत्रहु।

वसन राम राखल लपटाय । राजदार देखि भूमि लोटाय ॥
गुरु वसिष्ठ काँ देखि न[1] भेल । धिक धिक केकयि कुमति कि लेल ॥
कालकूट सौँ किछु नहि घट्टि । कि कहब भेलहुँ अहाँ निरहट्टि ॥
एतय न[1] भरत नृपक ई हाल । बाघिनि सनि अहाँ बनलहुँ काल ॥
लक्ष्मण वीर ठाढ़ सन्नद्ध । डर नहि करता कचबाबद्ध ॥
केकयि तखन कहल हसि फेरि । देल सनेहै चलइक बेरि ।
केकयीक की हृदय कठोर । कि हयत दुर्गति[2] आगाँ तोर ॥
एक वर रामचन्द्र वनवास । लक्ष्मण सीताकाँ की त्रास ॥
देल कि सीताकाँ ई चीर । देखलय ककर जीव रह थीर ।
रामक सङ्ग पतिव्रत काज । जाइत छथि अहँकाँ नहि लाज ॥
नैहर हिनकर तिरहुति थीक । कर्म्म हिनक सभटा अछि नीक ॥
दिव्याम्बर वर गहना गात्र । पतिव्रता की दुःखक पात्र ॥
नृप कह रथ सुमन्त लय आउ । रामचन्द्रकाँ विपिन देखाउ ॥
कसि रथ आयल कहलनि राम । चढ़बे[3] रथ पर बाहर गाम ॥
देखल तिनु जनकाँ नृप नयन । शोकवृद्ध नहि मनमे चयन ॥
कयल प्रदक्षिण बापक राम । लक्ष्मण तखन तेहन तहिठाम ॥
भूप-कोट सौँ बाहर जाय । रथ छल ठाढ़ देखल दुओ भाय ॥
सिरिस-सुमन सन तन सुकुमारि । पुरि-परिसर मे जनक-दुलारि ॥
चलि नहि शकथि कहथि से घूरि । दण्डक-वन प्रिय अछि कत दूरि ॥
से शुनि रहल न करुण संभार । नयन-नीर[4] प्रथमहि अवतार ॥
रथपर चढ़लिह जनक-कुमारि । श्रीरघुवर-मुख-कमल निहारि ॥
सभ जन सौँ कहि मन उत्साह । रामचन्द्र रथ पर चढ़लाह ॥
लक्ष्मण रथ पर चढ़ला फानि । नगर सगर जन उठला कानि ॥
रथ धय धनुष तीर तरुआरि । रथ सुमन्त हाँकल ललकारि ॥
भूपति कहथि सुमन्त रहु ठाढ़[5] । दुस्सह आधि बहुत मन बाढ़ ॥
चलु रथ हाँकि करिय जनु थीर । वारम्बार कहथि रघुवीर ॥
ध्यान राम सुन्दर मुख चूमि । खसला दशरथ महिमे घूमि ॥

1 वे (३), 2 दुरगति (१,२), 3 चढ़लन (३), 4 नोर (१,२), 5 टाढ़ (३) ।

सभ दिश बाहर अहँइक भास । हमर हृदयमे नियत निवास ॥
वत्स विपिन जनु कयल पयान । सन्तापहि होइछ अनुमान ॥
नृप काँ छूटल जीवन-आश । छन छन मूर्छा कान्ति हरास ॥
भृत्य वृत्त छल लेलक उठाय । शोक वृद्ध कानथि शुशुआय ॥
कष्टहि कहल नृपति सन्ताप । प्राण-पवन पिब शोकज-शाप ॥
लै चल रामक जननी-धाम । मन कदाच पाओत विसराम ॥
नहि चिर जीवन निश्चय भेल । मणिधर-फणि-मणि जनि छिनि[1] लेल॥
तनि घर करइत नृपति प्रवेश । मुरछि खसल नहि संज्ञा-लेश ॥
मूर्छा छुटलहु बाढ़ल आधि । नृप रहलाह मौनकाँ[2] साधि ॥
ओत रथ पहुँचल तमसा-तीर । पड़ला उतरि ततय रघुवीर ॥
ईश्वर-चरण-कमलमे ध्यान । निराहार जल-मात्रे पान ॥
तरुतल सहित जानकी शयन । सुखसौं कयलनि सरसिज-नयन ॥
धृत-कर-शर-धनु ठाढ़ अनन्त । जागल पहरा देखि सुमन्त ॥
दुख-मन पुरजन सङ्गहि लागि । कह निज जनकाँ देल कि त्यागि ॥
जत जायब[3] तत पुरजन जोहि । लागल रहते नगर धरोहि ॥
रघुनन्दन नहि छाड़ब चरण । अयलहु सभ मिलि अपनैक शरण ॥
वन बसि रहब नगर नहि जयब । अपनै नृपतिक प्रजा कहयब ॥
नगर अयोध्या सौं की काज । सानुकूल संग सकल समाज ॥
अन्न पानि परित्यागल लोक । डेरा कयलनि रोक न टोक ॥
अर्द्धरात्रि मे मन्त्रि बजाय । कहल राम रथ आनु नुकाय ॥
हठसौं त्यागत[4] लोक न सङ्ग । देखला जाइछ सभहिक[5] रङ्ग ॥
दौड़ितहि आयल छथि हठ टेक । कहलय फिरता नहि जन एक ॥
भौकी काटि चलू[6] चुपचाप । दुख पओता सङ्ग होयत पाप ॥
बालक सभ घर भुखले छैक । वृद्ध लोकके अन्न के दैक ॥
सीता ओ सानुज रघुवीर । रातिहि त्यागल तमसा-तीर ॥
हाहा रामचन्द्र कहि भोर । कानथि पुरजन कय कय सोर ॥
हा रघुनन्दन कयल कि लाथ । सोपि देल ओहि पापिनि हाथ ॥
घुरि पुरि[7] पुरिजन शञ्च गेलाह । शोकहिँ दुर्ब्बल बहुत भेलाह ॥

1 न (३), 2 की (३), 3 ला (३), 4 ल (३), 5 ह्र (३), 6 लु (३), 7 री (३)।

देखइत[1] जनपद सुन्दर भूमि । रथ पर सौँ तिनु जन घुमि घूमि॥
शृङ्गवेरपुर गङ्गातीर । रथ अटकाओल श्रीरघुवीर ॥
ततय शिंशुपा तरु भेटि गेल । तेहितर सुखसौँ बांसा देल ॥
गङ्गा-अर्च्चन स्नान विधान । कयल तिनू जन धर्म्म-निधान ॥
रामागमन तहाँ गुह शुनल । उत्सव भाग्य अपन वर गुनल ॥
मधु फल पुष्प कन्द कय भार । प्रभुक उपायन कयल विचार ॥
भार सकल देखल श्रीराम । उत्तम कहलनि प्रभु गुण-धाम ॥
दुर वसि गुह कर दण्डप्रणाम । नयन सफल कर कह निज नाम ॥
राम उठाय लेल भरि पाँज[2] । हरष बहुत गुह किछु नहि बाज ॥
राम कुशल पुछलनि कय बेरि । बद्धाञ्जलि गुह कहलनि फेरि ॥
हम अति धन्य जन्म-फल पाय । अपनैं मिललहुँ अङ्क लगाय ॥
किङ्कर-किङ्कर जाति निषाद । घर प्रभुहिक थिक न करु विषाद॥
करु पवित्र प्रभु एतहुक गेह । बहिआ[3] पर राखक थिक नेह ॥
बहिआ कहिआ[4] आओत[5] काज । भोगल जाय अपन थिक राज ॥
ई फल मूल ग्रहण हो नाथ । लायलछी हम हयब सनाथ ॥
कहल राम अहाँ भक्त पवित्र । अहँक राज्य हमरे थिक मित्र ।
चौदह वर्ष नगर नहि जाइ । आनक देल वस्तु नहि खाइ ॥
वटक दुग्ध दुहि सत्वर लाउ । हम मुनि-जन सन जटा बनाउ ॥
वटक्षीर लायल गुह-लोक । प्रभु-वर आज्ञा के जन रोक ॥
लक्ष्मण राम कयल मुनि-वेष । गुह-समूह तहँ टक टक देख ॥
घास पात कुश शयन बनाय । निज गृह शय्या सन सुख पाय ॥
ओहि रजनी जल-मात्रे पान । शयन कयल दुख लेश[7] न जान ॥
सीता-सहित भवन निज जेहन । अति प्रसन्न मन ओतहु तेहन ॥
लक्ष्मण गुह निज परिजन सङ्ग । कर शर-धनुष वीर-रस अङ्ग ॥
यामिक कोटवार बल-पूर । सावधान लक्ष्मण रण-शूर ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे पंचमोऽध्यायः ॥

---

1 ष (१,२), 2 पा (३), 3 या (३), 4 या (३), 5 यो (१,२), 7 भेल (३)।

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिलासंगीतानुसारेण नामान्तरेण च योगिया-मालव-छन्दः]

लक्ष्मण सौँ गुह कहल निषाद । राम-दशा देखि चित्त विषाद ॥
देखिअ रामचन्द्र गति भाय । सुख-सुषुप्त कुश घास ओछाय ॥
मणिपर्य्यङ्क भवन रमणीय । जेहन इन्द्र-सुखकर कमनीय ॥
शुदिनि मन्थरा की अधलाहि । तकरे कहले[1] रानि[2] बताहि ॥
हाहा केकयि कयलनि पाप । देखतहिँ होअ चित्त सन्ताप ॥
शुनि लक्ष्मण कहलनि शुनु मित्र । कर्म्म कठिन-गति बहुत विचित्र ॥
सुख दुख कारण होथि न आन । दुख-दाता पर लघु-मति जान ॥
हम ई करब व्यर्थ अभिमान । कर्म्म-सूत्र-ग्रन्थित नहि ज्ञान ॥
शत्रु मित्र दारा सुत भाय । सभटा कर्म्मे देथि मिलाय ॥
बड़ बड़ मुनि जन बैसला हारि । शक्य न कर्म्म शुभाशुभ टारि ॥
पूर्व्वार्जित सुख दुख जे आब । भोग करी मन सहज स्वभाव ॥
करब भोग रहबे बिनु भोग । सभ होइछ कर्म्महिँ संयोग ॥
कर्म्म कि मानत फलचय देत । केओ सुरपुर बस केओ वन प्रेत ॥
व्यर्थ करिअ मन हर्ष विषाद । लाभ शुभाशुभ कर्म्म-प्रसाद ॥
सकल सुरासुर विधिक विधान । वश छथि सभकाँ गति नहि आन ॥
पाप पुण्य सौँ भेल शरीर । सुख दुख होअ रहय नहि थीर ॥
सुख दुख उपमा कहल कि जाय । जेहन जल कादब लपटाय ॥
मायामय थिक मनसौँ मानि । इष्टानिष्ट मध्य नहि हानि ॥
कहिंतहिँ शुनितहिँ भय गेल भोर । राम कयल लक्ष्मण काँ सोर ॥
कृतनितकृत्य वृत्त भय आउ । दृढ़ नव सुललित नाव मँगाउ[3] ॥
दृढ़ नौका अपनहि गुह टेबि । लयला सत्वर अपनहि खेबि ॥

1 लैं (१,२), 2 नी (३), 3 मं (३) ।

चढ़ल जाय किछु विलम्ब न आब । हे रघुनन्दन निकटहि नाब ॥
थिर भय[1] बैसक कहल पठाय । सीता कौं प्रभु नाव चढ़ाय ॥
मित्र हाथ धय चढ़ला राम । नावक उपर कयल विश्राम[2] ॥
लक्ष्मण आयुध सभ धय देल । फानि नाव पर अपनहु गेल ॥
लय रथ सचिव घूरि घर जाउ । पिता वृद्ध कौं बहुत बुझाउ ॥
कहब प्रणाम माय कौं जाय । विद्यमान सुख देब जनाय ॥
कहब प्रणाम ततय शत मोर । कहइत सीता नयन सनोर ।
लक्ष्मण कोपहि निन्दा कयल । नीति धर्म्म आद्यावधि धयल ॥
शोकहि तुरग[4] न चल एक डेग । पवनहु सौं जनिकाँ अति वेग ॥
गुह-परिजन कर धर करुआर । हे प्रभु नाव आब बिच धार ॥
शुनि जानकि[5] सुरसरिक प्रणाम । कयलओ अंगिरल पुर मन-काम ॥
हे[6] सुरसरि वन-दुख निस्तार । घुरब करब पूजा विस्तार ॥
मदिरा मांस विविध उपचार । करब यथाविधि वारम्वार ॥
झटितिहि पर-तट लागल नाव । सभ जन क्रमक्रम उतरिअ आब ॥
गुह कह चलइत हम वन जयब । सङ्गहि सङ्ग एतय पुन[7] अयब ॥
जौं नहि लय जायब रघुवीर । अपनहि मरब बेधि हिअ तीर ॥
कहल राम शुनु मित्र निषाद । परिहरु परिहरु विषम विषाद ॥
आयब चौदह वर्ष बिताय । लक्ष्मण सन हमरा अहँ भाय ॥
मिलि मिलि देल बहुत आश्वास । सभ जन फिरला मन-विश्वास ॥
ततय मेध्य मृग एकटा मारि । अग्नि पकाओल भूष विचारि ॥
होम कयल तिनु जन किछु खाए । तरुवर-तर सुख सुतला जाय ॥
सकल रजनि[8] गेल सुखसौं बीति । कहइत शुनइत धर्म्म सुनीति ॥
भारद्वाजाश्रम लग जाय । पटु वटुकाँ कहि देल पठाय ॥
सीता लक्ष्मण राम समाज । बाहर छथि आयल छथि आज ॥
एहन कहब वटु मुनि-तट जाय । ओ मुनिकाँ सभ कहल बुझाय ॥
रमणी-सह सानुज रघुवीर । सुन्दर एहन न[9] देखल शरीर ॥
वार्त्ता एहन शुनल मुनि जखन । अति आनन्द मगन मन तखन ॥

---

1 कय (३); 2 शरा (१,२), 3 दय (३), 4 तुरंग (३), 5 जानकी (३), 6 ह (३),
7 पुनि (३), 8 रजनी (३); 9 नें (३)।

अर्घ पाद्य सभ लेलहि हाथ । गेलाह[1] शीघ्र जतय रघुनाथ ।।
समुचित पूजा मुनि पुन[2] कयल । आदरसौँ निज आश्रम लयल ।।
तप जे कयल प्राप्त फल आज । अपने[3] अयलहुँ राम समाज ।।
माया मानुष धयल शरीर । चिन्हइतछी[4] अहँ काँ रघुवीर ।।
विधि अनुमति लेल अहँ अवतार । चललहुँ हरण होयत महि भार[5] ।।
कहइतछी हम नाथ यथार्थ । आज भेलहुँ हम बहुत कृतार्थ ।।
श्रीरघुनन्दन लक्ष्मण-सहित । अभिवादन कयलनि छल-रहित ।।
अपने मुनि हम क्षत्रिय जाति । अनुग्राह्य हमही सभ भाँति ।।
हमछी धन्य अहाँ भगवान । ई कहइत[6] रजनी अवसान ।।
प्रात समय रघुनन्दन जागि । मुनि-सुत-संग तिनू जन लागि ।।
मुनि-सुतकाँ से परिचित बाट । पार उतरता यमुना-घाट ।।
काठक कौशल बेड़ वनाय । सुख सौँ पार देल पहुचाय ।।

[हरिपदं मिथिलासंगीतानुसारेण प्रियतमा-मालव-छन्दः]

लक्ष्मण सीता रामचन्द्र गिरि, चित्रकूट चढ़ि गेला ।
गिरि आश्रम शोभा काँ देखल, मन आनन्दित भेला ।।
मृग पक्षीक विलक्षण शोभा, फल भल फूल अनेक ।
मुनि वाल्मीकि[7] धर्म्ममय आश्रम, ऋषि-सङ्कुल सुविवेक ।।
आश्रममे वाल्मीकि महामुनि, तेजपुञ्जसौँ बैसल ।
देखल जाय प्रणाम तिनू जन, कएलनि कौशल-कौशल ।।
सानुज श्रीरघुकुल-सरसिज-रवि, जटा मुकुट शिर धारण ।
अम्बुज-नयन मदन-मद-मोचन, चिन्हलनि मुनि-जन-तारण ।।
परमानन्द राम काँ सत्वर, उठिकेँ हृदय लगाओल ।
हरषल नोर नयन बह अविरल, कहल जन्म-फल पाओल ।।
पूजा विविध[8] अतिथि परमेश्वर, शीतल जल भरबाओल ।।
अपने नरपति थिकहुँ वनी हम, उचिती बहुत शुनाओल ।।
कि कहब रामचन्द्र एहि गिरिपर, आबि कष्ट अहँ पाओल ।।

---

1 'ह' नहि रहैत तँ नीक । पाठ तीनूमे एहने अछि । 2 पुनि (३), 3 अपनैँ (१,२), एवं अन्ययहुँ । 4 चिन्हयित (१,२), 5 महिपाल (३), 6 कहयित (१,२), 7 वाम्लीकि (१), 8 तीनूमे पाठ 'विविधि' ।

बद्धाञ्जलि रघुनन्दन कहलनि, किछु दिन मुनि हम रहबे ॥
पिता-वचन सौँ वनी-वेष बनि, जनितहिँ छी की कहबे ॥
स्थान देखाओल जाय से हमरा, करब जतय सुख-वासा ॥
सीतालक्ष्मण सहित रहित-दुख, अपनेक सभ प्रत्याशा ॥
हसि मुनि कहल सकल लोकक अहँ, निश्चय वासस्थाने ॥
अथवा अहँ सर्व्वत्रहिँ व्यापक, दोसर कि कहब आने ॥
द्वेष-रहित समदृष्टि शान्त-मन, अपनैँ चरणक भक्त ॥
तनिकर हृदय-कमलमे रघुवर, अपनैँक गृह अनुरक्त ॥
धर्म्मार्धर्म्म त्याग कय सभटा, अपनैँक भजनानन्द ॥
अपनैँक मन्त्र सदा मन दय जप, जे निस्पृह निर्द्वन्द ।
निरहङ्कार राग सौँ वर्ज्जित, अपनैँ मे मति चित्त ॥
सुख दुख सम मायामय सभ[1] थिक, जानथि विश्व अनित्य ।
कनक जेहन इट माटि तेहन सन, लोभ-लेश नहि जानथि ॥
षट विकार देहहि मे सभ अछि, आत्मा मे नहि मानथि ॥
जे संसार धर्म्मसौँ बाहर, चिद्घन सभ-गत देखथि ॥
सीता लक्ष्मण रामचन्द्र अहँ, मन-मन्दिर मे लेखथि ॥
अपनैँक नाम सतत कीर्त्तन सौँ, पाप-लेश नहि रहते ॥
राम-नाम-महिमा रघुनन्दन, वर्णन के कय शकते ।

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण कामोदनाट छन्दः]

हम ब्रह्मर्षि कहाओल नाम । कारण तकर कहैछी राम ॥
द्विज-घर जन्म किरातक सङ्ग । बढ़लहुँ गहलहुँ तकरे रङ्ग ॥
शूद्री-रति-कृत पुत्र बहूत[2] । विगत विराग भ्रमिअ अवधूत ॥
चोर कुसंगेँ बान्हल[3] साटि । हमरा सौँ सभ तस्कर घाटि ॥
धनुष-बाण-धर जंगल जाइ । जीव-घात कय सभ दिन खाइ ॥
लूटि मारि ओ तस्कर कर्म्म । नीच कर्म्म बड़ मानल धर्म्म ॥
छपकल छलहुँ कतहु वन कात । अबइत देखल हम मुनि सात ॥

---

1 सम (३), 2 बहुत (३), 3 बान्धल (१,२) ।

अनल दिवाकर दिव्य शरीर । तनिपर दौड़लहुँ लय[1] धनु तीर ॥
रहु रहु ठाढ़ कहल ललकारि । धन लेब लूटि देब जिब मारि ॥
मुनि-जनकाँ नहि हरष विषाद । कहलनि शुन द्विज[2] अधम निषाद॥
करइत छह कथिलय ई कर्म्म । करह न लाथ सत्य कह मर्म्म ॥
मुनिकाँ हम उत्तर देल फेरि । स्त्री सुत नाति हमर घर ढेरि ॥
वन बुलि चुलि तत्पालन काज । यथातथा हो कयल न व्याज ॥
मुनि कहलनि अपना घर जाउ । सत्य कथा एकटा बुझि आउ ॥
हम करइत छी हिंसा कर्म्म । हमरा वा सभकाँ इ अधर्म्म[3] ॥
तावत हम रहबे एहि ठाम । घुरि आयब जायब जे गाम ॥
शुनि मुनि वचन गेलहुँ वनटोल । बुझि अयलहँ हम माँथक मोल ॥
हम अनिअ[4] धन कय[5] अन्याय । हमर उपार्ज्जन[6] सभ जन खाय ॥
तोहरहु पाप कि हमरहि माँथ । कहह करह जनु एक जन लाथ ॥
केवल फल-भागी हम तात । पाप-कर्म्म-फल सौँ हम कात ॥
हम से शुनि घुरि मुनि लग आय । तीर धनुष काँ देल नड़ाय ॥
हुनि मुनि आगाँ खसलहुँ जाय । नरक घोरसाँ लिअओ बचाय ॥
मुनि-दर्शन सौँ मन निर्व्वेद । ओ कृपालु किछु कहलनि भेद ॥
उठ उठ सत-सङ्गति फल पाबि । भल फल आब तोहर अछि भावि ॥
शरणागत काँ करब न त्याग । उपदेशहु मे गड़बड़ लाग ॥
मरा मरा जप मन एक ठाम । यावत हम आबी एहि गाम ॥
मन एकाग्र सुजप हम कयल । विषय विराग दिव्य हठ धयल ॥
हमरा उपर बढ़ल वल्मीक । हम नहि जानल की ई थीक ॥
युग-हजार पर फिरला फेरि । बाहर होउ कहल कय बेरि ॥
रवि सौँ हमर तेज नहि घाटि । जनु कुहेस रविसौँ गेल फाटि ॥
ई उतपति[7] वल्मीक सौँ थीकि[8] । संज्ञा हमर धयल वाल्मीकि[8] ॥
शुनु रघुनन्दन नाम-प्रभाव । हम ब्रह्मर्षि विदित जग आब ॥
चलु चलु लक्ष्मण ठाम देखाउ । पर्ण-कुटी दुइ दिव्य बनाउ ॥

---

1 लै (३), 2 शुनह (३), 3 ई धर्म्म (३), 4 म्र (३), 5 कत (३), 6 उपार्ज्जित (३), 7 त्प (३), 8 क (३) ।

गङ्ग-पब्वंत-मध्य प्रदेश । मुनि कहलनि थल अछि ई बेश ॥
पर्णकुटी बान्हल[1] दुइ गोट । एक गोट वृहत एक गोट छोट ॥

॥ दोहा ॥

सीता लक्ष्मण सहित प्रभु, वास कयल स्वच्छन्द[2] ।
मनुष वेष बनि विवुध गण, देखथि परमानन्द ॥

इति श्री मैथिल चन्द्रकवि-विरचितें मिथिला-भाषा रामायण षष्ठोऽध्यायः ।

1 बांघ (१,२); 2 छ (१,२) ।

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

[मिथिला-संगीतानुसारेण पार्व्वतीयवराड़ी-नाम छन्दः]

ओतय अयोध्या मन्त्रि सुमन्त्र । पहुचि सरथ भेल दिवसक अन्त ॥
वसनहि सौँ मुह कय लेल ओट । राम-वियोग दुःख बड़ गोट ॥
नोरक लेल गेल तन तीति । पुर-प्रवेश मे हो बड़ भीति ॥
रथ छोड़ल बाहर नृप-द्वार । भूप देखि जय शब्द उचार ॥
स्तुति कय कयलनि चरण-प्रणाम । के अहाँ पुछल कहल से नाम ॥
अहह कहू कत सानुज राम । जनक-नन्दिनी छथि कोन ठाम ॥
हम निर्द्दय त्यागल मर्य्याद । पापिहु काँ किछु कहल समाद ॥
हाहा राम कहाँ अहँ आज । गुणनिधि[1] त्यागल हमर समाज ॥
प्रियवादिनि[2] जानकि कत गेलि । दुखमे हमर केओ नहि भेलि[3] ॥
उबडुब होइछि दुःख-पयोधि । निकट निधन सभटा सुख शोधि[4] ॥

[हरिपद-छन्दो मिथिलासंगीतानुसारेण तु वसन्तनाम छन्दः]

कहल सुमन्त चढ़ाय लेल रथ, श्रृङ्गवेरपुर गेला ॥
गङ्गातीर उतरला[5] जखना भय गेल बड़का मेला ॥
गुह नामक निषादपति सभ जन दौड़ि दण्डबत कयलनि ॥
कन्द मूल फल मधुर मधुर से रामक आगाँ धयलनि ॥
कन्द मूल फल एक लेल नहि परशि देल प्रभु हाथै ॥
गुह कहलनि हम किङ्कर अपनेक आज्ञा कर हम माथै[6] ॥
तनिका कहि कहि श्रीरघुनन्दन बड़क दूध मंगबाओल ॥
सानुज राम ताहिसौँ माथा जटा मुकुट निर्म्माओल ॥

1 ग (३), 2 नी (२), 3 ल (३), 4 सो (३), 5 उतरा (१,२) उतरी (३), 6 थे (३) ।

अविकल कहल राम जे हमरा से समाद सभ आजे ॥
कहितहु बहुत कलेश होइछ मन[1] तदपि कहब महराजे ॥
हमर निमित्त पिता नहि करिहथि ओ चिन्ता किछु मनमे॥
निज घर[2] सौँ शत गुण[3] सुख सन्तत हमरा होयत वनमे[4]॥
राम कहल माता काँ कहि देब पिता शोक सभ हरिहथि॥
कहब प्रणाम धैर्य्य कय नृप लग चर्च्चा हमर न करिहथि॥

॥ सोरठा ॥

सभकाँ कहब प्रणाम, गुरुजन जे छथि नगर मे ।
चलयित कहलनि राम, गेल जाय पुर शून्य अछि ॥

॥ नारेन्द्र-छन्दः ॥

सीता कहलनि प्रभु मुख देखइत गुरुजन जे छथि ग्राम ।
कहिहथि[5] मन दय शाशु-शशुर-पद शत साष्टाङ्ग प्रणाम ॥
रथकाँ ओ हमरा दिश देखल भेलि[6] अधोमुखि फेरि ।
हमर प्रणाम कयल संज्ञहि सौँ कनइत चलती बेरि ॥
रोषैँ[7] लक्ष्मण किछु अनुचित सन कहक[8] यत्नपर[9] जखना ॥
सीताराम शपथ दय तनिकाँ स्वस्थ कयल कहि तखना ॥
चढ़ि से नाव उतरि गङ्गा सौँ टक टक तकितहि रहलहुँ ।
कहुना कहुना अयलहुँ कनइत देखल से नृप कहलहुँ ॥

[मत्तगजेन्द्र-छन्दः]

से शुनि कानि कहै लगली तहाँ भूपति सौँ बड़की महरानी ।
केकयि काँ वर देलहुँ जे वर लेलनि राज्य कि होइत[10] हानी ॥
हा ! हमरे प्रिय पुत्र पुतोहु वृथा वन देल कहाओल ज्ञानी ।
शोच वृथा करणी अपने सभ आरि न[11] बान्हल[12] गेलहु पानी ॥

॥ माधवीबराड़ी-छन्दः ॥

बड़ निरदय विधि जानल रे ककरो नहि दोष ।
राज न[11] करत भरत एत रे केकयि सन्तोष ॥

1 मम (३), 2 घरहुस (३), 3 ३मे "बन" बेशी । 4 मनमे (३), 5 कहि थिक (३), 6 ल (३), 7 षौ (२), 8 कहल (३), 9 यत्न (३), 10 य (३), 11 ने (३), 12 बांधल (१,२) ।

बुझि पड़ राज-भवन वन रे के रह एहिठाम।
नृपतिक की गति होयत रे विन लक्ष्मण राम॥
तिनु जन वन वन सञ्चर रे सहि भूष पिआस।
की होइत की कै देल रे विधि आश विनाश[1]॥
हा धिक हा धिक जीवन रे जग भरि उपहास।
नीति-तन्त्र लिख ककरो रे नहि करि बिसबास॥

॥ वितत-सूहब छन्दः॥

राजा विकल कहल एहन।
अपन हानी कैलहु[2] रानी विधिक शासन जेहन।
केकयि कारण मानल मरण हरण अपन ज्ञान॥
अन्तष्करण आधि हि दरण[3] होइछ आन कि जान।
मरण दिवस दैवक विवश क्षमा करिअ दोषे॥
पतिक हीना केकयि दीना भोगथु विभव रोषे॥

॥ मुदिरा छन्दः॥

पुत्र-पुतोहु-वियोग-व्यथा-ज्वरसौँ हम आइ मरै परछी।
की दुख मे दुख दैछि[4] अहाँ दुख-सागर आइ तरै परछी॥
अन्तरमे अनुभूत महानल बाहर मध्य जरै परछी।
हा रघुनन्दन प्रीति-प्रतीति धरातल मध्य करै परछी॥

॥ सोरठा॥

कयल बहुत हम पाप, शुनु कौशल्या कुशल-मति।
तकरे फल सन्ताप, शाप देल मुनि प्राप्ति-दिन॥
तरुण अवस्था भूप, गेलहुँ खेलाय सिकार हम।
की कहु चूपहि चूप, एक समय शर-धनुष-कर॥
दुइ पहर छल राति, नदी-तीर वन घोर मे।
दुस्सह क्षत्रिय जाति, बाण चलाओल जानि गज॥

---

1 निवास (३), 2 कैलह (३), 3 हरण (३), 4 देखि (३)।

गज पिबइत अछि पानि, शब्द-बेध सौँ बिद्ध से ।
व्याकुल उठला कानि, के मारल अपराध बिनु ॥
की गति पओतिहि[1] माय, विकल बाप करताह की ।
के देत पानि पिआय, हाहा पुत्र कतय रहल ॥
शब्द शुनल हम कान, मुनि-मानुष-सूचक वचन ।
भेल आन सौँ आन, गमहि गेलहुँ भय त्रस्त हम ॥
मुनि हम दशरथ भूप, जल भरइत मारल वृथा ।
जानल नहि ई रूप, गज-भ्रम सौँ अपराध बड़ ॥
धयल पयर पर माथ, त्राहि त्राहि कय बेरि कहि ॥
सब गति अपनेक हाथ, चोर न्याय सौँ नष्ट हो ।
मुनि कहलनि तहि राति, ब्रह्म[2]-वधक संशय तजिय ॥
वैश्य हमर अछि जाति, भ्रम-सौँ मारल कर्म्म-वश ॥
करू एकटा काज, जतय पिता जननी हमर ॥
लय जल तनिक समाज, जाय देब कृति अपन कहि॥

॥ मत्तगजेन्द्र छन्द ॥

आंधर वृद्ध पिता जननी[3] छथि जाय तहाँ नृप पानि पिआऊ ।
बाणक वेदन देहमे होइछ खौँचि धरू मरिकैं सुख पाऊ ॥
जौँ नहि जायब भूप तहाँ कय भस्म देता जनु कोप बढ़ाउ ।
जे किछु कैल अहाँ करणी हमरो सब दुर्गति मृत्यु शुनाऊ ॥

॥ चौपाइ ॥

जेहन कहल मुनि मरती[4] बेरि । सभटा तेहन कयल[5] हम फेरि ॥
जल भरि कलस लेल से कन्ध । गेलहुँ हम जत आन्धरि[6] अन्ध ॥
पद आहट शुनि से बजलाह । पुत्र रातिमे कतय छलाह ॥
भूख पिआसेँ कण्ठ सुखाय[7] । दिअ दिअ सत्वर पानि पिआय ॥
शयन करू अपनहुँ जल पीबि । मन चिन्ता छल अयलहुँ जीबि ॥
पयर धयल हम कहि निज नाम । अहँक पुत्र नहि छथि एहि ठाम ॥

1 ह (३), 2 म्ह (३), 3 जतनी (१,२), 4 मरितौ (३), 5 कहल (३), 6 आन्हरि (३),
7 शुखाय (१,२) ।

सकल विवर्त्त कहल[1] निज काज । तैँ आयलछी अहँक समाज ।।
दया करिय मुनि बड़ अपराध । कनइत कहलनि हा विधि व्याध ।।
हमरा कहल देह पहुँचाय[2] । शुनि दम्पति लेल कांध[3] चढ़ाय ।।
धिक धिक जीवन हमरो आब । कहि शव सुतकाँ अङ्ग लगाब ।।
हे नृप चिता करिय निर्म्माण । हमरो निश्चयचलला प्राण ।।
बूढ़[4] बूढ़ि कय विविध विलाप । मरण समय हमरहु देल शाप ।।
हमर पुत्र-सुख कयलह हरण । पुत्र-वियोगहिँ तोहरो मरण ।।
एकहि चिता तिनू जरि अमर । सुरपुर गेल पार दिन हमर ।।
नहि विलम्ब दिन[5] से सम्प्राप्त । मर्म्म मर्म्म दुख हमरा व्याप्त ।।
हा रघुनन्दन हा सुत राम । हा जानकि लक्ष्मण गुण-धाम ।।
केँकयि कारण अहँक वियोग । मरण होइ अछि आन कि रोग ।।
ई कहइत त्यागल नृप प्रान[6] । विकलि सकलि रानी-जनि कान ।।
गेला वसिष्ठ मन्त्रि लै सङ्ग । की भय गेल रङ्ग मे भङ्ग ।।
दशरथ-देह तेलमे रहय । सत्वर दूत भरत केँ कहय ।।
अश्ववार घोड़ा दौड़ाउ । भरतक मातृक सत्वर जाउ ।।
छथि शत्रुघ्न भरत तहि ठाम । गुरु-आज्ञा चलु एखनहि गाम ।।
कहबनि पहुँचल ताकी आज । जननि जनक काँ देखय काज ।।
नाम युधाजित भरतक माम । तनिकाँ कयल सबार प्रणाम ।।
निज घर भरत चलथु दुहु भाइ । अयलहुँ गुरुक पठाओल आइ ।।

।। सोरठा ।।

त्वरित भरत दुहु भाय, चलला तुरग सबार सह ।
की थिक बुझल न जाय, भय-चिन्तातुर मन अधिक।।

।। चौपाइ ।।

सगर नगरमे पसरल शोक । उत्सव-रहित सकल पुरलोक ।।
प्राणि मात्रकाँ नहि उत्साह । कनइत कनइत जेहन बताह ।।
त्यागल कमला जेहन निवास । देखि भरत-मन अतिशय त्रास ।।
की अनर्थ थिक मन मन गून । राज-भवन निज जन सौँ शून ।।

---

1 कयल (२,३), 2 पहुचाय (१,२) एवं अन्यत्रहुँ, 3 कान्ह (३), 4 बूढ़ि (३), 5 दिवस (३), 6 प्राण (३) ।

केवल केकयि बैसलि देखि । मुदित मन्थरा दशा विशेषि ।।
कयल प्रणाम मातृ-पद छूबि । ओ आशिष देल मुख लेल चूमि[1] ।।
हरषित लेलनि हृदय लगाय । कुशल पिता छथि भ्राता माय ।।
अहँ छी निकय देखल भरि नयन । देखला विनु मन छल नहि चयन ।।
व्याकुल पुछल पिता छथि कतय । भरत कहल हम जायब ततय ।।
एकसरि अहँ कहँ छथि महिपाल । अति व्याकुल मन हो एहि काल ।।
अपने बिनु नहि रहथि एकान्त । हाय माय थिक की वृत्तान्त ।।
शून्य भवन कत प्रबल प्रताप । बिनु देखलें जिव थरथर काँप ।।

॥ रूपमाला ॥

[मिथिला-संगीतरीत्या केदार-छन्दः]

जेहन छल छथि नृपति सुकृती अश्वमेध जे कयल ।
भरत चिन्ता चित्त[2] नहि करु दिव्य गति से धयल ।।
कुलिश-कठिन कठोर केकयि-वचन से शुनि कान ।
शोक-आकुल भरत खसला छिन्न वृक्ष समान ।।
हा पिता कत गेलहुँ अपने त्यागि दुखमे देल ।
राम काँ नहि सोपि गेलहुँ दुःख कीदहु[3] भेल ।।
भरत व्याकुल देखि केकयि कहल की हो कानि ।।
माय बाप न सदा जीबथि धैर्य्य करु मन मानि ।।

॥ सोरठा ॥

हा रघुनन्दन राम, हा वैदेही हा कहाँ !
हा लक्ष्मण गुणधाम, ई कहि त्यागल प्राण नृप ।।
लक्ष्मण सीता राम, ई सभ छल छथि जननि कत ।
शून्य देखि पड़ धाम, अति व्याकुल मन भरत कह ।।

॥ चौपाइ ॥

शुनु सुत सम्प्रति अछि एकान्त । कहइतछी बड़ बड़ वृत्तान्त ।।
मरण निकट नृप मन भेल व्याज । मन छल रामचन्द्र युवराज ।।

---

1 "छूबि" क संग "चूमि"क तुक कोना ? परन्तु पाठ तीनूमे इएह अछि। 2 चित (३), 3 कीदहुँ ।

बड़ि बुधिआरि[1] देखैत अधलाहि । देल मन्थरा काज निबाहि ।।
देलक विपति[2] समय मन पाड़ि । हम वर लेल देल नहि छाड़ि ।।
वर धयले छल से लेल माँगि । नृपति-हृदय जनु लागल साँगि ।।
चौदह वर्ष राम वन जाथु । कन्द मूल फल वन बसि खाथु ।।
भरत एतय होअथु युवराज । हमरा[3] एहि दुइटा सौँ काज ।।
सगर नगर भेल हाहाकार । त्यागल हम कि[4] कठिन व्यवहार।।
बड़ बड़ जन कहि गेला हारि । सुपुरुष मुरुष हमहि बुधिआरि[5] ।।
महति[6] मन्थरा समय सहाय । बुद्धि विलक्षण कूबड़ काय ।।
सीता सती रहलि नहि गेह । लक्ष्मण रामक सत्य सनेह ।।
तिनु जन वन वश-गत साम्राज । पटल आन छल समटल काज ।।
आर्त्त भरत की होयत कानि । काज सम्हारल[7] हम हठ ठानि ।।
गेल राज्य आयल अछि हाथ । कनलेँ पुत्र दुखाएत माँथ ।।

॥ सोरठा ॥

जननी-वचन कठोर, शुनलनि भरत अनर्थ कहि ।
धिक धिक जीवन तोर, कहइत कण्ठ न कटि खसल ।।
खसला भरत तड़ाक, अशनि-पतन तरु-वर जेहन ।
रहित श्वास ओ वाक, केकयि लेल उठाय पुन ।।
एहन करिय नहि ज्ञान, सुख सम्पति मे दुःख की ।।
राज्य देल भगवान, भाग्यवान बनि भोग्य करु[8] ।।
मुह नहि देखब तोर, असंभाष्य पतिघातिनी ।
विषम हलाहल घोर, बरु मरि जाइ पिआय दे ।।
तोहर पुत्र कहाय, बड़ पापी हम विश्वमे ।।
मरबे अग्नि समाय, की करवाल कराल सौँ ।।
देल स्वामि-शिर डाक, दुष्ट मूर्त्ति के तोर सनि[9] ।।
पड़बह कुम्भीपाक, सकल-लोक-सुख-नाशिनी ।।
भरत भेला उठि ठाढ़, मन विराम विसराम कत ।
पर सङ्कट की गाढ़, तनय सङ्कटा सर्प्पिणी ।।

1 या (३), 2 त्ति (३), 3 हमरा (३), 4 का (३), 5 बुधियारि (३), 6 कहथि (३), 7 समारल (१,२), 8 करू (३), 9 शनि (३) ।

॥ चौपाइ ॥

कयलें पापिनि व्याधिनि काज । मुह न देखब नहि रहब समाज ॥
उठि गेला कौसल्या गेह । तनिकाँ रामचन्द्र सम नेह ॥
भरत देखि कनली कय शोर । अविरल युगल नयन बह नोर ॥
कौसल्याक चरण लपटाय । भरतहु काँ नहि नोर शुखाय[1] ॥
कौसल्या लेल हृदय लगाय । राम-वियोग-शोक नहि जाय ॥
अहँ विनु भरत एहन भेल हाल । करु सुत सकल प्रजा प्रतिपाल ॥
कहलहि होइतिह केकयि माय । तनिकर रङ्ग देखल अहँ जाय ॥
हा रघुनन्दन हा रघुवीर । हा सीता लक्ष्मण रणधीर ॥
दुख-सागरमे पड़लहुँ हाय । अहँ बिनु के लेत जीव बचाय ॥
चीराम्बर-धर जटा-कलाप । वन चल गेलहुँ दय सन्ताप ॥
परमात्मा विभु से अछि ज्ञान । शोक अरोक दैव बलवान ॥

॥ सवैयाछन्दः ॥

रामचन्द्र राज्याभिषेकमे केकयि कयलनि जे अविचार ।
सम्मत हमर मनस्पथहू जौँ जननिक कठिन कपट व्यवहार ॥
ब्राह्मण-शतहत्याक जनित पड़ पातक सभटा हमरहि माँथ ।
गुरु वसिष्ठ ओ सरुन्धतीकाँ खड्गहिँ मारी करि जौँ लाथ ॥

॥ चौपाइ ॥

खडगहि कटितहुँ केकयि माँथ । उचित न कहता श्रीरघुनाथ ॥
कहि हा रघुनन्दन[2] रघुनाथ । जननी-चरण भरत धर माँथ ॥
भरत शपथ कर वारंवार । राम नृपति हम किङ्कर चार ॥
कौशल्या कह शुनु सुत भरत । केओ ने[3] अनुचित अहँकाँ कहत ॥
अति सुशील भरतक सन भरत । अहाँक बराबरि के जन करत ॥
हम जनइत छी अहँक स्वभाव । अहँक सुयश भलमानुष गाव ॥
अयला भरत शुनल जन कान । गुरु प्रधान तत कयल प्रयाण ॥
कहलनि गुरु जनु करु मनखेद । थिक कर्त्तव्य लिखल जे वेद ॥

1सुखाय (३), 2 ३मे 'हा' बेशी । 3 न (१,२), 4 भ्राता (३) ।

ज्ञानी सत्य-पराक्रम वृद्ध । दशरथ छल छथि विश्व-प्रसिद्ध ॥
बहुत दक्षिणा दय कय बेर । अश्वमेध मख कयलनि ढेर ॥
इत सुख भोग अमरपति सङ्ग । एकासन-संस्थित सुर रङ्ग ॥
आतमा नित्य एक छथि शुद्ध । जनन[1] मरण व्यवहार विरुद्ध ॥
जड़ अपवित्र विनश्वर देह । मृतक कहाबथि निस्सन्देह ॥
पिता तनय मरणोत्तर लोक । मूढ़ मृषा कर मनमे शोक ॥
जनिकर जनन[1] मरण हो तनिक । मिलन सर्व्वदा मानक क्षणिक ॥
नष्ट होइछ ब्रह्माण्डो कोटि । स्थितिक भावना थिकि अति छोटि॥
मेरु भसम हो सिन्धु शुखाय[2] । से की वस्तु काल नहि खाय ॥
कालहिँ उतपति कालहिँ नाश । कालहिँ होइछ भोग विलास[3] ॥
चल दलपर जलकण चल जेहन । आयुक गति मानक थिक तेहन ॥
दुख सुख हो कर्म्मक अनुसार । निश्चय ज्ञानी करथि विचार ॥
नव पट पहिरथि त्यागि पुरान । देही देहक एहन[4] विधान ॥
आतमा मरथि न जनमथि जाय । षट विकार नहि ततय समाय ॥
भरत त्यागु मन बाढ़ल शोक । करु जैँ तृप्त पितर परलोक ॥
तेल-द्रोणि सौँ शव बहराय । यथा-कृत्य चिति अनल लगाय ॥
समुचित जेहन कहल गुरु-लोक । कयल भरत तखना नहि शोक ॥
ब्राह्मण वैदिक बहुत मँगाय । रुद्र-प्रमित दिन भोज्य कराय ॥
नृपति निमित्त विप्र मे दान । गो-रत्नादि ग्राम सविधान ॥
वस्त्र बहुत देल बापक नाम । चिन्तित आठ पहर निज धाम ॥
राम राम हा गुणनिधि भाय । देलक बड़ दुख केकयि माय ॥

॥ मिथिला-संगीतरीत्या भैरव-छन्दः ॥

विधि हम सकल अनर्थक मूले ।
हमरहि कारण केकयि जननी कयल कर्म्म प्रतिकूले ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण शुभ-लक्षण वैदेही वन हयती ।
नहि घर द्वार निवास नियत नहि कन्द मूल कोना खयती ॥

1 जनम (३), 2 सुखाय (३), 3 विलाश (३), 4 यहन (१,२) ।

सदा प्रशंस वंश हंसक थिक केहनि केकयि अइली ॥
चट पट प्राण लेल प्राणेशक रामक शीर[1] विशइली ॥
सानुज हमहु रामवत् बनिकैँ ताहि विपिन मे जयबे ॥
परमोदार जानकी-जानिक चरणक भृत्य कहयबे ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे सप्तमोऽध्यायः ॥

1 शिर (३)।

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

मुनि वसिष्ठ मन्त्री-गण सहित । नृपतिक सभा गेला नृप-रहित ॥
सुरपति-सभा समान विराज । अतिशय शोभित विबुध समाज ॥
ब्रह्मा सन आसन-आसीन । धर्म्म-कर्म्म-रत धर्म्म-धुरीण ॥
भरतहु काँ तत लेल बजाय । देश काल विधि कहल बुझाय ॥
भरत सुमति शुनु कहल वसिष्ठ । कर्म्म शुभाशुभ काल बलिष्ठ ॥
अहाँ महाशय महि सविवेक । करब अहाँक राज्य-अभिषेक ॥
केकयि-कहल रहल सिद्धान्त । कहि गेला छल भूप नितान्त ॥
राजा राज्य करिय स्वीकार । सभ लोकक अछि सत्य विचार ॥
भरत कहल शुनु शुनु ई राज । हमरा नहि सपनहुँ मे काज ॥
हम किङ्कर राजा श्रीराम । अनुचित नृपति बनब एहि ठाम ॥
नृपवर[1] किङ्कर नृपति भिषारि । सन्मार्गक जनु टूटल आरि ॥
सत्य कहैछी भुजा उठाय । हम नहि करब राज्य अन्याय ॥
केकयि-सुत बुझि जे जे कहब । हम अपराधी से से सहब ॥
लय अनितहु सत्वर तरुआरि । मन हो केकयि दीतहुँ मारि ॥
पतित मातृहा शुनि रघुनाथ । परश हमर नहि करता हाथ ॥
आनब तिनु जनकाँ घर फेरि । जायब जंगल प्रात सबेरि ॥
जटिल वेष धरणीमे शयन । व्रतविधि देखब पंकजनयन ॥
जे विधि बनि वन बड़का भाय । गेला तेहि गत हमहूँ जाय ॥
पयरहि चलब वनी व्यवहार । कन्द मूल फल प्राणाधार ॥
वन शत्रुघ्न सेहो चलताह । भवन सविघ्न वृथा रहताह ॥
चलु चलु गुरु तत होयब सहाय । अयबे करता बड़का भाय ॥
कहि चुप रहला जखना भरत । सभ्य सकल कह एहन के करत ॥

---

1 इमे पहिलें 'सत्य कहै छी, इत्यादि तखन 'नपवर किङ्कर' इत्यादि ।

साधु कहल सज्जन-समुदाय । रघुनन्दन काँ समुचित भाय ।।
बड़ गोट मनमे छल अछि त्रास । भरत पुरत सबहिक मन आस ।।

॥ दोवय छन्द ॥

सगर नगरमे बाजल डङ्का, भरत न[1] राजा हयता ।
आनय हेतु राम नृप-वरकाँ पयरहि सानुज जयता ।।
सेना सभ तैयार चलै सङ्ग साजल घोड़ा हाथी ।।
गुरु वसिष्ठ द्विज-गण महरानी, कौशल्यादिक जाथी ।।
चढ़लि लालकी केकयि रानी, सुमरि सुमरि निज करणी ।
जाइ पताल तेहन हो लज्जा, फाटि जाथि जौँ धरणी ।।
हा विधि गुणनिधि पुत्र पुतोहुक कयल दुर्द्दशा भारी ।
रघुनन्दन लक्ष्मण की कहता, कि[2] कहति जनक-दुलारी ।।

॥ दोहा ॥

गजरथ गोरथ तुरगरथ, शिविका सैन्य[3]-समूह ।
गुह शुनलनि भरतागमन, मन मन कर किछु ऊह ।।
जौँ हम देखब राज्य-मद, तौँ न उतारब पार ।
रामक कारण कण्ठ दय, समर करब अनिवार ।।

॥ चौपाइ ॥

शृङ्गवेरपुर दल विशराम । छल छथि जेहि थल लक्ष्मण राम ।।
गुहजन यदपि निषादक जाति । साँठल भारहि भार उपाति ।।
कन्द मूल फल लागल ढेर । आगाँ राखल मिलइक बेर ।।
भरत स्वरूप देखल गुह जखन । संशय मनक मेटायल तखन ।।
चीराम्बर धर श्याम-शरीर । जटा-मुकुट धर जनु रघुवीर ।।
लेश न मनमे राजस रोच । राम राम रट मन बड़ शोच ।।
सीता लक्ष्मण नाम उचार । अकपट निकट देखल व्यवहार ।।
गुरु वसिष्ठ मन्त्री मिलि सङ्ग । संस्थित सानुज रामक रङ्ग ।।
कयल प्रणाम कहल गुह नाम । भरत हमर अछि निकटहि गाम ।।
गुह अँह थिकहुँ कहैत उठि जाय । लेल भरत झट हृदय लगाय ।।

1 ने (३), 2 की (३), 3 शैन्य (३) ।

कुशल क्षेम अछि पुछल अनेक । मित्र अहाँकाँ विसद विवेक ॥
रामचन्द्र परमेश अनन्य । तनिसौँ मिललहुँ अहँ अतिधन्य ॥
रघुनन्दन सौँ वार्त्तालाप । गुह अहँ नियत भेलहुँ निष्पाप ॥
सीता सहित छला जत राम । मित्र शीघ्र चलु लय से ठाम ॥
नयन सजल थल देखितहिँ जाय । शयन कयल जत घास ओछाय ॥
सीताभरणक कनकक विन्दु । कहुँ कहु खण्ड खसल जनु इन्दु ॥
मन अति दुखित तखन भेल भरत । कह विधि विपति हमर कोना टरत॥
अति सुकुमारि कुशासन शयन । मन बड़ व्याकुल देखइत नयन ॥
हमर निमित्त राम काँ कष्ट । केकयि-सुत बनि भेलहुँ नष्ट ॥
धन्य सुमित्रा लक्ष्मण धन्य । जनि काँ अछि रामक सौजन्य ॥
रामक सङ्ग सुयश सभ ठाम । भल के कहता केकयि नाम ॥
हम रामक दासक जे दास । तनिको दास एक मन आश[1] ॥
छथि प्रभु कतय अहाँ काँ ज्ञात । मित्र कहू हम चलब प्रभात ॥
हमरे कारण सभ किछु दोष । रघुनन्दन मन तदपि न रोष ॥
घुरि घर चलता कहबनि कानि । होयत न हमर मनोरथ हानि ॥
रघुपति-भक्त भरत अहँ धन्य । सकल-लोक-सम्मानित[2] गण्य ॥
एहन न भक्ति शुनल छल कान । अपनैँ काँ देखि भेल प्रमान ॥

॥ दोहा ॥

चित्रकूट मन्दाकिनी, निकट कुटी निर्म्माय ।
सानुज सीताराम छथि, कहब देब पहुचाय ॥

॥ चौपाइ ॥

भरत कहल सुरसरिता तरिय । मित्र उपाय तेहन अहँ करिय ॥
गुह कह भरत विलम्ब न आब । कयलहुँ वृत्त पाँच शय नाव ॥
राज-नाव एक अपनहि खेबि । गुह आनल सभसौँ भल टेबि ॥
कौशल्यादिक सानुज भरत । गुरु[3] वसिष्ठ एहिसौँ सन्तरत ॥
सकल सैन्य गण उतरल पार । घोड़ा हाथी भरिया भार ॥
उठइत चलइत पथ विश्राम । कहल सकल जन सीताराम ॥

1 आस, 2 सन्मानित (३), 3 गुह (३) ।

॥ दोहा ॥

भरद्वाज-आश्रम निकट, सभ कयलनि विश्राम[1]।
गेला सानुज भरत तत, मुनि-पद कयल प्रणाम ॥

॥ चौपाइ ॥

मुनिकेँ केकयि-तनय चिन्हार । कुशल क्षेम पुछलनि व्यवहार ॥
कहु कहु भरत अहाँ महराज[2] । आयलछी की मुनिक समाज ॥
की अहँ जटा बनाओल केश । हँसी करत जे देखत देश ॥
रामक सन बलकल की धयल । भूपति भय अति अनुचित कयल ॥
कन्द मूल फल निःफल खाइ । जङ्गल जङ्गल जनु बौआइ ॥
भरत अहाँ घुरिकेँ घर जाउ । बड़ गोट राज्यक सुखकेँ पाउ ॥

॥ सोरठा ॥

सभ अपनैँ काँ ज्ञात, कृपा करिय कारुणिक[3] मुनि ।
कहि नहि होइछ तात, सजल-नयन कहलनि भरत ॥

॥ चौपाइ ॥

कयल राम-राज्यक अविघात । केकयि से हमरा नहि ज्ञात ॥
मुनि हम छलछी[4] मामक ग्राम । वन अयला सानुज श्रीराम ॥
कहइतछी छुबि अपनैँक चरण । हमरा नहि कलहक आचरण ॥
ई कहि मुनिपद छुइलनि जाय । अपनैँ सौँ मन कि रह नुकाय ॥
जनइत छी हम पाप अपाप । अनुचित कयलनि माता बाप ॥
हमरा नहि राज्यक अधिकार । प्रभु-पद-किङ्कर एहन विचार ॥
रामचन्द्र-पद मन आरोपि । राज्य-भार हुनकहि देब सोपि ॥
हमरा मनमे मुनि दृढ़ टेक । रामक करब एतहि अभिषेक ॥
छथि गुरुजन पुरजन समुदाय । सङ्ग नगर कर्त्तव्य सहाय ॥
प्रभुकाँ अपन नगर लय जयब । तनि चरणक किङ्कर हम हयब ॥
मुनि कह साधु साधु अहाँ भरत । अपथ कि अहँक हृदय सञ्चरत ॥
रघुनन्दनक अहाँ महाभक्त । सौमित्रिहुँ सौँ मन अनुरक्त ॥

---

1 विशराम (१,२), 2 तीनूमे पाठ 'महाराज', 3 कारुणि (३), 4 छलहुँ (३) ।

हम आतिथ्य करब किछु आइ । बाबू भरत आइ जनु जाइ ।।
ज्ञान-नयनसौँ सभ अछि ज्ञात । कयल अमर-गण सभ उतपात ।।
स्मरण कयल मुनि भारद्वज । कामधेनु करु समुचित काज ।।
आयल छथि पाहुन बड़ गोट । भोज्य वस्तु वर्षण हो ओट ।।
एकर मर्म्म आन नहि जान । दिव्य वस्तु भोजन विधि पान ।।
कामधेनु-कृत सभ सम्पन्न । जनिकाँ जेहन तेहन तत अन्न ।।
मुनिक पठाओल दिव्य उपाति । सुखसौँ सभ जन खयलनि राति ।।
कयल वसिष्ठक मुनि सत्कार । तखन भरत-वर्ग्गक व्यवहार ।
कयल, भरत उठि मुनिक प्रणाम । सुखसौँ एतय कयल विशराम ।।
भोर भेल आज्ञा देल जाय । सभ जन चलब महेश मनाय ।।
भरद्वाज मुनि कहलनि जाउ । रघुनन्दन सौँ दर्शन पाउ ।।

।। दोवय छन्दः ।।

सानुज भरत सुमन्त सङ्ग मे, गुह निषाद अनुरागी
चित्रकूट पर्व्वत तट गेला, जतय बहुत मुनि त्यागी ।।
सैन्य सकल गिरि नीचहि राखल, कयलनि भरत पुछारी।।
बासा कतय कयल रघुनन्दन, लक्ष्मण जनक-दुलारी ।।
आम सफल भल भल फल कटहर, केरा घौड़िहि पाकल ।
कोविदार चम्पा बकुलादिक, बहुत जतय जे ताकल ।।
मन्दाकिनि गङ्गासौँ उत्तर, गिरिसौँ पश्चिम आशा ।
सीता सहित सलक्ष्मण रामक, श्रीधर सुन्दर बासा ।।

।। सोरठा ।।

मुनिगन देल देखाय, श्रीरघुनन्दन-वन-भवन ।
भरत चलल अगुआय, बहुत हर्ष उत्कर्ष मन ।।
मुनिजन-सेवित धाम, तरु लटकल वलकल अजिन ।
राम-भवन अभिराम, सानुज देखल दूरसौँ ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे अष्टमोऽध्यायः ।

1 ३मे ई पंक्ति नहि अछि ।

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

श्रीरघुनन्दन सुन्दर चरण । महि मे अङ्कित विधिगण-शरण ॥
कुलिश कमल ध्वज धूलि मे रेख । अकलुष अदुख भरत से देख ॥
आज धन्य भेल हमरो भाग । प्रभु-दर्शन-उतकण्ठा लाग ॥
शञ्च शञ्च प्रभु आश्रम जाय । हरष नोर सौँ भरत नहाय ॥
दूर्व्वादल-श्यामल वर अङ्ग । सौदामिनि-छवि जानकि सङ्ग ॥
जटा किरीटी वल्कल चीर । तरुण-अरुण-मुख श्रीरघुवीर ॥
नयन विशाल भाल भल भ्राज । लक्ष्मण-सेवित चरण समाज ॥
वैदेही सौँ वचन-विनोद । सदनसँ शत गुण परम प्रमोद ॥
देखल भरत खसल प्रभु-चरण । दीनवन्धु कहि संकट-हरण ॥
रामक नयन नोर बढ़िआय । दुहु भुज सौँ लेल हृदय लगाय ॥
मिलिमिलि पुन मिल मन अति हर्ष । देखि मुनि नयन जेहन घनवर्ष ॥
जननि न जानथि श्रम गिरि बाट । खसब पड़ब की गड़ पद काँट ॥
कत छथि कहि कहि दौड़लि जाय । सर-वर जेहनि[2] पिआसलि गाय ॥
रघुनन्दन सभ जननी जानि । कयल प्रणाम बहुत सन्मानि ॥
गुरुपद कय साष्टाङ्ग प्रणाम । धन्य धन्य हम कहलनि राम ॥
लक्ष्मण क्रमक्रम कयल प्रणाम । यथायोग्य गुरुजन जे नाम ॥
शाशु[3] पुतोहु अङ्क मे राखि । जिबइत मुह देखल[4] ई भाखि ॥
लाजहि केकयि रहल सशंक । विधि देल हमरहि माँथ कलंक ॥
आगत जे पुरलोक छलाह । यथायोग्य सभ जन बैसलाह ॥
कहु गुरु पिता-कुशल की रीति । हमरा सभ पर पुरुब पिरीति ॥
राम-वचन शुनि कहल वसिष्ठ । कालक गति अछि वहुत बलिष्ठ ॥
कहयक विषय रहय के चूप । सुरपुर गेला दशरथ भूप ॥

---

1 उत्कण्ठा (३) 2 जेहन (३), 3 सासु (३), 4 देखब (३) ।

राम राम कहि कहि सौमित्रि । अयि कत गेलहुँ विदेहक पुत्रि ॥
कनइत एहिगत गत नृप-प्राण । शुनल राम श्रुति-शूल समान ॥
मुइलहुँ ई कहि खसला कानि । लक्ष्मण राम करुण-रस सानि ॥
हम अनाथ के करत दुलार । रहि गेल मनक मनोरथ भार ॥
सीता सती होथि नहि चूप । कहि कहि गुणनिधि सकरुण भूप ॥
अहँ वियोग-वश त्यागल प्राण । हमर हृदय भेल[1] कुलिश समान ॥
रामक कनइत सभ जन[2] कान । तनि सौँ त्रिभुवन भिन्न न आन ॥
कानय केओ नहि कहथि वसिष्ठ । कालपुरुष अनिवार्य्य बलिष्ठ ॥
कनलय नृप नहि अओता घूरि । की हो कहू कपारे चूरि ॥
मन्दाकिनि जल कयल स्नान । क्रम क्रम देल तिलाञ्जलि दान ॥
फल इङ्गुदी तथा पिण्याक । पिण्डदानमे कहइत वाक ॥
हम जे अन्न पितर से अन्न । पितरदेव मन होउ प्रसन्न ॥
गेला कुटी पुन कयल स्नान । क्रन्दन करुण वधिर जनु कान ॥
तेहि दिन सभ कयलनि उपवास । गज-तुरगादि न खयलक घास ॥
भेल अशौचक काण्ड समाप्त । दोसर दिवस जखन सम्प्राप्त ॥
मन्दाकिनि जल सकल नहाय । बैसल राम सभाजन जाय ॥
भरत तहाँ उठि जोड़ल हाथ । हम किछु कहब देव रघुनाथ ॥
सभ जन अनुमति उचित विवेक । अपनौँक होय एतहि अभिषेक ॥
मुनिजन बहुत अपन गुरु सङ्ग । देखि पड़ितहि अछि पुरजन रङ्ग ॥
जेहन पिता तेहन जेठ भाय । क्षत्रिय-धर्म्म सनातन न्याय ॥
पिता-राज्य पालन करु देव । सकल प्रजा मे यश बड़ लेब ॥
बन-वासक नहि सम्प्रति बेरि । वन-विनोद-मन अयबे फेरि ॥
बहुत यज्ञ विधिवत गोदान । करि उत्पन्न पुत्र गुणवान ॥
ज्येष्ठ पुत्रकाँ दय लेब राज । पुन आयब वन वनी-समाज ॥
केकयि-कृत मन नहि किछु धरिय । पालन हमर नाथ प्रभु करिय ॥

1 भल (३), 2 जनि (३) ।

॥ दोहा ॥

श्रीरघुनन्दन-चरण पर, भरत धयल निज माँथ ।
कयल दण्डवत भक्तिसौँ, त्राहि त्राहि रघुनाथ ॥

॥ चौपाइ ॥

स्नेह-सजल-लोचन श्रीराम । शुनु शुनु भरत कहल गुणधाम ॥
त्वरित उठाय लगाओल अङ्क । भक्तिभाव अहँकाँ निश्शङ्क[1] ॥
भरत अहाँक वचन निर्व्याज । वनि बनलहुँ पितृ-वचनक काज ॥
माय बाप आज्ञा अनुसार । पिता-वचन-प्रतिपाल विचार ॥
चौदह वर्ष वनहि मे रहब । भ्रमहुँ भरत मिथ्या नहि कहब ॥
अहँकाँ राज्य देलेँ छथि बाप । थोड़बहि दिनमे की सन्ताप ॥
दण्डक-वन हमरा देल राज । जनितहि छथि गुरु सकल समाज ॥
पिता-वचन हम माँथा धयल । अहँ की भरत अनादर कयल ॥
मान न पिता वचन अज्ञान । से जिबितहि छथि मृतक समान ॥
तनिका अन्त नरकमे वास । बापक जनिकाँ नहि मन त्रास ॥
भेँट भेल से भल भेल काज । अहँ छी विदित[2] बनल महराज ॥
करु गय राज्य वृथा निर्व्वेद । अहँइक चिन्ता सभकाँ खेद ॥

॥ दोहा ॥

भरत कहल स्त्री-जित पिता, कामुक बुद्धि-विहीन ।
मृत्यु-निकट उन्मत्त-मति, मन नहि अपन अधीन ॥

॥ चौपाइ ॥

तेहन न पिता जेहन अहँ कहल । सत्य-सन्ध[3] नृप सभ किछु सहल ॥
हृदय अधर्मक अतिशय[4] त्रास । बरु मानथि वर नरक-निवास ॥
कहल देल वर सत्य विचारि । केकयि शकलि[5] न नृपव्रत टारि ॥
सत्य-वचन नृप त्यागल प्राण[6] । रहि गेल धर्म्माधार प्रमाण ॥
तनिक वचन काँ कय देब त्याग । रामचन्द्र काँ अनुचित लाग ॥

---

1 निस्संक (१,२), 2 दिवित (३), 3 बन्ध (३), 4 भय (३), 5 सकलि (३), 6 न (३) ।

कि करति केकयि कहत की लोक । कर्म्म शुभाशुभ रह की रोक ।।
कहलनि भरत देव रघुनाथ । सभ कृति प्रभुवर अपनैँक हाथ ।।
हमहिँ रहब वन चौदह वर्ष । अपनैँ राज्य करू मन हर्ष ।।
शुनु शुनु भरत कहल पुन राम । मन बड़ गड़बड़ करु थिर ठाम ।।

।। षट्पद छन्दः ।।

सजल-नयन कह भरत नाथ हम नहि घुरि जायब ।
लक्ष्मण सन वन रहब सङ्ग दुख दिवस गमायब ।।
नहि रखबे जौँ सङ्ग प्राण हम सत्वर त्यागब ।।
बड़ गोट अयश कपार राज झंझट नहि लागब ।।
धयल कुशासन रौदमे पद्मासन पूर्व्वाभिमुख ।।
हठ भरतक दृढ़ देखिकेँ इन्द्रादिक मन बहुत दुख ।।

रामचन्द्र मन बुझल भरत अविचल हठ ठानल ।।
कहलहु कथा बुझाय[1] वचन एकगोट न मानल ।।
गुरु वसिष्ठ काँ देल वामनेत्रान्त इसारा ।।
ई नहि ककरो शक्य देल अपनहि काँ भारा ।।
कहलनि गुरु एकान्तमे भरत कठिन हठ परिहरिय ।।
हेतु कहैछी से शुनिय सत्य वचन श्रुति मे धरिय ।।

।। चौपाइ ।।

अज अव्यय नारायण जैह । रामचन्द्र काँ जानब सैह ।।
ब्रह्मा बहुत प्रार्थना कयल । दशरथ-भवन पुत्र बनि अयल ।।
रावण-वध-कारण अवतार । पृथिविक हरण काज सभ भार ।।
प्रभुवर-माया सीता-रूप । लक्ष्मण थिकथि अनन्त अनूप ।।
केकयि-कृत सौँ मन जे खेद । कहइतछी तकरो हम भेद ।।
रामचन्द्र जौँ करता राज । बुझल देवता हयत न[2] काज ।।
विघ्न शारदा कयलनि जाय । केकयि रानिक कण्ठ समाय ।।
निर्दय-हृदय कहल निश्शङ्क । केकयि काँ छल लिखल कलङ्क ।।
ई तीनू[3] जन दण्डक जयत । धर्म्म-विमुख दशमुख तत अयत ।।

1 बुझायल (३), 2 ने (३), 3 पाठ तीनूमे अछि 'तिनू' ।

निज अपराध पाबि संहार । हयता रावण[1] अवनिक भार ।।
सकुल सबल रावण कें जीति । घुरि अओता[2] करताह सुनीति ।।
आग्रह त्यागि भरत घुरि जाउ । अन्नपानि सुखसौँ अहँ खाउ ।।
एतय वृथा सभ जन मन दैन्य । जाउ अयोध्या लयकें सैन्य ।।

।। दोहा ।।

गुरुक वचन शुनलनि भरत, अति विस्मित मन भेल ।
सजल-नयन आनन्द-घन, राम निकट पुनि गेल ।।

।। चोपाइ ।।

चरणक खरओँ देव देल जाय । सेवा करब धरब मन लाय ।।
दुहुटा खरओँ राम दय देल । भरत भक्ति माँथा धय लेल ।।
जगमग जोति विभूषित-रत्न । देव-समान धयल बड़ यत्न ।।
करथि प्रदक्षिण करथि प्रणाम । कहथि अवधि दिन आयब गाम ।।
आयब्र अवधिक दिवस गमाय । भस्म होयब हम अनल समाय ।।
नीक नीक कहलनि श्रीराम । डङ्का पड़ल चलल जन धाम ।।
कनइत केकयि प्रभुसौँ कहल । किछु कर्त्तव्य शिष्ट की रहल ।।
रामचन्द्र बेटा मन आश । हमरे भेल विश्व उपहास ।।
अहँक भरोश बहुत मन धयल । सभ जन-रव हम कहबे कयल ।।
केहन पिशाची देल लगाय । हमहूँ थिकहुँ मान्य सतमाय ।।
अपनहि कयल सकल रघुनाथ । तदपि कहिय हम जोड़िय हाथ ।।
करब क्षमा प्रभु सब अपराध । लोक-विदित सुख कयलहुँ वाध ।।
अहँ परमेश्वर विश्व-स्वतन्त्र । हम की मानी वानी मन्त्र ।।

।। दोहा ।।

हँसि कहलनि रघुनाथ, देवि सत्य अपनैँ कहल ।
वर-नृप-आज्ञा लाथ, देव-कार्य्य कर्त्तव्य छल ।।

---

1 रावन (३), 2 अओताह (१,२) ।

॥ सोरठा ॥

त्यागु देवि सन्ताप, होएब कर्म्म सौँ लिप्त[1] नहि ।
विगत त्रिविध तन-ताप, रहब हर्षिता निज भवन ॥
से शयबार प्रणाम, कयल धयल प्रभु-ध्यान मन ।
धन्य धन्य श्रीराम, कहि चलली केकयि पुरी ॥

॥ चौपाइ ॥

यथायोग्य मिलि मिलि सभ लोक । गेल अयोध्या परिहरि शोक ॥
भरत मिलन सौँ मन सन्तोष । मन मन केकयि पर बड़ रोष ॥
गुरु मन्त्री परिजन गण आन । भरतक सङ्गहि कयल प्रयाण ॥
जय सीतापति जय रघुनाथ । कनइत कनइत कर गुण-गाथ ॥
मिथिलेशक कन्या बुधिआरि । छल भल[2] सङ्ग भाग्य दिन चारि ॥
सकल पूर्व्ववत ठामहि ठाम । विरत भरत गेल नन्दिग्राम ॥
राखल खरओँ सिंहासन थापि । पूजा-विधि नहि छूट कदापि ॥
नित पूजन षोड़श उपचार । राज-भोग बन बहुत प्रकार[3] ॥
राज-काज जत जे जे आब । राम समर्प्पण सिद्ध स्वभाव ॥
अवधिक दिन गणयित दिन जाय । मुनि-व्रत कन्द-मूल-फल खाय ॥
भूमि शयन सानुज नित करथि । अनुरत[4] राम-चरण मन धरथि ॥
राज-काज किछु रहय न बन्न । व्रती भरत सभ कर सम्पन्न ॥
चित्रकूट गिरि पर श्रीराम । बुझलक लोक घराघरि गाम ॥
एक घुरि आबथि एक पुन जाथि । रामचन्द्र मन मन अगुताथि ॥
ग्राम-जनक आगमने[5] तोड़ि । दण्डक-वन गेला गिरि छोड़ि ॥
जय अत्रि काँ[6] कयल प्रणाम । हम छी धन्य कहल श्रीराम ॥
वनवासक छल अयलहुँ एतय । दुःखक[7] लेश देश नहि जतय ॥
रामक वचन मधुरतर शूनि । विधिवत पूजा कयलनि मूनि ॥
बैसला राम मुनिक व्यवहार । भल फल वन्य आनि सत्कार ॥
सीता लक्ष्मण बैसल जानि । मुनि कहलनि परमातमा मानि ॥

1 लिप्ति (१), 2 व्रल (३), 3 प्रचार (३), 4 अनुरथ (३), 5 आगमन, (३), 6 कय (३),
7 दुख (३) ।

॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥

अनसूया महावृद्धा गृहमध्य तपस्विनी ।
छथि राम ततै जाथु मैथिली श्रीयशस्विनी ॥
गेली सीता ततै साध्वी राम आज्ञानुसार सौँ ।
प्रणाम तनिकाँ कैल मैथिली सद्विचार सौँ ॥

॥ दोवय छन्दः ॥

कहलनि अनसूया हम वृद्धा पति सँग[1] करी तपस्या ।
अहँ जानकि सभलोकक जननी शिव-विधि-प्रभृति-नमस्या ॥
ई कहि अङ्क लगाओल तनिकाँ छवि देखल भरि आँखी ।
हर्षहि हृदय भरल अछि होइछ दुहू आँखि मे राखी ॥

॥ तोटक छन्दः ॥

तन हो न मलान कदापि कहू ।
अँगराग[2] लगाओल अत्रि-बहू ॥
पहिरावल से पट जे नितहू ।
नव भव्यद फाट न जे कतहू ॥

॥ प्रज्झटिति छन्दः ॥

घर जाथु कुशलसौँ अहँक संग, वनमे आयल छथि अछि प्रसङ्ग ॥
मुनि वन्य कन्द फल आनि देल, सानुज सीतापति तृप्त भेल ॥
मुनि कहल भुवन अपनैँ बनाय, प्रतिपाल करै छी विभु कहाय ।
गुण-कृत न दोष अहँमे समाय, विभुसौँ माया मोहिनि डराय ॥

---

1 संग (३), 2 अँगराज (३) ।

कवि-प्रार्थना

॥ उक्त छन्द ॥

जयजय रघुनन्दन देवदेव, हृत-धरणि-भार कृत-विपिन-सेव ।
जय दलित-भवानीनाथ-चाप, दूरी-कृत-मिथिला-मनस्ताप ॥
जयजय पुरुषोत्तम गुणातीत, श्रित-भूमि-तनय मुनि-गण-विनीत ।
जय दाशरथे नानावतार, मां पालय पालन दयागार ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा-रामायणे अयोध्याकाण्डे नवमोऽध्यायः ॥

॥ इति अयोध्याकाण्ड ॥

॥ श्री गणेशायनमः ॥

मिथिला-भाषा-रामायण

॥ आरण्यकाण्ड ॥

॥ शिखरिणी छन्दः ॥

भ्रमन्तौ[1] कान्तारे क्षयितदनुजौ त्यक्तनगरौ
किशोरौ सद्वीरौ जनकतनया-रक्षणपरौ ।
जशवन्तौ दान्तौ करकमल-चापाशुगधरौ
सदापायास्तान्नो दशरथतनूजौ नरवरौ ॥१॥

॥ चौपाइ ॥

एकदिन रहि प्रभु पुन चललाह । अरिआतय मुनि सङ्ग चललाह ॥
राम कहल अपनैँ घुरि जाउ । कृपायुक्त वन-बाट देखाउ ॥
शुनि मुनि कहलनि होमहि बूझ । अपनैँ काँ प्रभु कतय[2] न सूझ ॥
हमर शिष्य लौकिक व्यवहार । बाट देखौता उचित विचार ॥
चलला एक कोश प्रभु भूमि । अत्रिशिष्यसौँ कहलनि घूमि ॥
देखि पड़ै अछि नदी अथाहि । निर्ज्जन भेट नाब की ताहि ॥
शिष्य कहल प्रभु अछि भल[3] नाव । देखब[4] खेबि लबै छिय आब ॥
तिनु जनकाँ लेल नाव चढ़ाय । क्षणमे देलनि पार लगाय ॥
अपने लोक कयल बड़ काज । गेल जाय मुनि अत्रि-समाज ॥
विपिन भयङ्कर सह सह साप । सिंह बाघ वन-जन्तु कलाप ॥
झिल्ली करय घोर झंकार । राक्षस विकट विकट संचार ॥
शुनु लक्ष्मण कहलनि रघुवीर । यतनहि चलिय सज्ज धनुतीर ॥

1 भ्रमन्तौं (३), 2 कत नहि (३), 3 भूल (३), 4 देखल (३) ।

॥ दोहा ॥

आगाँ हम पाछाँ अहाँ, सीता माझहि ठाम ।
ब्रह्म जीव माया जेहनि, चलु दण्डक[1] बन नाम ॥

॥ चौपाइ ॥

सभ दिश[2] लक्ष्मण तकितहि रहब । आबय दुष्ट शीघ्र से कहब ॥
कहइत योजन डेढ़ प्रमान । जाय देखल एक दिव्य स्थान ॥
शोभासीम अनूप तड़ाग । सुन्दर वारि अमृत सम लाग ॥
उत्पल कमल कुमुद कह्लार । जल-पक्षी कर विविध विहार ॥
जाय समीप पीबि किछु पानि । बैसला तरुतर छाया जानि ॥
अबइत देखल एक उतपात । वदन भयङ्कर भयकर गात ॥
गर्ज प्रचण्ड मेघ समतूल । कत मानुष गाँथल छल शूल ॥
महिष बाघ गज शूकर खाय । चटचट हाड़ समेत चिबाय ॥
शुनु लक्ष्मण कहलनि रघुवीर । धनु कोदण्ड हाथ करु तीर ॥
आबि गेल राक्षस बड़ गोट । दौड़ल अबइत अछि बड़ मोट ॥
जानकि जनु मन मानब त्रास । हिनकर एहिखन करब विनाश ॥
राम बाण धय अचल समान । ठाढ़ भेला ओकरे दिश ध्यान ॥
ओ प्रभु निकट विकट[3] हँसलाह । जयबह कतय आब फसलाह ॥
मुनिसन वेष[4] धनुष शर हाथ । अति निर्भय मन करह न लाथ ॥
स्त्री-सहाय छह युगल कुमार । हे सुन्दर के देल विचार ॥
अयला बन नहि बचतौ प्राण[5] । हमरा मुह तोँह ग्रास प्रमाण[6] ॥
कह कह बनमे छौ की काज । ई दण्डक-वन दनुजक राज ॥
राम कहल शुन राक्षस घोर । कतय पड़यबह पकड़ल चोर ॥
हमर नाम कहइछ जन राम । पिता-वचन सौँ छोड़ल धाम ॥
लक्ष्मण भ्राता हमर कनिष्ठ । त्रिभुवन-विजयी वीर बलिष्ठ ॥
प्राण-वल्लभा सीता नांम । काज शुनह अयलहुँ एहिठाम ॥
तोर सन जन रण-शिक्षा देब । मुनिक मण्डली मे यश लेब ॥
राम-वचन शुनि हँसल से घोर । देखब राम केहन बल तोर ॥

---

1 ३मे 'द' नहि । 2 शि (३), 3 ३मे 'विकट' नहि । 4 वेग (२), 5 न (१,२) ।

शूल हाथ दौड़ल मुह बाय । देखितहिँ सभकाँ जनबहु खाय ।।
जनयित नहि छह नाम विराध । मृग-मुनि-जनक वनक हम व्याध ।।
कत कत मुनिकाँ गेलहुँ खाय । बाँचल से जे गेल पड़ाय ।
त्यागि अस्त्र दुनु बन्धु पड़ाह । सीताकाँ हमरा दय जाह ।।
जौँ जिबइक इच्छा संसार । सत्वर करह यहन व्यवहार ।।
बल लेब जानकि दौड़ल डाँटि । शरसौँ राम तनिक भुज काटि ।।
हँसइत मन नहि कोपक लेश । श्रीरघुनन्दन प्रबल नरेश ।।
मुह बओलैँ[1] दौड़ल खल फेरि । पयर काटि लेलथिनि[2] तहि बेरि ।।
ससरल आबय करय प्रताप । मुह बओलैँ[1] जनु अजगर साप ।।
अर्द्ध-चन्द्र-बाणेँ तनि माँथ । चटपट काटल श्रीरघुनाथ ।।
पृथिवी-तल ककरहु नहि टेर । से खल खसल रुधिर भेल ढेर ।।
प्रभु-महिमा किछु कहल न जाय । सीता प्रभु-तन गेलि लपटाय ।।
दिवि दुन्दुभि निर्मीति[3] बजाव । अप्सरादि नाचथि[4] कय भाव ।।
गाबथि किन्नर-गण गन्धर्व्व । धन्य धन्य प्रभुकाँ कह सर्व्व ।।

॥ दोहा ॥

भेल विराधक देह सौँ, दिव्य पुरुष उत्पन्न ।
दिव्य वसन भूषण कनक, रवि-रुचि गुण-सम्पन्न ।।

॥ चौपाइ ॥

बद्धाञ्जलि रामक लग ठाढ़ । नाथ छोड़ाओल सङ्कट गाढ़ ।।
बेरि बेरि से करथि प्रणाम । कहि सानुज सीतापति[5] राम ।।
हम विद्याधर विमल-प्रकाश । देखल नयन भरि पूरल आश ।।
दूर्व्वासा मुनि देल छल शाप । क्रोध-विवश थापल छल पाप ।।
अपनैँक चरण मध्य स्मृति रहय । रसना रामनाम नित कहय ।।
प्रभु-गुण-कीर्त्तन शुन नित कान । कर सेवा कर कर्म्म न आन ।।
प्रभु-पद पङ्कज पर पड़ माँथ । करुणागार देव रघुनाथ ।।

---

1 नै (३), 2 न (३), 3 त (३), 4 छि (३), 5 ती (२) ।

देव-लोक माया नहि व्याप । से प्रभु अपनेक मुख्य प्रताप ॥
रघुनन्दन कह सुखसौँ जाउ । अहँ मायामे जनु लपटाउ ॥
हमर दर्शनै[1] अहँ काँ मुक्ति । दुर्ल्लभ तेहन हमर दृढ़ भक्ति ॥
शीघ्र जाउ आज्ञा शिर मानि । भक्ति भाव सम्पन्नैँ जानि ॥

॥ दोहा ॥

रामचन्द्र-करसौँ मरण, छूटल मुनि-कृत शाप ।
चरित मुक्ति-वर-प्रद कहथि, सकल भुवन यश व्याप ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा-रामायणे आरण्यकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ।

---

1 ने (२,३) ।

॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

स्वर्गत भेला जखन विराध । तखन गगन सुरजन सम्बाध[1] ॥
प्रभु सानुज वैदेही सङ्ग । गेला ततय जतय शरभङ्ग ॥
आयल छथि वन श्रीभगवान । मुनि जानल साधन विज्ञान ॥
सत्वर विधि विष्टर देल नीक । पूजा कयल विहित जे थीक ॥
प्रिय आतिथ्य कन्द फल मूल । कहल आइ दिन अति अनुकूल ॥
एतय बहुत दिन तप जे कयल । पुण्यकर्म्म जे जे अछि धयल ॥
अपनैँ विषय समर्प्पण भेल । दुर्ल्लभ दर्शन अपनैँ देल ॥
फल-विरक्त हम पायब मुक्ति । एक कहक थिक वचन सुयुक्ति ॥
सकल-हृदय-गृह नव घनश्याम । सरसिज-लोचन रघुवर राम ॥
चीराम्बर धर जटा-कलाप । सानुज श्रीपति हरु सन्ताप ॥
चिता चढ़ल योगीश्वर बाज । हे रघुनन्दन देखू आज ॥
देह दग्ध कय हम ब्रह्मत्व । जाइत छी अपनैँक समक्ष ॥

॥ दोहा ॥

वाम अङ्गमे जानकी, घन चपला समतूल ।
पुरी-अयोध्या-पति रहथु, हृदय सदा अनुकूल ॥
मुनि पुन[2] आगि पजारिकैँ, कयलनि दग्ध शरीर ।
दिव्य-देह लोकेश-पद, गेला कहि रघुवीर ॥

॥ चौपाइ ॥

कत मुनिवर आयल तहिठाम । सभकाँ तिनु जन कयल प्रणाम ॥
आशिष दय कहलनि प्रभु वेश । अयलहुँ छूटल मुनिक कलेश ॥
मुनि शरभङ्गक देखल प्रयाण । प्रभुसौँ सबहिक हो कल्याण ॥
टहलि घूमि वन देखल जाय । होयत ज्ञात घोर अन्याय ॥

1-द (२), 2 नि (२) ।

अस्थि कपाल पड़ल छल ढेर । राम पुछल की विषय अन्धेर ॥
मुनि कह मृत मुनि लोकक हाड़ । हिनका खयलक राक्षस राड़ ॥
करुणासौँ परिपूरित आँखि । श्री रघुनन्दन उठला भाखि ॥
कयल प्रतिज्ञा प्रभु विख्यात । कयलक अछि जे जे उतपात ॥
सभ राक्षसक करब संहार । विजय सुयश त्रिभुवन विस्तार ॥
मुनिजन चिन्ता करु जनु आब । कि कहब अड़ड़ा लागल नाव ॥
नाम सुतीक्ष्ण अगस्तिक शिष्य । शुचि संयम आहार हविष्य ॥
रामक मन्त्रोपासक एक । भक्ति अनन्य धन्य सविवेक ॥
तनिकर आश्रम गेला राम । सभ ऋतु कयल जतय विसराम ॥
शुनल सुतीक्ष्ण अबै छथि राम । विधिवत पूजन कयल प्रणाम ॥
मन्त्रोपासक भक्त सिनेह । अपनहि अयलहुँ हमरा गेह ॥
विश्व-अगोचर देखल नयन । सकल लोक मानस-गृह शयन ॥
अपनेक मन्त्र-विमुख-मति जैह । माया-मोहित होइछ सैह ॥
जल-गत दिनकर-बिम्ब समान । मायामोहित जन-मन-धाम ॥
विभु अपूर्व्व देखल से रूप । माया-मानुष सुन्दर भूप ॥
कोटि-काम-छवि अति कमनीय । चाप बाण धरइत रमणीय ॥
दया-सरस सुन्दर मुख-हास । हरथु हमर रघुवर भव-त्रास ॥
अमल अजिन पट सीतासङ्ग । सेवक लक्ष्मण प्रीति अभङ्ग ॥
गुणानन्त नीलोत्पल-कान्ति । वीर-धुरन्धर मानस-शान्ति ॥
ब्रह्म राम चिद्घन कह वेद । बसथि मुनिक मन अति निर्व्वेद ॥
देखल जे हम रूप समक्ष । हृदय बसथु[1] से प्रभु परतक्ष ॥
मुनिक विनय शुनि कहलनि राम । वचन कहैछी हम अभिराम ॥
हमरा मन्त्रोपासक भक्त । हमरहि विषय सतत अनुरक्त ॥
हमरा दर्शन सौँ हो मुक्त । भक्ति-भावना सौँ संयुक्त ॥
दर्शन हमर न दुर्ल्लभ ताहि । दिअ[2] तनिका हम सत्य निबाहि ॥
कहलनि राम नयन-जलजाभ । होयत हमर सायुज्यक[3] लाभ ॥
गुरु अगस्ति मुनि नाथ अहाँक । शिष्य तपस्वी वृद्ध जहाँक ॥

1 बनथु (३), 2 दिय (२,३), 3 आयुज्य (२,३) ।

किछु दिन ततय रहब हम जाय । तकर बाट अहँ देब देखाय ॥
भेल बहुत दिन हमहूँ जयब । गुरुदर्शन कय पुनि एत अयब ॥
प्रात भेल प्रभु कहि चललाह । सीता लक्ष्मण सङ्ग छलाह ॥
मुनि अगस्ति कँ छोटका भाय । मुनि सतीक्षण सभ देल देखाय ॥

॥ इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥

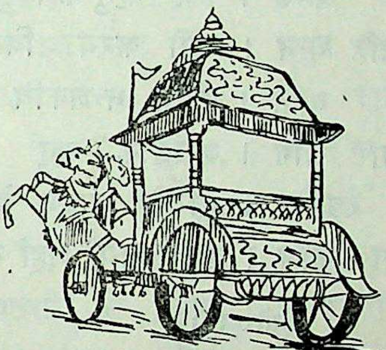

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

मुनि सभकाँ जानल व्यवहार । सत-स्वागत फलमूलाहार ॥
प्रभु एक दिन तहि थल रहलाह । प्रात भेल कहि कहि चललाह ॥
मुनि अगस्ति-मण्डली प्रवेश । सभ ऋतु फल फुल लागल बेश ॥
मृग नानाविध कत तेहि थान । पक्षी करय विलक्षण गान ॥
तहाँ देव ब्रह्मर्षि बहूत । आबि न शकथि जतय यमदूत ॥
नन्दन-वन सन शोभा लाग । ब्रह्मलोक जनु दोसर भाग ॥
शुनु[1] सुतीक्ष्ण कहलनि रघुवीर । मुनिकेँ कहब देखि पड़ भीर ॥
हम आयल छिअ दर्शन काज । कहू जाय अहाँ मुनिक समाज ॥

॥ सोरठा ॥

विधिवत कयल प्रणाम, जाय सुतीक्ष्ण[2] अगस्ति-पद ।
सीता लक्ष्मण राम, आश्रम बाहर ठाढ़ छथि ॥
कहयित शिष्यक कान, तन्मन्त्रार्थ विचार हम ।
कयलहि छलछी ध्यान, शीघ्र लाउ कहलनि गुरू ॥

॥ चौपाइ ॥

अपनहु चलला मुनि-गण सङ्ग । मुनिकेँ हर्ष समाय न अङ्ग ॥
रामचन्द्र प्रभु आयल जाय । बड़ गोट अतिथिक नाम कहाय ॥
कयल दण्डवत तिनु जन आबि । कहल सकल उत्तम फल भावि ॥
मुनि लेल प्रभुकाँ हृदय लगाय । हर्षक नोर हृदय बढ़ि आय ॥
रामचन्द्र-कर करसौँ धयल । आश्रम आनि प्रियातिथि कयल ॥
बड़ सेवा पूजा विस्तार । जेहन अकार तेहन व्यवहार ॥

1 शुन (३), 2 सुतीष्ण (१,२) ।

वन फल भोजन अपनहुँ ठाढ़ । उचिती मध्य हर्ष मन बाढ़ ।।
सुख एकान्त जखन बैसलाह । मुनि अगस्ति पुन[1] ततय गेलाह ।।
कहल कृताञ्जलि शुनु मायेश । एतबहि लय बसलहुँ ई देश ।।
क्षीर-समुद्र विधाता जाय । स्तुति कय कहलनि होउ सहाय ।।
सहइत छथि नहि धरणी भार । लेल जाय अपने अवतार ।।
सभ जीवक धरणी आधार । रावण-मरणक मुख्य विचार ।।
कहल से कयल मनोरथ पूर । दर्शन देल कष्ट गेल दूर ।।
प्रथम एकसौँ बाढ़लि सृष्टि । रविसौँ जेहन होइ अछि वृष्टि ।।
अपनैँक माया-कृत संसार । शास्त्र बहुत कह बहुत विचार ।।
स्तुति करइत-करइत भेल बेर[2] । धनुष ग्रहण करु कहलनि फेर[2] ।।
सुरपति एहि थल गेला राखि । देव रामकाँ ई सम्भाषि ।।
अक्षय बाण तेहन तूणीर । अपनैँक योग्य वस्तु रघुवीर ।।
रत्न-विभूषित वर तरुआरि । एहिसौँ करब भयङ्कर मारि ।।
निज-माया-कृत नर-आकार । लेल यदर्थ देव अवतार ।।
दुइ योजन एतसौँ से ठाम । पञ्चवटी कहइछ जन राम ।।
गोदावरी विमल तट जाउ । कार्य्य हेतु किछु काल गमाउ ।।

।। सोरठा ।।

जखना ई बजलाह, मुनि अगस्ति भगवान शुनि ।
तिनु जन प्रभु चललाह, पञ्चवटी उद्देश्य कय ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ।।

1 पुनि (३) एवं अन्यत्रहु । 2 बेरि ओ फेरि (३) ।

॥ अथ चतुर्थोध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

शैलश्रृङ्ग सन एकटा गृद्ध । देखलनि राम बाट पर वृद्ध ॥
मुनि-भक्षक राक्षस सन लाग । असुआयल अछि तेँ नहि जाग ॥
लक्ष्मण धनुष हाथ कय देब । चटपट प्राण हिनक हम लेब ॥
शुनि भय-विकल कहल खगराज । कयल जाय प्रभु एहन न काज ॥
हम दशरथ भूपालक मित्र । मुनिजन मे अछि हृदय पवित्र ॥
नाम जटायु सकल जन जान । हम खग दुष्ट न शुनु भगवान ॥
पञ्चवटी हम अपनैँक काज । रहब निरन्तर हे रघुराज ॥
सभ दिश टकटक तकितहि रहव । अरि[1]-आगमन प्रथम हम कहब ॥
मृगयार्थी लक्ष्मण वन जयत । आश्रम शून्य तखन जौँ हयत ॥
हम सीताकाँ रहब अगोरि । दुष्ट हृदयकाँ मारब झोरि ॥
शुनल जटायु-वचन रघुवीर । साधु कहल जानल अहाँ धीर ॥
वृद्ध एक जन राखक सङ्ग । तैँ[2] नहि होअ मनोरथ भङ्ग ॥
अङ्ग लगाय निमन्त्रित कयल । पञ्चवटी मे डेरा धयल ॥
ततय कयल मन्दिर विस्तार । लक्ष्मण वीर महा बुधियार ॥
गङ्गा उत्तर थल भल जानि । निर्ज्जन निरुपद्रव मन मानि ॥
केरा कटहर बड़हर आम । फल अनेक वन कत कहु नाम ॥
कन्द मूल फल लक्ष्मण आन । भोज्य वस्तु हो अमृत समान ॥
सगर राति जागल बिति जाय । कोटबार धन्वी छोट भाय ॥
तिनु जन सङ्गहि सङ्गहि जाथि । नदी गौतमी नीर नहाथि ॥
लक्ष्मण आनथि भरि भरि वारि । रघुनन्दन आज्ञा नहि टारि ॥
तिनु जन सुखसौँ कयलनि वास । गृहसौँ शतगुण विपिन-विलास ॥

1 अपि (२,३), 2 तँ (३) ।

॥ सोरठा ॥

श्रीप्रभुसौँ लक्ष्मण कहल, एकान्तहि कर जोड़ि ।
ज्ञान सहित विज्ञान कहि, दिअ मन संशय तोड़ि ॥
गोपनीय उपदेश शुनु, तखन कहल श्रीराम ।
जे सुनला सौँ लोककाँ, भ्रमतम[1] नहि तहि[2] ठाम ॥

॥ रूपमाला ॥

प्रथम माया-रूप कहि हम ज्ञान-साधन कहब ।
जानि ज्ञेय परात्मकाँ मन भयरहित नित रहब ॥
आत्मबुद्धि शरीर आदिमे करथि जे व्यवहार ।
सैह बुद्धिक नाम माया ताहि सौँ संसार ॥

॥ चौपाइ ॥

देखल शुनल स्मरण हो भाव । से अनित्य मानक थिक आब ॥
स्वप्न मनोरथ वितथ[3] समान । ई शरीर मे आत्म-ज्ञान ॥
तरु संसार मूल थिक गेह । मानि लेब मन निस्सन्देह ॥
तकर मूल सुत-वनिता-बन्ध । सनयन जन मानिय मन अंध ॥
नाम जनिक जानल ई गात्र । स्थूलभूत से पचतन्मात्र[4] ॥
अहङ्कार मति इन्द्रिय सर्व्व । चिदाभास मन प्रकृतिक पर्व्व ॥
हिनकर नाम क्षेत्र करु ज्ञान । जीव विलक्षण एहिसौँ आन ॥
ओ परमात्मा आमय-रहित । ज्ञान तनिक शुनु साधन सहित ॥
जीव परात्मा काँ नहि भेद । निश्चय ज्ञात रहय नहि खेद ॥
हिंसा-शून्य दया-संलीन । अहङ्कार - दम्भादि-विहीन ॥
अकुटिल सकल अपन व्यवहार । सहथि परक आक्षेप प्रहार ॥
गुरु-सेवन मन वचनेँ काय । भीतर बाहर शुद्ध बनाय ॥
उत्तम कर्म्म मे थिरता वेश । मनमे हो न अधर्म्मक लेश ॥
हम हम ई मति सत्वर छोड़ि । भ्रमसौँ सर्प होइ अछि जौड़ि ॥
करयित करयित-सज्जन संग । तखना हो ज्ञानोदय रंग ॥

---

1 भ्रम (२), भम (३), 2 ताय (२,३), 3 वितय (३), 4 पाठ तीनूमे एहने अछि परञ्च "पच" मे "प" सानुनासिक रहने नीक होइत कारण ई "पञ्च" क अपभ्रंश-रूप थिक।

ज्ञानोदय सौँ संशय दूर । तिमिर रहय की उगलेँ सूर ॥
स्वर्ग-वास[1] ज्ञानामृत शर्म्म । सकल मूल थिक केवल धर्म्म ॥
सदाचार जे जे सद्ग्रन्थ । मुक्ति युक्ति गुरु-सेवा पन्थ ॥
श्रद्धा-हीन भक्ति नहि पाब । भक्ति-विमुख मे ज्ञान न आब ॥
ज्ञान-रहित केँ दुर्ल्लभ मुक्ति । हमरे सेवा साधन युक्ति ॥
विधिसन जौँ उपदेशक आब । सकल त्याग विनु मोक्ष न पाब ॥
शुनल अनन्त शेष भगवान । रामचन्द्र सन वक्ता ज्ञान ॥
प्राकृत जन की वर्णन करत । स्मृति पुराण अनुमति सञ्चरत ॥

॥ दोहा ॥

कयल बहुत उपदेश प्रभु, लक्ष्मण मन आनन्द ।
किछु विषाद नहि चित्तमे, तुष्ट पुष्ट निर्द्वन्द ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥

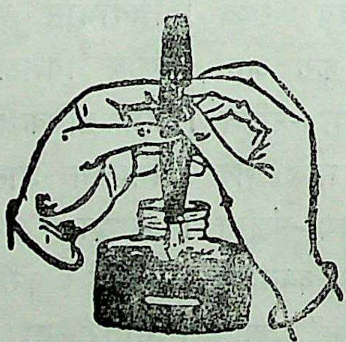

1 वासा (३) ।

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

पञ्चवटी गोदावरि कात । आइल सूर्पनखा उत्पात ॥
कमल कुलिश अंकुश पद-रेख । अङ्कित अवनि रमनि से देख ॥
जनु जगतीपति कयल निवास । सूर्पनखा मन काम विलास ॥
गेलि कुटीतट गमयित भाज । बन्द कि रहय भावि विधि-काज ॥
काम-सदृश सुन्दर-छवि राम । सीता-लक्ष्मण-युत घन-श्याम ॥
ओ पूछल राघवकाँ जाय । की दण्डक वन अयलहुँ हाय ॥
के नृप थिकहुँ कहू की काज । मुनि सन वेष तेष नहि लाज ॥
परिचय-निचय हमर शुनु कान । कवि-मुह काव्य कहत की आन ॥
दशमुख-बहिनि थिकहुँ की लाथ । पतिक मरण रण रावण हाथ ॥
खर दूषण छथि सतत सहाय । दल बल सहित समन्धिक भाय ॥
भाय देल दण्डक-वन राज । रानी अयलहुँ अहँक समाज ॥
सूर्पनखा[1] भ्राताक दुलारि । आज्ञा हमर शकथि नहि टारि ॥
कहलनि रावण वन निर्व्वाह । अभ्यागत मुनि मृगकेँ[2] खाह ॥
परिचय अपन कहल हम वेश । के तिनु जन पाहुन एहि देश ॥
दशरथ-नृपति-तनय हम राम । हे वर-सुन्दरि जानिय नाम ॥
वैदेही थिकि वनिता मोर । अनुज हमर अनुरक्त किशोर ॥
हमरा लोकसौं अछि की काज । दण्डक-स्वामिनि कहु निर्व्याज ॥
कामक किङ्कर केँ कत लाज । लाजेँ[3] अपन सिद्धि नहि काज ॥
कामरूपिणी जानिय देव । स्वामिक सुख सम्बन्धेँ लेब ॥
भाग्य परस्पर पुण्यहि पाब । समुचित भोग विरञ्चि मिलाब ॥
काम-विवश मन किछु न सोहाय । करु विहार गिरि-गहवर जाय ॥
कुसुमित वन वनप्रिय कल गान । सुख इन्द्राणी इन्द्र समान ॥

---

1 ण (३), 2 काँ (३), 3 ज (३) ।

उदित भाव तन मन नहि हाथ । धक धक छाती कर रघुनाथ ॥
निज वन निज मन विहरब घूमि । सुधा सरस अधरासव चूमि ॥
हृदयवेध[1] कर कामक बाण । आलिङ्गन दय राखिय प्राण ॥
भेल मात्र छल हमर विवाह । दशकन्धर-कर मृत मोर नाह ॥
कि करब सुख हम दैवक घाड़ । अलप वयस मे भेलहुँ राँड़ ॥
गेओले गीत कहाँ धरि गाउ । राम काम-दुख हमर मेटाउ ॥

॥ सोरठा ॥

कहलनि हँसि रघुनाथ, सुनु भुवनाधिक-सुन्दरी ।
करब हेतु की लाथ, सङ्गहि नारि पतिव्रता ॥
बाहर छथि छोट भाय, अभिप्राय तनिकहि कहब ।
ओ उठता खिसिआय, मानब नहि हठ करब तत ॥

॥ चौपाइ ॥

सूर्पनखा लक्ष्मण सौँ कहल । कत अपमान कामिनी सहल ॥
कुल विशुद्ध दशमुख मोर भाय । वनिता एहन भाग्य-फल पाय ॥
ऋतुपति घटक काम पँजिआर । जेठ भाय पुन देल विचार ॥
दण्डक-वनक विदित मलिकानि । हो सिद्धान्त भाग्य मन मानि ॥
ई सुख[2] समय रमय चलु नाथ । तन मन धन अर्पित अहँ हाथ ॥
हम अबला शुनु सुन्दर शूर । करु करु हमर मनोरथ पूर ॥
कहलनि तखन सुमित्रा-तनय । सुन्दरि सुमुखि[3] विदुषि शुनु विनय ॥
हम रघुनन्दन-चरणक दास । अहँकाँ यहि सम्बन्धसौँ हास ॥
रानीसौँ बानी बनि जयब । पाछाँ अहाँ बहुत पछतयब ॥

॥ सोरठा ॥

कहल राम सौँ फेरि, सूर्पनखा कामातुरा ।
वञ्चक करह अँधेरि, हम कि अवज्ञा-योग्य जन ॥

1 द (३), 2 मख (३), 3 सुमुख (३) ।

॥ चौपाइ ॥

जनि बलसौँ जितइत छह काम । प्रथमहि तनिकहि खायब राम ॥
एतगोट दर्प्प हमर वन वास । हमर न मन मध[1] मानथि त्रास॥
सीतापर दौड़लि मुह बाय । धारण कयल भयङ्कर काय ॥
चेष्टहि सूचित कर रघुनाथ । लक्ष्मण तीक्ष्ण खड्ग लेल हाथ ॥
रह रह ठाढ़ि कोपसौँ डाँटि । नाक कान तनिकर लेल काटि ॥
तखन पड़ाइलि मन बड़ त्रास । धर धोकड़ी नहि भीखिक आस॥
खसइत पड़इत दौड़लि जाय । कनइत कनइत[2] कह गेल भाय ॥
दौड़ दौड़ रे कटलक नाक । सूर्पनखा कानथि दय हाक ॥
आयल काल हमर वन तीनि । नाक कानसौँ कयलक हीनि ॥
खर दूषण त्रिशिरा नहि आनि । डुबि मर डुबि मर ठेहुनहि पानि॥
खर आगाँमे खसली जाय । छाती पिटि कह तोर बल छाय ॥
मुनि वन मे हम छलहुँ निशङ्क । कत गोट लागल वंश कलङ्क ॥
दशवदनक शमनहुँ[3] केँ त्रास । भेल भुवन भरि बड़ उपहास ॥
शोणित लपटल सकल शरीर । गिरि गेरुक[4] झरना गम्भीर ॥
खर-दल हलचल देखि शुनि कान । रावणसौँ अतिबल के आन ॥
क्षण वेदन सह कह की हाल । पुछथि कुपित खर लोचन लाल॥
के कयलक दुर्गति तोर आज । बुझि पड़ अपढ़ बताहक काज ॥
चुप रह चुप रह की हो कानि । तनिकाँ मारि शीघ्र देब आनि ॥
अछि कोन ठाम पता काँ पाय । हमरासौँ कत बचत पड़ाय ॥
पुछता दशमुख होयब अवाक । सूर्पनखाक भेल की नाक[5] ॥
बड़ अपराध कयल मति हीन । मति-नहि रहद आयु जौँ क्षीन ॥

॥ षट्पद छन्दः ॥

राम नाम थिक तनिक नारि वैदेही सङ्गहि ।
लक्ष्मण भ्राता सहित अवनि-पति जानल रङ्गहि ॥
बसथि गौतमी-तीर पञ्चवटि[6] आश्रम सुन्दर ।
सची सहित जनि आबि गेल छथि अवनि-पुरन्दर ॥

---

1 मन (३), 2 कहइत (१,२), 3 सममँहु (३) परन्तु तीन्मे दन्त्य 'स' अछि।यद्यपि यमराजक पर्याय तालव्य'श' सँ हो । 4 रू (३), 5 नाँक (३) । 6 टी (३) ।

लक्ष्मण रामक अनुज-कृत बड़ दुर्गति भेल की कहू ।
विकट शपथ तोहरा थिकहु मारि आनि दय ओ दुहू ॥

॥ रोलाछन्दः ॥

तनिक करब हम रुधिर पान कट कट कय खायब ।
नहि तौँ[1] छाड़ब प्राण हठहि यमपुर चलि जायब ॥
सीताकाँ लय आनि दशानन काँ हम देबनि ॥
होयता भाय प्रसन्न बहुत धन सम्पति लेबनि ॥
चौदह सहस सकोप चललि खर-दूषण[2]-सेना ॥
प्रलय-काल जीमूत प्रबल मारुतयुत जेना ॥
एक कहय चल गमहि बाज नहि विजयक[3] डङ्का ।
जायत दूर पड़ाय मानि मन मे मृति-शङ्का ॥

॥ चौपाइ ॥

राम कहल लक्ष्मण शुनु शब्द । प्रलय-कालमे जेहन अब्द ॥
अबइत अछि राक्षस-बल घोर । मार मार धर धर कर सोर ॥
युद्ध भयङ्कर सम्प्रति हयत । खर-दल सकल विकल भय जयत ॥
अहाँ सङ्ग मन मे न डराथु । सीता गिरिगह्वर मे जाथु ॥
चटपट सबहिक जयतनि प्राण । ई कहि राम धनुष लेल बाण ।
अक्षय भरल तीर तूणीर । सुप्रसन्न-मुख श्रीरघुवीर ॥
गिरि-गह्वर पति-आज्ञा पाय । गेलि[4] सीता सौमित्रि-सहाय ॥
पहुचलि सेना बजरल मारि । अस्त्र शस्त्र चल शर तरुआरि ॥
केओ राक्षस कर धर पाषाण । गाछ उपारय[5] केओ बलवान ॥
रामचन्द्र पर से सभ फेक । प्रभु-कर-शर उपरहि से टेक ॥
फेकलक अस्त्र सकल एक झोक । रामचन्द्र शरसौँ सभ रोक ॥
लीलासौँ सभ काटल राम । अस्त्र-विहीन कि[6] कर सङ्ग्राम ॥
राम चलाओल बाण हजार । विषधर सन के रोकय पार ॥
जनिकाँ लागय रामक बाण । पलमे सङ्कल्पित लय प्राण ॥

1 तो (३), 2 न (३), 3 ३में 'क' नहि, 4 गेल। (३), 5 ल (३), 6 की (३) ।

खर दूषण त्रिशिरा खिसिआय । आयल युद्ध करब सभ भाय ।।
आध पहर धरि कयलक मारि । खसल समर-महि नयन निड़ारि ।।
लक्ष्मण सीता देखल नयन । राक्षस विकट युद्ध-महि शयन ।।
अति विस्मय मन हर्ष अपार । देखल पति-कृत रण-व्यवहार ।।
जानकि रघुपति मिलि निज हाथ । रण-व्रण पोछथि कर गुण-गाथ ।।
सूर्प्पनणा देखइत छलि[1] मारि । विकल पड़ाइलि निज जन हारि ।।
पाछाँ घुरि घुरि तकितहि जाय । आतुरि लङ्का गेलि समाय ।।
दशमुख बैसल सभा लगाय । कह निज दुर्गति लाज न काय ।।
लागलि चरणक निकट लोटाय । हमर एहन गति अपनैँ भाय ।।
कह रावण उठ कह की काज । इन्द्र-वरुण-यम-कृत की काज ।।
की कुवेर-कृत अनुचित कर्म्म । लेब खलबाय तनिक तन-चर्म्म ।।
सूर्प्पनखा कह शुनु गुरु-भाय । से प्रताप गेल कतय मिझाय ।।
की कहब दुःख अपन हम आन । देखु बिशलोचन नाक न कान ।।
वनिता-वजित बहुत मद-पान । नृपति प्रकृति-पर रह कत ज्ञान ।।
चारनयनसौँ नृपति विहीन । देखितहि दिन से कौड़िक तीन ।।
हरि आनह मन-इच्छित[2] नारि । बल अभिमान कर के मारि ।।
व्यसनाकुल राजा दशकण्ठ । सतत बनल[3] सङ्ग दश बिश लण्ठ ।।
देखल हम रण रामक रङ्ग । सदल सकल खर-दूषण भङ्ग ।।
राक्षस बहुत राम एक गोट । सभकाँ कय देलक लोट पोट ।।
जनस्थानवासी मुनि लोक । मन प्रसन्न वन रोक न टोक ।।
रावण कहल स्पष्ट कह वाक । कि कहब अनुनासिक नहि नाक ।।
धयलह साँप जानि जिब जौड़ि । छुटल कलङ्क कि खर्चहु कौड़ि ।।
के थिक राम समर खर जीत । की बल दण्डक फिर कि[4] निमित्त।।
की तोँ कयल तनिक अपराध । कहह अशुद्ध न अक्षर आध ।।
सत्य कहै छी बड़का भाय । नदी गौतमी गेलहुँ नहाय ।।
पञ्चवटी नामक मुनि-गाम । ततहि नियत बस सानुज राम ।।
धनुष बाण कर धर श्रीमान । तेहन न सुन्दर त्रिभुवन आन ।।

1 ल (३); 2 छि (१,२), 3 बनस (२,३), 4 की (३) ।

धटा सुवल्कल सुन्दर देह । पिता-वचन सौँ त्यागल गेह ॥
अपनैँ जेहन तेहन छोट भाय । सीता-रूप कहल नहि जाय ॥
देखल न आँखि शुनल नहि कान । लक्ष्मी-रूप देल भगवान ॥
रामचन्द्र काँ कहल बुझाय । काल देश क्रम सकल सुझाय ॥
हम माँगल निज वनिता दैह । धन सम्पत्ति यथेच्छित[1] लैह ॥
लङ्केश्वर छथि हमरा भाय । देव उपायन[2] ततय पठाय ॥
सीता बल सौँ लेबय चहल । काल-विवश मन ज्ञान न रहल ॥
लक्ष्मण रामक छोटका भाय । रामक अभिमत ओ खिसिआय ॥
ओ काटल मोर नासा कान । क्षत्रिय जाति शूर मन मान ।
खर घर कहल गेलाहो जूमि । आयल एक न रणसौँ घूमि ॥
आँखि देखल हम युद्धक रीति । चाहथि लेथि त्रिलोकक[3] जीति ॥
करु[4] जनु साहस दण्डक जाय । राम-शरानल शलभ समाय ॥
कोटि रती छबि जीतनिहारि । हुनि सङ्ग एक मनोहरि नारि ॥
माया-छल-बल लाउ चोराय । प्रकट हयब तौँ प्राणे जाय ॥

॥ सोरठा ॥

शुनल वचन लङ्केश, दान मान सन्तोष दय ।
निज गृह कयल प्रवेश, सूर्प्पनखा लङ्का रहलि ॥
निद्रा आँखि न राति, रावण-मन चिन्ता भरल ।
राम मनुज एक जाति, खर-दूषण-गण नाश कर ॥
थिकथि मनुष्य न राम, परमात्मा अव्यय अमल ।
हमर विनाशक काम, विधि-प्रार्थित नररूप धर ॥
जौँ मृति तनिकहि हाथ, राज्य करब वैकुण्ठ मे ।
नहि तौँ सहित समाज, लङ्कापति बनले रहब ॥
प्रभुसौँ करब विरोध, लड़ब भिड़ब रणमे मरब ।
से करता जौँ क्रोध, बनत[5] काज सभटा हमर ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः ।

---

1 छि (१,२), 2 उपायत (२) उपहार (३), 3 क (३), 4 रू (३) । 5 बनल (३) ।

॥ षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

रथमे जोड़ घोड़ बड़ जोड़ । चलल दशानन चिन्तित भोर ॥
जत मारीच समुद्रक पार । पहुचलाह सत्वर अविचार ॥
छल समाधि-गत ओ मारीच । से न जान जग ऊच कि नीच ॥
मुनि-सन कयल सकल व्यवहार । निर्ग्गुण ब्रह्म ध्यान विस्तार ॥
छुटल समाधि देखल मारीच । रावण बैसल[1] आँगन बीच ॥
उठि मिलि कय पूजा उपचार । बैसला भेल कथा सञ्चार ॥
अति चिन्ता मन की थिक आज । एकसर अयलहुँ हमर समाज ॥
काज हमर[2] जे होयत हाथ । से कय देब करब नहि लाथ ॥
न्याय कहब जे होय न पाप । बिनु बुझलैं जिब थर थर काँप ॥
रावण कहल अहाँ हित भाय । कयलक[3] शत्रु बहुत अन्याय ॥
पुरी अयोध्या दशरथ नाम । तनिकर जेठ तनय छथि राम ॥
वनवासक आज्ञा देल बाप । वन आयल छथि सत्य-प्रताप ॥
वनिता-सहित सुहित सङ्ग भाय । पञ्चवटी वन कुटी बनाय ॥
खर-दूषण त्रिशिरा बल गोल । सभकाँ मारल बसि मुनिटोल ॥
कहइक पड़ल वचन लज्जाक । सूर्प्पनखा काँ कान न नाक ॥
एहि[4] सँ होयत की अपराध । समर-निहत भेल वीर विराध ॥
मुनि निर्भय कर जयजयकार । कुल-लज्जा सबहिक शिर भार ॥
तनिकर गृहिणी लेब चोरय । अहँ साधक बनि रहब सहाय ॥
माया-हेम-हरिण बनि जाउ । चञ्चल सञ्चरि रूप देखाउ ॥
आश्रम बाहर लक्ष्मण राम । साधब अपन काज ओहि ठाम ॥

1 बैशल (१,२) एवं अन्यलहु, 2 हमरो (३), 3 ३मे 'क' नहि । 4 यहि (१,२) ।

॥ सोरठा ॥

के देलक उपदेश, सर्व्वनाशकर वचन सौँ ।
शुनु शुनु नृप लङ्केश, अरि थिक से जन बध्य थिक ॥

॥ चौपाइ ॥

रामक कि[1] कहब सहज स्वभाव । थर थर तन जौँ मन पड़ि आब ॥
कौशिक लयला हिनका सङ्ग । हम देखल नेनहि[2] मे रङ्ग ॥
फेकल से शर तेहन तानि । शर-वश खसलहु[3] जलनिधि-पानि ॥
शत योजन पर अद्भुत बात । भय थरथर तन चलदल[4]-पात[5] ॥
स्मरण मात्र सौँ हम गत-गर्व्व । रामाकार देखि पड़ सर्व्व ॥
दण्डक वन गेलहुँ मन आनि । हरिण-स्वरूप बनल रिपु जानि ॥
तन विचित्र अति तीष विषाण । परशहि रह नहि प्राणि प्राण ॥
देखितहि तिनु जन काँ हम आँखि । मारय दौड़लहुँ मन किछु राखि ॥
कपट चिन्हल[6] ईश्वर रघुवीर । हृदयमध्य मोरा मारल तीर ॥
मुह सौँ शोणित खसल भभाय । खसलहुँ उदधि मध्य हम आय ॥
सतत बनल भय रामक रहय । अयला अयला जनि केओ कहय ॥
सपनहु मे हम देखी राम । जगितहु[7] ठाढ़ देखैछी ठाम ॥
रामाकार भेल मन-वृत्ति । बाहर वृत्तिक गमन निवृत्ति ॥
तनिसौँ आग्रह तजि घर जाउ । बलसौँ प्रबल काल जगाउ[8] ॥
तजि विरोध बनु रघुपति-दास । लङ्केश्वर तौँ छूटत त्रास ॥
मुनि-मुख शुनल विभुक अवतार । अन्तर बहुत विरञ्चि विचार ॥
दशमुख जैँ विधि मारल[9] जाय । निक थिक से कर्त्तव्य उपाय ॥
मन नहि मानब मानव राम । नारायण अव्यय सुखधाम ॥
जाउ बूझि घर परिहरु मारि । गेलहुँ वर्षा बाँधिय आरि ॥

॥ दोहा ॥

कहल जखन मारीच तहँ, रावण हित उपदेश ।
उत्तर कहलनि से तकर, कहइत छह तोँह वेश ॥

---

1 का (३), 2 नै (३), 3 श (१,२), 4 चल दल (२,३), 5 पाति (२), 6 ३मे 'ल' नहि ।
7 जनितहु (२,१), 8 ऊ (३), 9 मानल (२,३) ।

॥ चौपाइ ॥

परमात्मा जौँ जन्मल राम । तनिकाँ हमर निधन मन-काम ॥
ब्रह्महु काँ मन मे निक लाग । कि[1] करब आयल हमर अभाग ॥
संकल्पक तनिकाँ नहि हानि । सीता हरब मरब हठ ठानि ॥
रण-महि-मरण अमर-पद जाइ । राक्षसेन्द्र रण-विमुख नुकाइ ॥
रामक विजय होयत सङ्ग्राम । हमरो सुयश विदित सभ ठाम ॥
दुइ मे एक सत्य शुनु हयत । सीता-लाभ जीव की जयत ॥
मृग विचित्र बनु सत्वर तात । जौँ हो दुनु जन आश्रम कात ॥
ठकयित आश्रम दूर लै जाह । इच्छा[2] तोहर तखन पड़ाह ॥
कहल हमर एतबा टा करह । आश्रम सदा सुखित-मन रहह ॥
जौँ नहि करबह भय सौँ काज । घुरि नहि जयबह अपन समाज ॥
देखह हाथ तीष अरुआरि । बड़ पाखण्ड देबहु हम मारि ॥
शुनि मन कर मारीच विलाप । रावण-कर-मरणैँ[3] अति पाप ॥
रामक कर मरणैँ[4] श्रुति-युक्ति । साधन विनु[5] हम पायब मुक्ति ॥
कह मारीच शुनिय लङ्केश । कहल करब चलु चलु ओ देश ॥
रावण रथ मारीच चढ़ाय । रामाश्रम रथ गेल बढ़ाय ॥
मायामृगक कनक-वर रङ्ग । रजत-विन्दु सौँ शोभित अङ्ग ॥
नील रत्न सन सुन्दर आँखि । चल-चञ्चल जनु उड़ बनु पाँखि ॥
रत्नश्रृङ्ग[6] मणिमय सभ खूर । चपला वदन चमक परिपूर ॥
आश्रम निकट टहल घुमि घूमि । गगन निहारि निहारय भूमि ॥
मायामृग कर तेहन उपाय । सीता-मन मोहित भय जाय ॥
क्षणमे निकट क्षणहिमे दूर । करथि दशानन-आज्ञा पूर ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥

1 की (३), 2 छा (१,२), 3 मरण (३), 4 मरणौं (३), 5 विन्दु (३), 6 श्रृगं (३) ।

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

राम बुझल दशवदन-प्रपञ्च । वैदेहीकें कहलनि शञ्च ॥
अहँ एक माया-देह बनाउ । कुटी-मध्य कल कौशल जाउ ॥
एक वर्ष रहु अग्नि समाय । पुन आयब लेब सङ्ग लगाय ॥
रावण-बधक निकट अछि काल । होयत माया-चरित विशाल ॥
प्रभु-माया माया विस्तारि । मायामयि बनि गेली नारि ॥
हेम-हरिण शुनलहुँ नहि कान । की रचना-कारक भगवान ॥
माता हँसि कहलनि प्रभु आज । मृग एक आयल अपन समाज ॥
हेमक हरिण रत्न तन[1] विन्दु । पकड़ल जाय अवनि-गत इन्दु ॥
पालब आश्रम राखब बाँधि । देब भक्ष[2] जल लेल से काँधि ॥
धनुष बाण लय चलला हाथ । लक्ष्मण काँ कहलनि रघुनाथ ॥
वैहेही-रक्षा अहाँ करब । नहि आश्रम बाहर सञ्चरब ॥
अति मयावी राक्षस घोर । दण्डक वनमे बसइछ चोर ॥

॥ छन्द हरिपद—गीत काफी ॥

कनक-मृग कतहु शुनल नहि कान ।
थिक मारीच कपटसौँ आयल शुनु भ्राता भगवान ।
राम कहल तनिकहु हम मारब हयता जौँ मारीच ॥
होयत हरिण हरषि हम आनब बाँधब आँगन बीच ॥
सीता-रक्षा मध्य दक्ष रहु ई कहि चलला राम ॥
माया-मृगपर मायाधीश्वर जनिकाँ रूप न नाम ॥
भक्त-काज लीला विस्तारथि पूर्णकाम परमेश ॥
मृगसौँ ओ वनितासौँ तनिका अछि नहि काजक लेश ॥

1 तनु (३), 2 तीनूमे 'भक्ष' अछि, उचित थिक 'भक्ष्य' ।

क्षण क्षण निकट दूर मृग दौड़य तखन चलाओल तीर ।
थिक राक्षस निश्चय मन मानल रामचन्द्र रघुवीर ।।

।। गीत ।।

कपट-मृग खसल मही मे[1] घूमि ।
रामचन्द्र-शर तनिकाँ लागल पल विलम्ब कहि जूमि ।।
हा हम मुइलहुँ लक्ष्मण दौड़ू कहि कहि मरती बेरि ।
से मारीच अपन तन धयलक जनन मरण महि फेरि ।।
राम नाम उच्चारण हो जौँ जनकाँ[2] मरणक काल ।
प्रभु-सायुज्य-प्राप्ति हो तनिकाँ कि कहब भाग्य विशाल ।।
तनिकहि देखइत तनिकहि शरसौँ देल से प्राण गमाय ।
असुरदेह सौँ तेज-पुञ्ज बढ़ि प्रभु-तन गेल समाय ।।
अमर सकल विस्मय मन मानल मुनि[3]-हिंसक छल चोर ।
रामाकार वृत्ति भेल तनिकाँ मुक्ति सुयश भेल सोर ।।

।। सोरठा ।।

चिन्तातुर-मन राम, कयल हमर अनुकरण खल ।
शुनि सीता तहि ठाम, की करती[4] हमरा विना ।।

।। हरिपदछन्द-गीत काफी ।।

जनकजा शुनलनि अपनहि कान ।
हा लक्ष्मण दौड़ू हम मुइलहुँ रहल उपाय न आन ।।
अयि देवर असुरार्दित भ्राता छथि शुनु आतुर हाक ।
जाउ विलम्ब पलो भरि करु जनु पड़य चहै अछि डाक ।।
लक्ष्मण कहल वृथा चिन्ता मन असुर मुइल बलवान ।
तीनि-लोक-नाशक बल जनिकाँ के अछि राम समान ।।
दीन वचन रघुनन्दन कहता हो नहि चित्त प्रतीति ।
परमेश्वर-दारा वैदेही जनु करु मन भय-भीति ।।

1 मँह (३), 2 जनिकाँ (३), 3 सुनि (३), 4 करता (३) ।

॥ गीत मलार ॥

सकल कपट हम जानल मनमे ।
स्त्रीहर्त्ता अहँकँ रघुनन्दन नहि जनइत छल छथि हा सपनमे ।
भेल मनोरथ लाभ अहाँकाँ भरत शिखाय पठाओल वनमे ॥
भरत अहाँक अधीनि होयब नहि बरु हम प्राण त्यागि देब छनमे ।
हा गुणनिधि विधि बड़ दुख देलहु मृतक मारि यशलाभ कि जनमे॥
झरि झरि पात खसय तरुलति सौँ सकरुण सीता कोप-रोदनमे ।
जाय मिलब हम सौदामिनि सनि रामचन्द्र नवसुन्दर घनमे ।
जनक जनक मिथिला-महि नैहर ज्ञानभूमि सभ लोक सुजनमे ॥

॥ चौपाइ ॥

शुनि लक्ष्मण मूनल दुहु कान । बड़ अनर्थ दुख देल भगवान ॥
धिक धिक कोपमूर्त्ति काँ आज । बितथ[1] वचन बजयित नहि लाज ॥
आगत विपति सुमति-गति भङ्ग । समय विनाशक बुझि पड़ रङ्ग ॥
ई कहि वनदेवी सौँ कहल । वचन-बाण वैदेहिक सहल ॥
हम कहइत छी दुहु कर जोड़ि । सीताकाँ जाइत छी छोड़ि ॥
सोपि देल अछि अपनैँक हाथ । हम चललहुँ जत छथि रघुनाथ ॥
धनुष-रेख-बाहर जनि जाउ । वञ्चक-वचन न किछु पतिआउ ॥

॥ सवैया छन्दः ॥

आश्रम-शून्य जानिकेँ रावण, अयला दण्डी वेष बनाय ॥
शिखी उपानहि दिव्य कमण्डलु, पहिरल गेरुआ[2] वस्त्र रंगाय ॥
भिक्षुक जानि भक्ति सौँ जानकि, कयलनि विनय-प्रणति कय वार॥
कन्द मूल फल भोजन देलनि, स्वागत पुछल अतिथि-व्यवहार ॥
भोजन कयल जाय सुखसौँ मुनि, अबितहिँ छथि हमरा प्राणेश ॥
तनिकहु[3] अपने आशिष देबनि, निकटहि छथि नहि देश विदेश ॥
तनिकासौँ प्रिय आदर होयत, ज्ञान-कथादिक विविध विचार ॥
शमस्वभाव[4] अपने काँ कि कहब, नारायणमय सभ संसार ॥

1 बितल (२), 2 गेरुया (१), गरुआ (३), 3 तनिकहि (३), 4 श्वभाव (३) ।

॥ दोवय छन्द ॥

के अहँ थिकहुँ कमल-दल-लोचनि, थिकथि कहू के भर्त्ता ।
कानन की कारण सौँ अयलहुँ[1], कानन आबि कि कर्त्ता ॥
बड़ बड़ घोर निशाचर सञ्चर, पद पद आपद धयले[2] ॥
अपन देश कारण की त्यागल, सुमुखि उचित नहि कयले[2] ॥
सीता कहल अयोध्याधिप नृप, छल छथि दशरथ-नामा ॥
तनिकर तनय सर्व्ववर-लक्षण-लक्षित पति गुण-धामा ॥
राम नाम ओ तनि लघु भ्राता, लक्ष्मण सन के आने ॥
पिता-वचन सौँ दण्डक अयला, चौदह वर्ष प्रमाणे ॥
हम पौलस्त्य अमर-अरि रावण, अहँक नाम शुनि अयलहुँ ॥
राज्यपाट सौँ रहित राम छथि, तनिक सङ्ग की धयलहुँ ॥
रथ पर चढ़ू चलू अहँ जानकि, क्षणमे लङ्का जायब ॥
लङ्का-विभव कहब की अहँकाँ, रानी मान्य कहायब ॥
शुनल वचन सीता भीता सनि, कहल दुष्ट रे मरबै ॥
रघुनन्दन-शर-अनल-राशि मे, शलभ जकाँ पड़ि जरबै ॥
शश वश करथि सिंह-गृहिणी काँ, तेहन तोर मन आशा ॥
रामक निकट ठाढ़ खल रहबह, देखत लोक तमाशा ॥

॥ चौपाइ ॥

रावण तखन उठल खिसिआय । अपन भयङ्कर रूप देखाय ॥
दश मुख विश भुज अति विस्तार । प्रलय-काल-घन सन छवि-भार ॥
वनदेवीगण गेलि पड़ाय । बहुत त्रास ओ खाय न जाय ॥
नखसौँ धरणि विदारण कयल । सीताधार मही रथ धयल ॥
निज कल्याण-कलपतरु काट । रथ लय उड़ल अकाशक बाट ॥
हा रघुनन्दन सीता भाष । अहँ विनु प्राण हमर के राख[3] ॥
हा लक्ष्मण कहि कहि कत कानि । अवनि निहारथि भय मन मानि ॥
सीता-क्रन्दन शुनि खगराज । कहल अनर्थ भेल विधि आज ॥
पर्व्वत सौँ दौड़ल तिष-लोल । रह खल ठाढ़ कयल से घोल ॥

---

1 चललहुँ (३), 2 ल (३), 3 राष (१)।

लोकनाथ-गृहिणी काँ हरल । जयबह कतय दृष्टि जे पड़ल ॥
आश्रम छथि नहि एको भाय । तस्कर सीता हरलय जाय ॥
पुरोड़ाश श्वानक जनु भक्ष । उड़य पिपील गगन लय पक्ष ॥
लोल चलाओल से घुरिघूरि । दशवदनक स्यन्दन देल चूरि ॥
चरणहि सौँ मारल सभ घोड़ । चाप चुरल बल कयल न थोड़ ॥
सीता काँ रावण देल छाड़ि । दौड़ल खल तरुआरि उखाड़ि ॥
पक्षहीन रावण-कृत गृद्ध[1] । हुक हुक प्राण करथु की वृद्ध ॥
सीता काँ दोसर रथ आनि । उड़ल चढ़ाय राम-भय मानि ॥
हा रघुनन्दन मूनल आँखि । प्रभुता अपन देल कत राखि ॥
जगन्नाथ हमरा प्राणेश । से हम जायब राक्षस-देश ॥
हा लक्ष्मण किछु अहँक न दोष । भल कहइत हम कयलहुँ रोष ॥
तीर चलाउ अहाँ रघुनाथ । पड़लहुँ आबि[2] कसाइक हाथ ॥
दशकन्धर खल हरलय जाय । मारू खलकें बाण चढ़ाय ॥
अलङ्करण किछु अपन उतारि । बाँधल[3] खण्ड उत्तरी फारि ॥
सीता कनइत देल खसाय । चिन्ह सन्देश राम-तट जाय ॥
छल पर्व्वत पर वानर पाँच । बालि-बन्धु-कृत मन अति आँच ॥
से सुग्रीव देल रखबाय । ओ रथ उच्च गमन-पथ जाय ॥
उतरल सागर लङ्का वास । मनमे त्रास उपर मुख हास ॥

॥ दोवय छन्द ॥

जाय अशोकवाटिका रावण, राक्षसि लोकक पहरा ।
सीता काँ सभ तकइत रहिहै, आबथि ओ नहि बहरा ॥
मान्यबुद्धि मन मानि दशानन, गेल छोड़ि[4] अनठाम ।
कृशतनु शुष्कवदनि कह सीता, हा रघुनन्दन राम ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ।

---

1 तीनूमे अछि, 'गृन्ध', 2 आनि (१,२), 3 वान्हल (३), 4 छाड़ि (२,३) ।

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ रूपमाला ॥

कपट-मृग मारीच मारल, घुरल घर रघुराय ।
देखल अबइत दूरसौँ मन-विकल लक्ष्मण भाय ।
कयल लीला सकल अपनहिँ, करथि अपनहिँ शोच।
ई मनुष्य-चरित्र विस्तृत, करथि लोकक रोच ॥
त्यागि कैँ प्राणेशि अयलहुँ, वत्स कहु[1] की काज ।
दुष्ट खयलक जानकी कैँ, गेल लय की आज ॥
देल सोपि विदेहजाकाँ, दोष सकल अहीँक[2] ।
बहुत राक्षस भ्रमय वनमे, चोर अति निर्भीक ॥
कहल दुहु कर जोड़ि लक्ष्मण, नाथ हमरे दोष ।
कहल सीता वचन जे जे, तीर सौँ से चोष ॥
प्रभुक आगाँ कहि न होइछ, सहल[3] हम भरि पोष ।
कानि कानि अनर्थ कहलनि, कयल दुस्सह रोष ॥
दौड़ु[4] लक्ष्मण यहन[5] राक्षस-वचन पड़ितहिँ कान ॥
की कहू से बताहि जेहन, कहथि आनक आन ॥
देवि चिन्ता कयल जाय[6] न, बहुत कहल बुझाय ।
कहथि सङ्कट नाथ पड़ला, जाय होउ सहाय ॥
की कहब रघुनाथ हमरा, वचन भेल न शूनि ।
चाप शर लय शीघ्र चललहुँ, कान आँगुरि[7] मूनि ॥
राम कहल तथापि लक्ष्मण, बहुत अनुचित भेल ॥
स्त्री-कथा की सत्य मानल, किछु विचारि[8] न लेल॥

1 कहू (३), 2 अहाँक (३), 3 सकल (२,३) 4 डू (३), 5 हयन (३), 6 जाओने (३),
7 आंगुर (३), 8 विचार (२,३)

॥ सोरठा ॥

चित चिन्तातुर राम, देखल आश्रम शून्य से ।
हा जानकि[1] यहिठाम, त्यागि कतय गेलहु विकल[2]॥

॥ गीत ॥

॥ वानिनी छन्द ॥

हाय रे कतै गेली विदेह-भूप-बाला ।
वन-दुख अनुभूत आइ शून्य पर्णशाला ॥
विधिओ नहि निधन देथि वृद्धि आधि-माला॥
विपतिहु मे विपति घोर दुर्द्दशा विशाला ॥

॥ गीत ॥

हा[3] हंसगती[4] विधि देल वनमे बड़[5] विपती ।
हेम-हरिण पाछाँ हम दौड़लहु जानि पड़ल नहि एक रती ॥
पिता उचित कयलनि[6] वन देलनि पुरी अयोध्या वर नृपती ।
मृग पक्षी वनतरु वनदेवी कहु कहु[7] सीता देखल लती ॥
जिव सनि धनि हा हमर हेड़ाइलि दैव हरल मोर सकल मती ।
धिक धिक प्रभुता धिकधिक जीवन निज मति भय गेल यहन छती॥
राम-चन्द्र कह हा प्रिय जानकि एत गोट दुःख कोना सहती ।

॥ चौपाइ ॥

प्रभु सर्व्वज्ञ देखथि सभ नयन । परमानन्द वियोग अचयन ॥
निरहङ्कार अखण्डानन्द । निर्म्मल अचल चलथि निर्द्वन्द ॥
जाया हमर इ[8] करथि विलाप । निज माया-विस्तार-प्रताप ॥
वन वन फिरथि न मन विसराम । तकयित सीता विरही राम ॥
देखल टूटल[9] रथ पथ बेश । उजड़ल पजड़ल जत तत केश ॥
लक्ष्मण देखु भेल छल मारि । नाना अस्त्र चलल तरुआरि ॥
शोणित सौँ धरणी गेलि पाटि । काक शृगाल शकल[10] नहि चाटि ॥
टूटल[9] धनुषक देखिय खण्ड । युद्ध भेल अछि एतय प्रचण्ड ॥

---

1 जानकी (३), 2 विकट (३), । 3 ला (२,३), 4 हँसनती (२,३), 5 ३मे "बड़" नहि, 6 कहलनि (२,३), 7 ३मे 'कहुँ' नहि । 8 ई (३), 9 टुटल (३), 10 सकल (३)।

सीता काँ जे हरलय जाय । तनि सौँ जनि लेल आन छोड़ाय ।।
पर्व्वत सन शोणित भरि अङ्ग । विकल पड़ल मूर्छित रण-रङ्ग ।।
शुनु लक्ष्मण राक्षस[1] ई सैह । सीताकेँ हरि खयलक जैह ।।
तृप्त शयन कर निर्ज्जन आबि । देत[2] दुःख पुन अवसर पाबि ।।
धनुष बाण अहँ सत्वर लाउ । हिनकाँ यमपुर झटिति पठाउ ।।
शुनि जटायु कहलनि हे राम । रावण सौँ हमरा सङ्ग्राम ।।
थिकहुँ जटायु निकट प्रभु आउ[3] । वर्त्तमान वार्त्ता बुझि जाउ[3] ।।
रावण हरलक सीता हाय । गगनक पथ रथ चलल उड़ाय ।।
सीता-करुण-वचन शुनि कान । दौड़लहुँ हरब दशानन-प्रान[4] ।।
रथ देल चूरि मारि देल घोड़ । तोड़ल धनुष प्रताप न थोड़ ।।
सीता छीनि लेल हम नाथ । विकल भेलहुँ तरुआरिक हाथ ।।
रे विपक्ष कयलक विनु-पक्ष । प्रभु सपक्ष विभु-धाम समक्ष ।।
मन प्रभु-चरण-कमल अनुरागि । इच्छा[5] होइछ तन[6] दिअ त्यागि ।।
हम छी गृद्ध वृद्ध भेल देह । समुचित त्यागी[7] विश्व-सिनेह ।।
मरण-समय प्रभु सोझाँ ठाढ़ । होयब मुक्त विपति[8] छुट गाढ़ ।।
चरणैँ परस हमर करु नाथ । मरण शरण श्रीप्रभु गुणगाथ ।।
हँसि परसन प्रभु परसल गात । वृद्ध मान्य जिमि दशरथ तात ।।
वृद्ध गृद्ध तत त्यागल प्राण । यहन सभाग्य[9] विश्व के आन ।।
लक्ष्मण काष्ठ-चिता निर्म्माय । अनल आनि पुन देल लगाय ।।
स्नान कयल विधि दूनू भाय । कहयित छल छथि हमर सहाय ।।
गुणगण कहिकहि कर प्रभु शोच । प्रभु काँ बड़ मन भक्तक रोच ।।
खण्ड खण्ड कय हरिणक मास । चत्वर[10] वितरल पक्षिक ग्रास ।।
बहुत पक्षि मिलि सुखसौँ खाथु । खगपति तृप्त परम-गति जाथु ।।
विष्णुक सम खगपति तन पाबि । परमेश्वर-स्तुति कर से गाबि ।।

---

1 रावण (३), 2 देखि (२,३), 3 आयु (३) जायु (३), 4 प्राण (२,३), 5 इछा (१,२)
6 तनु (३), 7 त्यागि (३), 8 त्ति (३), 9 सौभाग्य (३), 10 सत्वर (३) ।

॥ हरपद छन्दः गीतम् ॥

कमला-रमणम् । नाभि-सरोरुह-विधि-शरणम् ॥
नौमि महेन्द्रविबुधतस्सततं संसेवित-पङ्कज-चरणम् ॥
धरणी-भार-विनाश-हेतवे सङ्कल्पित-रावण-मरणम् ॥
अप्रमेयमगणितगुणमीशं पितृवचनेन वनभ्रमणम् ॥
मायानिज-लीलाविस्तारं हतखरदूषणसंसरणम् ॥
अचलमगोचरमणुतोप्यणुमथ माया-हेम-हरिण-हरणम् ॥
त्वामिह राम जने किल मादृशि गुणनिधिमतुलकृपाकरणम् ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म-सुपूजित-पद तखन, खगपति से गेलाह ।
रामाज्ञा सौँ हर्ष मन, विस्मित सुर भेलाह ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥

।। अथ नवमोऽध्यायः ।।

।। दोवय छन्द ।।

रामचन्द्र वैदेही[1]-विरही प्राप्त वनान्तर जखना ।
घोर कबन्ध बाहु योजन भरि राक्षस देखल तखना ।।
पड़ला तकरा बाहुपाशमे सानुज देखल आँखी ।
की कर्त्तव्य कहू कहु[2] लक्ष्मण प्रभु उठला ई भाखी ।।
चरण-मौलि सौँ रहित लोथ अछि, वक्ष-स्थलमे आनन ।
आन उपाय रहल नहि सम्प्रति, खाय चहै अछि कानन ।।
लक्ष्मण कहल खड्ग सौँ हिनकर, बाहु दुहूटा काटी ।
यहन निशाचर शुनल कान नहि, की विश्वक परिपाटी ।।
रामचन्द्र तनिकर दक्षिण भुज, लक्ष्मण काटल बामा ।
विस्मित दैत्य पुछल भुज-कर्त्तक, के दुहु जन गुणधामा ।।
पुरी अयोध्या दशरथनन्दन, राम लखन दुहु भ्राता ।
एतय विपिन सौँ प्राणवल्लभा हरलक खल दुखदाता ।।
तनिकहि तकइत तकइत यहि वन, तुअ भुज-पञ्जर अयलहुँ ।
प्राण-त्राण हेतु भुज काटल, सङ्कट सौँ बहरयलहुँ ।।
विकट-रूप तोँ के छह से कह, यहन देखल हम आजे ।
श्रवणहुँ नहि छल तोहर रूप ई, देखल कानन-राजे ।।
हम गन्धर्व्व-राज शुनु हे प्रभु, यौवनदर्प्पित भेलहुँ ।
अष्टावक्र[3] देखल हम जखना, तखना हम हँसि देलहुँ ।।
शाप देल तैँ राक्षस भेलहुँ, तुष्ट[4] कहल भल हयबः ।
त्रेता रामचन्द्र-दर्शन सौँ, अपन रूप काँ पयबः ।।
इन्द्रक हम अपराधी भेलहुँ, कयलनि अशनि-प्रहारे ।
माथ[5] पयर सभ पेट समायल, बाहु रहल व्यवहारे ।।

1 बैदेहि (३), 2 कहू (३), 3 आष्टा (१,२), 4 दुष्ट (३), 5 माथा (२,३) ।

हम अवध्य ब्रह्माक देल वर, मुइलहुँ नहि तत्काले ।
जठर मध्य मुह हयतौ तोहरा, कहलनि इन्द्र दयाले ।।

।। चौपाइ ।।

भल भेल भल भेल कटि गेल बाँहि । रामचन्द्र प्रभु देल निवाहि[1] ।।
मोर मुह काठैँ भरि दिअ आब । तहिमे अनलक सङ्गति पाव ।।
जरि जायब हम पायब रूप । पूर्व्व जेहन छल हे विभु-भूप ।।
लक्ष्मण तेहन कयल तत्काल[2] । भेल पुरुष एक कान्ति विशाल[3] ।।
सर्व्वाभरण-विभूषित देह । मनसिज सन सुन्दर छवि-गेह ।।
नत साष्टाङ्ग भक्ति-मति-धाम । रामचन्द्र काँ कयल प्रणाम[4] ।।
स्तुति कत कयल हाथ दुहु जोड़ि । परमेश्वर देल बन्धन तोड़ि ।।
धनुर्ब्बाणधर श्याम शरीर । जटिल सुवल्कल भूषण वीर ।।
जेहन देखि पड़ अविरल ध्यान । तेहन सतत रह लोभ न आन ।।
प्रभु शवरी सिद्धा यहिठाम । कहइक छोटि जाति[5] ई नाम ।।
भक्तिस्वरूपा से बड़ वूढ़ि । प्रभु-सेवा मे अति आरूढ़ि ।।
रामचन्द्र कहलनि अहँ जाउ । मुनिजन-गम्य धाम काँ पाउ ।।
शुनि प्रभु-वचन चलल गन्धर्व्व । तनिकर पूर्ण मनोरथ सर्व्व ।।

।। सोरठा ।।

चढ़ि रथ भानु समान, राम राम रटयित रसन ।
धन्य धन्य भगवान, जे तारल खल अधम काँ ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे नवमोऽध्यायः ।।

1 ही (३), 2 तत (३), 3 तीनूमे दन्त्य 'स' । 4 प्रनाम । 5 इ (३) ।

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

ओ वन छोड़ि वनान्तर प्राप्त । सीता-विरह-अग्नि मन व्याप्त ॥
शवरी देखल प्रभुक स्वरूप । आइलि आनन्दमयि चुप चूप ॥
मन एकाग्र सनक सन केश । दिनकर-कान्ति तपस्विनि[1]-वेश ॥
राम-चरण पर धयलनि माथ । कह जय जय सानुज रघुनाथ ॥
पुलक शरीर नयन बह नोर । कह जय जय जय श्यामल गोर ॥
निकटहि कुटि देखक थिक ओह । नाथ परशमणि हम छी लोह ॥
हम कुवस्तु जन जन विख्यात । प्रभु रवि-चन्द्र-किरण-संघात ॥
शवरी-भक्ति-विवश श्रीराम । हर्षित गेला तनिकर धाम ॥
भल भल जल लय पयर धोआब । से जल लय लय माथ चढ़ाब ॥
कन्द मूल फल भल[2] भल आन । अतिशय प्रेम-मगन भगवान ॥
खाथि कहथि अमृतक अभिमान । हरल यहन रसना रस जान ॥

॥ गीत दोवय छन्दः ॥

कि कहब करणी, हे प्रभु, हम शवरक घरणी ।
चारू पन हम वनहि गमाओल, विषय-व्याध हम जनु हरिणी ॥
ई संसार-समुद्र तरब हम, पायोल प्रभुक चरण तरणी[3] ॥
माया-मानुष भूप-शिरोमणि, श्याम गौर छवि की वरणी ॥
निग्गुंण ब्रह्म सगुण बनि अयलहुँ, मन आनन्द अमर धरणी ॥
योग-अनल जरि तत्पद पायोब[4], जतय न फेरि जनन मरणी ॥
जय जय रामचन्द्र जय लक्ष्मण, मायापन्नगि हम भरणी ॥

---

1 तपस्विनी (३), 2 भव भव (२,३), 3 तरना (३), 4 पायब (३) ।

॥ चौपाइ ॥

गुरु महर्षि छल छथि यहि ठाम । से सब गेला ब्रह्मक धाम ॥
चलयित तनिकाँ कयल प्रणाम । ओ कहलनि थिर रह यहि ठाम॥
राक्षस लोक क मारण काम । अयोता रघुनन्दन यहिठाम ॥
सम्प्रति चित्रकूट गिरि वास । भक्तिमती तोर पूरत आस ॥
यावत आबथि विभु रघुवीर । तावत राखह अपन शरीर ॥
तनिकर दर्शन जे छन प्राप्त । जयबह तत्पद देह समाप्त ॥
जेहन कहल छल सुगुरु महान । तेहन कयल छल अपनँक ध्यान ॥
पुरल मनोरथ देखल आँखि । हम कृत्यकृत्य वृथा की भाखि ॥
नहि दासीत्व विषय अधिकार । तदपि कयल प्रभु हमर उधार ॥
यावत योग-अनल हम जरब । प्रभु रहु निकट विकट तम तरब ॥

॥ सोरठा ॥

प्रभु पम्पासर[1] जाउ, किष्किन्धा सुग्रीव छथि ।
सीता-वार्ता पठाउ, करु चरित्र माया-रचित ॥
प्रभुपद-कमल निहारि, महाभक्ति सम्प्राप्त से ।
योग-अग्नि तन जारि, भक्तिमती कयलनि तथा ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे आरण्यकाण्डे दशमोऽध्यायः ॥

॥ इति आरण्यकाण्ड ॥

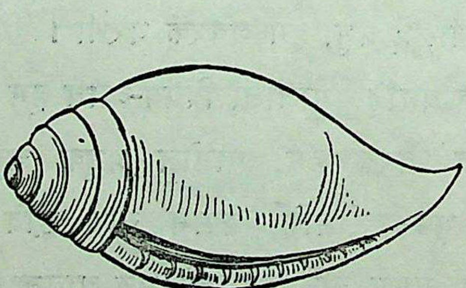

1 पाठ अछि तीनूमे तलव्यादि परन्तु सरोवर दन्त्य 'स' सँ उचित ।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

मिथिला-भाषा रामायण

॥ किष्किन्धाकाण्ड ॥

॥ पृथ्वीछन्दः ॥

भ्रमन्निबिड़काननम्बहुलभोगिपञ्चाननं
सतीजनशिरोमणिञ्जनकजां हि पृथ्वीजनिम् ।
स्मरन्नतुलविक्रमः श्रितकनिष्ठबन्धूत्तमो
ददातु कुशलं सदा जगति दत्तमायाभ्रमः ॥ १ ॥
सुग्रीवबान्धवभयोत्थितघोरदुःख-
पोथोधिशोषणमहाबलकुम्भयोनिः ।
श्रीमद्रघूत्तमविलोकनदुःखशेषः
पायात्स मारुतसुतो धृतविप्रवेषः ॥ २॥

॥ चौपाइ ॥

लक्ष्मण-सहित राम रणधीर । गेला पम्पा-सरवर-तीर ॥
मन विस्मययुत भेल तहिठाम । सानुज प्रभु कयलनि विश्राम ॥
एक कोश परिपूरित वारि । हंसप्रभृति खग बस जलचारि ॥
नित्यकृत्य कर[1] कृत-जलपान । पुनि उठि दुहुजन कयल प्रयाण ॥
ऋष्यमूक पर्व्वत लग गेल । कपि सुग्रीव से देखयित भेल ॥
गिरि-शिखरस्थ बहुत भय पाय । के ई थिकथि बुझल नहि जाय ॥
वल्कल वसन जटा शिर राज । तकयित तरुवन की अछि काज ॥
धनुष बाण कर वीर महान । की वृत्तान्त न हो अनुमान ॥
मन्त्री चारि विचारिय मन्त्र । अबयित छथि दुओ[2] वीर स्वतंत्र ॥

---

1 कार (३), 2 द्व (२,३) ।

की जनु वैरि पठाओल बालि । जयता हमर जीव की घालि ॥
जाउ निकट वटु बनि हनुमान । साधु असाधु करू[1] मन ज्ञान ॥
जौँ अनिष्ट बुझलासौँ आब । युगुतिहि तेहन जनायब भाव ॥
गमहि पठायब राखब प्राण । से शुनि ततय गेला हनुमान ॥
ब्राह्मण वेष सुलेख बनाय । विनय सदय गुणमय सन्न्याय ॥
पुछल अमल के पुरुष पुराण । अहँ कहु विश्ववीज भगवान ॥
ईश्वर-लक्षण-लक्षित वेष । माया-मानुष रूप विशेष ॥
भूमि-भार-हारक अवतार । दुहु जन मुहसँ परम उदार ॥
जगन्नाथ क्षत्रिय तन धयल । भ्रमयित वन आनन्दित कयल ॥
अपनैँ नारायण नहि आन । हमरा यहन होइछ अनुमान ॥
प्रतिपालक प्रभु धर्म्मक सेतु । एत आगमनक बुझल न हेतु ॥
से शुनि प्रभु लक्ष्मण सौँ कहल । तखनुक उचित समय जे रहल ॥
ई वटु पटु पण्डित बुधि बेश । सुवचन-रचन अशुद्ध न लेश ॥
ई कहिकैँ[2] तनिकाँ दिश ताक । शुनु वटु उत्तर दैछि अहाँक ॥
दशरथ नृपक पुत्र हम राम । अनुज हमर ई लक्ष्मण नाम ॥
अयलहुँ दण्डक कहलनि तात । सङ्ग सती सीता विख्यात ॥
तनिकाँ छलसौँ हरलक चोर । प्राणाधिक प्रेयसि से मोर ॥
हुनका तकइत अयलहुँ आज । के अहँ ककर कहू की काज ॥
से शुनि विहित वचन कह फेरि । श्याम गौर मुख-नीरज हेरि ॥
ई गिरि पर छथि से कपिराज । चारि मन्त्रिवर तनिक समाज ॥
बालिक भाय नाम सुग्रीव । देह दूइ एके जनु[3] जीव ॥
काम कालगति कहल न जाय । सोदर कयल अकथ अन्याय ॥
जेठ भाय लेल सम्पति नारि । विकल पड़ल छथि बालिसौँ हारि ॥
ऋष्यमूक गिरि शापक भीति । एतय न तैँ कय शकथि अनीति ॥
पवनक तनय नाम हनुमान । हम सुग्रीवक मन्त्रि प्रधान ॥
तनिक सङ्ग प्रभु मैत्री करिय । मित्र मित्र मिलि आपद तरिय ॥
प्रभु हम सत्वर चललहुँ ततय । रुचि हो तौँ चलि[4] ओ छथि जतय ॥

1 तीनमे ह्रस्व "रु" । 2 क (२,३), 3 न (३), 4 चलु (३) ।

कहल राम हम मैत्री करब । तनिकर कष्ट विकट झट हरब ॥
अकपट प्रकट रूप सभ कहल । सुग्रीवक वृत्तान्त जे रहल ॥
हमरा काँध चढ़िअ[1] दुहु[2] भाय । कपिपति निकट देब पहुचाय ॥
प्रभु सौँ जेहन कहल हनुमान । सानुज तेहन कयल भगवान ॥
पर्व्वत-शिखर उपर श्रीराम । जाय कयल तरुतर विसराम ॥

॥ दोहा ॥

मुदित मनोरथ-सिद्धि सन, अति हर्षित मन आज ।
महावीर कहु कहु कुशल, पुछल चकित कपिराज ॥

॥ चौपाइ ॥

हाथ जोड़ि कहलनि हनुमान । छथि अनुकूल[3] विष्णु भगवान ॥
आधिक अवधि अन्त दिन आज । से प्रभु अयला अहक समाज ॥
करु करु मैत्री कपिपति जाय । आनल हम निज काँध चढ़ाय ॥
साक्षी अनल बनल रहु मित्र । सकल अमानुष राम-चरित्र ॥
संक्षेपहि कहलनि हनुमान । सानुज राम थिकथि भगवान ॥
निर्भय चलू मित्रता करिय । बालिक गर्व्व सर्व अहँ हरिय ॥
मन अति हर्षित ततय कपीश । गेला जतय राम जगदीश ॥
तरु-वर-शाखा लय कँहु[4] हाथ । देल ताहि बैसला रघुनाथ ॥
कुशल सकल बुझि बैसला दान्त । लक्ष्मण कहल सकल वृत्तान्त ॥
शुनि सुग्रीव रामकेँ कहल । सब विधि करब सकल हम टहल॥
वैदेही जेँ विधि जे देश । अति सत्वर बुझि कहब सन्देश ॥
सतत सहाय महा रण काज । अपनैँ सौँ सपनहुँ नहि व्याज ॥

॥ शार्दूलविक्रीड़ित छन्दः ॥

रे रे चोर कठोर छोड़ हमरा कानैत भीता छली ।
हा आकाशक पन्थ राक्षस बली से दुष्ट-नीता छली ॥
हा नै जानल गेल दुष्ट धरितौँ श्रीविश्वमाता छली ।
मन्त्री सङ्ग यथार्थ देखल रमा सौन्दर्य्य सीता छली ॥

---

1 य (३), 2 हू (३), 3 नू (३), 4 कँह (३) ।

॥ वसन्ततिलका छन्दः ॥

हा रामचन्द्र रघुनाथ अनन्त[1] बेरी
कानैत बाजक अधीनि जना बटेरी ।
दिव्योत्तरी पट[2] विभूषण फेकि देल
से कन्दरा-मध सुयत्न सौँ राखि लेल ॥

॥ चौपाइ ॥

से शुनितहिँ माँगल रघुवीर । लयला अपनहि कपिपति चीर ॥
प्रभु चिन्हितहि लेल हृदय मे[3] राखि। हा हा जानकि जानकि भाखि ॥
कयल विलाप कहय के पार । करुणामय करुणा विस्तार ॥
से द्वितीय पट पाओल[4] आज । दुःख कहै छी परिहरि लाज ॥
जुआ एकान्त धरथि से काँति । कण्ठपाश क्रीड़ारस राति ॥
क्रीड़ा-श्रम हर व्यजन रतान्त । शय्या प्रणयक कलह[5] नितान्त ॥
लक्ष्मण कहल धैर्य्य **धरु** नाथ । उत्पति स्थिति लय प्रभु हाथ ॥
वानरेन्द्र बलवान सहाय । सुख दुख भोग देहकाँ पाय ॥
भेटतिहि सीता थोड़हि काल । अरिगण मरता गर्व्व विशाल ॥
प्रभु-विलाप शुनि कहल कपीश । कन करु थिरतर प्रभु जगदीश ॥
हम मारब दशकन्धर जाय । सीता आनब अवसर पाय ॥
अग्नि साक्षि मारुत सुत-आन । युगल सख्य भेल जीव समान ॥
कपट-रहित मिलि मिलि एकठाम । बैसला कपिवर रघुवर राम ॥
करब मित्र हम यतन बहूत । महि सभठाम पठाओब[6] दूत ॥
रघुवर पुछलनि कहु कहु मित्र । दैव देल की विपति चरित्र ॥
कहयित छी हम बन्धु-कुचालि । हमरा जेठ भाइ छथि बालि ॥
एक समय उपगत उतपात[7] । मयसुत मायावी विख्यात ॥
किष्किन्धा आयल अधराति । ललकारल निभय खल जाति ॥
शुनल बालि रावण-अरि कान । कोप-विवश चलला बलवान ॥
मारल एक मुका तहँ गाढ़ । राक्षस विकल रहल नहि ठाढ़ ॥

---

1 अतन्त (३), 2 पटि (१,२), 3 मे (२,३), 4 पायाल (१,२), 5 कहल (३), 6 य (३).
7 वि (१,२) ।

बालिक बल बुझि खल भय पाय । भूधर-विवर समायल जाय ॥
विवरहुमे ओ कयल प्रवेश । हमरा देलनि यहन निदेश ॥
अंह यहिठाम रहू भरि पक्ष । रण-रिपु-मारण मे हम दक्ष ॥
अवधिक अधिक दिवस बिति जाय । तौँ जानब रण हारल भाय ॥
स्नेह-विवश रहलहुँ भरिमास । विवरैँ रुधिर[1] बहल भेल त्रास ॥
शिलाखण्ड सौँ मूनल[2] द्वार । गमहि गेलहुँ पुर भय विस्तार ॥
मन्त्री-गण मिलि से मति धयल । कपि राजा हमरा एत कयल ॥
किछु दिन बितला अयला गाम । के कह के शुन के कर साम ॥
विकट विकट निकटहिँ पढ़ि गारि । मारल बिनु बुझलहि बड़ मारि ॥
से सर्व्वस्व नारि लेल छीनि । हम भय रहलहुँ कौड़िक तीनि ॥
के रक्षा कर के दे वास । सभकाँ मनमे बालिक त्रास ॥
केवल यहि गिरिपर नहि आब । मुनि मातङ्ग क शाप प्रभाव ॥

॥ सोरठा ॥

बालिक बुझि अन्याय, सुग्रीव क बुझि साधुता ।
अछि लघु सहज उपाय, श्रीरघुनन्दन कहल तहँ ॥

॥ चौपाइ ॥

अति अनुचित कर अहँ[3] काँ भाय । कत दिन निबहत ई अन्याय ॥
खलबल बालि वीर हम मारि । अहँ कपिपति भोगब सुख नारि ॥
कह सुग्रीव बालि-रण-रङ्ग । रावण जनि तट कीट पतङ्ग ॥
जनि भुजबल अनुभव शुनु राम । त्रिभुवन के कर जन सङ्ग्राम ॥
दुन्दुभि नामक राक्षस घोर । महामहिष उनमत अति जोर ॥
रात्रि-समर-प्रिय वचन कठोर । दुर्ब्बल बालि वधिक हम तोर ॥
किष्किन्धा आयल भेल मारि । बालिक कतहु समर नहि हारि ॥
सत्वर जाय भाय खल धयल । हे प्रभु अकथ पराक्रम कयल ॥
सिंह पकरि हरि धरणि पछारि । तनिक लेल तहँ मौलि उखारि ॥
चरणैँ दाबि तनिक लेल काय । फेकल तनिकर माथ घुमाय ॥
योजन पर भय खसल से जाय । मातङ्गाश्रम बुझल न भाय ॥

1 रू (१,२,३), 2 मूँ (१,२,३), 3 कं (२,३) ।

॥ सोरठा ॥

जानल मुनि मातङ्ग, बालि कुचालिक कर्म्म थिक ।
देलनि शाप अभङ्ग, मुनि आश्रम दुर्वृत्ति कर ॥

॥ चौपाइ ॥

रुधिर महिष-शिर देखल जाय । कहल बालि केँ मुनि खिसिआय ॥
जौँ यहि गिरिपर अयबह पूनि । रहतौ माथ न जनबह मूनि ॥
यहि गिरिपर तैँ निर्भय वास । बहरयलैँ बालिक बड़ त्रास ॥
कयल प्रतिज्ञा अहँ रघुनाथ । बालिक वध नहि कालहु हाथ ॥
दुन्दुभि-अस्थि देखायोल जाय । हिनका मारल हमरा भाय ॥
प्रभु हसि चरण-अङ्गुष्ठ लगाय । फेकल खसल दश योजन जाय ॥
बल आश्चर्य बुझल सुग्रीव । ई सामान्य थिकथि नहि जीव ॥
तखन देखायोल[1] सातो तार । रामक बाण बेधि भेल पार ॥
कपिपति हर्षित शम-मति भाष । हे प्रभु मन नहि किछु अभिलाष[2]॥
केवल भक्ति भजन नित करब । भव-समुद्र सुखसौँ सन्तरब ॥
हे प्रभु कहइत हो मन लाज । नहि विभूति वनिता-सुख काज ॥
कतय ज्ञान-सुख कत सुख-राज । सुत वित बन्धन सकल समाज ॥
कपिवर रघुवर-पद अनुरागि । विषय-वासना देलनि त्यागि ॥
मन विराग सुख दुःख समान । कपिपति पायोल उत्तम ज्ञान ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥

1 श्रो (१,२), 2 तीनूमे 'वर्गीय' ख ।

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

कहलनि रघुवर शुनु कपिनाथ । बालिक वध अछि हमरा हाथ ॥
माया-मय थिक ई संसार । अति अगम्य विधि ज्ञान-विचार ॥
ठामहि ठाम बालि जौँ रहत । हमर अकीर्त्ति विश्व भरि कहत ॥
रघुपति जौँ सुग्रीवक मित्र । विदित न वसुधा वीर-चरित्र ॥
रामक बाली काँ नहि त्रास । वृथा प्रतिज्ञा सुयश हरास ॥
हसता वानर-निकर समाज । ज्ञान कृपाकर कातर काज ॥
करु करु युद्ध बालि सौँ आज । निर्भय भय चलु भाय समाज ॥
बालिक मरण करण एक बाण । अहँका अनायास कल्याण ॥

॥ सोरठा ॥

कपिपति विनत विचार, ज्ञान कतय बलवान विधि ।
अकथनीय संसार, भावि न भेलैँ विनु रहय ॥

॥ चौपाइ ॥

निर्भय सौँ रघुपति बल पाय । किष्किन्धा उपवन मे जाय ॥
कयलनि ततय शब्द बड़ घोर । शुनितहि दौड़ल बालि कठोर ॥
बालिक हृदय मुष्टिका हनल । बन्धु-विरुद्ध वैरिता बनल ॥
चलल परस्पर मुष्टामुष्टि[1] । विधि विपरीत[2] विपर्य्यय सृष्टि ॥
युगल बन्धु से रूप समान । रघुपति तैँ न चलायोल बाण ॥
सहि नहि शकला मुष्टिक मारि । पुन सुग्रीव पड़यला हारि ॥
भभकि भभकि शोणित हो वान्ति । भेल विवर्ण सकल तन कान्ति ॥
बालि विजयि गेल अपना धाम । कपिपति कहल विपति शुनु राम ॥
बन्धु न बालि काल जनु थीक । ततय पठायोल गेलहुँ अहीँक ॥

---

1 ष्टी (३), 2 ति (१,२) ।

वृथा करायोल दुस्सह घात । यहि सौँ अयश लोक विख्यात ।।
अपनहि शर मारू रघुनाथ । करु न समर्प्पण कालक हाथ ।।
सुग्रीवक देल देह हसोथि । अशनि-कठोर जोर जैँ होथि ।।
एक वार सत्वर अहँ जाउ । निष्कण्टक भय निर्भय आउ ।।
शपथ बालिकाँ निश्चय मारि । अहँक सकल सङ्कट देब टारि ।।
लक्ष्मण-प्रभु आज्ञा काँ पाय । फुलमाला देल गल पहिराय ।।
लक्ष्मण अति आदर सौँ फेरि । जांउ जाउ कहलनि कय बेरि ।।
पुन सुग्रीव जाय तहि ठाम । आबह कहल करह संग्राम ।।
से शुनि मन मन बालि विचार । की कनिष्ठ हमरा ललकार ।।
धयल हाथ तारा तहि ठाम । उचित न चललहु हठ संग्राम ।।
मृत छल छथि अयला घुरि फेरि । अभ्यन्तर अति बल यहि बेरि ।।
कहल बालि उत्तर अति रुष्ट । की पुन आयल[2] सत्वर पुष्ट ।।
तनिक सहाय समर के शूर । क्षण रण हमर मनोरथ पूर ।।
घर अरि हमर समर निश्शङ्क । घर घुसि की शिर लेब कलङ्क ।।
अल्प कालमे अरि रण जीति । तखन करब गृह-सम्पति प्रीति ।।
तहँ तारा कह शुनु प्राणेश । अवसर मानक हित उपदेश ।।
अङ्गद गेला खेलाय सिकार । निश्चय शुनलनि हुनक विचार ।।
दशरथ वचन मानि दुइ बन्धु । वन भ्रमइत छथिछथि बल-सिन्धु ।।
कौशलेश-सुत अयला गाम । तनिक शुनल हम बड़ गोट नाम ।।
कालहु काँ विजयक सामर्थ्य । रण कारण जायब थिक व्यर्थ ।।
के जानय[3] प्रभु अन्तष्करण । दण्डक वन वैदेही-हरण ।।
तनि अन्वेषण मानस लीन । माया-मानव विरहित दीन ।।
अचल सख्य सुग्रीवक सङ्ग । ओ समर्थ सङ्कल्प अभङ्ग ।।
बजला बालि मारि देब राज । जे कहलनि से करता काज ।।
भीरु बन्धु पुर निकट न आब । आब प्रबल रण राम प्रभाब ।।
प्रेमहि बन्धु बौँसि घर लाउ । अवसर चुकलेँ जनु पछताउ ।।
अपन अनुज कैँ करु युवराज । शीघ्र जाउ सीतेश-समाज ।।

1 रु (१,२), 2 ये (२,३), 3 त (२,३)।

॥ मिथिलासंगीतानुसारेण योगियाछन्दः ॥

तारा चरण धयल नाथक ।
कलपि कलपि कानथि कहथि, सिन्दूर राखू माँथक ॥
बान्धव फूटल वैरी लुटल[1], छूटल[2] सुखक आशा ॥
होयता अङ्गद कुमर दूगर, नगर विपति वासा ॥
यहन पाहुन भाग्यहि पाबिय, लाबिय गरिम गेहे ॥
अनुज-सहित विपति-रहित, रहब सुचित नेहे ॥
त्रासहि भरल लङ्का परल, वैरी से बिश-बाहू ॥
रावण मुदित उदित होयत, दशहु वदन राहू ॥

॥ दोहा ॥

हे तारे तारेश-मुखि, स्त्रीस्वभाव की त्रास ।
हृदय लगाय लगाय कह, बाली समर-विलास ॥

॥ रोला छन्द ॥

॥ लावण्या ॥

कहल कलावति कुशल, करुण-कृश-कोमल-काये
नारायणसौँ नेह-निवह, निबहय से न्याये ।
भावी भेले चाह, अभय घर भयकर भाये
प्रबल दैववश विवुध, अबुध नहि बुद्धि सहाये ॥
सोदर सौँ सदभाव[3], आब करितौँ युवराजे ॥
रघुवर-इरसौँ सन्धि, सिद्धि हसि कहत समाजे ।
समदर्शी श्रीराम, धाम अनितहु नहि हानी
विद्यमान विद्वेषि, बन्धु-वध करितौँ फानी ॥
सकल लोक मे सूर, सुयश की करब मलाने ।
प्रेयसि धसि[4] सङ्ग्राम, राम-ग्ण अर्पब प्राणे ।
अङ्गद अङ्गज हमर, समर हरि-अरि करि दारुण
विधिक विधेय बलिष्ठ, विश्वबुध के कर वारण ॥

1 लु(३), 2 छु (३), 3 भ्रा (१), 4 ध (१,२) ।

फरक नयन मोर वाम, वाम विधि कि करत काजे
तारे महि-विस्तार-भार-हारक रघुराजे ।
बध जौँ हमर विधि देथि, बन्धु सुग्रीवक बूतैँ
बान्धिय तौँ मातङ्ग, कमल-नालक कृश सूतैँ ।।

॥ चौपाइ ॥

सुग्रीवक वध मानस धयल । बलसौँ[1] बालि गमन रण कयल ।।
अबइत तनिकाँ देखि कपीश । फनला निर्भय भायिक दीश ।।
बालिक उपर दु मुष्टि प्रहार । मारि परस्पर एक न हार ।।
युगल बन्धु बल रण घनघोर । मारा-मारि सुमुख नहि मोर ।।
प्रभु तरु ओत धनुष ओ बाण । अशनि समान कयल सन्धान ।।
बालिक वक्ष प्रवेशल[2] बाण । से खसला महि मे अज्ञान ।।
चेतल छूटल मूर्छा गाढ़ । देखल आगु राम प्रभु ठाढ़ ।।
जटा मकुट शोभा विस्तार । कमल-नयन सुन्दर सुकुमार ।।
धनुष वाम कर दक्षिण तीर । नव दुर्व्वादल रुचिर शरीर ।।
कपिवर लक्ष्मण पार्श्व समाज । शोभा-घर रघुवर छविराज ।।
बालि कहल शुनु विभु अवतार । हम न कदापि कयल अपकार ।।
वृक्षखण्डसौँ की चुपचाप । मारल जानल सुयश प्रताप ।।
मनुक वंश क्षत्रिय दायाद । तस्कर-सम सभ गत-मर्याद ।।
लड़ि नहि शकलहु समर समक्ष । समदर्शी सुग्रीवक पक्ष ।।
से की कयल अहँक अपकार । अम की कयल शत्रु-व्यवहार ।।
दण्डक वनसौँ हे भगवान । सीता-हरण शुनल हम कान ।।
की कर हमर भीरु ई भाय । जनिकर हेतु एहन अन्याय ।।
अबइत दशमुख बाँधल आज । पबितहु प्रभु मनवांछित काज ।।
हमरो बल किछु देखितहु राम । प्राण चलल जहि पल संग्राम ।।
शोच प्राण ई जाइछ छूटि । लबयित देखल न लङ्का लूटि ।।
वानर मारि गेल सद्धर्म्म । मांस अभक्ष्य कयल की कर्म्म ।।
कहल बहुत प्राणक अवसान । चरण निरीक्षण सौँ भेल ज्ञान ।।

---

1 न (२,३), 2 क (२,३) ।

किछु नहि मन मध हर्ष विषाद । राम कहल शुनु गतमर्याद ।।
बहिनि कन्यका अनुजक नारि । पुत्र-वधू नहि लेथि विचारि ।।
कामातुर कर रति अन्याय । अयतायी जानक समुदाय ।।
से प्राणी जानब चण्डाल । विषम विषयि इन्द्रिय प्रतिपाल ।।
बलसौँ देल हम तोहरा मारि । तोँ भोगह निज[1] अनुजक नारि ।।
परमेश्वर साक्षी सर्वज्ञ । बालि न बुझलह वानर अज्ञ ।।

।। छन्द रोला ।।

।। लावण्या ।।

बालि कहल हम कहल वहल, अनुचित अज्ञाने ।
क्षमा करिय क्षिति-भार-हरण-कारक भगवाने ।।
तीर्थ-मूल-कर-तीर-विद्ध ई त्याग शरीरे ।
निरखि निरखि नव-नीरदाभ अभयद रघुवीरे ।।
हम चललहुँ प्रभु-धाम तनय अङ्गद हित मानब ।
हमर तुल्य बल बुद्धि दनुज-गहनानल जानब ।।
हृदय उपर धरु हाथ तीर बाहर करु उरसौँ ।
चिरञ्जीव सुग्रीव जीव जाइछ सुखपुर सौँ ।।
तथा कयल रघुनाथ हाथ शीतल देल छाती ।
जयजय धुनि कर गगन सगण सुरपति सुर-पाँती ।।
बालिसौँ बनि विबुधेश-रूप चलला विभु-धामे ।
मुनि दुर्ल्लभ-गति-देनिहार सीतापति रामे ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ।।

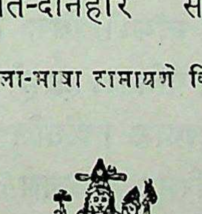

1 मित्र (३) ।

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ दोबय छन्दः ।

वानरवृन्द बालि-वध देखल विकल कहल शुनु रानी ।
रामक बाण विधुन्तुद विघसित बालि पूर्ण[1] विधु जानी ॥
कोट-कपाट द्वार ठिक ठोकब वानर रोकब बाटे ।
वानरेन्द्र अङ्गदकाँ मानब सुग्रीवक कुल काँटे ॥
सचिव सकल सह रहस विचारिय सोदर-द्रोही मारू ।
वीरवधू प्रिय-विरहिनि विकले विश्व अनित्य विचारू ॥
सकल कला लय काल क्रूर[2] जौँ करता कलह कठोरे ।
वानरेन्द्र-विश्लेषित वानर समर नाम नहि बोरे ॥

॥ सोरठा ।

बालि-मरण शुनि कान, विपतलि निपतित क्षिति मुरुछि ।
तारा तारा भान, प्रात जहन अरुणित गगन ॥

॥ चौपाइ ॥

मुरुछि मुरुछि क्षण मन विनु[3] ज्ञान । कह विधि बुधि सुधि आनक आन॥
दुहु[4] कर पीटथि छाती माँथ । धिक धिक जीवन आज अनाथ ॥
वानरेन्द्र कत गेला त्यागि । हमहू‌ँ जायब तनि संग लागि ॥
फूजल केश नयन जलधार । चललि विकलि प्रिय-शव अभिसार॥
शोणित धूलि अङ्ग परिपूर । देखल मृतक स्वामि-तन शूर ॥
हा हा नाथ नाथ कहि चरण । धयल कयल पूरण रस करुण ॥
तारा ततय राम दिशि[5] ताक । करुणाकर किछु अछि कहबाक ॥
बालि-वक्ष बेधल जे बाण । तहि सौँ लय लिय पापिनि-प्राण॥
तकयित हयता तारा-बाट । वल्लभ-विप्रयोग हिय फाट ॥

---

1 पु (३), 2 कूर (१), 3 वन (१,२), विन । 4 इ (३), 5 श (१,२) ।

विनु दारा दुख जे परिणाम । अनुभव सब अपनहुँ का राम ।।
बालिक वदन विलोकब जाय । रघुनन्दन-शर शरण उपाय ।।
अहँ सुग्रीव कयल भल काज । रुमा-सहित सुख भोगू राज ।।

।। दोबय छन्द ।।

हरि हरि से हरि-केहरि किय हरि, हरल सकल सुख-सारा ।।
किष्किन्धाक कलाकर-कामिनि, हम प्रदोष[1]-तुष-तारा ।।
विबुध-वैरि-रावण-मद-वारण-विद्रावण मृगराजे ।।
शिव-शिवशयित समर से उर शर-शलित श्रीहत आजे ।।

।। वानिनी छन्द ।।

कहल रघुवीर धीर शोक रोक तारा ।
दृश्य काँ अनित्य जान बालि के बेचारा ।।
पूर्व जन्म बालिबधू पूर्ण भक्ति तोरा ।
दरशन तेँ हमर भेल सुयश[2] लोक सोरा ।।

।। दोवय छन्द ।।

बलाराति-बालक तोर वल्लभ वानरेन्द्र छल बाली ।
वासव-रूप बनल रणविजयी सुरपुर बस[3] बलशाली ।।
आत्मा[4] अव्यय निर्भय सुखमय देहक दुर्गति खाली।।
देख विचार तत्त्व सौँ तारा[5] के तोँ कह दुख-बाली।।

।। सोरठा ।।

ज्ञान-ज्ञेय रमेश, उपदेष्टा रघुवीर जहँ ।
तारा विगत-कलेश, उदित शान्त करुणान्तरस ।।

।। हंसगति छन्द ।।

।। लावण्या ।।

जगत जनन पालन प्रचण्ड लय कर्त्ता
धयल मनुज-अवतार दनुज-संहर्त्ता ।

---

1 १ओ २मे 'क' बेसी । 2 स (२), 3 पाठ तीनूमे इएह अछि, परन्तु सन्दर्भ सँ 'बस' पाठ उचित बूझि पड़ैछ । 4 अ (१,२), 5 तार (३) ।

अबला काँ की ज्ञान वियोगिनि आर्त्ता
त्राहि त्राहि जगदीश जलधिजा-भर्त्ता ॥
फरकल[1] मोर दृग दक्ष नाथ दृग-वामा
देवर दृग दुहु गोट शकुनः सिधि ठामा ।
देल जाय प्रभु चरण-भक्ति अभिरामा
माँगब आन कि वीर-वधू[3] निष्कामा ॥
श्री रघुवर घन-कान्ति शान्ति उपदेशैँ
तारा तखन निराश मृतक प्राणेशैँ ।
शुनक सकल सुग्रीव रहित से क्लेशैँ
घनधुनि मुदित मयूरि श्रवन-परवेशैँ ॥

॥ रूपक चौपाइ ॥

कहल राम हे धीर कपीश । किछु देखक थिक लौकिक दीश ॥
बालिक हो दाहादिक काज । अङ्गद आबथु सहित समाज ॥
पुष्पक ततय विचित्र बनाय । वानरेन्द्र काँ शयन कराय ॥
नाना तरहक बाजन बाज । शभ विधि जे भूपति साम्राज[4] ॥
सेनापति मन्त्री[5] परिवार । अङ्गद तारा सैन्य अपार ॥
यथाविहित दाहादिक कर्म्म । कयल सकल मिलि जैँ हो शर्म्म ॥
स्नानोत्तर मिलि सभ्य समाज । रघुपति-चरण धयल कपिराज ॥
राज्य प्रभुक सुखसौँ करि भोग्य[6] । हम चरणक दासत्वक योग्य ॥

॥ सोरठा ॥

कहल ततय श्रीराम, सुग्रीवक शुनि प्रार्थना ।
समुचित जे यहि ठाम, से कर्त्तव्य विचार थिक ॥

॥ चौपाइ रूपक ॥

अहँ राजा अङ्गद युवराज । थिक विचार निक कहत समाज ॥
जाउ झटिति राजा बनि आउ । दिन दिन नव नव कीर्ति बढ़ाउ ॥

---

1 २ओ ३मे 'क' नहि । 2 पाठ तीनूमे दन्त्य अछि । 3 रघू (३), 4 पाठ तीनूमे अछि "साभ्राज" परन्तु जें तकर अर्थ नहि किछु हो तेँ "साम्राज" होयव संगत । 5 मन्त्रि (३), 6 भोग (३) ।

हम न[1] करब व्रत नगर प्रवेश । कयल प्रतिज्ञा पिता-निदेश[2] ।।
लक्ष्मण जयता नहि सन्देह । मित्र अपन प्रिय परिजन गेह ।।
किछु दिन सुखपुर करब निवास । आयब मन नहि करब उदास ।।
सीता-अन्वेषण मे रहब । विषय बहुत अहँ काँ की कहब ।।
एहि गिरिपर हम बासा करब । गिरि कानन सुखसौं सञ्चरब ।।
लक्ष्मण काँ लेल सङ्ग लगाय । आज्ञा पाबि अपन घर जाय ।।
कयल सकल आज्ञा अनुसार । लक्ष्मण-पूजन विविध प्रकार ।।
राम निकट लक्ष्मण अयलाह । किष्किन्धा-वार्त्ता लयलाह ।।
रामचन्द्र-पद कयल प्रणाम । राम कहल कयलनि विशराम ।।
कयल प्रवर्षण-गिरि पर वास । ततय बिताबथि चातुर्म्मास ।।
रहला गह्वर[3] सुन्दर जानि । न पड़[4] पराभव रौदें पानि ।।
लग लग मिल भल कन्द सुमूल । पल्लव[5]-जल मोती समतूल ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा-रामायणे किष्किन्धाकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ।

1 ने (३), 2 दिनेश (३), 3 गहवर (३), 4 पर (१,२), 5 ३मे 'ल' नहि।

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ रूपक चौपाइ ॥

योगारूढ़ समाधि विराम । सय्यँमशील निरन्तर राम ॥
लक्ष्मण पूछल पूजा-रीति । कहल राम बुझि अनुज सप्रीति ॥
वेद तन्त्र पूजाक प्रकार । संक्षिप्ताक्षर विधि विस्तार ॥
पुन प्राकृत बनि विरही राम । विलप कलप लय सीता नाम ॥
सगरि रजनि निद्रा नहि आब । मानस-वनक वियोगज-दाव ॥
किष्किन्धा मन्त्री हनुमान । ओतय कहल सुग्रीवक कान ॥
राम अहाँक कयल उपकार । पाओल[1] सम्पति सुख प्रिय दार ॥
अहँ कृतघ्न बिसरल वृत्तान्त[2] । होयत की कल्याण[3] नितान्त ॥
भुवन-विदित बाली जे वीर । से मरि गेला एकहिँ तीर ।
राज्य अकण्टक तारा पाय । दिन अज्ञात राति बिति जाय ॥
से पर्व्वत पर अहँ घर सूति । व्यर्थ करी जनु तेसर जूति ॥
ओ तकयित नित मित्रक बाट । अहँ कि सुचित घर ठोकि कपाट ॥
कामातुर वानर अज्ञान । त्यागू राज्य-विषय अभिमान ॥
कुपथ गमन सौँ मुइला बालि । अहँउ धयल भल प्रबल कुचालि ॥
ई शुनि भय-विह्वल कपिराज । वचन कहल मनमे भेल लाज ॥
दश हजार चर वानर जाय । आनय वानर भालु बजाय ॥
सातहु द्वीपक[5] वानर विकट । पनरह दिनमे आबथु निकट ॥

---

1 पायोल (१,२) एवं अन्यत्रहु । 2 विरतान्त (३), 3 कल्यान (३), 4 पाठ तीनूमे अछि 'शूति' 5 दीप (३) ।

जे करताह व्यवस्था-हानि । तनिकाँ हम मारब अरि जानि ।।
कहि सुग्रीव गेला घर घूरि । मारुत-सुत देल आज्ञा पूरि ।।
अतुलित-गुण बल दश दिश गेल । कयल विलम्ब न त्रासक लेल ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ।

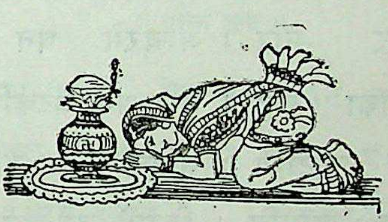

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

एक समय तहि गिरिमणि-सानु । विरही राम चरम[1]-गिरि भानु ॥
असह विरह लक्ष्मण काँ कहल । सीता हरलक राक्षस रहल ॥
छथि वा नहि जिबयित के जान । हृदय हमर थिक कुलिश समान॥
छथि जिबयित[2] केओ कहि जाय । तखन करब हम उचित उपाय ॥
हठ सौँ हम हुनका छिनि लेब । सुधा-पयोनिधि मथि जनु देब ॥
अरि बल पुत्र सकल देब मारि । हरलक जे सीता सति नारि ॥
महामत्त-गज घन-विस्तार । विरहिनि बधय भ्रमय संसार ॥
चपला-कसा सुरेश्वर मार । अम्बरमे घन शब्द उचार ॥
बड़ जलभार वलाका सङ्ग । अग अग अटकथि बाहिक रङ्ग ॥
निद्रा केशव-तन लपटाथि । सरित सकल सुख सागर जाथि॥
विशद वलाका[3] गगन समाथि । विरही जन मन मन अकुलाथि ॥
चिन्ता-खेद विरहि-मन व्याप । शिखरिशिखरिशिखिऋषभअलाप॥
बर्द्धित रस नहि रहल संभार । चललि नदी नदिपति अभिसार ॥
गगन न देखिय घन परिपूर । तारा तारापति नहि सूर[4] ॥
पङ्कज मुद्रित खग नीड़स्थ । विलसित मालति दिनपति अस्त॥
दिन रजनिक मन हो अनुमान । कोक अशोक शोकसौँ भान ॥
नृप नृपकाँ घन कलह घटाय । वर्षा सेना देल अटकाय ॥
भेक अनेक वचन उच्चार । जनु पटु वटु रटु श्रुतिस्वर-सार ॥
धन सुख सुग्रीवहि कैँ प्राप्त । दार-सहित अति शूर समाप्त ॥

---

1 चरण (२, ३) 2 जिबइत (१,२), 3 वालाका (१,२), 4 पाठ तीनूमे अछि 'शूर' परन्तु सूर्यक' अर्थमे से दन्त्यादि उचित ।

॥ हंसगति छन्दः ॥

॥ जाज ॥

हमर विना वैदेहि विषम दुख सहती ।
राक्षस-घरमे जाय हाय की रहती ॥
प्राणेश्वरी कहाय हाय की कहती ।
शय शय संशय आब दुर्दशा महती ॥

॥ रोला ॥

॥ लावण्या ॥

सीता-चरण-सरोज-परश-शीतलता तोरा ।
रे शशि बनु जनु भानु दहन करु जनु तनु मोरा ॥
हरि हरि हरि हरु हृदय-ताप तुय हृदय कठोरा ॥
वैदेही-मुख पूर्णचन्द्र मोर नयन चकोरा ॥

॥ बाला छन्द ॥

राखि नहि भेल की अपन नारी ।
वंश मे लक्ष्म हा पड़ल भारी ॥
राक्षसागारमे जनक-बाला ।
हाय रे आँखि की जलदमाला ॥ ॥

॥ तरल-नयन छन्द ॥

हमरहि पड़ल विपति-तति, कत छथि जनक-कुमरि सति ।
अविरल नयन बहय जल, पल भरि पड़य न मन कल ॥
शशि नहि थिकथि विषम फणि, उडु-तति थिक तनि फण-मणि ।
लह लह रसन किरण-गण, अतिशय मलिन गरल धन ॥
डसयित विरहि[1] गलित तन, अछि बचि रहल धवल फन ॥
फणपति कुलक धवल छथि, विषधर गणक प्रबल छथि ॥
छथि कत रमणि जौं शुनितहुँ, शमनहुँ[2] हनि तनि अनितहुँ ॥

---

1 विरह (२,३), 2 पाठ तीनूमे अछि 'समन' परन्तु 'यम'क पर्यायवाची तालव्यादि थिक ।

॥ चौपाइ ॥

हम हृतदार भोग्य नहि राज । सीता विनु जीवन की काज ॥
कतय बलाहक कतय बलाक । हर्ष मयूरक गति चपलाक ॥
इन्द्र छोड़ाओल पृथिवि[1] पियास । जीवन-दायक जनिकर दास ॥
घन वारण प्रस्रवण मयूर । सभहिक नाद गेल चल दूर ॥
वन वन सम्प्रति काश फुलाय । घन ऋतु क्रम क्रम गेल बुढ़ाय ॥
मूक मयूर हंस-स्वन[2] शूनि । गलित-पक्ष अरि-परिभव गूनि ॥

॥ दोहा ॥

शरद-सरित सुन्दर पुलिन, थोड़ थोड़ दरशाब ।
नव-सङ्गम-लज्जावतिक, जघनक उपमा पाब ॥

॥ चौपाइ ॥

तारा भूषण विधु मुख थीक । तिमिर तनिक अलकावलि नीक ॥
सन्ध्यारुण पट कुसुमक रङ्ग । हो परतक्ष न संशय अङ्ग ॥
देखि पड़ अम्बर-दर्पण माँझ । राति कि सीता-छाया साँझ ॥
गगन न थिकथि उदधि मन मान । तारा-तति नव फेन समान ॥
शशि न कुण्डलित थिकथि फणीश । अङ्क न शयित विष्णु जगदीश ॥
पावस[3] विगत शरद अवतार । नहि चर हमर कतहु सञ्चार ॥
की थिति सीता छथि कोन देश । के हित आनत तनिक सन्देश ॥
कपिपति कृपा कयल परित्याग । पाछिल दिन मन पड़ि के जाग ॥
कामी[4] राज्य-मदैँ की सूझ । आनक सुख दुख कतहु कि बूझ ॥
आब होइछ मन बालिक शोच । मारल तनिका हिनके रोच ॥
आमिष भक्षण मदिरा पान । कतय ततय रह सदसत ज्ञान ॥
अधिक निन्दवश रति[5]-अवसान । जगलहु जलपथि आनक आन ॥
ओ कपटी छथि मारय योग्य । बालिक बधसौँ ई आरोग्य ॥
बुझला जाइछ तेहन कुठाठ । धयल चरण जनु बाली-बाट ॥
से शुनि लक्ष्मण मन अति कोप । अनुमति हो करि कपि-पति-लोप ॥

1 पृथिवी (३), 2 स्वन (३), 3 पाउस (१), 4 कामा (३), 5 राति (३) ।

हमरा हो जौँ आज्ञा नाथ । सुग्रीवक थिति हमरा हाथ ।।
ई कहि लेल धनुष कर बाण । प्रभु-रुचि पाबथि करथि प्रयाण ।।

।। तोटक छन्द ।।

शुनु लक्ष्मण सत्वर जाउ अहाँ
भयभीत करू कपिनाथ तहाँ ।
परित्यागथि बालि-कुचालि जना
नहि मारब मित्र करैछी मना ।।

।। चौपाइ ।।

स्फुरित अधर लोचन अति लाल । चलल रौद्र रस जेहन विशाल ।।
ई प्रभु माया अपन पसार । निर्गुण[1] सगुण सुगुण अवतार ।।
नगरक निकट धनुष-टङ्कार । कयलनि लक्ष्मण कोप अपार ।।
से शुनि प्राकृत कीश सगर्व्व । पाथर तरु कर दौड़ल सर्व्व ।।
लक्ष्मण देखल वानर रङ्ग । बाढ़य लागल कोप अभङ्ग ।।
अङ्गद दौड़ला करयित घोल । कहि अवाच्य रोकल कपि-गोल ।।
वानर-बल हठि दूर पड़ाह । कोपक विकट निकट नहि जाह ।।
अङ्गद आबि प्रार्थना कयल । लक्ष्मण-चरण शरण कहि धयल ।।
अङ्गद काँ लेल हृदय लगाय । कहलनि कहू[2] पितीकेँ जाय ।।
रघुनाथक आज्ञा अनुसार । हे युवराज करब व्यवहार ।।
एतय पठाओल रौद्रक मूर्त्ति । कयल व्यवस्था कयल न पूर्ति ।।
शुनि से सत्वर अङ्गद जाय । सभय पितीकेँ कहल बुझाय ।।
पुरी-द्वार लक्ष्मण छथि ठाढ़ । उचित क्रोध हुनका मन बाढ़ ।।
शुनितहि कपिपति बहुत डराय । हनूमान[3] काँ कहल बजाय ।।
हनूमान३ संगे[4] युवराज । लक्ष्मण करिय कोप कृश आज ।।
शञ्च शञ्च निज भवनहिँ लाउ । कोप रहितसौँ भेट कराउ ।।
ताराकाँ कहलनि कपिराज । अहँउ जाउ सौमित्रि-समाज ।।
कोमल वचनेँ करु परितोष । मिलब हमहु जखना नहि रोष ।।

1 रगु (३), 2 हु (२), 3 हनु (३), 4 संग (३) ।

तारा पहुँचलि मध्यम कक्ष । यहि पथ अओता हयब समक्ष ॥
अङ्गद विनय-युक्त हनुमान । कयल प्रणाम कहल कल्याण[1] ॥
हे सौमित्रि अपन थिक गेह । चलल जाय मन निस्सन्देह ॥
देखब राजदार[2] कपिराज । अपनैँ सौँ के जनि कर लाज ॥
तखन जेहन आज्ञा से करब । अपनहुँ दीर्घ दोष परिहरब ॥
लक्ष्मण कर धय कह हनुमान । चलु अन्तष्पुर[3] बुद्धि-निधान ॥
क्रम क्रम गेला मध्यम कक्ष । तारा चन्द्रानना समक्ष ॥
मद-अरुणित दृग भूषण-राजि । नमस्कार कयलनि हसि वाजि ॥
रक्षा करिय अपन जन जानि । कपिपतिसौँ नहि हो हित-हानि ॥
अपनहि कयल विषय आरोप । भृत्य भक्त कपिवर पर कोप ॥
दुर्दश छला दशा भल पाबि । भोग-विवश इच्छित[4] सुख भावि ॥
छथि उद्योगहि मध्य कपीश । अन्तर्य्यामी प्रभु जगदीश ।
बहुतो दूत पठावल दूरि । बहुत शीघ्र अबयित अछि घूरि ॥
जौँ दशकन्धर[5]-कृत अन्याय । विद्यमान बल बालिक भाय ॥
तारा-विनय-वचन शुनि कान । अन्तष्पुर पुनि कयल प्रयाण ॥

॥ सोरठा ॥

रुमा-अङ्क निश्शङ्क, मदावस्थ मातङ्ग[6] सम ।
बैसल मणिपर्य्यङ्क, देखल लक्ष्मणकेँ ततय ॥
सत्वर उठल डराय, लज्जित मद-घूर्णित नयन ।
रामानुज खिसिआय, कहल बहुत निन्दित कथा ॥
रे वानर दुर्वृत्त, विस्मृत श्रीरघुनाथ किय ।
भावी यहन निमित्त, बालि सदृश मरणेच्छ[7] की ॥
प्रभुतादिक मद पाब, धन-मद गुण[8]-तारुण्य-मद ।
मद मद महिला आब, विधिहुक बुत नहि से बुझथि ॥
समय कहल हनुमान, लक्ष्मण-योग्य न वचन थिक ।
कपिपति भक्ति समान, अपनहुँ नहि रघुनाथ मे ॥

---

1 न (३), 2 ३मे 'र' नहि । 3 अन्तपुर (३), 4 छि (१,२), 5 ३मे 'र' नहि । 6 मातंक (३), 7 छ (१,२), 8 गुन (३) ।

करथि प्रभुक हित काज, वानरेश रघुनाथ-प्रिय ।
वानर सैन्य समाज, आबि गेल देखू अहाँ ।।
सकल सैन्य लय संग, सीतान्वेषण मे निरत ।
करता शत्रुक भङ्ग, नहि विलम्ब सन्नद्ध बल ।।
निज अनुचित मन मानि, लज्जित रामानुज तहाँ ।
अर्घ्यादिक[1] सन्मानि[2], कपि-राजा मिललाह तहाँ[3] ।।
हम श्रीरामक दास, ओ रक्षा कयलनि हमर ।
तनिकहु अनकर आश, हम सहाय नामक ध्रुव ।।
क्षमा करब अपराध, कहल प्रणय सौं कटु वचन ।
अँह[4] प्रिय गुणक अगाध लक्ष्मण ततक्षण कहल पुन ।।
सीता-विरही राम, एकाकी कानन बसथि ।
हम न करब विश्राम, सेव्य निकट सेवक सुखी ।।

।। चौपाइ ।।

भल विचार चलला कपिराज । रथ चढ़ि लक्ष्मण सह प्रभु-काज ।।
नीलाङ्गद हनुमान प्रधान । सेना सङ्गहि कयल प्रयाण ।।
बाजन नाना तरहक बाज । राज-चिन्ह छत्रादि विराज ।।
प्रभुक निकट सब सज्जित जाय । मुदित राम देखल समुदाय ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः ।

1 अर्च्या (१,२), 2 सम्मानि (२,३), 3 हैं (१,२), 4 अहाँ (३) ।

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ रूपक घनाक्षरी ॥

॥ तीरभुक्तिसंगीतरीत्या कानरा-राजविजय छन्दः ॥

अजिन-वसन शुचि नवघन-सम रुचि, कमल-नयन हसयित मुख परसन ।
रघुवर-गिरिगुहा पुर थित[1] छला भन, वैदेही-विरह-जर जनु जरजर सन ॥
लक्ष्मण कपिवर चरण प्रणति कर, वानर-निकर प्रमुदित शुभ-दरशन ।
जटिल सुभग-तन-रुचि रवि-शशिसन खग[2] मृग प्रमुदित प्रभु रघुवर सन[3] ॥

॥ रूपमाला ॥

चरण पड़ल निहारि कपि-पति हृदय लेल लगाय
कुशल पुछलनि राम प्रभु, बैसलाह आज्ञा पाय ।
तखन पुन रघुनाथ काँ से,[4] कहल दुहु कर जोड़ि
चमू आइलि वानरी रघुनाथ अछि नहि थोड़ि ॥
काम-रूपी द्वीप द्वीपक, विकट मर्क्कट लोक
पर्व्वतोपम युद्धमे, अरि कय शकथि[5] नहि रोक[6] ॥
देव-सम्भव अमित-बल सभ, अभय नानाकार ॥
युद्ध करबाँ सतत उद्यत, सहि न शकु महि भार
प्रभुक आज्ञा पाल फल दल, मूल सभकाँ भक्ष्य ॥
दैत्य दानव प्रभृति हिनका, युद्धमे नहि लक्ष्य ।
जाम्बवान सुबुद्धि ऋक्षक, अधिप मन्त्रि महान
कोटिशः भल्लूक वशमे, आन कहल कि मान ।
वायु-पुत्र पवित्र मन्त्री, हिनक अद्‌भुत कार्य्य
वायु-बलक समान-बल छथि, समर मे अनिवार्य्य ।
नील नल गवयादि अङ्गद, मादनादि सुवीर
शरभ मैन्दव गज पनस[7] ओ, बली दधिमुख धीर ।

1 पित (३), 2 जग(३), 3 मन (३), 4 मे(३), 5 सक (३), एवं अन्यत्रहु, 6 कि, 7 पवन (३) ।

तार नाम सुषेण केसरि, विश्व के नहि जान
महाबल जनिके कहल छल, पुत्र छथि हनुमान ।
एक एकक कोटि सेना, कहल यूथप नाम
ई प्रधानैं कहल अछि छथि, अति कुशल सङ्ग्राम ॥
बालिपुत्र महाबली छथि, हिनक समुचित चालि
थिकथि राक्षस कुलक[1] अन्तक, सोपि गेला बालि ।
सकल सेना सहित प्रज्ञा, करथि आज्ञा नाथ
हमर नाम निमित्त मात्रक, विजय प्रभुवर हाथ ॥
राम शुनि हर्षाश्रुलोचन, कहल हृदय लगाय ॥
मित्र सभटा अहँ जनैछी, करक तकर उपाय ।
तखन शुनि सुग्रीव दश दिश, कपि पठावल वीर
कहल दक्षिण दिश विशेषैं, जाथि सभ रणधीर ॥
बालि-सुत-युत मरुत[2]-सुत ओ, जाम्बवान महान
नल सुषेण ओ शरभ[3] मैन्दव, द्विविद करथु प्रयाण ।
यत्नसौं सभ जानकी कें, ताकि कें भरि मास
अन्यथा दिन एक बीतत, प्राणकाँ बुभु त्रास

॥ **चौपाइ** ॥

वानर-वीर कपीश पठाय । बइसला[4] विनत राम लग जाय ॥
मारुत-सुत काँ कहलनि राम । ई मुद्रा अछि अङ्कित नाम ॥
यतनैं सौं लिय सङ्ग लगाय । देब जनकजाकाँ अहँ जाय ॥
अहँ का सतत रहत कल्याण । अहँक समान सूझ नहि आन ॥
अपन नीक जानब से करब । कालहु सौं संग्राम न डरब ॥
प्रभु-आशिष मारुति[5] फल पाब । विश्व-विजय बल पाओल आब ॥
अङ्गद आदि चलल मिलि सङ्ग । कोटि कोटि गुण बल बढ़ अङ्ग ॥
फिरइत वन राक्षस जे भेट । तनिक प्राण हर मार चपेट ॥
श्रमसौं क्षुधा[6]-तृषातुर भाख । आब प्राण परमेश्वर राख ॥
देखल सभ गह्वर बड़ बेश । लता गुल्म तृण आवृत देश ॥

1 कुलद (३), 2 शरुत (३), 3 सरभ (३), 4 बैसलाह (३), 5 मारूति (३), 6 क्षुध (३) ।

क्रौञ्च हंसगण तीतल पाँखि । देखल सभ जन निज निज आँखि।।
तेहि अभ्यन्तर जल अनुमान । पैशल विवर आगु हनुमान ।।
बहुत दूर छल निविड़ अन्धार । हाथैँ हाथ धयल गेल पार ।।
देखल जलाशय मणि-सम नीर । कल्पवृक्ष-सम तरुवर तीर ।।
फलसौँ नमित भरल मधुभार । कपि-सेनागन हर्ष अपार ।।
सभ गुण भरल देखल एक गाम । एक गोट नहि लोकक नाम ।।
कनकासन बैसलि एक नारि । अपन कान्ति सौँ जोति पसारि ।।
ध्यानावस्थ योगिनी जानि । की थिक विषय कि बुझ अनुमानि।।
भक्ति भीति सौँ कयल प्रणाम । के अहाँ थिकहु कहू निज नाम ।।
त्यागि समाधि सुबुद्धि विचारि । सभकाँ देखल पलख उघारि ।।
देखितहि कहल दिव्य अवतारि । आश्रम करु जनु हमर उजारि ।।
कहँसौँ ककर पठावल दूत । लोचन-गोचर वीर बहूत ।।
शुनि कहलनि उत्तर हनुमान । पुरी अयोध्याधिप श्रीमान ।।
दशरथ नृपक जेठ सुत राम । शुनितहि होयब हुनकर नाम ।।
पिता-वचन वन नारि-समेत । अयला सानुज सत्य-निकेत ।।
रावण हरलक तनिकर नारि । किछु दिन बितलय होयत मारि ।।
सुग्रीवक सँग मैत्री बेश । सभ चललहु सीताक उदेश ।।
धन्यतमा अपनेँ केँ जानि । आश्रम अयलहु पीबय[1] पानि ।।
के अपनैँ देवि कारण कोन । कहू तखन बरु साधब मौन ।।
कहल यथेच्छित[2] फल भल खाउ । कहबस्वस्थ जल पिबि पिबि आउ ।।
फलाहारकैँ पिउलनि पानि । अयलहु सभ[3] जन योगिनि जानि ।।
सभ जन नम्र जोड़ि दुहु हाथ । देवि सत्य कहु करु जनु[4] लाथ ।।
विश्वकर्म्म[5] काँ हेमा नाम । पुत्री जानथि उत्तम साम ।।
नृत्य-तुष्ट शङ्कर वृषकेतु । ई पुर देलनि हेमा हेतु ।।
दश अयुतायुत बसयित भेलि । तदुपरि ब्रह्मपुरी चलि गेलि ।।
चलयित हमरा से सन्मानि । विष्णु-भक्ति-रति सहचरि जानि।।
कहलनि सखि तप करु यहिठाम । लाभ तपस्या-फल परिणाम ।।

1 पीवक (३), 2 तीनूमे 'छि' । 3 जनि (१), 4 जनू (३), 5 विश्वकर्म्मा (३),

त्रेतायुग रामक अवतार । हरता से प्रभु[1] पृथिवी[2]-भार ।।
सीतान्वेषक वानर जखन । देखब पूर्ण मनोरथ तखन ।।
योगि-गम्य श्रीविष्णुक गेह । जायब अयि सखि निस्सन्देह ।।
एकसरि रहलहुँ सखि-उपदेश । अपनहुँ अयलहुँ कयलहुँ बेश ।।
स्वयम्प्रभा थिक हमरो नाम । देखब जाय आइ श्रीराम ।।
मुद्रित करु कपि सभ जन आँखि । तप-वल हम देब बाहर राखि ।।
यहि गत सभ जन से वन देख । हेमा-कर्म्म अलौकिक लेख ।।
से पहुँचलि सानुज जत राम । भक्ति प्रदक्षिण कयल प्रणाम ।।

।। मौक्तिकदामछन्दः ।।

हरे रघुनन्दन सानुज राम, विभा कमनीयतनो जितकाम ।
अनन्यवदान्यतयावितभक्त, स्वयन्त[3] जगत्स्वनुरक्तविरक्त ।।

।। दोहा ।।

भक्ति-योग-लाभैं बसलि, बदरीवन तप लागि ।
गेलि दिव्य गति योगिनी, अन्त देह परित्यागि ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ।।

1 प्रसु (३), 2 ३मे 'क' वेसी । 3 ३मे 'य' नहि ।

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ सोरठा ।

चिन्ता-दुर्ब्बल देह, सीतान्वेषण मे भ्रमित ।
छूटल निज निज गेह, वन-तरु-शाखा-स्थित सकल ॥

॥ चौपाइ ॥

अङ्गद कहल अपन मन-ताप । मरि गेला[1] बालिक[2] सन बाप ॥
पिती करै छथि निन्दित काज । माइक अनुचित कहइत लाज ॥
हुनका नहि पुन मारथि राम । दूइ रीति अछि एकहि गाम ॥
कामी मलिन चलथि की नीति । हमरा विषय कतय हो प्रीति ॥
गह्वर घुमयित गत भेल मास । रामक रक्षित हम निस्त्रास ॥
यहि जीवन सौँ मरणे[3] नीक । अयश श्रवण नित बाप पितीक[5]॥
कनइत तनिकाँ देल सन्तोष । एतहि रहु[6] सभ जन निर्दोष ॥
से शुनि कहल वीर हनुमान । एहन न करिय बालि-सुत ज्ञान ॥
अहँ कपीश केँ प्राण समान । अङ्गद जनु करु संशय आन ॥
लक्ष्मण सौँ अहँमे अतिप्रीति । राखथि रघुवर धर्म्म सुनीति[7] ॥
मानुष मानल अहँ मन राम । देखल पराक्रम अपनहि ठाम ॥
नारायण मानुष अवतार । छल-बल हरता अवनी-भार ॥
सत्य कहैछी निश्चय मानि । सीता विष्णुक माया जानि ॥
लक्ष्मण थिकथि शेष-अवतार । नर-लीला कर लोकाचार ॥
हमरहु सबहि लेल अवतार । थिकहुँ देवता चरित उदार ॥
अङ्गद काँ कयलनि सन्तुष्ट । करु[8] संहार दनुज जे दुष्ट ॥
क्रम क्रम जाय महोदधि-तीर । से देखि ककरो मन नहि थीर ॥
कतहु देखि पड़ नहि किछु लक्ष । कि करब विधि जलनिधिक समक्ष॥

---

1 गेलाह (३), 2 ३मे 'क' नहि । 3 मरण (३), 4 पाव (3), 5 पिताक (३), 6 रह (४),
7 सुनिति (३),8 करू (३) ।

गुहा भ्रमित बीतल ई मास । अतिशय अछि सुग्रीवक त्रास ॥
देखितहुँ कतहु दशानन नयन । अवश करबितहुँ अवनी-शयन ॥
सीताकाँ देखितहुँ कहुँ आँखि । कहितहुँ थिति रघुपति संभाखि ॥
बिनु देखलें जायब घर घूरि । कपि-पति देता चरणहि चूरि ॥
ई कहि कहि कुश घास ओछाय । वानर सभ बैशल[1] पछताय ॥

॥ सवैया छन्दः ॥

तखन महेन्द्राचलक गुहा सौँ शञ्च शञ्च बहरायल गृद्ध ।
पर्व्वत सन[2] से सभ वानर काँ कहलनि मांसप्रिय अतिवृद्ध ॥
दिन दिन एक एक काँ खायब से शुनि वानर सकल डराय ॥
कहल जटायु धन्य खग छल छथि पाओल मुक्ति गृद्ध-तन[3] पाय ॥

शुनि सम्पाति जटायुक चर्च्चा कर्णामृत सन मन मन मानि ॥
कहल कहू निर्भय भय कपि-कुल करब न ककरो जीवन-हानि ॥
जाय समीप कहल अङ्गद सभ शुनु हम कहइतछी वृत्तान्त[4] ॥
पृथिवी-भार-हरण कारण विभु अवतरला महि लक्ष्मीकान्त ॥

॥ चौपाइ ॥

सीता-सह सानुज रघुनाथ । अयला वन पितृ-आज्ञा लाथ ॥
रावण छलसौँ सीता-हरण । कयलकध्रुव तनिकर लग मरण॥
शुनितहिँ वैदेहीक विलाप । कयल जटायु गतायु प्रताप ॥
युद्ध विरुद्ध कयल से घोर । कहि कहि दुष्ट दशानन चोर ॥
रावण तनिकाँ मारल बाण । मूर्छित खसला तन धर[5] प्राण ॥
मोक्ष जटायुक अन्त चरित्र । रामचन्द्र काँ कपिपति मित्र ॥
बालि-निधन सुग्रीवक राज । अयलहुँ सभहुँ तनिक हित काज॥
सीता तकइत तकइत आज । अयलहुँ एहि गह्वरक समाज ॥
बहुत बिलम्ब बितल एक मास । सुग्रीवक हो अतिशय त्रास ॥
लवणोदधिक आबिकेँ तीर । जायत प्राण कि रहत शरीर ॥
वृद्ध गृद्ध अहँ काँ दुर सूझ । हमरा सबहिक आधि के बूझ ॥

1 बैसल (३), 2 सम (३), 3 तनु (३), 4 ता (३), 5 धन (३) ।

जनक-नन्दिनी[1] छथि जे गाम । कहू दयामय मन दय ठाम ॥
अङ्गद-वचन शुनल से गृद्ध । कहलनि भ्राता छल छथि वृद्ध ॥
कति सहस्र बीतल अछि वर्ष । वार्त्ता शुनि मन बाढ़ल हर्ष ॥
कहब जतय छथि वचन सहाय । जलक समीप दिअओ[2] पहुचाय ॥
पहुचाओल समुद्रक कात । देल तिलाञ्जलि कहि सहजात[3] ॥
पुनि पहुचाओल[4] पहिलहि ठाम । कहल तखन किछु समय विराम ॥
गिरि त्रिकूट पर लङ्का नाम । पुरी अशङ्क[5] दशानन-धाम ॥
छथि वैदेही विपिन अशोक । कोटवार अछि राक्षसि लोक ॥
योजन शत कत[6] जलचर पानि । से समुद्र जे जयता फानि ।
से सीता काँ देखथि जाय । सत्य कथा हम देल जनाय ॥
रानण-वध करबा हम दक्ष । कि करब सम्प्रति नहि गति पक्ष ॥
गृद्ध लोककाँ सूझय दूर । करु[7] उपाय उत्तम जे फूर ॥

॥ सवैया छन्द ॥

शत योजन जलनिधि सुख फानथि, लङ्कापुरी अशङ्कित जाय ॥
वैदेहीक कुशल सभ जानथि, समाचार सन्तोष शुनाय ॥
फानथि पुन निर्भयसौँ जलनिधि, छथि के यहिमे करू विचार ॥
होयत कार्य्य-सिद्धि निश्चय अछि, श्री नारायण-कृपा अपार ॥

॥ इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ॥

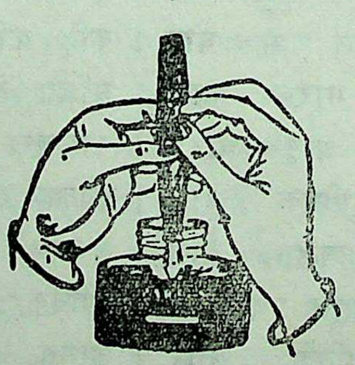

1 तीनूमे 'नन्दनी'। 2 दिअऔ (३), 3 शहजात (३), 4 तीनूमे 'पहुचावल'। 5 तीनूमे 'असङ्क'
6 तक (३), 7 करू (३)।

॥ अथ अष्ठमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

उड़लहुँ हम जटायु दुहु[1] भाय । रवि-रथ रोकब सत्वर जाय ॥
भ्राता युगल अतुल बल मानि । तरुण अवस्था गुणल[2] न हानि ॥
घुरला बन्धु असह्य विचारि । हम नहि मानल मनमे हारि ॥
दिनकर निकट जरल दुहु पक्ष । दिनकर देव देव परतक्ष ॥
खसलहुँ विन्ध्यगिरिक पाषाण । तीनि दिवस धरि छल अज्ञान[3] ॥
खसलेँ लागल छल बड़ चोट । पक्ष-विहीन भेल मन छोट ॥
बचत जीव शिव कोन प्रकार । विकल सतत मन शोच अपार ॥
सदय महान चन्द्रमा नाम । दुर्ग्गति से मुनि[4] देखल ठाम ॥
ओ परिचित पुछलनि की भेल । पक्ष अहाँक कतय जरि गेल ॥
अपन कहल छल जे अज्ञान । दुःख-मूल केवल अभिमान ॥
बहुत प्रकार देल सन्तोष । ज्ञान शिषाओल[5] से भरिपोष[6] ॥

॥ षट्पद ॥

देह-मूल थिक दुःख, देह कर्म्महि सौँ उदभव ।
अहं-बुद्धि सौँ कर्म्म, पुरुष देह-स्थित अनुभव ॥
अहङ्कार जड़ अति अनादि, माया परकासल ।
बिच्छायासय्युँक्त तप्त, लोहक सन भासल ॥
तनिका सौँ ई देह काँ, भेल एकता देह हम ।
यहन बुद्धि लय चेतना-सहित देहकाँ विविध भ्रम ॥

॥ सोरठा ॥

तनिक मूल संसार, साधक सुख दुख उभय सब ।
आतमा रहित-विकार, मिथ्यातादात्म्यैँ[7] सदा ॥

---

1 दुहुँ (३), 2 गुणक(३), 3 अग्यान (१,२), 4 सुनि (३), 5 शिखा (३), 6 तीनूमे 'छा' ।
7 तीनूमे "तादात्मै"।

हम शरीर कर नर्म्म, कर्म्मक कर्त्ता हमहि सभ ।
जीव करथि सभ कर्म्म, तत्फल बाँधल से विवश ।।
पापपुण्ययुत भेल, भ्रमित[1] होथि उद्ध्वाँध[2] नित ।
यज्ञ कयल धन देल, सुख-भोक्ता हम स्वर्ग मे ।।
ई सङ्कल्पाध्यास, भोग कयल चिर स्वर्ग-सुख ।
क्षीण-पुण्य सन्त्रास, मर्त्य-लोक मे पुन बसथि ।।
विधुमण्डल काँ पाबि, शीत सङ्ग ब्रीह्यादि[3] मे ।
तखन पुरुष तन आबि रेतरूप[4] स्त्री-योनि गत ।।
योनि-रक्त-संयुक्त, वेष्टित भेल जरायु सौँ ।
एक दिवस भेल भुक्त, कलल भेल आरूढ़ पुन ।।
भेल वुद्वुदाकार, पाँच रातिमे सैह पुन ।
सात राति सञ्चार, धयल पेशिताकार काँ ।।
पनरह दिन बिति जाय, से पेशी शोणित-युता ।
राति पचीश बिताय, पेशी सौँ अङ्कुर बनय ।।

॥ चौपाइ ॥

ग्रीवा माथ काँध ओ पीठि । वंश उदर एक मासैँ सृष्टि ।।
पाणि चरण पाँजर कटि जानु । दूइ मासमे उतपति मानु ।।
अङ्ग-सन्धि बितला तिनि मास । चारि मास अंगुली-प्रकास ।।
नाक कान लोचन बनि जाय । मास पाँच काँ समय विताय ।।
दन्त-पाँति नह मुह्याधार । पचमा मासेँ होय प्रचार ।।
नाक कान मे छिद्र प्रकास । बीति जाय जखना षट मास ।।

॥ पादाकुलक दोहा ॥

नाभि उपस्थ लिङ्ग ओ पायुक उतपति मासैँ सात ।।
सकल अवयव रोम शिर मे कच अष्टमास विख्यात ।
स्त्रीक जठर मे गर्भे बाढ़थि पाँच मास चैतन्य ।।
जीव पबै छथि ई अद्भुत गति कर्त्ता प्रभु से धन्य ।।

1 भ्रमित (३), 2 उद्वांध (३), 3 वृक्षादि (३) आ वृह्यादि (१,२), 4 रेतरुप (१,२,३) ।

॥ चौपाइ ॥

मातृ-भुक्त अन्नादिक खाथि । बर्धित गर्भ विकल पछताथि ॥
पूर्व जन्म मन पड़लय ताप । देखल विविध माय ओ बाप ॥
विविध भक्ष्य नाना-स्तन-पान । कयल कतहु नहि पावल ज्ञान ॥
कति बेरि विधि-कृत धारण देह । प्रज्ञा हरल विषय-मध नेह ॥
मिलि कुटुम्ब मे भेलहुँ प्रचण्ड । गर्भवास मे कर्म्मक दण्ड ॥
कयल सकल हम अनुचित काज । विषयि कुटुम्बक सङ्ग समाज ॥
नाना योनि विविध व्यवहार । कयल न भल मन कतहु विचार ॥
अनुभव कत दुख योनि कुयन्त्र । करिय यहन हम सम्प्रति मन्त्र ॥
साङ्ख्य-योग सौँ करब न आन । जौँ करता बाहर भगवान ॥
गर्भवास सौँ बाहर भेल । स्मरण-ज्ञान माया हरि लेल ॥
आतमा सभ तन सौँ छथि आन । से जानथि जनिकाँ दृढ़ ज्ञान ।
होथि चिदातमा जौँ परिज्ञात । मोह तिमिर हर भानु प्रभात[1] ॥
सुख दुख ज्ञानी सम मति मान । देह-स्थिति प्रारब्ध प्रमाण[2] ॥
देह थिकहुँ हम ई अध्यास । दुखदायक कर नर क विनाश[3] ॥
कञ्चुक कञ्चुकि बुझ निज काय । कञ्चुक-रहित न ततय समाय ॥
रहू अहाँ प्रारब्ध विचार । मिथ्या मानू ई संसार ॥

॥ सवैया ॥

दण्डक-वन रावण-वध कारण, जनकनन्दिनी लक्ष्मण सङ्ग ॥
अयोता[4] करता माया-मानुष, लीला-मारीचक तन भङ्ग ॥
रावण तस्कर बनि सीताकाँ, हरता तनि अन्वेषण काज ॥
सुग्रीवक प्रेषित वानर सभ, अयोता जखना अँहक समाज ॥

तनिका सभकाँ अहाँ कहब सब, सीता छथि लङ्का जेहि देश ॥
नव नव कोमल पक्ष अहाँकाँ, अनायास होएत गय बेश ॥
भेल सत्य जे कहल चन्द्रमा, देखू सभ जन जनमल पाँखि ॥
हम जाइत छी दश दिन बितलय, दशमुख-दुर्गति देखल आँखि ॥

1 प्रताप (३), 2 प्रमान (३), 3 निवास (३), 4 औता (२) एवं अन्यत्रहु । 5 य (३) ।

खसलहुँ भूमि अतुल बल-वीर। व्यथा-लेश नहि भेल शरीर॥
उठु उठु करु रघुनन्दन-काज। हमरा सभहिक राखू लाज॥
शुनि हर्षित बर्द्धित हनुमान। नाद कयल घन सिंह समान॥
सकल सृष्टि फाड़क भ्रम कयल। पर्व्वत सन तन वामन धयल।

॥ कड़खा छन्द ॥

जानकी-जानि-पद हृदय मे ध्यान करि
सुरभिपद-तुल्य जल-राशिकेँ फानबे।
रोकि शकताह[1] के बाट हम वायुसुत,
प्रवह सौँ अधिक जव[2]-दर्प मन मानबे॥
प्रभुक सन्देश कहि स्वामिनी देखि केँ,
शत्रु दशमौलिकेँ[3] बाँधि हम आनबे॥
जाइ लङ्कापुरी मारि वैरीन्द्र-दल,
सकल जन तखन बल हमर किछु जानबे॥

॥ घनाक्षरी ॥

देखादेखी मध्य हम वारिनिधि फानि फेरि
सदल सकुल दशवदन केँ मारिकेँ।
समर समक्ष प्रतिपक्ष लक्ष कोन अछि,
पवन प्रतक्ष बल लङ्कापुर जारिकेँ॥
''चन्द्र'' भन रामचन्द्र परसन हेतु आगाँ,
भूधर सहित लङ्का धरब उखारिकेँ।
जाम्बवान युवराज कहु की करब काज,
आनि देब विनु श्रम जनक-कुमारिकेँ[4]॥

1 सकताह (३), 2 पाठ अछि तीनूमे 'यव' परन्तु वेगार्थ शब्द वर्गीय 'ज' सँ हो। 3 दशमौलि (३), 4 कुमारी (१)।

॥ चौपाइ ॥

जाम्बवान अङ्गद मन हर्ष । कि कहब वीरक मन उत्कर्ष ॥
अँहइ पुरब रघुपति-मन-आश[1] । हमरा सभकाँ दृढ़ विश्वास ॥
जिबइत[2] सीता छथि देखि लेब । से रघुनन्दन काँ कहि देब ॥
राम-सहित रण पौरुष करब । समुचित जेहन तेहन अनुसरब ॥
सतत करथु अहँकाँ[3] कल्याण । व्योम-विहार पिता पवमान ॥
आशिर्व्वचन कहल पढ़ि मन्त्र । उड़ि चलला हनुमान स्वतन्त्र ॥

॥ सोरठा ॥

स्वर्ण-वर्ण मुख लाल, महाफणोन्द्राकार भुज ।
महानगेन्द्र विशाल, प्राप्त महेन्द्राचल उपर ॥

इति श्रीमच्चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे किष्किन्धाकाण्डे नवमोऽध्यायः ॥

1 आस (३), 2जीवयित (१), 3 अहाँ काँ (३)।

कवि-प्रार्थना

झझोटी

श्रीमत्करुणावतारमिन्दुखण्डभालम् ।
वन्दे घनसारगौरमाश्रितैणबालम् ।।
परशुवराभीतिकरं व्यालराजमालम् ।
सर्व्वदा प्रसन्नमुखं कालकालकालम् ।।
व्याघ्रचर्मवाससं समस्तविश्वसारम् ।
निर्ज्जरनिवहैः स्तुतं दृशा विनष्टमारम् ।।
पञ्चाननमादिदेवमाधिहं त्रिनयनम् ।
प्रलये जगतां ध्रुवं दयालुतासदनम् ।।

।। इति किष्किन्धाकाण्ड ।।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

मिथिला-भाषा रामायण

॥ सुन्दरकाण्ड ॥

॥ द्रुतविलम्बित छन्द ॥

धुतनगेऽम्बरगे परमोत्सवे
चकितभानुगणे जितमन्मथे ।
जनकजाधिविनाशिमनोगतौ,
प्रणतिरस्तु हनूमति मारुतौ ॥

॥ चौपाइ ॥

जयजय राम नवल-घनश्याम । सकललोक-लोचन अभिराम ॥
मनमे तनिक ध्यान दृढ़ राखि । मारुतनन्दन उड़ला भाखि ॥
शतयोजन वारिधि विस्तार । लाँघब हम मन हर्ष अपार ॥
रघुनायक-कर जनु शर मुक्त । तथा हमहुँ जायब मुदयुक्त ॥
देखथु कपिगण जाइत गगन । शोभित जेहन प्रवहमे भगण ॥
वैदेही हम देखब आज । दोसर यहन आन की आज ॥
रघुनन्दन काँ वार्ता कहब । सत्वर घुरब अनत नहि रहब ॥
नामस्मरण अन्त एक बार । जनिकाँ भव-जलनिधि सेँ पार ॥
प्रभुक मुद्रिका हमरा सङ्ग । होयत न हमर मनोरथ भङ्ग ॥
जायब लङ्का दनुज-समाज । प्रभुप्रताप साधब सब काज ॥

॥ सोरठा ॥

उड़ि चलला हनुमान, ध्यान राम-पद मे सतत ।
प्रबल प्रलय पवमान, रौद्र-मूर्त्ति लङ्काभिमुख ॥

॥ चौपाइ ॥

लङ्का जाइत छथि हनुमान । को वल को मति से के जान ॥
सुरसा काँ सुर सत्वर कहल । सर्प्प-जननि करु सुरहित टहल ॥
बहुत दिवस धरि मानब गून । जाउ शीघ्र घुरि आयब पून ॥
रोकब बाट कहब नहि मर्म्म । बूझब की करइत छथि कर्म्म ॥
कहल कयल से नभ पथ रोकि । चललहुँ कतय ततय देल टोकि ॥
हमरा आनन सत्वर आउ । विहित भक्ष्य अन्यत्र न जाउ ॥

॥ सवैया छन्द ॥

मारुत-सुत कहलनि शुनु माता, राम-काज कय आयब घूरि ।
सीता-विषय कहब श्रीप्रभुकाँ अहँक देब प्रत्याशा पूरि ॥
सुरसा देवि होइ अछि अरसा[1], कल जोड़ैछी छाड़ू बाट ।
अभिनत मारुति कहल न मानल, नमस्कार कय भेलहुँ आँट ॥

सुरसा कहल शून रे बाबू नहि छोड़ब विनु खयलैँ ।
एखनहुँ धरि जीवन-प्रत्याशा, हमरा मुहमे अयलैँ ॥
बहुत दिनासौँ हम भूखलि छी, विनु आहारैँ मरबे ।
हाथक मुसरी बियरि[2] मे दय कड़े कड़े नहि करबे ॥

॥ चौपाइ ॥

मारुति कहल देबि मुह बाउ । खाय शकी तौँ हमरा खाउ ॥
योजन भरि विस्तर कर काय । सुरसा मुह दश कोश बनाय ॥
तकर द्विगुण हनुमानो कयल । बिश योजन मुख सुरसा धयल ॥
योजन तीस वदन हनुमान । योजन हुनक पचाश[3] प्रमान ॥
अति लघु बनि मुह बाहर जाय । नमस्कार हँसि कहल शुनाय ॥
बहरयलहुँ देवि आनन पैसि । हम जाइत छी रहब न बैसि ॥

॥ दोहा ॥

सुरसा सन्तुष्टा कहल, सत्वर लङ्का जाय ।
राम-कार्य्य साधन करू, हम छी सर्पक माय ॥

---

1 ,अड़सा (३), 2 वियरी (३), 3 पचास (३) ।

ेव पठावल बुझल[1] बल, सीता देखू जाय ।
कुशल फिरब सीता-कुशल, रघुवर देब शुनाय ।।
तखन चलल हनुमान पुन, गरुड़-गमन आकाश ।
जलधि तहाँ मैनाक सौँ, कयलनि वचन प्रकाश ।।

॥ चौपाइ ॥

कयल सगर-कुल बड़ उपकार । तनिक बढ़ायोल[2] भेलहु अपार ।।
तनिकहि वंश राम अवतार । हुनक दूत जाइत छथि पार ।।
जलनिधि कहल जहन[3] हित वाक । जलसौँ उच्च भेला मैनाक ।।
काञ्चन-मणि-मय शृङ्ग अनूप । ततय पुरुष एक दिव्य स्वरूप ।।
हे कपि हमर नाम मैनाक । जलधि भितर डर मन मघवा क ।।
मारुत-नन्दन करु विशराम । खाउ अमृत सन फल यहि ठाम ।।
पथ विशराम न भोजन आज । अछि कर्त्तव्य राम-प्रिय काज ।।
शिखरक परश हाथ सौँ कयल । गगन-मार्ग पक्षी जकँ[4] धयल ।।

॥ दोहा ॥

धयलक छाया-ग्राहिणी, कयलक गमनक रोध ।
हनुमानक मनमे तखन, बाढ़ल अतिशय क्रोध ।।
घोरस्वरूपा[5] सिंहिका, छाया धय धय खाय ।
नभचरकाँ ओ राक्षसी, गगन-गमन जे जाय ।।
देखल तनिकाँ मरुतसुत, मारल झट दय लात ।
पुनि उड़ि के चललाह से, शान्ति भेल उतपात ।।

हरिपद

॥ पादाकुल दोहा वा ॥

गिरि त्रिकूटपर लङ्कानगरी नाना तरु फल वेश ।
नाना खग मृग गण सौँ शोभित पुष्पलतावृत देश ।।

---

1 बूझल (३), 2 बढ़ावोल (३), 3 जेहन (३), 4 जक (१,२), 5 स्वरुपा (३) ।

दुर्ग्ग दुर्ग्ग मे रोकत टोकत चिन्तित मन-हनुमान ।
करब प्रवेश राति कय तहि पुर दिवा युक्ति नहि आन ।।

।।चौपाइ ।।

राम-चरण-सरसिज कय ध्यान । सूक्ष्मरूप भेला हनुमान ।।
पुरी-प्रवेश कयल निशि जखन । बुझलक लङ्का नगरी तखन ।।
कहलक गमहि चलल छी चोर ! हम करइत छी गञ्जन तोर ।।
बुझल न अछि दशकण्ठ-प्रताप । चललहुँ कतय अहा चुपचाप ।।
चुप रह कहलैँ पढ़लक गारि । चट दय लात चलौलक मारि ।।
वाम मुष्टि हरि हनल सुतारि । खसली अवनीमे ओ हौरि ।।
शोणित बान्ति करय कय बेरि । करति कि यहन ऊपद्रव फेरि ।।
लङ्का देवी विकला कान । बरिया काँ नहि लागय बान ।।
पूर्व्व विरञ्चि कहल छल जैह । अनुभव होइछ भेल की सैह ।।

।। षट्पद ।।

नारायण अवतार राम त्रेता मे हयता ।
पिता-वचन सह-बन्धु जानकी सङ्गहि जयता ।।
माया-सीता ततय मूढ़ दशकन्धर हरता ।
बालि मारि सुग्रीव सङ्ग प्रभु मैत्री करता ।।
अहँ काँ तनिकर दूत कपि, मारि मुका विकला करत ।
कहलनि विधि शुनु लङ्किनी, तखन बुझब रावण मरत ।।

।। चौपाइ ।।

वनिता-उपवन अरुण अशोक । महा भयङ्करि राक्षसि लोक ।।
जनक-नन्दिनी छथि तहि[1] ठाम । शोभित वृक्ष शिशपा[2] नाम ।।
कि कहब शोभा देखब जाय । हमहूँ धन्या दर्शन पाय ।।
विजय बनल अछि यश अददात । हमरा हानि कि सहि[3] आघात ।।
देखब राम नवल-घनश्याम । अयोता शीघ्र रहब यहि ठाम ।।

1 तेहि (३), 2 शिंशुपा, (१,२), 3 महि (३) ।

शुनि हरि हँसल चलल उत्साह । घरहिक भेदिया लङ्का डाह ।।
जखन पवन-सुत रघुपति-चार । दुर्ग-महोदधि उतरल पार ।
दशमुख वाम अङ्ग भुज नयन । फरकय लाग अभागक अयन ।।
भल मन्द सगुन सकल फल जान । कालक त्रास न दशमुख मान ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे सुन्दरकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ।।

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ षट्पद ॥

मारुत-नन्दन तखन सूक्ष्म-तन, निशिमे धय कहु ँ।
लङ्का कयल प्रवेश भ्रमित अतिगुप्ते भय कहु ँ।
सीता तकयित ततय दशानन-मन्दिर गेला।
देखि विभव-विन्यास बहुत मन विस्मित भेला।
देखल लङ्का सकल थल, नहि प्रदेश बाँकी[1] रहल।
देखलनि नहि सीता कतहु, स्मरण भेल लङ्किनि-कहल॥

॥ दोवय छन्द ॥

अरुण अशोक देवद्रुम-सोदर, तरु-तति आनत फलसौ ँ।
उत्तम मणि-सोपान वापिका, पूरित निर्म्मल जलसौ ँ॥
कञ्चन महल कहल नहि जाइछ, चुम्बित जलधर-माला।
मणिस्तम्भ-शतसौ ँ अतिशोभित, खग-मृग-परिवृत शाला॥

॥ चौपाइ ॥

विस्मित-मन सन मारुत-पूत। देखयित जाथि रघूत्तम-दूत॥
कनक विहंगम जतय अनेक। वृक्ष शिंशपा देखल एक॥
अति रमणीय निविड़ तरु-छाह। मारुत-नन्दन ततय गेलाह॥
तेहि तरु ऊपर बैसला जखन। सीता काँ देखल से तखन॥
भूतल देवी आबि कि[2] गेलि। राक्षस-पुरी विकल-मन भेलि॥
वेणी एक मलिन अति चीर। दीना दुर्ब्बलि मृदुल शरीर॥
लङ्का-विषय यहनि के आन। सीता थिकि निश्चय अनुमान॥
राम राम मुख करथि उचार। भूमि-लुठित मन दुःख अपार॥
तहि तरु-मूल जानकी जानि। अपन भाग्यकाँ उत्तम मानि॥
अति कृतार्थ भेलहु ँ देखि आज। हम साधल रघुनायक-काज॥

1 बाकी (,२), 2 की (३)।

॥ दोहा ॥

अन्तःपुर बाहरक शुनि, कल कल शब्द महान ।
वृक्ष-खण्ड-संलीन-तन, कर विचार हनुमान ॥

॥ चौपाइ ॥

दशमुख वनिता-वृन्दक सङ्ग । आयल कज्जल-गिरि-वर रङ्ग ॥
किङ्किनि-नूपुर-शिञ्जित शूनि । दुष्ट निशाचर[1]-आगम शूनि ॥
विश भुज लोचन दश गोट मुण्ड । सह संह सङ्ग राक्षसी-झुण्ड ॥
अति विस्मित मन कह हनुमान । देखल शुनइत छलहुँ जे कान ॥
रहला द्रुम-दल दबकि नुकाय । अछि आगाँ कर्त्तव्य उपाय ।
कर विचार रावण मन अपन । पूर्व्व रात्रि जे देखल सपन ॥
राम पठाओल वानर दूत । कामरूप बल बुद्धि बहूत ॥
टक टक ताकय तरु पर बैशि । बुझलक घाट बाट पुर पैशि ॥
कयल बहुत हम रामक दोष । एखनहु धरि हुनका नहि रोष ॥
कहिया मरण राम-कर हयत । माया-पाप-काय छुटि जयत ॥
एखनहु धरि नहि आबथि राम । कहिया होयत दिव्य संग्राम ॥
मनमे ज्ञान उपर अभिमान । चकमक भीतर आगि समान ॥
वचन-बाण तेहन अनुसरब । सीता-मन अति कलुषित करब ॥
स्वप्न सत्य तौँ कपि देखि लेत । रामचन्द्र काँ सभ कहि देत ॥
जौँ कपि होयता कहता जाय । लयोता[2] सानुज राम बजाय ॥
ई मन गुनिकेँ सीता निकट । पहुँचल दशमुख दुर्म्मद विकट ॥
सीता-दशा कहल नहि जाय । आतममध्य जनु रहलि समाय ॥

॥ दोहा ॥

राबण सीता काँ कहल, सुमुखि सत्य वृत्तान्त ।
राम न अयोता काज किछु, मनमे करु सिद्धान्त ॥

॥ चौपाइ ॥

वैदेही परिहरु सन्ताप । उचित कयल नहि अहँकाँ बाप ॥
रामक हाथ देल की जानि । कानन-वास अकारण हानि ॥

---

1 निशार (१), 2 लौता(३) ।

हेम-हरिण देखयित भेल लोभ । लङ्का देखि त्यागु मन क्षोभ ।
शिव शिव आब कि रामक आश । लङ्का छोट हाथ उनचास ॥
जौँ नहि निर्गुण रहितथि राम । तौँ बसितथि नृप-दशरथ-धाम ॥
राम बसथि वनचर-गण संग । हमहुँ शुनल छल कथा-प्रसंग ॥
बहुत तकायोल[1] लोक पठाय । नहि भेटला रहलाह नुकाय ॥
जौँ हुनका अहँ मे किछु प्रीति । अबितथि लय जइतथि रण जीति ॥
पामर रामक त्यागू आंश । विद्यमान लङ्केश्वर दास ॥
हरि आनल अहँकाँ कत दूरि । एको बेरि की तकलनि घूरि ॥
बड़ कपटी छथि ज्ञान घमण्ड । दैवो[2] देलथिन समुचित दण्ड ॥
सकल सुरासुर-नारि समाज । सभक स्वामिनी होयब आज ॥
सीता मन जनु करु किछु छोट । भाग्य अहाँक भेल बड़ गोट ।
तृण-अन्तरित अधोमुखि रुष्ट । रावण-वचनक उत्तर पुष्ट ॥
जे शिर शिवकाँ अर्पण कयल । प्रबल पाप चरणो तत धयल ॥
धिक धिक रावण तोहर ज्ञान । काल-निकट अनहित हित मान ॥
जनिक त्रास बनि भिक्षुक रूप[3] । हरि हरि हरि लयला की चूप ॥
कुक्कुर जनु मख-घृत लय जाय । मरबह खल पाछाँ पछताय ॥
मानुष मानह श्रीरघुवीर । परिचय मन तन लगलय तीर ॥
अयोता सानुज प्रभु रघुनाथ । विचलत गर्व्व तोर दश-माथ ॥
बाणक तेज समुद्र सुखाय[4] । सायक सेतु-उदधि बन्धबाय ॥
अयोता निश्चय होयत मारि । निश्चय तोहर रणमे हारि ।
मरबह पुत्र-निकट-बल-सहित । आयल निकट तेहन दिन अहित ।

॥ दोहा ॥

सीता-वचन कठोर शुनि, रावण लय तरुआरि ।
यहन कथा हमरा कहति, सद्यः हम देब मारि ॥

॥ चौपाइ ॥

मन्दोदरी कहल शुनु नाथ । अबला-वध की अपनैँ हाथ ॥
विदित वीर अपनैँ ई नारि । अपयश पाप देब जौँ मारि ॥

1 तकाओल (३), 2 दैवी (३), 3 रुप (३), 4 शु (१), सू (३)।

अबला ऊपर एतटा रोष । कड़रिक तरु पर शितुआ[1] चोष ॥
कृपणा मलिना दुर्ब्बल देह । हिनका जीबहु मे सन्देह ॥
अन्न पानि कयलनि अछि त्याग । नहि करती पर-जन-अनुराग ॥
अहँकाँ कोन कमी प्राणेश । जीतल भुज-बल सकलो देश ।
सुर गन्धर्व्व सकल जन नाग । कन्या लयलौं मनता भाग ।
कन्या-जन मद-घूर्णित-नयन । अपनहि सुखसौं अउती शयन ॥

॥ दोहा ॥

रावण राक्षसि सौं कहल, उत्कट त्रास देखाय ।
अनुकूला सीता करह, जे बल बुद्धि उपाय ॥
दूइ मासमे करति ई, जौं हमरासौं प्रेम ।
सकल राज्य-रानी हयति, हिनका सभ सुख क्षेम[2] ॥
बहुत बुझौलय नहि बुझथि, बीति जाय दुइ मास ।
हम आज्ञा[3] दय देल अछि, हिनकर करब विनाश ॥

॥ चौपाइ ॥

अन्तःपुर गेला दश-भाल । वनिता-परिवृत गर्व्व विशाल ॥
विकटादिक सीता तट जाय । भयभीता कर स्वाङ्ग बनाय ॥
व्यर्थ तोर तन यौवन आस । भेल न दशमुख सौं सहवास ॥
केओ कह हिनक अङ्ग सभ काट । केओ कह जीह[4] सँ शोणित चाट ॥
अपने हठ अपने सुख[5] खाय । होयत की पाछाँ पछताय ॥
केओ तरुआरि तेज लय हाथ । कटि लिअ[6] हम हिनकर माथ ॥
केओ दौड़य[7] बड़ गोट मुह बाय । की विलम्ब हम जाइछि खाय ॥
त्रिजटा कहल करह अन्याय । सीता नहि जानह असहाय ॥
हिनकर निकट भ्रमहु जनु जाह । अपने अपने तन बरु खाह ॥
यहि खन हम देखल अछि सपन । होयत सत्य बुझल मन अपन ॥

---

1 या (१), 2 छेम (३), 3 अज्ञा (१), 4 जहि (३), 5 मुख (३), 6 लिअओ (१), 7 दौड़ल(३),

॥ रूपमाला ॥

चढ़ल ऐरावतक ऊपर, राम लक्ष्मण सङ्ग ।
दग्ध लङ्कापुरी भय गेल, समर रावण भङ्ग ॥
राम-सेवा कर विभीषण राज्य लङ्का पाय ।
जानकी ई राम-अङ्क-स्थिता भेली जाय ॥

॥ चौपाइ ॥

दशमुख नग्न सकल परिवार । तेल लगओलय[1] भरल विकार ॥
गोबर डाबर मध्य नहाथि । खर पर चढ़ल याम्य दिश जाथि ॥
रावण मरता सहित समाज । प्राप्त विभीषण काँ भेल राज ॥
राम जानकी मिलि घर जयत । दुखमय लङ्का सत्वर हयत ॥
करत अनर्थ अखण्डित नोर । धन्य धन्य सीता हिय तोर ॥
करु करु धैरज कहब कि आन । मुठिएक धूरि[2] न चान मलान ॥

कवित्त घनाक्षरी

॥ गीत ॥

त्रिजटा कहल शुनु जानकी नवीन कथा,
वानर-विशेष वर वाटिका उजारलक ॥
रक्षक प्रबल रण-दक्ष लक्ष लक्ष खेत,
मुइल मुर्च्छित कतो रावण पुकारलक ॥
"चन्द्र" भन यहन न देखल शुनल छल,
अक्षय-कुमार काँ पटकि झट मारलक ॥
कतहुँ न हारलक वीरता प्रचारलक,
रावण-पालित हाय लङ्कापुर जारलक ॥

॥ सबैया छन्दः ॥

स्वप्न-कथा राक्षसि-गण शुनिकेँ,
त्यागि उपद्रव गेलि डराय ।
मद-मातलि छलि जागलि[3] थाकलि,
निन्द-विवश भेलि जहँ तहँ जाय !

1 लगौलै‍ँ (३), 2 धूर (३), 3 जागल(३) ।

सीता तखन विकलि मन-भीता,
दुःख-मूर्छिता[1] रहित-उपाय ॥
कनयित[2] कलपि कहथि की करु विधि,
प्रातहि राक्षसि जाइति खाय ।

॥ गीत काफी ॥

सपन हम देखल अचिन्तित राति ।
विद्रुम-रक्त-वदन तेजोमय, अद्भुत वानर जाति ॥
प्रभु-प्रेषित पाथोनिधि सन्तरि, लङ्का-परिचय पाबि ।
हम विधिहता शुनल शुभ वार्त्ता, इष्ट अनिष्ट कि भावि ॥
जे दिन लङ्का प्रलय होइछ नहि, से दिन पापिक भाग ।
ई अन्याय घोर लङ्कामे, पानिसौँ आगि न लाग ॥
सुरपति-सुतक पराभव-दायक, कोशल कौशल भूप ।
से शर से कर से रघुवर वर[3], कत बैसल छथि चूप ॥

॥ गीत ॥

से दिन कोना[4] होयत मनोरथ पूर ।
रघुनन्दन-बल पलय पवन सम, अधम निशाचर[5] तूर ॥
देवर-तीर[6] जेहन प्रलयानल, रावणगण वन भूर ।
के हम थिकहुँ ककर हम कामिनि, परिचय पओता[7] क्रूर ॥
सकल तमीचर तामस[8] तम सम, श्रीरघुनन्दन सूर[9] ।
हमर यहन गति दैव देखै छथि, नहि उपाय किछु फूर ॥
तीरक तेज समुद्र[10] सुखायत[11], जल थल ऊड़त धूर ।
कोटि शनैश्चर सहित सङ्कटा, लङ्का घर घर घूर ॥

॥ गीत ॥

केहन विधि लिखल विपति-तति भाल ।
कुल पवित्र कुल-कामिनि हमरहि, कठिन विपति जंजाल ।

1 मु (३), 2 कनइल (३), 3 ३मे 'बर' नहि, 4 काना (२), 5 निशाँचर (३), 6 तोर (३), 7 पर्योता (१) 8 तामश (३), 9 शूर (३), 10 समूद्र (३), 11 शुखा (१) ।

रघुनन्दन पति देवर लक्ष्मण, जनि डर[1] काँपय काल ।
चोर दशानन त्रास देखाबय, अनुचित कह वाचाल ।।
दनुज-वधू कह मारब काटब, चाटब शोणित लाल ।
यहि अवसर जौँ ओ प्रभु आबथि, देखथि सभटा हाल ।।
काल-दूत जनि छेम-हरिण छल, छल न बुझल ततकाल ।
कालहि सिंह-घरणि[2] तट निर्भय, गरवित सरव शृगाल ।।

॥ गीत ॥

हमर विधि प्राण अपन भेल भार ।
की सुख भुजि छथि ओ ई देहमे, कतहु कि नहि आधार ।
जौँ आबथि रघुनन्दन सानुज, लीला-सागर पार ।
गृद्धझुण्ड दशमुण्ड-मुण्ड पर कर खर नखर प्रहार ।।
ककरा कहब केओ नहि मानुष, नहि कारुणिक चिन्हार ।।
रक्षा करथि अरक्षित जनकाँ, केवल धर्म्म उदार ।
कठिन विषय विष तिष नहि भेटय[3], खड़ग न[4] लग[5] तिष-धार ।।
शिव शिव जीव-घात वर मानल, धिक जीवन संसार ।
रामचन्द्र-चन्द्रिका थिकहुँ हम, सपन न मन व्यभिचार ।
विधि बुधि विरहिणि व्याकुलि एकसरि चित चिन्ता विस्तार ।।

॥ सवैया मुदिरा ॥

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ, दशकण्ठ-पुरी हम आइलि छी ।
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डराइलि छी ।।
चन्द्र-चकोरि अहैँक सदा, हम शोक-समुद्र समाइलि छी ।
देवर-दोष कहू हम की, अपना अपराध सँ काइलि छी ।।

॥ दोहा ॥

जनक जनक जननी अवनि, रघुनन्दन प्राणेश ।
देवर लक्ष्मण हमर छथि, नैहर मिथिला देश ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे सुन्दरकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ।।

---

1 तीनूमे पाठ अछि "उर," परन्तु सन्दर्भ सँ 'डर' अबैछ । 2 धरणि (३), 3 भेटल (३), 4 ३मे 'न' नहि, 5 लग्र (३) ।

॥ अथ तृतीयोध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

सीता शुनथि शुनय नहि आन । शञ्च शञ्च कह तहँ हनुमान ॥
राजा दशरथ काँ सुत चारि । जेठ राम काँ सीता नारि ॥
शिव-धनु तोड़ल मिथिला जाय । जनक देल कन्या से न्याय ॥
परशुराम[1] अयला कय कोप । तनिकर भय गेल गर्व्वक लोप ॥
भूमि-भार-संहारक काज । विघ्न कयल बड़ देव-समाज ॥
बारह वर्ष राम वनवास । केकयि परवश कयल प्रयास ॥
हरल शारदा केकयि-ज्ञान । ककरो कहल कि रानी मान ॥
वर न्यासित दशरथ सौँ लेल । दशरथ प्राण-रहित भय[2] गेल ॥
लक्ष्मण सीता संगैँ राम । पंचवटी मे कैलनि धाम ॥
भिक्षुक बनि रावण सञ्चरल[3] । शून्याश्रम[4] सौँ सीता हरल ॥
दश-भालक संग लड़ल जटाउ । दृष्ट कथा हम कते शुनाउ ॥
कानन-कथा सकल से कहल । विरही विकल राम दुख सहल ॥
किष्किन्धा मे यहन चरित्र । बालि घालि सुग्रीव सुमित्र ॥
सुग्रीवक हम मन्त्रि प्रधान[5] । नाम हमर कह जन हनुमान ॥
वानर दूत फिरय सभ देश । सीतान्वेषण मुख्य निदेश ॥
तहि मे हमहुँ पयोनिधि फानि । अयलहुँ लङ्का जानकि जानि ॥
वृद्ध गृद्ध कहलनि[6] सम्पाति । घुरि फिरि देखल लङ्का राति ॥
दबकल दबकल यहि[7] तरु कात । देखल शुनल गञ्जन उतपात ॥
हम कृतार्थ भेलहुँ अछि आज । हमहि कयल रघुनन्दन-काज ॥
जनक-नन्दिनी देखल आँखि । अयलहुँ सङ्गी पारहि राखि ॥

---

1 पर्शु रान (१), 2 मे (३) 3 ससरल (३), 4 सून्याश्रम (३), 5 प्राधान (१), 6 कहलन्हि (३), 7 एहि (३)।

॥ षट्पद छन्द ॥

नहि अछि आज्ञा तेहन, जेहन हम कौतुक करितहुँ ।
लङ्कापुरी उखाड़ि[1] प्रभुक पद लग लय धरितहुँ[2] ॥
दशमुख सौँ कय बेरि अपन दुहु पयर[3] धरबितहुँ ।
लाँगड़ि[4] मे लपटाय बाँधि सभ लोक फिरबितहुँ ॥
जननि थोड़[5] दिन विपति अछि, सकुल सदल रावण मरत ।
गृद्ध काकगण मगन[6] मन, लङ्कापुर डेरा करत ॥

॥ चौपाइ ॥

धयलैँ छली अशोकक डारि । शुनल सकल मन रहलि विचारि ॥
कहयित के अछि कथा चिन्हार । देखितहुँ लोचन बह जल धार ॥
दुःख अपार निन्द नहि आब । गगन वचन हित हमर शुनाब ॥
मरइत राखि लेल जे प्राण । वचन शुनाओल अमृत समान ॥
दया करथु से दर्शन देथु । सुकृति[7]-समाज सहज यश लेथु ॥
शञ्च[8] शञ्च[8] से कयल प्रणाम । हृदय राखि रघुनन्दन राम ॥
सीता-वचन शुनल हनुमान । प्रकट भेल कलविङ्क-प्रमाण ॥
पीत वर्ण मुख अतिशय लाल । बद्धाञ्जलि मन हर्ष विशाल ॥
आगाँ आबि प्रणत कपि रहल । देखइत सीता मनमे कहल ॥
वानर-रूप धयल दशकण्ठ । हमरा मोहय कारण चण्ठ ॥
रहलि अधोमुखि विकलि अवाक । रावण-भ्रम सँ[9] कतहु न ताक ॥
मानिय हमरा जननि न आन । हम रघुपतिक दास हनुमान ॥
पवनक तनय विनययुत जानि । सज्जन थिकथि हृदय अनुमानि ॥

॥ दोहा ॥

शाखामृग निश्चय अहाँ, हमरा मन विश्वास ।
नर-वानर-संघटन-विधि, कारण करू[10] प्रकाश ॥

॥ चौपाइ ॥

दूर-स्थित कहलनि हनुमान । जननि कहब हम वचन प्रमाण[5] ॥
लक्ष्मण-सहित राम घनश्याम । धनुर्बाण धर छवि अभिराम ॥

---

1 उखारि (१), 2 धरिलह (१), 3 पैर (३), 4 नाँगडि (३), 5 थोर (३), 6 गमन (३), 7 सुकृत (३), 8 शश्व (१), 9 भ्रम से (१), १० करु (१), ११ प्रामाण (१) ।

ऋष्य-मूक लग अयला जखन । दृष्टि पड़ल[1] सुग्रीवक तखन ॥
हमरा ततय पठौलनि विकल । इष्ट अनिष्ट बुझू विधि सकल ॥
इष्ट मानि[2] मन दूनू भाय । लय गेलहुँ हम काँध चढ़ाय ॥
अचल सख्य सुग्रीवक सङ्ग । थोड़बहि दिनमे सङ्कट भङ्ग ॥
रामक कर-शर बालिक मरण । भव-जलनिधि बाली सन्तरण ॥
से सुग्रीव पठाओल दूत । दशदिश[3] वानर वीर बहूत ॥
चलयित कहलनि श्रीरघुनाथ । कार्य्य-सिद्धि कपि अहँइक हाथ ॥
सानुज हमर कुशल सम्भाषि । देव मुद्रिका आगाँ राखि[4] ॥
रामक चर प्रभु-मुद्रा सङ्ग । रावण-गण मन कीट पतङ्ग ॥
यहि मे तनिक लिखल अछि नाम । देल चिन्हारय कारण राम ॥

॥ षट्पद ॥

निर्धन करथि कुवेर, कुबेर करथि प्रभु निर्धन ।
जे चाहथि से करथि, देव कौशल्या-नन्दन ॥
हम आयल छी सिन्धु फानि, देखल लङ्का-भट ।
हमरहु ई सामर्थ्य, दशानन मारी चटपट ॥
लेल जाय प्रभु-मुद्रिका, मानी जनु किछु आन मन ।
प्रणत ठाढ़ दय मुद्रिका, हाथ जोड़ि रहला तखन ॥

॥ चौपाइ ॥

चिन्हल मुद्रिका माथा धयल । कत विलाप कनइत तत कयल ॥
कियक कयल रघुवर-कर त्याग । हमरे सन की भेल अभाग ॥
रमा भवन वन हम अहँ बाट[5] । सभ जनि स्नान कयल एक घाट ॥
के कर वनिता-जन विश्वास । कहु कहु मुद्रा वचन प्रकाश ॥
प्राण-दान कपि कयलहुँ आय । मरितहुँ एहिखन सङ्कट पाय ॥
प्रभुकाँ अहँक सदृश नहि आन । हमरहु भेल विदित अनुमान ॥
हमरा निकट पठाओल नाथ । देल मुद्रिका अहँइक हाथ ॥
गञ्जन[6] दुःख देखल प्रत्यक्ष । कहबनि[7] सानुज प्रभुक समक्ष ॥
दया करथु आबथु रघुनाथ । यम-घर पहुँच शीघ्र दशमाथ ॥

1 परल (३), 2 नानि (१), 3 दशशिश (३), 4 राषि (१), 5 बाढ़ (१), 6 गञ्चन (१),
7 कहबैनि (१) ।

दूइ मास जखना बिति जयत । नहि जौँ अयोता राक्षस खयत ॥
कपिपति सहित सैन्य समुदाय । लय आबथु सङ्कट छुटि जाय ॥
यावत नहि रावण-संहार । तावत हमरा कारागार ॥
तेहन उपाय करब हनुमान । सत्वर रावण त्यागय प्राण ॥
मारुत-सुत कह शुनु जगदम्ब । हमरा जयबा धरिक विलम्ब ॥
ककरा रावण कयल न आट[1] । हुनका यमघर गेलहिँ बाट ॥
सायुध अयोता लक्ष्मण राम । अहँ काँ लय जयता निज धाम ॥
पुछल जानकी कहु कहु कीश । कुशल करथु अहँ काँ जगदीश ॥

॥ चरणकुल दोहा ॥

लाँघि समुद्र सहित कपिसेना, सानुज करुणागेह ।
अयोता कोन उपाय कहू कपि, हमरा मन सन्देह ॥

॥ चौपाइ ॥

हमरा काँध चढ़ल दुहु बन्धु । अयोता लाँघि अगम्य कि सिन्धु ॥
सैन्य सहित कपि बालिक भाय । सभकेँ[2] लओता गगन उड़ाय ॥
से कर रावण सगण विनाश । हुनका नहि रण कालक त्रास ॥
आज्ञा देल जाय हम जाउ । रावणारि केँ सत्वर लाउ ॥
देल मुद्रिका परिचय काज । प्रत्यय-पात्र हमहुँ तैँ आज ॥
परिचायक किछु भेटय तेहन । कहब[3] शुनल देखल अछि जेहन ॥
चूड़ामणि देल सहित विचार । दीना दीनदयालुक दार ॥
कागत मसि[4] नहि अछि यहि ठाम । कोटि कोटि कहि देब प्रणाम ॥
जिबइत छथि जानकि तहि देश । दशमुख विशभुज बस असुरेश ॥
चित्रकूट गिरि जखन निवास । गुप्त-कथा कहि देब प्रकाश ॥
शयित[5] छला प्रभु हमरा अङ्क । सुख[6] सुषुप्ति[7] प्रिय काँ निश्शङ्क[8] ॥
इन्द्रक बालक कालक फेर[9] । काक बनल आयल ओहि बेर[9] ॥
चरणाङ्गुष्ठ मे चञ्चु प्रहार । अबितहिँ कयलक रहित-विचार ॥
के दुख देलक अहँकाँ दुष्ट । जगला लगला पूछय रुष्ट ॥

1 आँट (३), 2 सभका (१), 3 कहल (३), 4 मोसि (३), 5 स (१), 6 मुख (३), 7 पाठ तीनूमे अछि 'सुयुप्ति' परन्तु अर्थसँ ई 'सुषुप्ति' बूझि पड़ैछ। 8 निशङ्क (१), 9 फेर-बेर (१)।

अपनहुँ देखल तखनहुँ काक । उड़ि उड़ि आबय निर्भय ताक ।।
चहलक पुन हम मारब लोल । उठल निवारण कारण घोल ।।
तृणकाँ लय दिव्यास्त्र बनाय । तनिकाँ ऊपर[1] देल चलाय ।।
देखलनि ज्वलित अबै अछि बाण । कि कहब उड़ला लै के प्राण ।।
इन्द्रादिक नहि रक्षा कयल । फिरि घुरि पुन प्रभु-शरणे धयल ।।
त्राहि त्राहि राखू[2] एहि बेरि । करब उपद्रव हम नहि फेरि ।।
चरण न छोड़[3] गेल लपटाय । अस्त्र अमोघ वृथा नहि जाय ।।
इन्द्रक बालक कौआ जाह । एक आँखि कय देबहु कनाह ।।
काक-स्वरूप ज्ञात संसार । आकृति जेहन तेहन व्यवहार ।।
से पौरुष[4] से प्रभु[5] रघुनाथ । अजगुत जिबितहिँ अछि दशमाथ ।।
ई शुनि कहल तखन हनुमान । अयोता शीघ्र राम भगवान ।।
लङ्का नगरी सकल उजारि । जयता घर घुरि रावण मारि ।।

।। दोहा ।।

कहल जानकी अहिँक सन, कपिदल शूक्ष्म-शरीर ।
युद्ध असम्भव असुर सौँ, नहि होइछ मन थीर ।।

।। कुण्डलिया ।।

शुनइत सीता-वचन कपि, पूर्व्व-रूप बनि गेल ।
कनक शैल-शंकाश[6]-तन, मन अति हर्षित भेल ।।
मन अति हर्षित भेल, कहल सभ गुण अहँ आगर ।
मेरु सदृश अहँ मथित, करब रावण-बल-सागर ।।
देखति राक्षसि लोक, एखन धरि नहि अछि जनइत ।
कुशल प्रभुक तट जाउ, कहब जे छल छी शुनइत ।।

।। कवित्त रूपक घनाक्षरी ।।

बड़ हम भूषल[7] चलल नहि जाइ अछि,
आज्ञा देल जाय जाय फल किछु खाय लेब ।

1 उपर (१) 2 राखहु (३), 3 छोर (३), 4 पौरुख (३), 5 ओ (३) 6 पाठ तीनूमे अछि 'संकास' परन्तु सदृश-पर्याय ई शब्द तालव्यान्त थीक । 7 भूखल (३) ।

'चन्द्र' भन रामचन्द्र-चरण-भरोस[1] मन,
अपनैँक पदधूरि माथ मे लगाय लेब ॥
चलल प्रबल पवमान हनुमान वीर,
मनमे कहल फल खाय केँ अघाय लेब ।
प्रभुक विमुख दश-मुखक सन्मुख जाय,
शूरता देखाय नाम[2] अपन बजाय[3] लेब ॥
तड़पि तड़पि तत तरु तड़ तड़ तोड़ि,
रोक के अशोक-वर-वाटिक उजाड़ि देल ।
रहल न चैत्य तरु महल ढहल कत,
सीताक निवास शिंशपाक तरु छाड़ि देल ॥
पकड़ पकड़ कपि जाय न पड़ाय कहूँ,
कहल तनिकाँ मारि पृथिवी मे पाड़ि देल ॥
लङ्कापुर जाय जहाँ सङ्गी न सहाय,
तहाँ मारुत-नन्दन रौद्र वीरता उघाड़ि देल ॥

॥ चौपाइ ॥

विकटा-गण मन गेलि डराय । कल कौशल सीता लग जाय ॥
कहु कहु जानकि कपि निर्भीक । बुझला[4] जाइछ थिकथि अहीँक ॥
बजइत छलहुँ कलपि किछु शञ्च । चुप चुप कयल कि अहाँ प्रपञ्च॥
हमरा त्रास अहाँ निस्त्रास । मन मे जनु दृढ़ भय गेल आश ॥
कनइत छलहुँ भेलहुँ अछि चूप । देखि पड़ आनन[5] हर्षक रूप ॥
जानकि कहू करो जनु लाथ । कहिया अओता पति रघुनाथ ॥
सभ जनि शुनु विपतलि की बाज । थिक प्रपञ्च किछु राक्षस-राज ॥
अपनहिँ सभहिँ कहू की थीक । राक्षस माया-ज्ञान अधीक ॥
राक्षसि-दशा कहल की जाय । गमहि गमहि सभ गेलि पड़ाय ॥

॥ दोहा ॥

सीता कारागार मे, यामिक दनुजी जानि ।
दशमुख पुछलनि कह कुशल, भयभीता अनुमानि ॥

---

1 भरोश (३), 2 पाठ अछि तीनूमे 'मान' किन्तु सन्दर्भसँ ई "नाम" बूझि पड़ैछ । कवीश्वरक लेख -पोथीमे सैह अछि । 3 बचाय (३) बजा (१), 4 बुझना (३), 5 आनक (२) ।

॥ दोवय छन्द ॥

त्राद देखाय करू वश सीता, कहल भेल की अयलहुँ।
सीताकाँ एकसरि की त्यागल, एको जनि उचित न कयलहुँ ॥
दशमुख-वचन शुनल से कहलनि, सेवा कयल अघयलहुँ।
मर्क्कट एहन विकट नहि देखल, लय लय प्राण पड़यलहुँ ॥
रक्षक मध्य एको जन नहि छथि, तनिके वार्त्ता लयलहुँ ॥
सकल अशोक वाटिका उजड़ल, सीता निकट नुकयलहुँ ॥
राजकीय पन्थैं के सञ्चर, उबटे पथ धय अयलहुँ।
सीता त्रास देखाबय गेलहुँ, अपनहिँ त्रासित भेलहुँ ॥

॥ पादाकुल दोहा ॥

सीता मन आनन्दित देखल, पुछलैँ कयलनि लाथ।
हुनकर रङ्ग तेहन सन देखल, लङ्का-जय जनु हाथ ॥
निर्भय कपि की सहजहिँ जायत, भिड़ता[1] से मरताह।
कालरूप कपि सङ्गर भेलैँ, नहि घर केओ घुरताह ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जानकी निकट हम जायब कि घूरि[2] पुन,
कनक-भूधर सन वानर विशाल से।
काँच ओ[3] पाकल फल एको न बचल हाय,
खाय सभ गेल कत गोट मुह गाल से ॥
आयल कहाँ सौँ कहाँ छल हम देखल न
बाल दिनकर सन बड़ मुह लाल से।
देखू दशभाल की अशोक-वन हाल भेल,
मरि गेल रक्षक बेहद्द कपि काल से ॥

---

1 भिरता (१), 2 घुरि (१), 3 वो (३)।

॥ दोबय छन्दः ॥

शुनितहिँ शीघ्र पठाओल[1] सेना, बहुत निकट भट गेला।
लोहदण्ड-धर जहँ उदण्ड कपि, तनिकर सन्मुख भेला॥
सिंहनाद कय सभकाँ मारल, नहि रण मे कपि हारल।
अर्द्ध-मरण सम भेल कतो जन, रावण निकट पुकारल॥
महाकाल वानर-तन धयलनि, लङ्का-नाशक कारण।
क्षणमे विपिन अशोक उजाड़ल[2], फल-चय कयलनि पारण॥
साहस लङ्का निर्भय आयल, के करताह निवारण।
लङ्कापति अपनहुँ चलि देखू[3], की थिक करु निर्धारण॥

॥ रूपमाला ॥

गेल छल सङ्ग्राम किङ्कर, निहत शुनि दशभाल।
कोप सौँ सत्वर पठाओल, पाँच सेना-पाल॥
स्तम्भ लौहक हाथ लयकैँ, तनिक तेहन हाल।
कयल मारुत-तनय विजयी, समरमे तत्काल॥
तखन मन्त्रिक सात बालक, युद्ध-उद्यत भेल।
क्रोध सौँ रावण पठाओल, गेल ईर्ष्या लेल॥
सकल जनकेँ मारि मारुत-तनय पुन तहि ठाम।
स्तम्भ लौहक अस्त्र एकटा, जितल भल संग्राम॥

॥ चौपाइ ॥

अगुआ[4] चलला अक्षयकुमार[5]। कयल बहुत सेना सहिआर॥
ततय बाट तकितहिँ हनुमान। के पुह अओता जयतनि प्राण॥
अबइत देखल अक्षयकुमार। मनमन मानल हर्ष अपार॥
मुदगर कर लय उड़ल अकाश[6]। सत्वर हिनकर करब विनाश॥
मुदगर[7] लय कर लगले घूरि। रावण-सुतक माथ देल चूरि॥
रणमे माँचल हाहाकार। मुइला मुइला अक्षयकुमार॥
कन्नारोहट उठ बड़ घोल। लड़त कहाँ के भभरल गोल॥

1 पठायोल (१), एवं अन्यत्रहु। 2 उजारल (३), 3 देखु (३)। 4 अगुया (१), 5 अक्षकुमार (३), ३ एवं अण्यत्रहु (३), 6 अकास (१), 7 मुगदर (३)।

सेना लड़ि लेलक भरिपोष । के सह मारुत-नन्दन रोष ॥
वार्ता विदित भेल दरबार । नहि छथि जिबइत अक्षयकुमार ॥
शुनि रावणमन पैशल[1] शोक । बाहर हल भल बुझय न लोक ॥
छल छथि अतिबल प्रबल प्रताप । रावण सन जनिकाँ छथि बाप ॥
मेघनाद सन जनिकाँ भाय । वानर-हाथ मरण अन्याय ॥
लङ्कापति-मन कोप अपार । मेघनाद सौँ कयल विचार ॥
कय बेरि बजला भेल अन्धेरि । हम अपनहिँ जायब एहि बेरि ॥
अक्षयकुमारक अरि जहिठाम । ततय जाय जीतब सङ्ग्राम ॥
मारब अथवा बाँधब जाय । अहँइक लग हम देब पहुँचाय ॥
मेघनाद कहलनि शुनु तात । वानर कयलक अछि उतपात ॥
शोक-वचन जनु बाजल जाय । हम जिबइतछी अक्षयक भाय ॥
आनब अपनैक निकट बझाय । हमर पराक्रम देखल जाय ॥

॥ चरणाकुल दोहा ॥

ई कहि रथ चढ़ि राक्षस भट लय, मेघनाद चललाह ।
मारुत-नन्दन शत्रु-निकन्दन, कपिवर जतय छलाह ॥

॥ चौपाइ ॥

की रावण रावण-सन आन । अबइत होइछ मन अनुमान ॥
गरजल गरुड़ जकाँ नभ जाय । स्तम्भ महागोट हाथ उठाय ॥
घुमइत गगन छला[2] हनुमान । रावण-पुत्र चलौलक बाण ॥
आठ हृदयमे माथा पाँच । युगल चरण मे छयो[3] नाराच ॥
पुच्छ[4] मध्य मारल एक बाण । मारि कयल धुनि सिंह-समान ॥
कोप-विवश मारुत-सुत घूरि । रथ घोड़ा सारथि देल चूरि ॥
दोसर रथ चढ़ि आयल फेरि । कहल तोहर दुर्गति यहि बेरि ॥
नहि जीतव मन बूझल जखन । ब्रह्मास्त्रैँ कपि बाँधल[5] तखन ॥
ब्रह्मास्त्रक कपि राखल मान । अपनहि बझला मन किछु आन ॥

1 पैसल (२), 2 ३मे 'ह' बेसी' 4 छौ (३), पुछ (१) । 5 बान्हल (३),

बाँधल बाँधल भय गेल सोर । यहन विश्व नहि घाती चोर ॥
बाँधल अछि लय चलु दरबार । करब तेहन जे दशक विचार ॥
जीवन्मुक्त[1] थिकथि हनुमान । कि करत तनिका बन्धन आन ॥
राम-चरण-पङ्कज मन धयल । मारुत-सुत बड़ लीला कयल ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे सुन्दरकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ।

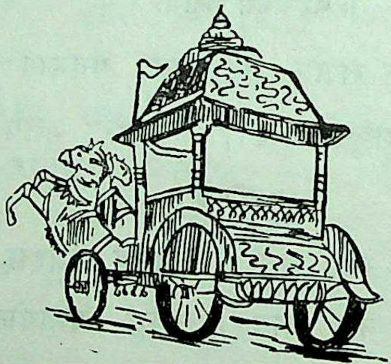

1 जीवनसक्त (५) ।

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

बाँधल काँ पुरजन मिलि मार । कौतुक पहुँचल दशमुख-द्वार ॥
त्रास-हीन हर्षित हनुमान । केवल कौशलेश[1]-पद ध्यान ॥
मारि गारि सबहिक[2] सहि लेथि । पामर काँ नहि उत्तर देथि ॥
मेघनाद कहलनि शुनु तात । कयलक ई वानर उतपात ॥
ब्रह्मास्त्रैँ हम जीतल जखन । वानर वशमे आयल तखन ॥
कहल जाय की समुचित मन्त्र । वानर काँ नहि करब स्वतन्त्र ॥
लौकिक वानर सन नहि कर्म्म । अपनहिँ जानब हिनकर मर्म्म ॥
ताकि प्रहस्त सचिव सौँ कहल । विषय विचार करक जे रहल ॥
पुछु वानर केँ मन्त्रि प्रहस्त । बौआयल[3] कपि कालक ग्रस्त ॥
की आयल अछि की अछि काज । वानर सौँ बजइत हो लाज ॥
कथि लय[4] कयलक उपवन नाश । राक्षस वध करइत नहि त्रास ॥
कहलनि मन्त्रि प्रहस्त प्रकाश । कपि मनमे नहि मानब त्रास[5] ॥
प्रेषित ककर कहब से साँच । प्राण अहाँक अवश्ये बाँच !
कहलनि हरि बड़ गोट मोर भाग । दूरक ढोल सोहाओन लाग ॥

॥ दोवय छन्दः ॥

भूषल छलहुँ सङ्ग नहि खर्चा, तोड़ि तोड़ि फल खयलहुँ ॥
रक्षक लण्ठ प्राण लेबा पर, बहुत नेहोरा कयलहुँ ॥
कान कपार एक नहि बूझल, पातैँ पात नुकयलहुँ ॥
अपन स्वरूप धयल हम सभकाँ, कालक धाम पठयलहुँ ॥
पहिलय मारि बहुत हम सहलहुँ, पाछाँ अनुचित कयलहुँ ॥
दश-मस्तक लङ्कापति राजा, की अपने खिसिअयलहुँ ॥

---

1 कौसलेश (१), 2 सभ (१), 3 ओआयल (३), 4 लै (३), 5 त्राश (३)।

एक गोट वानर पर एते, सेना व्यर्थं पठयलहुँ ।
धर्म्म-शास्त्र-वेत्ता अपनैँ सन, न्याय करू अगुतयलहुँ ॥

॥ रावणोक्ति ॥

॥ वसन्त-तिलका छन्दः ॥

के तोँ थिकाँहि[1] कत[2] सौँ यत आबि गेलैँ
की नाम तोहर निशाचर-भक्ष्य भेलैँ ।
आज्ञा-विहीन फल तोड़ि बहुत खैलैँ
निर्हेतु रक्षक तहाँ किय मारि देलैँ ॥

॥ हनुमानक उक्ति ॥

रे दुष्ट लागल क्षुधा फल तोड़ि खेलौ
कैलैँ उपद्रव ततै तरु तोड़ि देलौ ।
हेतौ बहूत नहि सम्प्रति विघ्न भेलौ
अस्त्र-प्रहार कयलैँ हम प्राण लेलौ ॥

॥ मालिनी-छन्दः ॥

रघुपतिक पठौलैँ लाँघि केँ सिन्धु ऐलौ[3]
तनिक कुशल-वार्त्ता जानकी कैँ शुनैलौ ।
क्षुधित बहुत भेलैँ[4] तैँ फलाहार कैलौ
मरुत[5]-सुत हनूमन्नाम की बाँधि लैलौ ॥

किछु दिन रहि लङ्का सिन्धु केँ फानि जैबे ।
जानक-नृपति-पुत्री दुःख-वार्त्ता शुनैबे ॥
प्रबल सकल सेना सङ्ग लै फेरि ऐबे ।
तखन बुझब जे छी से अहाकाँ बुझैबै ॥

॥ भुजङ्गप्रयात छन्दः ॥

चिन्हारे अहाँ छी विरञ्चि-प्रपौत्रे,
कुकर्म्मी अहाँ छी करैछी की श्रौत्रे[6] ।

---

1 थिकैँ (३), 2 कतय (३), 3 ३ मे चारू चरणक अन्त सानुस्वार अछि । 4 भेलौँ (३),
5 तीनूमे पाठ अछि "मारुत" जे छन्द अनुरोधे अयुक्त । 6 सौत्रे (३),

गिरीशार्च्चना छोड़ि ई की करै छी,
परस्त्री अहाँ छद्म सौँ की हरैछी ।।

॥ चौपाइ ॥

लङ्कापति हमछी निर्भीत । फेरि गबैछी गओले गीत ।।
ब्रह्म विष्णु रामक अवतार । के गुण कहत हुनक विस्तार ।।
वेद न पाबथि कहयित पार । जनिकर सिरजल थिक संसार ।।
तनिकर माया सीता-रूप । हरि आनल वनसौँ चुप चूप ।।
गञ्जन बन्धन कर्म्मक भोग । अयलहुँ नदिया-नाव-संयोग ।।
तनिकर दूत चोर[1] हम धयल । करब उपाय एखन की कयल ।।
अनुभव बाली-बल विस्तार । तनिक राम कयलनि संहार ।।
दीनक[2] झेर देखल दरबार । अयलहुँ दबि छपि सागर पार ।।
राम-सख्य सुग्रीवक सङ्ग । किछु दिन बितलय देखब रङ्ग ।।
कपिपति सचिव थिकहुँ हनुमान । अञ्जनि[3] जननि जनक पवमान ।।
वानर चर फिरइछ सभ ठाम । हम लङ्का अयलहुँ शुनि नाम ।।
नीति धर्म्म हम देल शुनाय । सत्य कहय से[4] मारल जाय ।।
हृदय अहाँक अधिक अछि मैल । झिटुकी सौँ फुटि जाइछ घैल ।।
प्रभुक कुशल सीता सँ भाषि । लोभ[5] भेल एक फल केँ चाषि ।।
लोभहिँ पतन कहय संसार । हमरा अपनहि पड़ल कपार ।।
बड़ गोट वंश ओ विस्तर राज । अयशक नहि किछु मनमे लाज ।।
करब न अहँसौँ किछु हम लाथ । अहँक नीक रघुनन्दन-हाथ ।।
पण्डित वेश कुपथ की धयल । हाथी सौँ हथि-बेसन कयल ।।
हमरा मारल बाँधल बेश । बुद्धि-वृद्धि हो लगलेँ ठेस ।।
हसि बजला तखना दशकण्ठ । ई वानर अछि बड़का लण्ठ ।।
मृतसम बाँधल मन अभिमान । हमरहु निकट छटै अछि ज्ञान ।।
मानुष राम गहन मे वास । हमरा तकर देखाबै त्रास ।।
तनिका मारब दनुज पठाय । वानर बिलटत रहित-सहाय ।।
सीता-कारण अछि उतपात । करब तनिक हम प्राणक घात ।।

1 चार (३), 2 दान (३), 3 अञ्जनि (१), 4 सँ (३), 5 लाभ (३)।

सनकल अछि कपि बड़ वाचाल । हिनका माथ नचै अछि काल ।।
मारुत-नन्दन उत्तर कहल । रावण-कुवचन एक न सहल ।।

॥ द्वितीय त्रिभंगी छन्दः ॥

दशमुख-वचन शुनल कपि कहलनि,
चुप रह रे अभिमानी, करतौ हानी, कटु[1] बानी ।
प्रभुकर-शरक निकर विषधर सन,
लगलैँ के बच प्रानी, शठ अज्ञानी, वक-ध्यानी ।।
अपनहिँ मन नृप बनल सनल छह,
कहतौ[2] के गुरु तोरा, शुनु स्त्री-चोरा, कुल-बोरा ।
हित अनहित अनहित[3] हित कयलह,
प्रभुक न कयल निहोरा, मति-घोरा, शुभ थोरा ।।

॥ घनाक्षरी ॥

सत्य हनुमान तौँ प्रमाण ई वचन जान,
मर्क्कट विकट भालु-भट वश परबैँ ।
प्रभु-दल प्रबल जखन उतरत इत,
दशमुख तखन उपाय कोन करबैँ ।।
मुष्टिका-आघात लात-घात-सन्निपात वश,
शोचवश रण मे[4] त्राहि त्राहिकैँ कहरबैँ ।
'चन्द्र' भन रामचन्द्र सर्व्वनाश-हाथ-तीर[5],
लगतहु जखन तखन मूढ़ मरबैँ ।।

॥ चौपाइ ॥

मारुत-वचन शुनल लङ्केश । कोप-विवश जन देल निदेश ।।
हम कटु वचन शुनै छी कान । वानर बजइछ आनक आन ।।
हिनका मारय लय कय खण्ड । हिनकर सभ छूटय पाखण्ड ।।
कपिकाँ मारय दौड़ल जखन । अयला सभा विभीषण तखन ।।
कहलनि नीतिशास्त्र-अनुसार । चारक वध नहि अछि व्यवहार ।।

---

1 बटुवानी ३), 2 कहता (३), 3 ३मे दोसर ''अनहित नहि । 4 १ मे 'शोचब शरण आहि' अछि जाहिमे 'आहि' छन्दक अनुरोधसँ बेसी बुझि पड़ैछ । पदच्छेदसभमे गड़बड़ अछि । 5 तोर (3) ।

दूत बेचारा मारल जयत । रामचन्द्र सौँ युद्ध न हयत ।।
अङ्कित हयता कहता जाय । राखक नहि थिक दूत बझाय ।।
नीति विभीषण कहलहुँ नीक । मानल वचन सदर्थं अहीँक ।।
शण मन बहुत[1] वस्त्र घृत तेल । ढेर भेल नृप आज्ञा देल[2] ।।
कपि वालधि मे सभ लपटाब[3] । कौतुक करइत नृपति हसाब[3] ।।
किछु तहि ऊपर आगि लगाब[3] । के बुझ भावी काल स्वभाव[3] ।।
मारथि गारि देथि कय बेरि । योगी सौँ कयलनि धुरखेरि ।।
नाना तरहक बाजन बाज । प्रबल चोर काँ पकड़ल आज ।।
पश्चिम द्वार पवन-सुत जाय । बन्धन लेलनि सहज छोड़ाय ।।
सूक्ष्मरूप सौँ गेल बहराय । सभ राक्षस-मन देल शुखाय[4] ।।
सभ जन हृदय कदलि सन काँप । जनु कपि भेल चोटाओल साप ।।
कपिकाँ मन मे अछि बड़ रोष । करत उपद्रव पुन भरि पोष ।।
रावण-सभा उठल घमलौड़ि । ऐठन जरल न जरि गेल जौड़ि ।।
के थिक केहन न कयल विचार । मूर्खक लाठी माँझ कपार ।।
के कह कपि कपि-रूपी काल । नहि बुझ लङ्कापति दशभाल ।।

॥ घनाक्षरी ॥

अग्निमान त्रिकूट-अचल अनुमान भेल,
धूम-धार नभ घन प्रलय समान रे ।
आगि आगि पानि[5] भेल धह[6] धह छानि भेल,
कपि-मन आनि भेल सङ्ग पवमान रे ।।
वानर न जानि भेल हसयित हानि भेल,
हास्य राजधानि भेल रावण मलान रे ।
आनही सौँ आन भेल सर्व्व सावधान भेल,
रावण-प्रताप हर हरि हनुमान रे ।।

॥ चौपाइ ॥

बहल बहल तत प्रलय बिहाड़ि । जनु पर्व्वत काँ देत उखाड़ि ।।
कपिक पूछ मे धधकल आगि । विकल पड़ायल सभ घर त्यागि।।

---

1. देहु (३), 2 भेल (३), 3 ३ मे चारू ठाम 'य' अन्तमे अछि । 4 सुखाय (३), 5 पानी (३), 6 धल (३) ।

गोपुर ऊपर कपि चढ़ि फानि । सभ मन छूटल मारिक बानि ॥
गरजि गरजि कपि ठोकल ताल । राड़क असँघै जिवक[1] जञ्जाल ॥

॥ रूपक घनाक्षरी ॥

गगन अनिल ओ अनल जल महि विश्व,
सिरिजल जनिक तनिक दूत जरबहु ॥
कोटि कोटि रावण समान गण लड़बह,
मृग-गण-मारक मृगेन्द्र जकाँ पड़बहु ॥
देखल प्रचण्ड रण हमर उदण्ड बल,
भेल आब कोप अभिमान लोप करबहु ॥
कलहुक काल विकराल सौँ नै भीति अछि,
तोहरा लोकनि बुतै हम कतै मरबहु ॥

॥ चौपाइ ॥

जरय न कपि जरइत अछि गाम । कह जन भेल विधाता वाम ॥
लोह-स्तम्भ कपिक अछि हाथ । जे लग भिड़थिन फोड़थिन माँथ॥
सगर नगर अनल क सञ्चार । विना विभीषण घर ओ द्वार ॥
धर धर कहथि निकट नहि जाथि । हाथी कुक्कुर रीति डराथि ॥
पीटथि छाती वनिता कानि । कपि-उतपात भेल सभ हानि ॥
जरल कनक-मणिमय वर गेह । सम्पति रह की पाप-सिनेह ॥
दूत-पराक्रम कहल न जाय । भाग्यवान काँ भूत कमाय ॥
कपि कह लङ्का करब विनाश । घैल काँच कें मुगरक आश[2] ॥
धिक रावण आनन न मलान । चोरक मुह जनु चमकय चान ॥
दशकन्धर की रहबह चैन । भल-घर-मध देलह अछि बैन ॥
हनुमानक लग कें[3] ओ न[4] जाय । मारिक डर सौँ भूत पड़ाय ॥

॥ घनाक्षरी ॥

अनुचित भेल न विचार दृढ़ कय लेल,
छोड़ि देल वानर विकट अधबध कै ।

---

1 ३मे 'क' नहि । 2 आस (१), 3 क्यो (२), 4 नहि ।

दिन भेल वक्र आब ककरो न शक अछि,
एक छानि आगि तौँ हजार घर धधकै ।
प्रलय-कृशानु सन तखनुक भानु सन,
वीर हनुमान सनमुख जित-युधकै ।
ताल घहराय के वारण करै जाय,
जत कयल अन्याय[1] फल रावण अबुध कै ॥

॥ शिखरिणी छन्दः ॥

अरे बाबा दावानल-सदृश लङ्का जरइयै[2] ॥
अधर्म्मी लङ्केशे तनिक सभ पापे करइयै ॥
पड़ा रे रे बाबू किछु न मन काबू परइयै ॥
विना पानी लङ्का-नृपति-पट-रानी मरइयै ॥

॥ नाराच ॥

पड़ा पड़ा बड़ा बड़ा गृहाट्ट[3] जारि देलकौ ।
विदेह-कन्यका-विपत्ति जानि कानि लेलकौ ॥
बहूत छोट वानरे सभैक हाल कैलकौ ।
प्रचण्ड दण्ड-देनिहार दूत चोर धैलकौ ॥

॥ समानिका ॥

मेघनाद की कहू, बुद्धि-हीन छी अहूँ ।
बाप पाप कैल की, मृत्यु-मार्ग धैल की ।

॥ दोबय छन्द ॥

हरि-पद-विमुख कतहु सुख पाबथि, धिक धिक दशमुख-ज्ञाने ।
दुर्गति कय कपि लङ्को जारय, धयलहिँ छथि अभिमाने ॥
एहि सौँ आब कि गञ्जन देखता, मरणाधिक अपमाने ॥
के कपि पकड़ लड़य के कालसौँ, नहिँ कपि-वीर समाने ॥

1 आन्यान्य (३), 2 जैरए (३) जाहिमे छण्दोभङ्ग होइछ । 3 गृहठां (३) ।

॥ चौपाइ ॥

लङ्का-नगर सगर कपि डाहि । स्वामि-कार्य्यं शूरत्वि निवाहि ॥
कुदि खसला सागर मे जाय । पुच्छल[1] बाँधल आगि मिझाय ॥
स्वस्थ-चित्त भेला हनुमान । यहन[2] पराक्रम कर के आन ॥
सीता-आशिष-बल नहि जरल । लङ्कापतिक गर्व्वं सभ हरल ॥
अग्नि वायु दुनु थिकथि इयार । जरल न सखि-सम्बन्ध विचार ॥
जनिक नाम जपि छुट तिन पाप । भवकृत-दोष-लेश नहि व्याप ॥
तनि रघुवरक दूतवर जानि । प्राकृत अनल कयल नहि हानि ॥
हनुमानक डर केओ[3] नहि बाज । जनु कपि पायोल[4] रामक राज ॥
जनकनन्दिनी छलि जहि[5] ठाम । घुरि पुन तनिकर कयल प्रणाम ॥
सानुज प्रभुवर अयता तखन । जननि ततय पहुँचब हम जखन ॥
तीनि प्रदक्षिण ई कहि देल । आँगाँ ठाढ़ जोड़ि कर भेल ॥
जे किछु बनल कयल हम काज । दशकन्धर निर्ल्लज्ज कि बाज ॥
कहल जानकी शुनु कपि धीर । सकल-नियन्ता श्रीरघुवीर ॥
तनिकर इच्छा होयत जेहन । कार्य्य-सिद्धि होयत शुभ तेहन ॥

॥ पादाकुल दोहा ॥

[श्री सीताक प्रति हनुमानक वचन तिरहुति]

ओरे से दिन बीतल । नयनक नोर तोर वसन तितल ॥
आबि एक गोट कपि रावण जितल । करमक लिखल कतहु नहि चल[6] ॥
करु करु जानकी जी हृदय शीतल । लङ्कापुर जरइछ प्रलय अनल ॥
सुखपाख सभ जन रावण हीतल[7] ।"चन्द्र"भन ठाढ़ जनु प्रतिमा लिखल॥

॥ षट्पद छन्दः ॥

हम किङ्कर हनुमान, देवि चिन्ता चित परिहरु ।
हमरा काँधा चढ़लि, घोर सागर काँ सन्तरु ॥
क्षण मे श्री रघुनाथ निकट कौशल पहुँचायब ।
आज्ञा प्रभुसौं पाबि, फेरि लङ्का घुरि आयब ॥

1 पुछल (१), पूछल (३), 2 एहन (३) एवं अन्यत्रहु । 3 क्या (३) एवं अन्यत्रहु 4 पाओल (३), एवं अन्यत्रहु, 5 जेहि (३) एवं अन्यत्रहु । 6 ३मे 'विचल', 7 महीतल (३) ।

प्रलय करब लङ्‌कापुरी, हमरा के रोकत सुभट।
जौँ ई रुचि हो स्वामिनी, देल जाय आज्ञा प्रगट ॥
शरसौँ शोषि समुद्र सेतु, शर-निकरक करता ॥
सानुज से प्रभु आबि, रावणक प्राणे हरता ॥
सुग्रीवक सभ सैन्य, आबि लङ्‌का कैँ लूटै।
सुयश लोक मे होयत, अचल लङ्‌कागढ़ टूटै ॥
हम मारुत-सुत प्राण काँ, कोनहुँ यत्न राखब एतय।
कुशलक्षेम सौँ जाउ अहँ, श्री रघुनन्दन छथि जतय ॥

॥ दोबय ॥

कयल प्रणाम अनेक वार कपि, पर्व्वत पर चढ़ि गेला।
योजन तीश प्रमाण उच्च गिरि, समभूमिक सम भेला ॥
पर्व्वत वायु वेग सौँ महितल, दबि गेला तत्काले।
सागर तरथि घोर धुनि करइत, धर्म्मक सोर पताले॥

॥ चौपाइ ॥

अङ्गदादि कयलनि अनुमान। अबइत छथि हर्षित हनुमान ॥
शब्द एहन करता के आन। श्रवण-सुखद वर अमृत समान ॥
एतहु सकल कपि बालि-किशोर। हर्षक शब्द कयल नहि थोर ॥
गिरि पर पहुँचि गेला हनुमान। मृतक देह जनु पलटल प्राण ॥
कार्य्यसिद्धि होइछ अनुमान। हर्षक सुख मुख-शोभा आन ॥
शस्त्रक क्षत कत देखिय अङ्ग। भेल समर जनि लगइछ रङ्ग ॥
महावीर कह शुनु प्रिय सर्व्व। प्रभु-प्रताप किछु हमर न गर्व्व ॥
देखि जनकजा विपिन उजारि। रक्षक जनकेँ रण मे मारि ॥
कि करब ततय पड़ल बड़ मारि। राम-प्रताप कतहु नहि हारि ॥
दशकन्धर सौँ वाद विवाद। बचलहुँ श्री रघुनाथ-प्रसाद ॥
अयलहुँ बहुत सुभट केँ मारि। रावण-पालित लङ्‌का जारि ॥
राम-कपीशक तट हम जयब। एखनहि ततहि स्वस्थ हम हयब ॥

वानर-वृन्द मिलल भरि अङ्क । जेहन परशमणि पाबथि रङ्क ।।
पूछ चूमि गुणगण सभ बाँच[1] । हरषि हरषि हरिगण भल नाँच ।।

।। सारवती छन्दः ।।

राम कहू पुन राम कहू, मारुत[2]-नन्दन धन्य अहूँ ।
आब चलू छथि नाथ जहाँ, की सुख लाभ अनन्त तहाँ ।।

।। सोरठा ।।

चलल वीर-समुदाय, महावीर अगुआय चल ।
प्रस्रवणाचल जाय, कपिपति-मधुवन प्राप्त सभ ।।

।। दोवय छन्द ।।

वानर सकल कहल अङ्गद काँ, अहँ छी भूपक बालक ।
आज्ञा देल जाय मधुवन-फल, खायब अपनैँ पालक ।।
जनितहि छी सभ जन छी भुखले, फलमधु यहन न पायब ।
खाय पीबि सन्तुष्ट चित्तसौँ, प्रभुक निकट मे जायब ।।

।। चौपाइ ।।

अङ्गद कहल सुखित फल खाउ । किछु नहि ककरो डरैँ डराउ ।।
कपि फल खाथि करथि मधुपान । रक्षक हटल पटल नहि मान ।।
दधिमुख-अनुशासन काँ पाय । देल रक्षक सभकैँ लठिआय ।।
अतिबल वानर भूखल घूरि । सभ रक्षक काँ देलनि चूरि ।।
दधिमुख-मुख भय गेल मलान । कुपित न बजला से मतिमान ।।
सभ रक्षक कैँ संग लगाय । कपिपति काँ कहि देल देखाय ।।
तारा-तनय हठी हनुमान । जेहन आगि केँ पवन दिबान ।।
मधुवन फल भल[3] खयलय जाथि । किछु नहि अपनैक त्रास डराथि ।।
हम नहि करब विपिन रखबारि । किछु बजितौँ तौँ खइतहुँ मारि ।।
मधुवन फल राखल छल ढेर । लूटि भेल ककरहु नहि टेर ।।

1 पाठ अछि तीनूमे ''पाँच'', परंच सन्दर्भसँ तकर अर्थ नहि लगैत अछि । अतएव कवीश्वरक लेख'' पोथीक पाठ देल अछि । 2 रू (२), 3 ३ मे ''भल' का स्थानमे 'सभ' ।

युवराजक हनुमान प्रधान । विपिन विनाशक कि कहब ज्ञान ।।
हम छी कपि-भूपालक माम । नहि घुरि जायब गञ्जन ठाम ।।
सत्य कहै छी शुनु कपिनाथ । मर्य्यादा रह अपनहिँ हाथ ।।
मधुवन फल मधु कयलक नाश । भूतक घर सन्ततिक निवास ।।
शुनल वचन कहलनि जे माम । कपिपति-मन नहि कोपक ठाम ।।
हर्षक नोर भरल दुहु[1] आँखि । अयला अयला उठला भाखि ।।
सीता देखि आयल हनुमान । हमरा सन से निश्चय ज्ञान ।।
से शुनि पुछलनि अपनहि राम । मारि भेल अछि की कोन ठाम ।।
की कहयित छथि कपिपति माम । लेल कि जनकनन्दिनी[2] नाम ।।
कहलनि गेल जे दक्षिण देश । आयल सभ जन रहित कलेश ।।
कार्य्यसिद्धि कयलनि हनुमान । मधुवन फल के चाखत आन ।।
दधिमुखकाँ कहलनि अहँ जाउ । सभ जनकाँ सत्वर लय आउ ।।
बहुत शीघ्र से वन मे जाय । अङ्गदादि काँ कहल बुझाय ।।
रामचन्द्र लक्ष्मण कपिराज । बड़ सन्तुष्ट भेल छथि आज ।।
शीघ्र बजौलनि करू प्रयाण । भाग्य ककर तुल अहँक समान ।।
शुनितहिँ चलल सकल जन तुष्ट । प्रभुक समक्ष मुदित-मन पुष्ट ।।
अङ्गद आदि सहित हनुमान । प्रणत कहल हरिभक्त[3]-प्रधान ।।
मारुत-नन्दन जोड़ल हाथ । कृपा-जलधि जय जय रघुनाथ ।।
वैदेही हम देखल आँखि । कुशल प्रभुक विधिवत सभ भाखि ।।

॥ दोवय छन्दः ॥

मलिनवसन एक-वेणी अतिदुख, निराहार दुबराइलि ।
राम राम रट सकरुण धुनि कय, शुद्ध समाधि समाइलि ।।
अहह अशोकवाटिकाभ्यन्तर, वृक्ष-शिशुपा छाया ।
लङ्कापुरी राक्षसी-घोड़लि, छथि प्रभु अपनैँक माया ।।

---

1 दुइ (३), 2 तीनूमे 'जनकनन्दनी', 3 रहिभक्त (३) ।

॥ चौपाइ ॥

कि करब यत्न फुरल नहि आन । कयल तखन रघुपति-गुण-गान ॥
जैँ विधि प्रभु लेलनि अवतार । हरण हेतु पृथिविक खल-भार ॥
धनुषभङ्ग परिणय जे रीति । सकल शुनाओल मङ्गल गीति ॥
अयला प्रभु जे विधि वनवास । सकल कथा से कयल प्रकाश[1] ॥
आश्रमशून्य जानि लङ्केश । देवी हरि अनलक एहि[2] देश ॥
कथा शुनथि वैदेही कान । मन-मन करथि बहुत अनुमान ॥
मैत्री जैँ विधि कयल कपीश । अपनाओल प्रभु अपना दीश ॥
अनुज-नारि-रत बालि विचारि । तनिकाँ रघुपति सत्वर मारि ॥
से सुग्रीव विदित कपिराज । सम्प्रति प्रभु छथि तनिक समाज ॥
तनिक सचिव हम श्रीपति-दास । सीता देखक[3] बहुत प्रयास ॥
से कोन देश कोन से ठाम । दूत पठाओल जतय न राम ॥
आज फलित भेल हमर प्रयास । मानस-दुःख-राशि भेल नाश ॥
तकलनि कहलनि अमृत-समान । वचन शुनाओल के ई कान ॥
लोचन-गोचर से भय जाथु । कहथु कथा नहि एखन नुकाथु ॥
दूरहि सौँ हम कयल प्रणाम । अञ्जलि-बद्ध ठाढ़ तहिठाम ॥
सूक्ष्म-रूप वानर-आकार । हम प्रभु-चरित कहल विस्तार ॥
परिचय पुछलनि पुछलनि नाम । नर-वानर-सङ्गति कोन ठाम ॥
स्वामिनि कथा पुछल जय बेरि । हमहुँ शुनाओल[4] से सभ फेरि ॥
प्रत्ययमूल मुद्रिका देल । तखन प्रतीति तनिक मन भेल ॥

॥ घनाक्षरी छन्दः ॥

गञ्जन ताड़न राक्षसीक सहै पड़इछ, एहन विपति पड़उन[5] जनु अनका ॥
हमर विपति[6] देखितहिँ छीय[7] अपनहुँ, सपनहुँ चैन नहि दिन राति मनकाँ ॥

1 प्रकास (१), 2 यहि (१) एवं अन्यत्रहु । 3 देखल (३), 4 शुनायोल (१), 5 पड़यन जनु अनकाँ (१,२), ओ 'पड़यन जन अनकाँ' (३) परन्तु दूहू असमीचीन । प्रथममे 'न' ओ 'जनु' दू गोट निषेधार्थक ओ दोसरमे विभक्त विशेषणक संग नहि, विशेष्यक संग उचित । तेँ हम कवीश्वरक लेख-पोथीक पाठ देल अछि । 6 विपति (३), 7 छी (३) ।

जनु मन राखथु हमर अपराध किछु, निवेदन कय देब धरणी-धरण काँ ।।
सकरुण सजल-नयन देवी कहलनि, कहबनि अहाँ कपि विपति-हरण काँ ।।

।। चौपाइ ।।

सीता-वचन करुण-परिपूर । शुनि शुनि कि करब से नहि फूर ।।
हे प्रभु कहलहुँ बहुत बुझाय । तनि घन-नयन न नोर सुखाय ।।
कर औँठी कङ्कण प्रभु-हाथ । तुअ[1] वियोग भृश कृश रघुनाथ ।।
जायब अभिज्ञान काँ पाय । देल जाय श्रीजानकि माय ।।
चूड़ामणि देलनि कहि कानि । कत हम कयल विरञ्चिक हानि।।
वासवसुत वायस वनवास । खल छल पहुँचल मन निस्त्रास[2] ।।
फल भल पौलनि स्वामि-समीप । भय भ्रमि अयला सातो दीप ।।
अति सामर्थ्य[3] प्रभुक सभ काल । के थिक दुर्न्नय खल दशभाल ।।
प्रभु-पत्नी[4] पाबिय[5] दुख घोर । जलधर जितल अखण्डित नोर ।।
देवर काँ हम वचन कठोर । कहल तकर फल भेल न थोर ।।
अनुचित क्षमा करत के आन । कहब दयामय देवर-कान ।।
संकट सौँ लय जाथि छोड़ाय । प्रभुक अनुज से करथु उपाय ।।
चलि नहि रहि नहि हो तहिठाम । आज्ञा विनु कत करु सङ्ग्राम ।।
विकल स्वामिनी-दशा निहारि । चलयित कयलहुँ विपिन उजारि।।
भेल लड़ाइ तहाँ घमसान । बहुत वीर समरहिँ निःप्रान[6] ।।
दशवदनक सुत अक्षय कुमार । हमरहि सौँ तनिकर संहार ।।
मेघनाद आयल खिसिआय । रण-निर्ज्जित कयलक अन्याय ।।
ब्रह्मास्त्रक से कयल प्रयोग । बाँधल गेलहुँ कयल दुख-भोग ।।
लङ्का मे सञ्चित घृत तेल । हमरा बालधि अर्प्पित भेल ।।
सन ओ वसन लपेटल पूछ । मन जरि जायत वानर तूछ ।।
प्रभु-प्रताप नहि मानल हारि । सगर नगर घर देल हम जारि ।।

।। सोरठा ।।

कर्म्म करत के आन, सुरदुर्ल्लभ हनुमान सन ।
हित के अहँक समान, सजल-नयन रघुनाथ कह ।।

---

1 तुय (१), 2 विश्वास (३), 3 सामर्य्य, 4 पतनी (१), 5 पाबथि (३), 6 निष्प्राण (१):

॥ चौपाइ ॥

कि करब यत्न फुरल नहि आन । कयल तखन रघुपति-गुण-गान ॥
जैँ विधि प्रभु लेलनि अवतार । हरण हेतु पृथिविक खल-भार ॥
धनुषभङ्ग परिणय जे रीति । सकल शुनाओल मङ्गल गीति ॥
अयला प्रभु जे विधि वनवास । सकल कथा से कयल प्रकाश[1] ॥
आश्रमशून्य जानि लङ्केश । देवी हरि अनलक एहि[2] देश ॥
कथा शुनथि वैदेही कान । मन-मन करथि बहुत अनुमान ॥
मैत्री जैँ विधि कयल कपीश । अपनाओल प्रभु अपना दीश ॥
अनुज-नारि-रत बालि विचारि । तनिकाँ रघुपति सत्वर मारि ॥
से सुग्रीव विदित कपिराज । सम्प्रति प्रभु छथि तनिक समाज ॥
तनिक सचिव हम श्रीपति-दास । सीता देखक[3] बहुत प्रयास ॥
से कोन देश कोन से ठाम । दूत पठाओल जतय न राम ॥
आज फलित भेल हमर प्रयास । मानस-दुःख-राशि भेल नाश ॥
तकलनि कहलनि अमृत-समान । वचन शुनाओल के ई कान ॥
लोचन-गोचर से भय जाथु । कहथु कथा नहि एखन नुकाथु ॥
दूरहि सौँ हम कयल प्रणाम । अञ्जलि-बद्ध ठाढ़ तहिठाम ॥
सूक्ष्म-रूप वानर-आकार । हम प्रभु-चरित कहल विस्तार ॥
परिचय पुछलनि पुछलनि नाम । नर-वानर-सङ्गति कोन ठाम ॥
स्वामिनि कथा पुछल जय बेरि । हमहुँ शुनाओल[4] से सभ फेरि ॥
प्रत्ययमूल मुद्रिका देल । तखन प्रतीति तनिक मन भेल ॥

॥ घनाक्षरी छन्दः ॥

गञ्जन ताड़न राक्षसीक सहै पड़इछ, एहन विपति पड़उन[5] जनु अनका ॥
हमर विपति[6] देखितहिँ छीय[7] अपनहुँ, सपनहुँ चैन नहि दिन राति मनकाँ ॥

1 प्रकास (१), 2 यहि (१) एवं अन्यत्रहु । 3 देखल (३), 4 शुनायोल (१), 5 पड़यन जनु अनकाँ (१,२), ओ 'पड़यन जन अनकाँ' (३) परन्तु दूहू असमीचीन । प्रथममे 'न' ओ 'जनु' दू गोट निषेधार्थक ओ दोसरमे विभक्त विशेषणक संग नहि, विशेष्यक संग उचित । तेँ हम कवीश्वरक लेख-पोथीक पाठ देल अछि । 6 विपति (३), 7 छी (३) ।

जनु मन राखथु हमर अपराध किछु, निवेदन कय देब धरणी-धरण काँ ।।
सकरुण सजल-नयन देवी कहलनि, कहबनि अहाँ कपि विपति-हरण काँ ।।

।। चौपाइ ।।

सीता-वचन करुण-परिपूर । शुनि शुनि कि करब से नहि फूर ।।
हे प्रभु कहलहुँ बहुत बुझाय । तनि घन-नयन न नोर सुखाय ।।
कर औंठी कङ्कण प्रभु-हाथ । तुअ[1] वियोग भृश कृश रघुनाथ ।।
जायब अभिज्ञान काँ पाय । देल जाय श्रीजानकि माय ।।
चूड़ामणि देलनि कहि कानि । कत हम कयल विरञ्चिक हानि।।
वासवसुत वायस वनवास । खल छल पहुँचल मन निस्त्रास[2] ।।
फल भल पौलनि स्वामि-समीप । भय भ्रमि अयला सातो दीप ।।
अति सामर्थ्य[3] प्रभुक सभ काल । के थिक दुर्न्नय खल दशभाल ।।
प्रभु-पत्नी[4] पाबिय[5] दुख घोर । जलधर जितल अखण्डित नोर ।।
देवर काँ हम वचन कठोर । कहल तकर फल भेल न थोर ।।
अनुचित क्षमा करत के आन । कहब दयामय देवर-कान ।।
संकट सौँ लय जाथि छोड़ाय । प्रभुक अनुज से करथु उपाय ।।
चलि नहि रहि नहि हो तहिठाम । आज्ञा विनु कत करु सङ्ग्राम ।।
विकल स्वामिनी-दशा निहारि । चलयित कयलहुँ विपिन उजारि।।
भेल लड़ाइ तहाँ घमसान । बहुत वीर समरहिँ निःप्रान[6] ।।
दशवदनक सुत अक्षय कुमार । हमरहि सौँ तनिकर संहार ।।
मेघनाद आयल खिसिआय । रण-निर्ज्जित कयलक अन्याय ।।
ब्रह्मास्त्रक से कयल प्रयोग । बाँधल गेलहुँ कयल दुख-भोग ।।
लङ्का मे सञ्चित घृत तेल । हमरा बालधि अर्प्पित भेल ।।
सन ओ वसन लपेटल पूछ । मन जरि जायत वानर तूछ ।।
प्रभु-प्रताप नहि मानल हारि । सगर नगर घर देल हम जारि ।।

।। सोरठा ।।

कर्म्म करत के आन, सुरदुर्ल्लभ हनुमान सन ।
हित के अहँक समान, सजल-नयन रघुनाथ कह ।।

---

1 तुय (१), 2 विश्वास (३), 3 सामर्थ्य, 4 पतनी (१), 5 पाबथि (३), 6 निष्प्राण (१):

अतिसाहसधर वीर, अविरल भक्तिक भवन अहँ ।
पिता अहाँक समीर, जगत्प्राण-सुत उचित थिक ॥

॥ घनाक्षरी ॥

नाव अरि लाब नहि, उतरक दाब नहि,
एक बुद्धि आब नहि सागर अपार मे ।
वीर अरि छोट नहि, सङ्ग एक गोट नहि,
लङ्का लघु कोट नहि विदित संसार मे ।
दनुज अबल नहि, पुरी गम्य थल नहि,
प्रदेश अमल्ल[1] नहि युद्धक विचार मे ॥
अहाँक समान महि[2] वीर हनुमान[3] नहि,
सर्व्वस्वक दान नहि तूल उपकार मे ॥

इति श्रीमच्चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे सुन्दरकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ इति सुन्दरकाण्ड ॥

1 अमल (३), 2 ३मे 'महि' नहि । 3 हनूमान (३) ।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

मिथिला-भाषा रामायण

॥ लंकाकाण्ड ॥

॥ श्लोक अनुष्टुप् ॥

मुकुन्दम्माधवं वन्दे समुद्रे सेतुकर्त्तारम् ।
शयानन्दर्भशय्यायां दशग्रीवस्य हन्तारम् ॥
उमेशं सर्व्वं वन्दे महाकालं गुणातीतम् ।
गरैः काकोदरैः प्रेतैः पिशाचाद्यैश्च निर्भीतम् ॥

॥चौपाइ ॥

लङ्का-चरित कहल हनुमान । शुनि[1] प्रसन्न-मन श्रीभगवान ॥
दोसर यहन[2] करत के आन । दुष्कर कर्म्म कयल हनुमान ॥
शत योजन जलनिधि विस्तार । खग समान उड़ि गेलहुँ पार ॥
बड़ प्रताप लङ्का मे कयल । रावण आबि पकड़ि नहि धयल ॥
सभ जन रक्षक मारुत-पूत । दोसर यहन हयत के दूत ॥
मन मे होइछ समुद्रक ध्यान । कोन गति[3] उतरब थिर नहि प्रान ॥
कोन परि देखब सीता जाय । रिपुकाँ मारब समर चढ़ाय ॥
शुनि सुग्रीव प्रभुक मुख-उक्ति । कहलनि साध्य हमर अछि युक्ति ॥
जलनिधि नक्र-झषाकुल तरब । लङ्का-गर्व्व सर्व्वं हम हरब ॥
जिबइत नहि छाड़ब दशभाल । हे रघुपति हम अरिगण-काल ॥
चिन्ता जनु करु श्री रघुनाथ । विजय मानि लिय अपनहि हाथ ॥
वानर भालु बहुत रण-शूर । तनिकाँ लङ्का अछि कत दूर ॥
तरब समुद्र तकर मति करिय । रावण मृतक यहन मन धरिय ॥
धरब धनुष सन्मुख के हयत । जौँ सन्मुख दुख यम-घर जयत ॥

---

1 शुनु (३), सुनु (३), 2 एहन (३) एवं अन्यत्रहु 3 गत (१,२) ।

प्रभु समर्थ हमरा विश्वास । श्रीरघुनन्दन विश्व-निवास ।।
आगि पानि मे जाय समाय । वानर रहत न रण पछुआय ।।

।। सोरठा ।।

मन-हर्षित रघुवीर, जलधि तरब से विधि करब ।
कह रह धनुष सुतीर, हनूमान-साहित्य रह ।।
कहु लङ्काक सरूप, मारुत-नन्दन केहन से ।
रावण भारी भूप, तत प्रवेश दुस्साध्य विधि ।।
हाथ जोड़ि हनुमान, कहल जेहनि लङ्कापुरी ।
सानुकूल भगवान, मारब रावण सहित-बल ।।

।। चौपाइ ।।

गिरि त्रिकूट पर लङ्का केहनि । दोसर अमरपुरी हो जेहनि ।।
सकल कनकमय दृढ़ प्राकार । मणिमय खम्भ सकल घरद्वार ।।
परिखा शोभित निर्म्मल पानि । सुधा-मधुरताधिक पड़ जानि ।।
उपवन वापी बहुत तड़ाग । पुर शोभा अति सुन्दर लाग ।।
कय हजार शोभित गजवाह । पश्चिम द्वार न रिपु निर्वाह ।।
बहुत पदाति अश्व असबार । कय अर्व्वुद जन गणय न पार ।।
पूर्व्व द्वारमे तेहने सर्व्व । चिउटी[1] ससर न तेहन पर्व्व ।।
बहुत रथी रह दक्षिण द्वार । मध्य कक्ष अतिशय विस्तार ।।
अगणित महामत्त गजराज । विविध यान रथि तनिक समाज ।।
बहुत शतघ्नी बड़ बड़ अस्त्र । सभकाँ परिहन लोहक वस्त्र ।।
केवल प्रभुक प्रताप सहाय । चतुर्थांश बल मारल जाय ।।
लङ्का जारल विपिन उजारि । अक्षयकुमार आदिकाँ मारि ।।
लघु वानरक हमर ई काज । परमेश्वर अपनै महराज ।।
प्रभु-कुदृष्टि मात्रहि जरि जयत । के अछि तेहन समर थिर हयत ।।
सत्वर कयल जाय प्रस्थान । अरि-जन-दहन राम भगवान ।।

1 चूटी (३) ।

॥ सोरठा ॥

तखन कहल भगवान, शुनु कपीश सेना-निकर ।
तत्क्षण कर[1] प्रस्थान, उत्तम विजय-मूहूर्त्त अछि ॥

॥ षट्पद ॥

हमहुँ चलब यहि काल, काल दशभलहिँ मारब ।
मारब बड़ बड़ दनुज, भार भूमीक उतारब ॥
तारब हम मुनिलोक, विदेह-तनूजा आनब ।
नव नव चरित पवित्र, अमरगण गाओत मानव ॥
दक्षिणाक्ष अधभाग मे, स्फुरण होइ अछि बड़ सगुन ॥
चलु चलु यूथप सज्जसौँ; नहि कर्त्तव्य विचार पुन ॥

॥ विजया छन्दः ॥

इत मर्क्कटाधीश कय अर्व्व अक्षौहिणी,
क्षोणिधर[2] क्षोणि-संक्षाभ सौँ काँप ॥
तहँ दिग्गजोद्दण्ड महि शुण्डसम्पात कर,
चण्डरव दाँत महि कष्ट सौँ थाप ।
गुरु पन्नगाधीश-फण फाट मन आँट भय,
कूर्म्मगणगाट सह पीठ सन्ताप ॥
वर विजय प्रस्थान भगवान श्रीराम प्रभु,
कयल लङ्कापुरी हाथ शरचाप ॥

॥ भुजङ्गप्रयात छन्दः ॥

चलू सर्व्वयूथेश लङ्केश मारू ।
चतुर्दिक्षु सेनाक रक्षा सम्भारू[3] ॥
लड़ाका बड़ा वीर दैत्येश भारी ।
महावञ्चनाधार सर्व्वत्रचारी ॥
हनूमान-कन्धस्थ श्रीराम भेला ।
तथा अङ्गद-स्कन्ध सौमित्रि गेला ॥

1 करु (३), 2 ३मे "क्षोणिधर" नहि । 3 सम्भारु (१) ।

विदा भेलि[1] सेना युगान्ता घनाली ।
सुपीतारुणा श्यामला वानराली ।।
कहै वीर पक्षी[2]जकाँ जाइ लङ्का ।
करी जाय शीघ्रे पुरीकें सतङ्का ।।
दशग्रीव की आबि कें युद्ध कर्त्ता ।
कहू कीश की नाशकें आबि धर्त्ता ।।

॥ रोलाछन्दः ॥

गज गवाक्ष ओ गवय मैन्द, द्विविदादि चलल नल ।
नील सुषेण ओ जाम्बवान, सेनाधिप भल भल ।।
मर्क्कट कर किलकार, अर्क्क-आच्छादित[3] धूरा ।
श्रीरघुवीर-प्रताप, कीश रणकोविद पूरा ।।

॥ सोरठा ॥

सैन्य मध्य श्रीराम, शोभित कपिपति सहित तहँ ।
कतहु न हो विश्राम, अतिशय-रण-उत्साह मन ।।

॥ चौपैया छन्दः ॥

लाँघल सह्याचल, मलय सकल-दल, फल मधु करइत भक्षण ।
तरुवर बड़ भारी, लेल उखारी, वानर समर-विचक्षण ।।
लाँगड़ि[4] महि पटकय, तरु तरु लटकय, भूधर पर चढ़ि फानय ।
वानर-मय धरणी, चल नभ-सरणी, मन किछु त्रास न मानय ।।

॥ कुण्डलिया ॥

किलकि-किलकि कौतुक करय, कपि-कुल अति वाचाल ।
रघुनन्दन आगाँ कहय, के थिक खल दशभाल ।।
के थिक खल दशभाल, व्याल पर हम छी खगपति ।
सत्वर सन्तरु उदधि पार, हम करब दनुज-गति ।।
दनुज-मत्त-मातङ्ग उपर मर्क्कट-मृगपति मिल ।
वानर अनल समान, दनुज-कुल कानन थिक किल ।।

---

1 भेल (३); 2 पछी (१), 3 छा (१), 4 नाँगड़ि (३) ।

॥ सोरठा ॥

प्रलय-घटा-आटोप, अटकलि सेना सिन्धु-तट ।
वानर-मन बड़ कोप, की विलम्ब जल-निधि तरू[1] ॥
कहल राम भगवान, की प्रयास सागर तरब ।
नहि देखी[2] जल-यान[3], थिक विचार कर्त्तव्य की ॥
कपिपति आज्ञा पाबि, सन्निवेश सेना रहलि ।
की भेल सत्वर आबि, अति-अगाध वाधा कयल ॥
कर प्रभु विविध विलाप, हा जानकि सति प्रेयसी ।
सभ मन हो सन्ताप, प्रजा तथा राजा यथा ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥

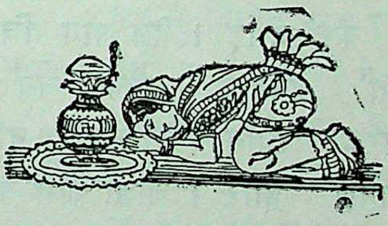

1 तीनूमे "रु" ह्रस्व । 2 देखि (३), 3 जाय (३) ।

मिथिला-भाषा रामायण

लंकाकाण्ड

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

रावण मन मन कर अनुमान । लङ्का डाहि गेल हनुमान ॥
बड़ आश्चर्य्य कहू की आन । अक्षयकुमारक लेलक प्राण ॥
सभा कयल निज लोक हकारि । रावण-वचन देथि के टारि ॥
तखन सभ्य सौँ रावण कहल । गुप्त न हमर कतहु कृति रहल ॥
की कर्त्तव्य भेल बड़ घोल । बजबहि पड़य गरा पर ढोल ॥
हम राजा छी केवल नाम । सभकाँ सुख धन सम्पति धाम ॥
एक-मत रहू कहू जे नीक । समर-कार्य्य कर्त्तव्ये थीक ॥
नर वानर सौँ मानब हारि । एहि सौँ बढ़ि दोसर की गारि ॥
सामक समय रहल नहि आब । भावी आगाँ आगाँ धाब ॥
कहु कहु निज मति जे भल रीति । श्रवण करक भल जनकाँ नीति ॥
राक्षस बहुत कहल कर जोड़ि । देल जाय चिन्ता चित छोड़ि ॥
सुरपति-विजयी सुत घननाद । अनका जय मध कोन विवाद ॥
पुष्पक[1] लेल कुबेरक छीनि । की सम्पति नहि अपन अधीनि[2] ॥
वरुण बेचारे मानल हारि । आज्ञा केओ सकथि[3] नहि टारि ॥
मय भय सौँ देल कन्या आनि । भययुत की अपनैँ मन हानि ॥
वानर आबि कयल उतपात । रण-वीरत्व देखु रहु कात ॥
नर-वानर सौँ पृथिवी हीन । कय देब लागत थोड़े दीन ॥
आज्ञा प्रभुसौँ पाओत[4] जैह । कार्य्य-सिद्धि कय आनत सैह ॥

॥ दोहा ॥

बुद्धि-विहीन कुमन्त्रणा, कुम्भकर्ण शुनि कान ॥
कहल दशानन सौँ उचित, नयकोविद निज ज्ञान ॥

---

1 पुष्यक (१), 2 अधीन (३), 3 शकथि (१,२), पाओत (१,२) ।

॥ रूपमाला छन्द ॥

चित्त दय दशकण्ठ प्रभु शुनु, कयल अहँ नहि नीक ।
कर्म्म सीता-हरण-रूपक, आत्म-नाशक थीक ॥
रामचन्द्र अनन्त ईश्वर, काल-शासन बाण ॥
धनुष सौँ छुटि जखन लागत, बचत अहँक कि प्राण ॥

लेल अछि अवतार लक्ष्मी, राक्षसान्तक काज ।
काल-काली राम-सीता, प्राप्त अहँक समाज ॥
कयल यद्यपि बहुत अनुचित, स्वस्थ-मन रहु भूप ।
कहब करब सुमन्त्र जेहन, भक्ति-भाव अनूप ॥

॥ रोलाछन्द ॥

शुनि सकोप कह मेघनाद की नीति विचारब ।
प्रभु-आज्ञा काँ पाबि राम लक्ष्मण काँ मारब ॥
सुग्रीवादिक सकल प्रबल मर्क्कट संहारब ।
मेघनाद हम पुत्र पिता-आज्ञा नहि टारब ॥

॥ घनाक्षरी ॥

कहल विभीषण विचार-सार वार वार
करु न विरोध बन्धु राम भगवान सौँ ।
दशमाथ-नगर अनाथ जकाँ जारि गेल
कत गोट अपमान भेल हनुमान[1] सौँ ।
एक गोट छोट भाय कहल कयल जाय
खलक कहल न शुनल जाय कान सौँ ।
बाली बलशालीक कुचालि पाबि आबि पुर
दिव्य गति देल मारि उर एक बान सौँ ।

॥ अनुष्टुप् देश ॥

धरित्री-पुत्रिका देवी[2], त्वया नीतात्र लङ्कायाम् ।
हरेर्म्माया जगन्माता, हनूमत्प्राप्ततङ्कायाम् ॥
त्वया सा जानकी देया, न हेया सन्मतिर्ब्बन्धो[3] ।
अजेया वानरी सेना, समायाता तटे सिन्धो[4]: ॥

1 हनूमान (३), 2 देया (२), 3 बन्धोः (३), 4 सिन्धो (३)।

महेशः किङ्करो यस्य, विभोः श्रीरामचन्द्रस्य ।
प्रयासस्त्वल्लये कस्स्याद्‌दृद्भिन्चेन्मनो न स्यात् ।।

।। चौपाइ ।।

काल विवश रावण हतज्ञान । धर्म्मकथा नहि धारण कान ।।
उलटे भाइक ऊपर कोप । असमय धर्म्म-ज्ञान हो लोप ।।
औषध[1] सन्निपाति नहि खाय । अनट सनट रटि यमघर जाय ।।
क्रोध दशानन पुन बजलाह । मुनि[2] भ्राता घर हमर[3] छलाह ।।
थिक कुल[4]-दूषण सोदर भाय । अनुचित कयल जे कहल बजाय ।।
बड़ कातर जिव थर थर काप । जनु अन्धार[5] घर सापहि साप ।।
अरि-उत्कर्ष हमर लग बाज । धिक घोरि पिउलक सभटा लाज।।
हमरे लालित पालित पुष्ट । बुझल विभीषण मानस दुष्ट ।।
हमर नगर सौँ खल हो कात । प्राण हरब मारब हम लात ।।
छल भल दया सहोदर जानि । कुक्कुर-न्याय चढ़ल अछि छानि ।।
शुनल विभीषण मन बड़ आनि । लङ्का त्यागि चलल नभ फानि ।।
मन्त्री चारि चतुर जन सङ्ग । बड़का भाइक बिगड़ल रङ्ग ।।
गगन गदाकर धर्म्म पुकार । सर्व्व-विनाश बढ़ल व्यवहार ।।
काली काल लेल अवतार । हरण होयत अवनिक अति भार ।।
तनि प्रेरित अहँकाँ नहि ज्ञान । निकट काल होइछ अनुमान ।।
नर वानर कर दनुजक नाश । दशमुख त्यागू जीवन-आश ।।
व्यापक ब्रह्म शुनै छी जैह । विधि-प्रार्थित अवतरला सैह ।।
विस्मित-मन रावण बजलाह । सोदर-सर्प्प सदन अधलाह ।।
समय सन्धि नहि बौँसल आब । भीरु[6] विभीषण नाम स्वभाव ।।
कहल विभीषण भावी भङ्ग । जनि साहस खस अनल पतङ्ग ।।
अद्यावधि हठ बल अभिमान । बिसरल नहि होयता[7] हनुमान ।।
रहितहुँ सहि घर कहितहुँ नीति । पुन पुर नाचय नटी कुरीति ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ।।

---

1 औषधि (३), 2 सुनि (३), 3 कयर (३), 4 कूल (१), 5 अन्हार (३), 6 मारु (३), 7 होयत (२,३) ।

॥ अथ तृतीयोध्याय ॥

॥ हरिपद छन्द ॥

नाम विभीषण जन कहइत छथि, दशमुख-सोदर-भाय ।
चरण-शरण मे राखु दयानिधि, अयलहुँ विकल पड़ाय ॥
बहुत कहल हम नीति सभा मे, नहि मानल दशभाल ।
मेघनाद रावण-सुत मन्त्री, रावण-मत वाचाल ॥
विश्वजननि वैदेही देवी, रामचन्द्र भगवान ॥
तनिक विरोध कुशल नहि ककरहु, ककरो बचत न प्राण ॥
वचन हमर शुनितहिँ तहँ रावण, हाथ धयल तरुआरि ।
भयसौँ झटिति तनिक तट त्यागल, सहि नहि सकलहुँ[1] मारि ॥
मन्त्री हमर चारि जन सङ्गी, हिनकर उत्तम कर्म्म ।
विदित सकल विभु परमेश्वर काँ, सकल शुभाशुभ मर्म्म ॥

॥ चौपाइ ॥

के थिक के थिक भय गेल सोर । पकड़ पकड़ लङ्कापुर-चोर ॥
कह सुग्रीव राम सौँ जाय । हिनकर विश्वासे अन्याय ॥
रावण काँ लघु सोदर भाय । शान्त वेष की कारण पाय ॥
आयल छथि मन्त्री सङ्ग चारि । कपट करत देत अहँ काँ मारि ॥
धरु धरु बाँधि कहय किछु आन । राक्षस-गोलक बोल प्रमाण ॥
हिनका सभ जन मारि खसाउ । शुभ संग्रामक सगुन बनाउ ॥
शुनु कपि-वीर कहल हँसि राम । के हमरा जीतत संग्राम ॥
उतपति पालन लय सामर्थ्य । हमरा ककरो भय से व्यर्थ ॥
हम देल अभय लाउ अरिआति । बड़ सज्जन छथि राक्षस जाति ॥
हम छी अहँक शरण कहि धयल । सकृत प्रपन्न अभय जन कयल ॥

1 शक्लहुँ (१),

कहितथि रावण अपनहुँ आय । काल-कवल सौँ लितहुँ बचाय ।।
ई व्रत दृढ़तर हमरा मित्र । शतदोषी मन रहै पवित्र ।।
शुनि सुग्रीव गूढ़तर भाव । प्रभु-वचनक नहि उत्तर आब ।।
बड़ आनन्द ततय पुन जाय । निकट विभीषण देल बजाय ।।
कपिपति सङ्ग प्रभुक शुभ वास । अयला अचल-भक्ति निस्त्रास ।।
नयन सजल साष्टाङ्ग प्रणाम । कयल विभीषण कहि निज नाम ।।
धनुर्ब्बाणधर शोभाधाम । देखल सानुज प्रभु घनश्याम ।।
परमेश्वर करता प्रतिपाल । स्मित-सुन्दर मुख नयन विशाल ।।

।। पादाकुल[1] ।।

महाराज सीता-मनरञ्जन[2], चण्ड चाप धर भक्त-दयानिधि ।।
शान्त अनन्त राम परमेश्वर, सुग्रीवक प्रभु मित्र स्वयंविधि ।।
जगदुत्पत्ति पालना[3] लय कर, तीनि-लोक-गुरु आदि सनातन ।।
स्वेच्छाचार[4] चराचर-संस्थित, बाहर भीतर भीति-रहित-मन ।।
व्यापक व्याप्य[5] विश्वमे भासित, देव जगन्मय[6] सभटा[7] अनुमत ।।
अपनैँक मायासौँ जग मोहित, पुण्य पाप-वश सकल गतागत ।।
तावत्सत्य विश्व भासित हो, रजत[8]भ्रान्ति शुक्ति[9] मे जेहन ।।
अपनैँक दया ज्ञानसौँ छूटय, प्रभु-पद-भक्त धन्य जे तेहन ।।

।। चौपाइ ।।

अपनहि विधि हरि हर सुर सर्व्व । हरण करिय जग दुष्टक गर्व्व ।।
अणुसौँ अणु थूलहुँ सौँ थूल । जननी जनक सकल जन मूल ।।
सभसौँ रहित सहित सन[10] काज । स्तुति हम कि करब होइछ लाज।।
सकल अगोचर विभु परमेश । हरण कयल प्रभु हमर कलेश ।।
हम राक्षस सत्कर्म-विहीन । अयलहुँ चरण-शरण हम दीन ।।
भासित माया-मानव-रूप । रावणारि जय जय विभु भूप ।।
जे छल सञ्चित हमरा पाप । से क्षय भेल सेवाक प्रताप ।।
ज्ञानयोग प्रभुसौँ हो प्राप्त । लङ्का दुर्न्नय-दशा समाप्त ।।

1 पदाकुल (३), 2 पाठ तीनूमे अछि 'मनोरंजन' जे छन्दक दृष्टिसँ अनुपयुक्त बोध होइत अछि अतएव कवीश्वरक लेख-पोथीक पाठ देल अछि । 3 पालन (३), 4 छा (१,२) 5 व्याञ्य (३), व्याय (२), 6 जगन्मया (१) जगन्माया (३), 7 ३मे 'टा' नहि । 8 राजत (३), 9 सुक्ति (३), 10 मन (३) ।

॥ हरिपद ॥

कपट-रहित स्तुति कयल विभीषण शुनि प्रभु हर्षित-चित्त ॥
माँगू वर वरदानी हम छी जे अभीष्ट से वृत्त ॥
कहल विभीषण देव धन्य हम भेल सकल सिधि काज ॥
प्रभु-पद-कमल नयन भरि देखल सत्य मुक्त हम आज ॥

॥ दोबय छन्द ॥

कर्म्मक बन्ध-विनाश हेतु हम, भक्तिज्ञान काँ पाबी ॥
देल जाय परमार्थ ध्यान निज, अपनैँक[1] दास कहाबी ॥
विषय-सुखक वैराग्य बनल रह, अपनैँक पद थिर भक्ती ॥
अपनैँ सौँ प्रभु किछु दुर्ल्लभ नहि, परमेश्वर वरशक्ती ॥
विमल विराग हमर जन योगी, शान्त हृदयमे वासा ॥
सीतासहित हमर अछि निश्चय, करब ध्यान प्रत्याशा[2] ॥

॥ चौपाइ ॥

दर्शन हमर लाभ फल एक । सम्प्रति अहँक राज्य-अभिषेक ॥
लङ्कापति बनि भोगू राज । यावत गगन सूर्य्य द्विजराज ॥
शुनु कपीश जल घट भरि लाउ । हिनकाँ लङ्का-नृपति बनाउ ॥
घट भरि आयल सागर-पानि । भेल अभिषेक लग्न शुभ जानि ॥
देखि देखि जन जोड़ल हाथ । प्रणत-आर्त्ति-हर जय रघुनाथ ॥
अरि रावणक सहोदर भाय । करुणाकर लेलनि अपनाय ॥
मिलि कपीश कह लङ्कानाथ । सानुकूल प्रभु श्रीरघुनाथ ॥
रावण-वध मे होउ सहाय । किङ्कर-कोटि मे मुख्य कहाय ॥
कहल विभीषण शुनु कपिनाथ । सभ गति मति रघुनन्दन-हाथ ॥
किङ्कर-कर्म्म कुशल हम करब । अपने सबहिक सह सञ्चरब ॥
रावण दूत पठाओल चार । पर नर वानर बुझि व्यवहार ॥
रुसि गेला अछि हमरा भाय । लङ्का किदहु देता उलटाय ॥
शुक नामक चर गगन उचार । शुनु सुग्रीव समय अनुसार ॥

1 अपने (३), 2 प्रत्यासा (३) ।

राक्षसेन्द्र कहलनि संवाद । नहि किछु कपिपति संग विवाद ॥
भ्राता सदृश वंश बड़ गोट । कर्म्म उठाओल अछि की छोट ॥
वनचर-राजा बड़ गोट नाम । आयल छी छि: की एहिठाम ॥
राजकुमारक हृत भेल नारि । अहँक दोष नहि कयल विचारि ॥
घुरि सेना लय सदनहिँ जाउ । स्वेच्छाचार[1] अमृत फल खाउ ॥
वानर जीतय लङ्का हाय । तौँ अकाल ध्रुव उदधि सुखाय[2] ॥
वनचर-राजा ई नहि ज्ञान । वञ्चक-वचन गमायब प्रान ॥
जतय अमरपति मानथि हारि । ततय करत नर वानर मारि ॥
वानर शुनल उड़ल कय गोट । शुक काँ पटकि कयल लोटपोट ॥
रामचन्द्र काँ कहथि शुनाय । आहि[3] दूत नहि मारल जाय ॥
वानर हटल जाय महराज । प्राण लेबय चाहै अछि आज ॥
अपनैँक देखयित ई बड़ शोच । दाढ़ी मोछ[4] कठिन कपि नोच ॥
रामचन्द्र हँसि देल छोड़ाय । शुक लङ्का मुख चलल पड़ाय ॥
पुन आकाश जाय संभाष । कपिपति रहल कहक[5] अभिलाष ॥
लङ्केश्वर सौँ कि कहब जाय । कहल जाय से कथा शुनाय ॥
कह सुग्रीव कहबगय सैह । बालिक गति भेलनि अछि जैह ॥
राक्षस-नगर निन्द्य व्यवहार । आबि करब हम अरि-संहार ॥
रामाङ्गना हरल खल चोर । जयबह कतय अन्त दिन तोर ॥
आज्ञा देल तखन रघुनाथ । बाँधि धरू हिनका दुनु हाथ ॥
रावण-दूत नाम शार्दूल । छल देखयित राक्षस प्रतिकूल ॥
कपि मे कपि बनि गेल मिझड़ाय । चिन्हल भेल तौँ गेल पड़ाय ॥
रावण सौँ कहलक से जाय । अनइत छी नहि दूत छोड़ाय ॥
भाग्यहिँ बचि अयलहुँ हम आज । प्राण के अर्प्पय काल-समाज ॥
अतिचिन्तातुर नृप लङ्केश । अन्त:पुर मे कयल प्रवेश ॥

॥ रूपमाला ॥

देखल वारिधि तखन रघुवर कोप लोचन लाल ॥
देखु लक्ष्मण दुष्ट वारिधि कयल गर्व विशाल ॥

1 स्वेछा (१,२), 2 शुखाय (१,२), 3 ओहि (३), 4 मोक्ष (१,२), 5 कहल (३)]।

हमर दर्शन हेतु ई नहि अबै छथि एक बेरि ।।
हमर की करताह वानर मनुज ई मन टेरि ।।

।। जलहरण छन्द ।।

अथ जलनिधि-तट कहु निज निज मत
कोन[1] गति जलनिधि विषम तरू। ।।
कमलनयन कुशशयन बहुत दिन
अनशन व्रत प्रभु कयल बरू[2] ।।
लछुमन[3] कहल कुपित भय शुनु शुनु
निज कर शर-वर-धनुष धरू। ।।
जड़ जलनिधि नहि कहल करथि हठ
हिनक सकल जलहरण करू। ।।

।। मिथिला-संगीतानुसारेण केदार छन्दः ।।

कहल प्रभु जलनिधि महाजड़, कयल अति अपमान ।।
खनल हमरे पूर्व्व पूरुष, अहित हमरहि मान ।।
तरत बल शोषण करब धय, बाण अनल-समान ।।
प्रीति भय विनु कतहु प्रायः, शुनल अछि नहि कान ।।
कालकाल कराल शासन, धयल कर शर चाप ।।
शैल कानन सहित वसुधा-वलय भय-भर काँप ।।
एक योजन कूल त्यागल, जलधि मन सन्ताप ।।
वारिचर-गण विकल-तर मन, करथि विकल विलाप ।।

।। चौपाइ ।।

डरसौँ सागर थर थर काँप । देखल रामक प्रबल प्रताप ।।
दिव्यरूप धय मणि लय हाथ । गेला जतय राम रघुनाथ ।।
पदपङ्कज पर मणि देल राखि । त्राहि त्राहि पुन उठला भाखि ।।
हम बड़ जड़ खल-निकट निवास । एत दिन हम छल छी निस्त्रास ।।
समुचित हमरा होमहि बूझ । परमेश्वर जनिकाँ नहि सूझ ।।

1 कुन (१,२), 2 रु (१,२), 3 लछमन (१,२)।

नाश करू की राखू नाथ । अयलहुँ शरण करण प्रभु हाथ ॥
पुन नहि एहन[1] करब हम दोष । परमेश्वर मन परिहरु रोष ॥
सागर-विनय शुनल प्रभु कान । मन प्रसन्न भेला भगवान ॥
अभय देल शरणागत जानि । जलधि तोहर नहि होयत हानि ॥
हम जे चाप चढ़ाओल बाण । तकर कहू की गति हो आन ॥
उत्तर देश नाम गिरि कुल्य । पापी बसइछ बहुत अतुल्य ॥
ततहि तीर प्रभु फेकल जाय । जैं आभीर जरय समुदाय ॥
बाण-निपात[2] ततय भेल जाय । जारि घूरि तूणीर समाय ॥
पुन सागर कहलनि शुनु राम । सहज उपाय सङ्ग एहिठाम ॥
बहुत परिश्रम हो की हेतु । नल भल करता प्रस्तर-सेतु ॥
मर्य्यादा प्रभु राखू आज । अनायास मे होइछ काज ॥
कय प्रणाम गेल सागर पैशि । तखन विचार एतय भेल बैशि ॥
कपिपति लक्ष्मणयुत श्रीराम । नल बजबाय लेल तहिठाम ॥
शुनु नल शत योजन बन सेतु । अगध जलधि लङ्का-जय हेतु ॥
प्रभु भल कहल कहल नल वीर । चल दल संगी प्रबल समीर ॥
कत अव्वुंद वानर बलवान । लाबथि गिरिवर तोड़ि पखान ॥
नल काँ सभ कल पढ़ले पाठ । ढेर भेल पाथर ओ काठ ॥
अप्रधान के ततय प्रधान । राम-काज मे सकल समान ॥
वर प्रसाद नल लेलन्हि काँधि । शत योजनक बाँध लेब बाँधि ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे तृतीयोऽध्याय. ॥

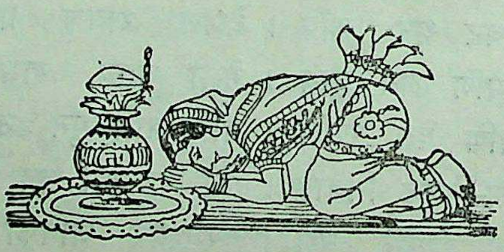

1 यहन (१,२), 2 निपात् (२) त्रिपात (३)।

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ सवैया छन्दः ॥

बाँधल भेल बाँध वारिधि मे, दशवदनक विजयक मन काज ॥
शिवरामेश्वर तत संस्थापन, कयल सविधि प्रभु श्रीरघुराज ॥
रामेश्वरक करथि जे दर्शन, सेतुबन्ध काँ करथि प्रणाम ॥
ब्रह्मघात-आदिक पातक सौँ, छूटथि से कहलनि श्रीराम ॥
वाराणसी जाय गङ्गाजल, लय रामेश्वर कर अभिषेक ॥
सेतुबन्ध-सागर कर मज्जन, ब्रह्म होथि सम्प्राप्त-विवेक ॥
महिमा हिनक अनन्त कहब कत, सकल मनोरथ-दायक रुद्र ॥
शङ्कर-ध्यान निरन्तर जे कर, कि करत तनिका पापक क्षुद्र ॥

॥ षट्पद छन्द ॥

एक दिन मे लेल सेतु बाँधि, चौदह योजन[1] धरि ॥
योजन बीश प्रमाण, दुसर दिन बाँधल नल हरि ॥
एकइस योजन सेतु, दिवस तेसर से कयलनि ॥
बाइस[2] योजन सेतु, चारि वासर निर्म्मयलनि ॥
योजन तैस प्रमाण पुन, पाँचम दिन बाँधल अचल ॥
बाँधल बाँधल जलधिकाँ, जय रघुनन्दन धुनि मचल ॥
थल सन नल-कृत सेतु, चढ़ल भल चलल सकल दल ॥
दलमल मेदिनि डोल, कोल कक्षप अहि हलचल ॥
चल भेल बड़बड़ अचल, प्रबल कपि मन घन कड़कल ॥
कल कल कय कपि उड़ल, व्योम रवि-वाजी भड़कल ॥
विकल-लोक लङ्कापुरी, तङ्काकुल डङ्का शुनल ॥
नल बाँधल अछि उदधिकाँ, वानर-दल अबइछ अनल ॥

---

1 य (३), 2 श (१,२)।

॥ रूपमाला ॥

पवन-नन्दन तथा अङ्गद काँध चढ़ि दुहु[1] भाय ।
देखल लङ्का दुर्ग्ग वेलाचल-शिखर पर जाय ॥
ध्वज प्रसाद सुवर्ण तोरण स्वर्णमय प्राकार ।
किला परिखा ओ शतघ्नी बनल[2] सभ हथियार ॥
भवन एक विचित्र विस्तृत स्थित जतय दशभाल ।
दश किरीट अपूर्व्व चमकय दशो मौलि विशाल ॥
काल-मेघ समान कान्तिक कज्जलाद्रि[3] समान ।
रत्नदण्ड सितात पत्रें[4] लसित अति अभिमान ॥
सचिव सह लङ्केश करइत छला जतय विचार ।
राम देल छोड़ाय शुक काँ गेला[5] निज दरबार ॥
पुछल[6] रावण कहू शुक बुध की ततय वृत्तान्त ।
रङ्ग अदित सन कहू की कहल सीताकान्त ॥

॥ चौपाइ ॥

दशमुख-वचन शुनल शुक कान[7] । कहलनि ईश्वर राखल प्राण[8] ॥
गेलहुँ सागर-उत्तर तीर । संस्थित जत सानुज रघुवीर ॥
शोभित पुरुष मुख्यतम चारि । मान न कालहु सौँ से हारि ॥
सानुज राम नवल लङ्केश । कपिनायक देखल ओहि देश ॥
हम गगनस्थ कहल संवाद । कपि उड़ि धयलक कय हरिनाद ॥
कपि-कृत कत कहु की उतपात[9] । सहल बहुत हम मूका लात ॥
बाँधल छलहुँ मनहुँ बड़ शोच । दाँत काट केओ नख सौँ नोच ॥
हम देखल[10] बल कयल विचार । वानर-मात्र दनुज संहार ॥
राम समाद कहल श्रीमान । हम अयलहुँ शुनि अपनहि कान[12] ॥
जे बल सीता कयलह हरण । समर देखाबह वीराचरण ॥
आब विजय मे नहि अछि देरि । भोरहि लङ्का हम लेब घेरि ॥

1 दुइ (३), 2 वतल (३), 3 कज्जलादि (३), 4 तीनूमे पाठ अछि 'सितातपत्रसँ' परन्तु ताहिसँ छन्दोभंग होइत अछि तेँ कवीश्वरक लेख पोथीक पाठ देल अछि ।5 भेला (३), 6 पुछह (२), 7 काम (३) 8 प्रान (३), 9 उत्पात (१,२), 10 देखक (३), 11 तीनूमे 'न' हलन्त अछि। 1२ आन (३) ।

हमरहु हृदय भेल अछि रोष । बाण एक तोहर बल शोष ॥
अनकर कथा कहू की आज । अपनैक निन्दा बजितहिँ लाज ॥

॥ चौबेल छन्द ॥

कपि-मेला वेलाचल ऊपर, तरु तोड़ै अछि लटकि लटकि ॥
लोचन-पथ लङ्काक लोक जौँ, तनिका मारय पटकि पटकि ॥
शुनु दशभाल काल दल जानू[1], चल अबइत अछि झटकि झटकि ॥
एको जन राक्षस नहि तेहन, करत युद्ध रण अटकि अटकि ॥
सम्यक कयल उमेशाराधन, तथा चतुष्टय साधन ॥
तप-प्रताप लङ्का गढ़ पाओल[2], सभ सौँ भेलहुँ महाधन ॥
जगदम्बा वन सौँ हरि आनल, कुल-मर्य्यादा बोरल ॥
मति विपरीति अनर्थ समय हो, पोखरिहि[3], माहुर घोरल ॥

॥ सवैया छन्दः ॥

अगणित विकट कटक कर्क्कट भट आयल निकट विरचि बड़ व्यूह ॥
शङ्का-विरहित लङ्का-गढ़ काँ लूटत करता के प्रत्यूह ॥
नहि प्रमाण प्रत्यक्ष मध्य किछु निज लोचन[4] सौँ देखल जाय ॥
जे जे वीर प्रधान ततय छथि तनिकाँ दै छी एखन चिन्हाय ॥

॥ षट्पद छन्दः ॥

गढ़ पर चाहथि कुदय राम-आज्ञा नहि पाबथि ॥
पर-दल-खण्डन-शील नील, कपि नाम कहाबथि ॥
शत सहस्त्र संग यूथपाल, अनलक बुभु बालक ॥
सङ्गर-सुभट अजेय, त्रास हिनका नहि कालक ॥
सुग्रीवक सेनाधिपति, अव्याहत गति सकल थल ॥
लङ्कापति परिचय कहल, अचल उखाड़थि रण अचल ॥
विदित विश्व भरि छला, प्रबल अरिमर्दन बाली ॥
तनिक पुत्र युवराज नाम, अङ्गद बलशाली ॥

---

1 जानु (३), 2 पायोल (१,२), 3 पोषरिहि, (१२), 4 पाठ तीनूमे अछि अपनहुँ आँखि सँ' परन्तु ताहिसँ छन्दोभंग होइत अछि ।

कान्ति कमल-किञ्जल्क, पर्वताकार सुशोभित ।।
धरणि पटक[1] लाङ्गूल शत्रु-कुल कर संक्षोभित ।।
शुनु लङ्केश्वर हिनक हम, कहब कहाँ धरि बुद्धिबल ।।
संग्रामक उत्साह मन, रघुपति-सेवक मन विमल ।।

पवन-पुत्र हनुमान, ललकि लङ्का-पुर जारल ।।
अछय ज्ञात बल अछय, अछय-दल काँ संहारल ।।
जे अशोक-वन जाय, स्वामिनी-दर्शन कयलनि ।।
कयल सकल रघुराज-काज, भल भल फल खयलनि ।।
सगर नगर घर घर जनिक, नाम शुनय[2] कम्पित रहय ।।
स्वर्ण-शैल-सङ्काश तन, रुद्रमूर्त्ति बल के कहय ।।

।। रूपमाला ।।

श्वेत राजत-अवनिधर रुचि, प्रबल बुद्धि विशाल ।।
कपिपतिक तट गतागत[3] कर, चतुरतर सभ काल ।।
रम्भ नामक अतुल-विक्रम-केसरी-संकाश ।।
बार बार विलोक[4] लङ्का, करय चाहथि नाश ।।

शरभ नामक कोटि-यूथप, थिकथि नायक वीर ।।
दृष्टि दय दशभाल देखल जाय, ई बड़ धीर ।।
देखि रहला पुरी लंका, दग्ध जनु करताह ।।
जखन युद्ध विरुद्ध, उद्यत रोकि के सकताह ।।

।। सोरठा ।।

पनस महा-बलवान, मैन्द द्विविद वानर तथा ।
कपि हनुमान समान, आन आन संख्या-रहित ।।

।। घनाक्षरी ।।

बाणक प्रताप जलनिधि थर थर काँप
एको जन आबि न चढ़ल दीर्घ तरणी ।।
वानर बहुत व्योम विहग समान ऊड़[5]
रोकल न रहय कतहु कपि-सरणी ।।

---

1 पटकि (३), 2 सुनत (३), 3 कर गतागत (३), 4 विलोकि (४), 5 उड़ (३) ।

वीर दशकन्ध नहि चलत प्रबन्ध किछु
निरधन्ध बुद्धि की वानरमय धरणी ॥
प्रबल जनिक दल विदित सकल थल
कलबल नलक समुद्र-सेतु-करणी ॥

॥ अनुष्टुप् ॥

विधाता सर्व्वलोकानामयं रामो धनुर्द्धारी ॥
मनोवाचामदृश्योऽसौ प्रभुस्सर्व्वत्र सञ्चारी ॥
रघोर्व्वंशे समुत्पन्नस्समर्थो भाति संसारी ॥
घनानां[1] घोरपापानां खलानां गर्व्वसंहारी ॥
कृतं कार्य्यं त्वया नेष्टं छलान्नीतात्र वैदेही ॥
शरण्यस्सेव्यतां सम्यक् भव त्वं तत्पदस्नेही ॥
हृता भ्रान्त्या जगन्माता प्रशान्त्यातां प्रयच्छास्मै[2]॥
असून् संरक्ष तद्वाणैरनीती रोचते कस्मै ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ।

1 घनानां (३), 2 छा (१,२)।

।। अथ पञ्चमोऽध्यायः ।।

।। चौपाइ ।।

।। जयकरी इत्यपि नाम ।।

शुक-मुख-वचन शुनल लङ्केश । मूढ़ तोर जानल बुढ़ वेश ।।
शुक गुरुजकँ की कहइछ ज्ञान । बाढ़ल मनमे बड़ अभिमान ।।
रे पापिष्ठ[1] नगर काँ छाड़ । बसय न देब भाँड़ सम राड़ ।।
एखनहि[2] प्राण तोर हम लेब । चर खर केँ मनब गुरु-देव ।।
किङ्कर जानि कयल प्रतिपाल । सिंहक शासक शुभ्र शृगाल ।।
रे हम त्रिभुवन-शासक आज । नीति पढ़ाबय मन नहि लाज ।।
प्राण हरण करितहुँ से क्रोध । बचला पूर्व्वक गुण अनुरोध ।।
पुन जनु आबह राजद्वार । बिगड़ल बुद्धि बिलट व्यवहार ।।
वानर-नख-दन्तक विष देह । औषध करह जाय निज गेह ।।
जोड़ल हाथ कम्प बड़ अङ्ग । चलल भवन भय मानक भङ्ग ।।
मन मे शुक कह महाप्रसाद । हेतु कि ककरहु कहब समाद ।।
शुक ब्रह्मिष्ठ छला द्विज जाति । वानप्रस्थ-विधि-रत दिन राति ।।
देव-वृद्धि सुख हो अभिराम । यज्ञ करथि असुर-क्षय-काम ।।
वज्रदंष्ट्र एक राक्षस घोर । आयल आश्रम बनि केँ चोर ।।
अयला ततय अगस्ति महान । शुक पाहुनक कयल सन्मान ।।
जखना कुम्भज गेला नहाय । वज्रदंष्ट्र तनि वेष बनाय ।।
छाग मांस होइछ मन खाइ । कहलनि तृप्त निजाश्रम जाइ ।।
शुक बनबाओल तेहने पाक । मुनि विलम्ब पूजा सन्ध्याक ।।
से राक्षस[3] पुन चूपहि चूप । आयल बनि शक-वधू स्वरूप ।।
मानुष-मासु[4] परसि देल पात । अन्तर्हित अपने भय कात ।।
मानुष-मांस अमेध्य विचार । घोर कोप मुनि[5]-मन सञ्चार ।।

1 पापिष्ट (३), 2 एषनहि (१,२), 3 राक्षश (१), 4 मांस (३), 5 सुनि (३) ।

रे शुक राक्षस हो तोँ जाय । मानुष मांस तोँ दितैँ[1] खोआय ॥
शुक-मन शुष्क[2] कहल मुनि जैह । छाग-मांस भोजन विधि सैह ॥
मुनि मुहूर्त भरि कयलनि ध्यान । जानल कर्म्म कयल केओ[3] आन ॥
कहल अगस्ति तोहर नहि दोष । शाप अकारण मन घन रोष ॥
रामक जखन होयत अवतार । दशवदनक बनबह तो चार ॥
रामक दर्शन सौँ छुट शाप । कर जनु शुक किछु मन मे ताप ॥
शुक ब्राह्मण राक्षस तन पाय । भोगल कर्म्म लिखल कत जाय ॥
वैखानस सङ्ग कर तप वेश । राक्षसताक रहल नहि लेश ॥

॥ चौबेल छन्द ॥

शुक निष्काशन कयल दशानन, तखन कहल भल माल्यवान ॥
की निश्शङ्क चित्त लङ्कापति, कपि-डङ्का शुनि पड़य कान ॥
अपनहुँ आँखि प्रबल दल देखल, अपने काँ के कहत आन ॥
श्रीरघुवर-परमेश-समागम, नृपवर भय रहु सावधान ॥
सीता देल जाय रघुवर केँ, काल-दण्ड कर तनिक बाण ॥
शपथ खाय हम सत्य कहै छी, नहि तौँ बचत न अहँक प्राण ॥
कोटि कोटि हनुमान अधिक-बल, नख-हन्तायुध चढ़ल शाण ॥
प्रातः पुरी-प्रवेश[4] करत सभ, शत शङ्कर नहि करत त्राण ॥
यदवधि सीता हरि आनल अछि, असगुन होइछ पुरी आबि ॥
तकरो शान्ति सविधि होमक थिक, काटल जाय अनिष्ट भावि ॥
रामचन्द्र नारायण निश्चय, तनिक चरण मे करु भक्ति ॥
जननी वैदेही काँ मानू, हरिमाया वर-आदि-शक्ति ॥
शुनि दशभाल लाल-लोचन कह, यम-कुवेर काँ हमर त्रास ॥
वानर-बल-आश्रित दुइ भ्राता, होयता राक्षस-जनक ग्रास ॥
जाह जाह घुरि एतय न आबह, बहुत वृद्ध गत-बुद्धि-ज्ञान ॥
रामचन्द्र दिशि मिलि आयल छह, ततहि जाह निर्व्वाह मान ॥

---

1 दितैँय (१,२), 2 सुष्क (३), 3 क्यो (३), 4 प्रवश (३) ।

॥ सवैया ॥

गिरिवर-उच्च सौध[1] पर रावण बैसल वर-मन्त्री-गण सङ्ग ॥
कथक गाब रसभाव सुखद स्वर विविध ताल लय बाज मृदङ्ग ॥
मन्दोदरी निकट पट-भूषण-शोभित छथि शुनइत वर गान ॥
मदिरा पान-पात्र शोभित थल त्रास नाश अतिशय अभिमान ॥
रावण घन मुकुटाली चपला मन्दोदरी-श्रवण-ताटङ्क ॥
रावण काँ देखल रघुनन्दन भेल कोप मन भ्रुकुटी वङ्क ॥
दश किरीट अवदात छत्र महि खसल चलल रघुवर-कर तीर ॥
की थिक की थिक दशमुख लज्जित कहल बहल नहि प्रबल समीर ॥

॥ सोरठा ॥

शयन-भवन चललाह, मुकुट छत्र खसलय[2] विमन[3] ॥
पुन कहि हँसि उठालाह, शिर कटलय[4] बढ़इछ विभव ॥

॥ मिथिला सङ्गीतानुसारेण जयकरी छन्दः ॥

मन्दोदरि असगुन मन मानि । दैवक हतमति काँ नित हानि ॥
राम-अनादर-फल परिणाम । कुशल कतहु रह लङ्का गाम ॥
तखनहि सौँ मन बढ़ आतङ्क । खसल अकारण श्रुति-ताटङ्क ॥
रावण काँ कहलनि सति रीति । मर्य्यादा कत जतय अनीति ॥
हमरहु दुख देखी हित हानि । गेलहुँ वर्षा बाँधी पानि ॥
राम विमुख सुख-सिन्धु सुखाय । वधिर अन्ध कह जन-समुदाय ॥
अपमानित सोदर[5] निर्भीत । घर-विरोध नाशक पथ थीक ॥
अपने काँ अछि कोप प्रचण्ड । नीति कहथि से पाबथि दण्ड ॥

॥ सवैया छन्दः ॥

कहइत नीति लात सौँ मारल नेह न राखल सोदर भाय ॥
गेला विभीषण विश्वकर्म्म-सुत नलसौँ राम समुद्र बन्धाय ॥
हनूमान वानर से आयल लङ्का मे गेलि आगि लगाय ॥
प्राणनाथ निश्शङ्क वृथा छी बाढ़ल जाइछ विपति सवाय ॥

1 शृंग (३), 2 खसने (३) 3 विघन (३), 4 कटने (३), 5 सादर (३)।

[रावण-वचन]

की करताह आबि लंका मे जनिकाँ वानर भालु सहाय ॥
प्रेयसि शुनु चिन्ता मन जनु करु कुम्भकर्ण सन हमरा भाय ॥
जगइत छथि एको नहि बचता सभ कपिदलकेँ जैथिनि खाय ॥
जिबइत पकड़ब दुनू भाइ काँ तखन तमाशा देखब जाय ॥

[मन्दोदरी-वचन]

देखल तमाशा लङ्का जरइत अक्षय बेरि नहि भेलहुँ सहाय ॥
ओ परमेश्वर थिकथि निरञ्जन माया-मानुष देह बनाय ॥
अनुज न तनुज न अपन सुतनु नहि सेना रक्षा करति कि हाय ॥
लौकिक उपलक्षणक भेल क्षण टिटही टेकल पर्व्वत जाय ॥

॥ सोरठा ॥

करइछ सभ कृति काल, कहल बहुत मन्दोदरी[1] ।
मानल नहि दशभाल, चिन्तहिँ बितलि विभावरी ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

इत प्रातहि जागल रघुवीर । जय जय ध्वनि कर कपि रणधीर॥
आज्ञा देल जाय रघुनाथ । आनथि बाँधि वैरि दशमाथ ॥
सानुज राम विभीषण नाम । सह सुग्रीव सभा एकठाम ।
भेल विचार करक की आज । अयलहुँ चढ़ि दशकण्ठ-समाज ॥
कहल प्रसन्न प्रथम श्रीराम । थिक कर्त्तव्य प्रथम विधि साम ॥
दूत एक रावण तट जाय । रावण काँ कह नीति बुझाय ॥
जौँ मानथि से मन मे हारि । तौँ की हेतु भयङ्कर मारि ॥
सभ अनुमति सभ कह तट जाय । टहल करब प्रभु रहब सहाय ॥
कपि-कुल बहुत चित्त उत्साह । जायब हमहिँ नाथ कहताह ॥
ककरो मन नहि ततय मलान । प्रभु प्रताप विजयक अभिमान ॥

॥ सोरठा ॥

तखन कहल रघुराज, लङ्का जयबा योग्य[3] छथि ॥
बालि तनय युवराज, रिपु-भञ्जद अङ्गद बली ॥

1 मन्दोन्दरी (३), 2 मारल (३), 3 जोग्य (३) ।

बद्धाञ्जलि युवराज, उत्साही शुनितहिँ कहल ॥
स्वयंसिद्ध प्रभु काज, टहल कहल कर्त्तव्य विधि ॥
पुन कहलनि रघुराज, परम चतुर युवराज अहँ ॥
जे भल जानब काज, सिद्धि करब अरि जीति रण ॥
कयल मुदित प्रस्थान, कयल प्रदक्षिण राम-पद ॥
सानुकूल भगवान, तारासुत विस्तार बल ॥
देखल राक्षस-लोक, पुन पुर अबइछ एक कपि ॥
केओ रोक नहि टोक, चौँकि पड़ायल विकल-मन ॥

॥ मन्दाक्रान्ता छन्द ॥

की रे की रे कह कि झट दै मूह कीयै[1] सुखैलौ[2] ।
वीरे वीरे बहुत जन छी त्रास की हेतु भेलौ ॥
हाँ[3] हौ हाँ[3] हौ विपति बड़ छौ काल लङ्का समैलौ ॥
लङ्काध्वंसी कपिक सदृशे दोसरो फेरि ऐलौ ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

लंका नगर कोलाहल ढेर । पुर-दाहक कपि आयल फेर ॥
के कर भानस खायत भात । हृदय काँप जनु पीपर-पात ॥
घर घर सभ जनि कह हिय हारि । भल नहि भावि भयंकर मारि ॥
एकओ[4] गोटय जनु बाहर जाह । अछि संप्राप्त[5] समय अधलाह ॥
रावण काँ कह सभ जन जाय । कृत सभ तनिके करथु उपाय ॥
प्रलय करत दौड़त[6] कपि सर्व्व । व्यर्थ करथि घर रावण गर्व्व ॥
की घर छथि रावण बहराथु । अपनहिँ राम-शरण मे जाथु ॥
घर रहलैँ न सिद्धि हो काज । झपटल बगड़ा ऊपर बाज ॥
करथु सन्धि जौँ जन-भल चाह । विग्रह सौँ नहि अछि निर्व्वाह ॥
धर्म्मर्मूर्त्ति रावण-छोट-भाय । तनिकहु राम लेल अपनाय ॥
रावण निकट कहल जन जाय । रावण देखल आँखि उठाय ॥

1 कीये (३), 2 शु (१,२), 3 हाहौ (१,२), 4 एकौ (३), 5 सम्प्राप्ति (३), 6 दौड़ल (३),

॥ शार्दूलविक्रीड़ित ॥

लङ्का मे कपि एक आयल बली, निश्शङ्कता की कहू।
की ओ फेरि अनर्थ जारत पुरी, से वृत्त बूझू अहूँ ॥
निद्राहार-विहार-शून्य नगरी, हा कष्ट की की सहू।
आबैयै[1] कि सभा कहै किछु कथा, लङ्केश सज्जे रहू ॥

॥ चौपाइ ॥

स्मितमुख कहलनि रावण नीक। लय आनह कपि के ओ थीक ॥
एक कहयित दश दौड़ल धाय। अङ्गद काँ लय चलल बजाय ॥
हरिणाधिप गजराज-समाज। जेहन निशङ्क तेहन युवराज ॥
कह से कह कत चलल लेआय। रावण अछि कत देह[2] देखाय ॥
शशि-रविकुल वर-वनिता-रत्न। छल हरि अनलक चोर प्रयत्न ॥
कालानल सन रघुपति-बाण। जे जरता गय शलभ समान ॥
देखि सभासद सभ[3] भेल ठाढ़। दशमुख-हृदय कोप बड़ बाढ़ ॥
देखल परस्पर से सभ रूप। सभा सकल जन कत छन चूप ॥
रावण पुछलनि परिचय नाम। ककर दूत की अछि मन काम ॥
देव-शत्रु-पुर मे की काज। त्रास-रहित कहु करु जनु लाज ॥

॥ वसन्ततिलका ॥

श्री रामचन्द्र-परमेशक दूत जानू।
लङ्का-निशाचर समस्तक काल मानू ॥
बाली बली सकल जानल शौर्य्य से टा।
उद्दण्ड अङ्गद तनिक थिकौँह बेटा ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

एतय पठाओल अछि प्रभु राम। उचित प्रथम भूपति काँ साम ॥
विधि-प्रपौत्र शिव-द्विगुण सुभाल। अनुचित पथ चढ़लहुँ एहि काल॥

1 आबैअँ (३), 2 देह (३), 3 सब (३)।

जगदम्बा वन सौँ हरि आनि । मोह-विवश नहि जानल हानि ॥
सीता काँ माता मन मानि । करू समर्प्पण रामक पानि ॥
कपि-दल आयल सागर-पार । रिपुदल-तूलराशि-अङ्गार ॥
पिती हमर छथि रामक सङ्ग । तनिक चरण मे प्रीति अभङ्ग ॥
जानि बूझि मन जनु अनठाउ । रामचरण मे माँथ लगाउ ॥
नव लङ्केश्वर अहँ काँ भाय । सुख सौँ छथि प्रभु-दास कहाय ॥
हम देखल प्रभु-बाण-प्रताप । बाण प्राण-हृत हमरा बाप ॥
काल न जीति सकथि सङ्ग्राम । जानू परमेश्वर छथि राम ॥
वचन हमर हित धरब न कान । तौँ भावी जानू अछि आन ॥
हमर जनक काँ विश्व चिन्हार । के कर समर शूर व्यवहार ॥
स्मित मुख रावण बजलाह[1] आह । बड़ गुण-शालि बालि मुइलाह ॥
वानर मे नहि रहले शूर । छल छथि समर-कला-परिपूर ॥
बिलटल घर तनिके तोँ पूत । अयला बनल तपस्वी-दूत ॥
ओ अछि कतय एतय जे आय । लङ्का मे गेल आगि लगाय ॥
मारल गेल न दूत-विचार । नीति सौँ भरल हमर व्यवहार ॥
यम कुवेर लड़ि लड़ि पछताथि । के नहि हमरा डरैँ नुकाथि ॥
वनिता-विरही गत-उत्साह । मानुष असुख समुख लड़ताह ॥
देखलनि लंका घुरि घर जाथु । चारू खूट माँगि कें खाथु ॥
हमरा जिबइत हमर कनिष्ठ । लङ्केश्वर बनलाह बलिष्ठ ॥
ई अन्याय बालि काँ भाय । रामक से छथि मुख्य सहाय ॥
किष्किन्धा भेल वीर-परोक्ष । सुग्रीवे छथि प्रबल महोक्ष ॥
देखलहि[2] लंका मन भेल त्रास । त्यागल सभ जन जीवन-आश ॥
दूत बनल अङ्गद अयलाह[3] । राजपुत्र-बल पाओल थाह[4] ॥
मन मे बाढ़ल समुचित धन्धि । अभिप्राय[5] की होयै सन्धि ॥
बालिक तनय कतहु नहि चूक । हसि हसि कहलनि फूजल ऊक ॥
वानर मे करु काल प्रतीति । लज्जारहित सकथि जग जीति ॥
घर समटल अछि अहँइक आज । प्रेत-समान कर्म्म नहि लाज ॥

---

1 'ह' अधिक बुझि पड़ैत अछि परन्तु तीनूमे इऐह पाठ अछि। कवीश्वरक लेख पोथीमे अछि 'कहलनि'। 2 देखलनि (३), लय साथ (३), 4 हाथ (३), 5 अभिलाषा (३)।

लङ्का कपि[1] आयल एक गोट । सुग्रीवक से अनुचर छोट ॥
राक्षस-जन सौँ बाँधल जानि । वनचर अनुचर गञ्जन मानि ॥
शाखामृग वन रहल नुकाय । विनु आज्ञा कयलक अन्याय ॥
निजजन-गञ्जन समुचित पाय । देवतारि-पुर अनल लगाय ॥
छोड़ि देलक अछि सेव्य[2]-समाज । बहुत गलानि मानि मन आज ॥
निज घर शूर[3] समटु मन रोष । बलक थाह[4] पाओल भरि रोष ॥
शङ्कर किङ्कर कर पद-ध्यान । रामक तुलना के कर आन ॥
लङ्केश्वर अहँ[5] काँ लघु भाय । सुपथ चलनि उत्तम पद जाय ॥
लङ्का उलटक तन-सामर्थ्य । प्रलय करब ई यश बुझि व्यर्थ ॥
सन्धि समर विधि देखल नयन । महितल विकल करब अहँ शयन ॥

॥ शर्दूलविक्रीड़ित ॥

एके गोट समुद्र लाँघि अयला, लङ्कापुरी डाहि कें ।
से की वानर-देह जानल अहाँ, गेला किला ढाहि कें ॥
जे अज्ञात कुबुद्धि युद्ध भिड़ला, निष्प्राण से से तहाँ ॥
सीतान्वेषक दूत कर्म्म बुझले, छी छिः[6] अहाँ ओ कहाँ ॥

॥ सवैया छन्द ॥

[रावण-वचन]

अजगव-खण्डन जलनिधि-बन्धन,
व्याध बनल छल मारल[7] बालि ॥
छल सड़ले ओ जड़ मातल मृग,
शुन रे बालिक पुत्र कुचालि ॥
हमर बीश भुज सतत रहित-रुज,
अनायास कैलाश उठाब ॥
तोँ युवराज काज कर दूतक,
धिक[8] मन मे नहि लज्जा आब ॥

---

1 लङ्कापति (३), 2 सैन्य (३), 3 सूर (१,२), 4 हाथ (३), 5 यहँकाँ (१,२), 6 छी (३), 7 मारत (३), 8 धिक (३)।

[अङ्गद-वचन]

काँख दबाय लेल तोहरा जे,
सातो जलधिक तट तट जाय ।।
सन्ध्यार्चन जे कयल महाबल,
विद्यमान तनि सोदर भाय ।।
एक तीर मारल रघुनन्दन,
बालिक रहि न सकल तन प्रान[1]।।
शुन दशभाल गाल मारह की,
काल-विवश नहि तोहरा ज्ञान ।।

[रावण-वचन]

हमर पयर जाँतथि यमराजा, मन्द मन्द रवि किरण पसार ।।
आठो लोकपाल भय-कम्पित, बद्धाञ्जलि भय वचन उचार ।।
देववधू पन्नगी आदि काँ, गर्भ स्रवित हो देखि तरुआरि ।।
के थिक राम कहाँ के लक्ष्मण, वचन रचन कर सभा विचारि ।।

[अङ्गद-वचन]

शुन दशकन्ध बन्ध्य[2]-मति लोचन-अन्ध लेश नहि भूपति ज्ञान ।।
रे हतप्राण त्राण के करतौ, मृग-विशेष व्यर्थहि जनु फान ।।
श्रीरघुवर-कर-मुक्त विषम शर, खसत समर सभटा तोर भाल ।।
बाल वृद्ध मिलि गृद्ध काक-कुल, क्रीड़ाकुल सञ्चरत शृगाल ।।

।। सोरठा ।।

[रावण-वचन]

रे शाखामृग मूढ़, कि करब दूत अबध्य थिक ।।
भूप-नीति बड़ गूढ़, अङ्ग-भङ्ग अङ्गद करब ।।

[अङ्गद-वचन]

सुयश कतय नहि सोर, रे रे राक्षस अधम तोँ ।।
धिक धिक वनिता-चोर, शूर्पनखा-गति हम करब।।

1 प्राण (१,२), 2 वन्ध्य (३) ।

॥ रोला छन्द ॥

[अङ्गद-वचन]

प्रतीहार रवि हमर, अमरपति मालाकारक ॥
वरुण वायु गृह बाढ़, मार्ज्जनी भृत्य अगारक ॥
दिनकर धर कर छत्र, पाककर्त्ता नित हुतवह ॥
रक्षभक्ष्य की हमर, समर मे तुलना करबह ॥

॥ षट्पद छन्द ॥

[अङ्गद-वचन]

रे रे कुमति कठोर मनुष-गणना रघुनन्दन ।
नदी कि गङ्गा होथि वृक्ष की छथि हरिचन्दन ॥
की ऐरावत करटि इन्द्र-वाजी की छथि हय ।
स्त्री की रम्भा होथि मूढ़मति शुन रे निर्भय ।
की कृतयुग युग मे थिकथि धन्वी मनसिज के गणत ।
जनि प्रताप त्रिभुवन प्रकट हनूमान कपि के कहत ।

॥ रोला छन्द ॥

[रावण-वचन]

कुल-कलङ्क-प्रद पुत्र कतहु जनु देथि विधाता ।
बरु जन सहथु विषाद रहथु वन्ध्या भय माता ।
धिक अङ्गद युवराज तपस्वी-दूत कहाबय ।
जे मारल छल बालि तनिक जय सतत मनाबय ।

॥ सोरठा ॥

[अङ्गद-वचन]

उचित कयल रघुनाथ, जे वनपति देल दिव्य गति ॥
बचत की तोहर माँथ, परवनिता-गण-चोर खल ॥

॥ षट्पद छन्द ॥

[रावण-अङ्गद-वचन]

बाँधल किदहुँ समुद्र, अमर-अरि-घर नहि जानल ।
कत हम त्रिभुवन[1]जयी, कतय मर्कट[2] हठ ठानल ।
हसि कह बालि-कुमार, सत्य-संकल्प राम-घन ।
बरिसत कर नाराच, बचत तोहर नहि हित जन ।
एक विभीषण कुशल-मति, लङ्कापति बनले रहत ।
छिन्न भिन्न रावण सकुल, शोणित-मय सरिता बहत ॥

॥ सवैया छन्द ॥

[रावण-वचन]

बाँधल बाँध जलधि मे वानर,
नहि आश्चर्य विदित व्यवहार ।
पर्व्वत सन कह उच्च मृत्तिका,
अति लघुतर हो कीट दिबार[3] ।
लङ्का दग्ध कयल कपि चञ्चल,
से जानक थिक अनल-स्वभाव ।
राम-प्रताप एखन धरि नहि किछु,
हम देखल अछि होयत कि आब ।

॥ शार्दूल-विक्रीड़ित छन्द ॥

[अङ्गद--वचन]

गेली सूर्प्पनखा नटी कपटिनी गोदा-तटी धक्कटी ।
श्रीरामानुज-तीक्ष्ण-खड्ग लगलैँ ख्याता मही नक्कटी ॥
लै सेना खरदूषणादि लड़ला गेला कहाँ से कहू ।
सीतावल्लभ सौँ विरोध कयलैँ से ठाम जैबे अहूँ ॥

1 त्रीभुवन (३), 2 मर्क्कट (१,२), 3 दीबार (३) ।

॥ सवैया छन्द ॥

[रावण-वचन]

अपनहि हाथ माँथ दश काटल,
होम कयल नहि किछु मन त्रास ॥
अति प्रसन्न गौरीश देल वर,
नव नव शिर भेल मन भेल हास ॥
बाँचल विधिक लेख निज़ भाल मे,
मरण मानुष-हाथ सौँ पाब ॥
सकल-लोक-जित बिश भुज हमरा,
विधि अति वृद्ध ज्ञान नहि आब ।

[अङ्गद-वचन]

पतिहीना दीना अबला कत, करय[1] निराकुश अनल-प्रवेश ॥
अथवा इन्द्रजाल-विज्ञानी, काटय अङ्ग दुःख नहि लेश ॥
शुन रावण आब न मुख लज्जा, निज-मुख निज-गुण वर्णन कयल ॥
अक्षयकुमार[2] मारि पुर जारल, तनि कपिकाँ किय बाँधि न धयल ॥

॥ दोहा ॥

कार्त्तवीर्य्य बलि बालि की, नहि त्रिभुवन सौँ भिन्न ॥
तनि प्रताप अनुभव अहँक, मन होइछ नहि खिन्न ॥

॥ सोरठा ॥

[रावण-वचन]

के थिक मानव राम, के लक्ष्मण हनुमान के ॥
करत कठिन संग्राम, हम रावण सुरपति-जयी ॥

॥ सोरठा ॥

[अङ्गद-वचन]

लक्ष्मण-कृत धनु-रेख, लाँघि न सकला शून्य मे ।
हनूमान-बल देख, मान-रहित लङ्का कयल ॥

1 करब (३), 2 अक्षकुमार (३) ।

॥ रूपमाला ॥

बालि-सुत रघुनाथ-चरणक दास अङ्गद नाम ।
मारि तोहरा आज दशमुख करब चौपट गाम ॥
जनकजा मन्दोदरी काँ संग लेब लगाय ।
देब हम पहुँचाय प्रभु-तट विजय-वाद्य बजाय ॥

॥ षट्पद छन्द ॥

[रावण-वचन]

धर धर कपि वाचाल काल बनि हिनका मारब ।
के अछि त्रिभुवन शूर जतय हम रण मे हारब ।
सकल सैन्य सन्नद्ध मार मर्क्कट काँ धय धय ।
त्रास-रहित चल लड़य पराक्रम सङ्गर कय कय ।
धर तपसी दुहु[1] भाय काँ, मार विभीषण अनुज खल ।
रावण आज्ञा देल हम, वार्ता दय दे सकल थल ॥

[अङ्गद वचन]

थिर रह रे दशभाल काल हम तोहर अयलहुँ ।
जयबह कतय पड़ाय चोर काँ चीन्हल धयलहुँ ।
पटकल महि भुजदण्ड चण्ड-धुनि दश दिश व्यापल।
खसल दशानन-मुकुट मही ओ महिधर काँपल ।
चपल-कोप युवराज तहँ, बाज-जकाँ तहिपर टुटल ।
प्रभु-तट फेकल मुकुट से, चाफू जनु नृप-गुण लुटल ॥

॥ दोहा ॥

उत कपिदल हलचल सकल, अरिपुर सौँ की चारि ।
अबइत अछि ग्रहवेग सौँ, रविमण्डल-अनुकारि ॥

॥ सोरठा ॥

हनूमान उड़ि धैल, रवि-उज्ज्वल मुकुटावली ।
सभक स्वस्थ मन कैल, उल्कापातक दिवस भ्रम ॥

---

1 दुइ (३) ।

हसि कहलनि भगवान, अङ्गद-प्रेषित तर्क्क हो ।
करत एहन के आन, राक्षसेन्द्र-शिर-मुकुट हर ॥

॥ चौपाइ ॥

बड़ कौतुक प्रभु मुकुट-निहार । अङ्गद-धन्यवाद उच्चार ॥
उत दशकन्धर मौन विचार । देखि बालि-सुत-बल-विस्तार ॥
त्रस्त अस्त-बल जेहन बटेर । बलि-युवराज-बाज-बल हेर ॥
जाइछ छी कहलनि युवराज । अछि कर्त्तव्य आगु किछु काज ॥
करता रघुनन्दन[1] भगवान । रावण-मुण्डावलि बलिदान ॥
कह रावण मर्क्कट काँ घेर । करत अनर्थ कि चलती बेर ॥
कह अङ्गद हसि कचन प्रमान । अनल-पटल जानथि हनुमान ॥
अङ्गद धरणी रोपल चरण । रावण-गण-मन-संशय-हरण ॥
महि सौँ जे देत चरण उखारि । से विजयी हम मानब हारि ॥
कय बल राक्षस सुभट उठाब । उठय न पद प्रभु-राम-प्रभाव ॥
सभ कह मन मन अदभुत कीश । भेल विपक्ष बुझल जगदीश ॥
रावण चरण धरय चललाह । अङ्गद देखितहिँ हसि उठलाह ॥
कयलह रघुनन्दन सौँ वैर । ककर ककर नहि धरबह पैर ॥
रावण लज्जित बैशला घूरि । अंङ्गद लेल प्रतिज्ञा पूरि ॥
अङ्गद चलल उठल दरबार । रावण गेला वनितागार ॥
मन्दोदरी कहथि शुनु नाह । लङ्कावास कठिन निर्व्वाह ॥
यद्यपि अहाँ कयल बड़ दोष । श्रीरघुनन्दन काँ नहि रोष ॥
दूत पठाओल बालि-कुमार । अहँक कयल नहि किछु अपकार ॥
ठानल हठ नहि मानल नीति । धर्म्म विरोध पाप सौँ प्रीति ॥
वानर एकसर नगरी जार । विधि जौँ वाम वाम संसार ॥
अङ्गद-चरित देखल सभ नयन । सकल पराक्रम सम्प्रति शयन ॥
कयन विसर्ज्जन सचिव-प्रधान । हितकर वचन धरय के कान ॥

1 रघुनन्द (१) ।

॥ सवैया छन्द ॥

जनिक दूत वानर एक आयल, निर्भय सौँ लङ्का-पुर जारि ॥
से हसि गेल कयल की तनिकर, ककरा ककरा सौँ करि मारि ॥
कालरात्रि सीता काँ आनल, ई की जानल प्राकृति नारि ॥
काल-विवश-लङ्केश्वर निश्चय, भावी विषय शकय के टारि ॥

॥ रूपक दण्डक ॥

शुनु प्राणेश सत्य मन मानू
जिबितहिँ छथि से बाली, बलशाली ।
सकल सभा काँ अङ्गद-बल-चय
अनुभव समर-प्रणाली, वागाली ।
जनिक विलोचन बसथि अनुक्षण
लहलह-रसना-बाली, कंकाली ॥
लङ्कावास निराश[1], भेल मन
सुख सौँ बसथु श्रृगाली, काकाली ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

उत अङ्गद-मन हर्ष अपार । पहुँचल कुशल प्रभुक दरवार ॥
प्रभुक प्रदक्षिण कयल प्रणाम[2] । अङ्गद राखल बालिक नाम ॥
राम पुछल कहु कहु युवराज । लङ्का जाय कयल की काज ॥
अङ्गद कहल दशानन-गर्व्व । प्रभुक प्रताप हरल हम सर्व्व ॥
सन्धिक प्रिय नहि खल दशभाल । पयःपान निर्विष नहि व्याल ॥
अबइछ रावण-सैन्य अपार । कयल जाय प्रभु समर-विचार ॥
प्रभु प्रधान काँ देल निदेश । प्रातहिँ युद्ध करत लङ्केश ॥
सावधान रहु कपि-दल राति । मायामय थिक राक्षस-जाति ॥
सभ छल शयन प्रभुक बल पाय । जागल अङ्गद मात्र सहाय ॥
नाम प्रभञ्जनि राक्षसि जाति । रावण-प्रेरित आइलि राति ॥

1 निरास (३), 2 प्रनाम (१,२) ।

से पापिनि[1] काँ मुख्य विचार । सानुज रामक करब संहार ॥
कल कौशल जौँ सिद्ध उपाय । मूलच्छेदैँ[2] वृक्ष सुखाय ॥
देखलनि अङ्गद तकर स्वरूप । ग्रह-दुर्दशा आइलि चुप चूप ॥
ललकारल नहि गेल पड़ाय । डाकिनि काँ नहि रहल उपाय ॥
फनला अङ्गद धयलनि झोँट । लतिअऔलैँ[3] भेली[4] लोटपोट ॥
अति चीत्कार[5] करय से लाग । शब्द शुनल कपि-दल भेल जाग ॥
धर धर पकड़ पकड़ भेल सोर । जाय पड़ाय न राक्षस चोर ॥
केओ[6] भूधर केओ[6] वृक्ष उखाड़ । मार मार लङ्कापुर-राड़ ॥
परिपूरित भेल कतय न शब्द । प्रलयकाल जनि गर्जय अब्द ॥
दशवदनक मुह गेल सुखाय । मुइलि प्रभञ्जनि गञ्जन खाय ॥
कह मन रावण हमरे भाय । बाट घाट सभ देल देखाय ॥
कपिदल मन किछु त्रास न पाब । पुर स्वाधीन जकाँ चल आब ॥
हमरा बालि केँ बैरी भाय । पोसल पन्नग दूध पिआय[7] ॥
कपि चञ्चल-बल की करताह । अनल शलभ सन सब जरताह ॥
गञ्जित मुइलि प्रभञ्जनि जाय । उचित न शत्रुक विजय उपाय ॥
निज प्रधान काँ कहल सकोप । प्रथम करह बानर-बल लोप ॥
शुनितहिँ चलल पटह देल चोट । कातर जीव न एको गोट ॥
गोमुख भेरी बाज मृदङ्ग । पणवानक गोमुख भल[8] रङ्ग ॥
महिष ऊँट[9] खर सिंह सवार । वाहन विविध प्रवह सञ्चार ॥
शूल चाप तोमर तरुआरि । पाश यष्टि शक्तिक भल[10] मारि ॥
लङ्का सकल द्वार सौँ व्यूह । चलल बहुत उत्साही मूह ॥
एतय राम-अनुशासन पाय । कपि-दल चलल न रण पछुआय ॥
केओ[11] गिरि-शृङ्ग-शिखर कर धयल । तरु उखाड़ि केँ आयुध कयल ॥
दल सन्नद्ध सकल छल ठाढ़ । वीरोत्साह बहुत मन बाढ़ ॥
करब दशानन-सुभट संहार । मन मन कपिदल करथि विचार ॥
रोकल लंका चारू द्वारि । कपि-दल प्रबल मचल बड़ मारि ॥

---

1 पापिन (३), 2 मूलछेदैँ (१,२) मूलकछेदैँ (३), 3 लतिऔलै (३) लतिअयोलैँ (१,२), 4 भेला (३), 5 चित्कार (३), 6 क्यो (३), 7 पियाय (१,२), 8 कर (३), 9 ऊट (१), 10 भेल (३), 11 क्यो (३)।

कोटि कोटि यूथप एक बेरि । लंका नगर सगर लेल घेरि ॥
खन उड़ गगन मही घुरि आब । गर्ज तर्ज्ज कपि चपल-स्वभाव ॥
अतिबल राम जयति जयवीर । तथा महाबल लक्ष्मण धीर ॥
राघव-पालित जय कपिराज । सिद्ध मन्त्र[1] रण वानर बाज ॥

॥ षट्पद छन्द ॥

पवन-तनय युवराज, कुमुद नल नील महाबल ।
शरभ केसरी द्विविद, तार वानर भट भल भल ।
जाम्बवान दधिवक्त्र, मैन्द यूथप लंका काँ ।
रोकल सगरो नगर, फानि बाढ़ल तंका काँ ।
तरु पर्व्वत नख दन्त सौँ, राक्षस-बल कयलनि विकल ।
युद्ध-हेतु सभद्वार सौँ, बहरायल क्रोधी सकल ।

॥ चौपाइ ॥

भिन्दिपाल पट्टिश तरुआरि । शूल हाथ राक्षस कर मारि ॥
शोणित मांस पूर रण पंक । तदपि युगल दल बड़ निःशंक[2] ॥
काञ्चन[3]-निभ हय गज रथ हाँकि । राक्षस-शूर कीश-दल ताकि ॥
करय युद्ध हो दश दिश शोर । मत्त महाभट राक्षस घोर ॥
कुपित कपीन्द्र दनुज-जय काज । राक्षस-चटक प्रकट कपि-बाज ॥
देव-अंश-सम्भव सब कीश । विद्यमान रघुवर जगदीश ॥
समर अमर कपि दनुज विनाश । अंकुर-व्रीहि टिड्डी कर नाश ॥
जय हो ततय जतय रह धर्म्म । दनुज-पराजय दशमुख-कर्म्म ॥
चतुर्थांश सैन्यक भेल नाश । विचलित राक्षस-दल मन त्रास[4] ॥
मेघनाद भेल अन्तर्धान[5] । ब्रह्म-दत्त वर मन अभिमान ॥
गगन जाय अस्त्रक कर वृष्टि । नाना विधि अद्‌भुत रण-सृष्टि ॥
वानर-सैन्यक चल नहि हाथ । विकल देखि दल श्रीरघुनाथ ॥
क्षण भरि छला महाप्रभु चूप । कोध कयल धयलनि निज रूप ॥
लक्ष्मण हमर अजय धनु देब । ब्रह्मास्त्रहिँ हम बदला लेब ॥

1 मन्त्री (३), 2 १मे विसर्ग नहि । 3 पाठ तीनूमे अछि "काञ्जन' परन्तु तकर अर्थ नहि किछु होइत अछि । कवीश्वरक लेख-पोथीमे "कञ्चन' स्पष्ट अछि । 4 त्राश (३), 5 अन्तरर्ध्यान (३) ।

तत्क्षण सभकाँ हम देब जारि । हमरा सौँ के करता मारि ॥
शुनि घननाद गेल घुरि गेह । मन मानल समरक सन्देह ॥
वानर-दल समर-क्षत-अङ्ग । ककरो छल[1] नहि जीवक रङ्ग ॥
रघुनन्दन कह शुनु हनुमान । एखन प्रयास करत के आन ॥
क्षीर-महोदधि सत्वर जाउ । द्रुहिणाचल औषधि[2] लय आउ ॥
अपन सकल दल विकल जिआउ । वीर-सुयश त्रिभुवन मे पाउ ॥
शुनि हनुमान पवन-जव[3] जाय । आनल ओ गिरि सकल उठाय ॥
औषधि[2]-बल बाँचल सभ कीश । पालक स्वयन्देव जगदीश ॥
जत[4] सौँ आनल नग हनुमान । राखल ततहि कहल भगवान ॥
वानर-दल कर भैरव नाद । छुटल समर-श्रम भरण-विषाद ॥
मन विस्मित शुनि लंकाधीश । कयलक कठिन काल-बल कीश ॥
विधि राघव-अरि ध्रुव निर्म्माय । वर्त्तमान देल नगर पठाय ॥
हटि नहि रहब करब संग्राम । दूरि करब नहि रावण-नाम ॥
मन्त्रि बन्धु यूथप जे शूर । करथु सकल जन आलस दूर ॥
करथु युद्ध सभ मन उत्साह । हम नहि कयल ककर निर्व्वाह ॥
हमरा कष्ट समय अछि आज । त्रासेँ घर रहला किछु व्याज ॥
अरि सम तनिकाँ हम देब मारि । अपनहिँ हाथ धरब तरुआरि ॥
त्रासेँ चलल समर सभ शूर । रण-पण्डित बल-कला-सुपूर ॥
अतिबल चलल नाम अतिकाय । तथा प्रहस्त प्रधान कहाय ॥
नाम महोदर ओ महानाद । लड़य चलल रावण अहलाद ॥
नाम निकुम्भ देव-अरि नाम । वानर सङ्ग कयल सङ्ग्राम ॥
देवान्तक एक नाम कहाब । वीर नरान्तक नाम धराब ॥
अगणित असुर कहब कत नाम । क्रुद्ध युद्ध कर जय मन-काम ॥
वानर-दल मे गेल समाय । उद्यत युद्ध कहल नहि जाय ॥
भिन्दीपाल भुशुण्डिक मारि । बाण परश्वध चल तरुआरि ॥
नाना तरहक धयलय अस्त्र । पहिरि पहिरि रण लोहक वस्त्र ॥
कपि-यूथप सङ्ग रण आघात । सहय तुरङ्ग तुरङ्गम-लात ॥

1 क्षल (१,२), 2 तीनूमे "ओषधि", 3 तीनूमे पाठ अछि "यव" परन्तु वेगार्थक ई वर्गीय "ज" सँ हो। 4 तेज (३)।

पर्व्वताग्र तरुवर नख दन्त । एहि[1] बल कपि कर राक्षस-अन्त ॥
कत जन काँ दृढ़ मूका मार । नख सौँ तनिकर उदर विदार ॥
कत राक्षस काँ मारल राम । कत काँ कपि देल 'निर्ज्जर-धाम ॥
कत राक्षस काँ अङ्गद मार । अगणित हति हनुमान प्रचार[2] ॥
कत जन काँ लक्ष्मण कर नाश । समर जितल यूथप निस्त्रास ॥
समर-जयी कपिराज-प्रताप । ठाढ़ महाप्रभु कर शरचाप ॥

इति श्रीचन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः ॥

1 यहि (१), 2 प्रचर (३)।

मिथिला-भाषा रामायण

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ सोरठा ॥

जखन शुनल बिस-कान, समर शयित अतिकाय-गण ।
दशमुख शोक-मलान, कोप-विवश हलचल पड़ल ॥

॥ चौपाइ ॥

मेघनाद लङ्का-रखबार । रावण कयल लड़य सञ्चार ॥
विकट सुभट राक्षस लेल सङ्ग । चढ़ल दिव्य रथ कोप अभङ्ग ॥
अस्त्र शस्त्र सभ लय लेल ताकि । प्रभु-सन्मुख रथ चलला हाँकि ॥
आशीविष सन मारल बाण । कत जन कपिक छयित सन प्राण॥
सुग्रीवादिक यूथ-प्रधान । सभ रण शयन रहित भेल ज्ञान ॥
कोप विभीषण देखलहिँ बाढ़ । गदापाणि निर्भय रण ठाढ़ ॥
कलकौशल सारथि सौँ माँगि । मय-देल गमहिँ चलाओल साँगि ॥
देखि विभीषण-नाशिनि शक्ति । बध-अयोग्य हमरा मे भक्ति ॥
अभय देल रण मे रघुवीर । लक्ष्मण आगु धनुष लय तीर ॥
लक्ष्मण-हृदय लाग से साँगि । विषम तेहन शक पानि के माँगि ॥
मायाशक्ति जते संसार । सभहिक लक्ष्मण परमाधार ॥
शेष महाप्रभु से अवतार । सहथि सकल धरणिक जे भार ॥
कि करत ततय शक्ति-सङ्घात । जनि फण धरणि सिरिस-फुलपात॥
कर रण मानव-लीलाभाव । रावण-मन उत्साह बढ़ाब ॥
लक्ष्मणकेँ मूर्छित मन जानि । चलब उठाय यहन मन मानि ॥
कर सौँ बल सौँ जाय उठाब । जगदाधारक गरिम सुभाव ॥
उठला नहि कत कयल प्रयास । गर्व, उठाओल[1] छल कैलास ॥
तेहन अनर्थ, देखि हनुमान । दौड़ला प्रबल जेहन पवमान ॥

---

1 ग्रो (१,२) । [illegible]

रावण काँ मारल तत जाय । एक मुका दृढ़ हृदय तकाय ।।
लगइत अशनि-पतन प्रतिभसल । रोकि ठेघुन[1] मुहभर से[2] खसल ।।
सभ मुख सभ लोचन सभ कान । शोणित बहल पड़ल अज्ञान[3] ।।
दशमुख घुर्णित-नयन अवाक । रथपर बैशल भयवश ताक ।।

॥ सोरठा ॥

भुज भरि लेल उठाय, हनूमान सौमित्रि काँ ।
देल ततय पहुँचाय, जगन्नाथ रघुनाथ तट ।।
रावण रथपर जाय, बैसलि शक्ति अनन्त तजि ।
दशमुख संज्ञा-पाय, धयल शरासन कोपवश ।।

॥ रूपमाला ॥

सँभरि[4] रथपर कर-शरासन, चलल रावण क्रुद्ध ।।
रामचन्द्रक निकट पहुँचल, करक निर्भय युद्ध ।
हनूमान अमान-बल, वरयान चढ़ि रघुवीर ।।
कयल धनु-टङ्कार जेहन, अशनि-धुनि गम्भीर ।।
कहल प्रभु गम्भीर वचनहिँ, रे दशानन चोर ।।
कतय जयबह एहि[5] समरसौँ, निकट अन्तक तोर ।।
हनल जे राक्षस-जनालय, तोहर अनुचर लोक ।।
तेहन गति हम करब, सम्प्रति छुटत तोहर शोक ।।

॥चौपाइ ॥

रामक वचन शुनल[6] दशभाल । भ्रुकुटी कुटिल नयन सभ लाल ।।
पवन-तनय काँ शत्रु विचार । शर अनेक तनि काँ तन मार ।।
शर-व्रण-व्यथा वृथा मम मान । केसरि-नाद करथि हनुमान ।।
देखि शरजर्ज्जर मारुति-अङ्ग । कालरुद्र सम श्रीप्रभु-रङ्ग ।।
अश्वसहित रथ ध्वज रथवाह । धनुष शस्त्र सभ तन सन्नाह ।।
छत्र पताका सभ देल काटि । रघुवर शरक सहय के साटि ।।
रावण हृदय अशनि-शर मारि । भूधर उपर जेहन पाकारि ।।

---

1 केवल तृतीय संस्करणमे ई 'ठेघुन' अछि, नहि तँ पूर्वक दूहू संस्करणमे तथा कवीश्वरक लेख-पोथीमे अछि 'ठेघुन'। 2 सँ (३), 3 ग्या (१,२)। 4 सम्हरि (३), 5 ई (१,२), 6 सुलन (३)।

थर थर दशमुख रण मे काँप । कर सौँ ससरि ससरि खस चाप ॥
रघुपति देखल रावण-रङ्ग । रविनिभ मुकुट शरैँ कय भङ्ग ॥
रे रे दशमुख खल कृशप्राण । एखन प्रहार करब नहि बाण ॥
घुरि कें लङ्का लज्जित जाह । प्रातहिँ अबिहह जनु अगुताह ॥
देखिहह हमर समर-बल प्रात । अहह रहह हनुमान सौँ कात ॥
मुका तनिक लगतौ एक गोट । यमपुर जयबह कर्म्मक छोट ॥
शुनि रावण लज्जित चललाह । विकल अपन बल पाओल थाह ॥
लक्ष्मण मूर्च्छित धरणी-शयन । सकरुण देखल पङ्कजनयन[1] ॥
कत विलाप कय कय प्रभु कान । विकल सकल अङ्गद हनुमान ॥
ततय विभीषण कहल उपाय । लङ्कादूत महाबल जाय ॥
वैद्य सुषेण जनिक थिक नाम । तनिकाँ लय आनथि एहि[2] ठाम ॥
ओ औषधि[3] कहता अनुकूल । लक्ष्मण काँ सञ्जीवन-मूल ॥
प्रभु-आज्ञा मारुत-सुत जाय । आनल तनिकाँ गमहिँ उठाय ॥
कहल वैद्य औषधिक ठेकान । रातिहिँ भरि मे जौँ एत आन ॥
तौँ बच लक्ष्मण वीरक प्राण । प्रात होयत होयत नहि त्राण ॥
के जायत लायत एत राति । सह सह करइछ राक्षस जाति ॥

॥ सोरठा ॥

नल त्रिरात्र घुरि आब, मैन्द द्विविद दुइ राति मे ।
से सुग्रीव-प्रभाव, एकराति मे नील घुर ॥
चारि पहर मे आब, जाय द्रुहिणगिरि बालिसुत ॥
अड़ड़ा लागल नाव, राम विकल सकरुण कहल ॥

॥ चौपाइ ॥

समर-शूर रुद्रक अवतार । हनुमानक मुख राम निहार ॥
महावीर द्रुहिणाचल जाउ । मृतावस्थ सौमित्रि[4] जिआउ ॥
कह हनुमान यथाज्ञा पाय । लायब पर्व्वत त्वरित उठाय ॥
सञ्जीवन औषधि अछि हाथ । चिन्ता परिहरु श्रीरघुनाथ ॥

---

1 ज्ञ (३), 2 य (१,२), 3 ओषधि (१,२) एवं अन्यत्रहु (३), 4 सौँ मित्र (३) ।

जाइत अबइत हयत न देरि । आनब सञ्जीवन काँ फेरि ।।
सकरुण हृदय कयल नहि जाय । कपि-दल सकल विकल अकुलाय ।।
रावण काँ वार्त्ता भेल कान । औषध काज चलल हनुमान ।।
कालनेमि-गृह आतुर जाय । चिन्तातुर रावण असहाय ।।
बैसला अर्घ्यादिक सन्मान । से कयलनि जे उचित विधान ।।
अति आश्चर्य्य कथा ई लाग । राजागमन सुभवनक भाग ।।
कालनेमि कह कहु वृत्तान्त । नृप भय की अयलहुँ एकान्त ।।
के थिक से कहु करु जनु व्याज । आनन-कमल मलिन भेल आज ।।
रावण कहल वचन छल-हीन । हमरहु सङ्कट काल-अधीन ।।
मय-देल साँगि चलाओल आज । लक्ष्मण मूर्छित से भल काज ।।
सञ्जीवन आनय हनुमान । अति-जव[2] कयल वीर प्रस्थान ।।
कपट मुनिक पथ वेष बनाउ । मारुत-नन्दन काँ अटकाउ ।।
प्रातहिँ मरता लक्ष्मण नाम । विजय हमर होयत सङ्ग्राम ।।
रावण-वचन शुनल से कान । के रोकत चलइत हनुमान ।।
कालनेमि कह आज्ञा करब । मारीचक जकँ[3] तकइत मरब ।।
हत भेल पुत्र पौत्र प्रिय लोक । अपनैँ काँ मन नहि हो शोक ।।
हमर असुर-कुल-वीर विनाश । अपनैँ काँ अछि जिबइक आश ।।
कि करब सीता कि करब राज । डर सौँ समुचित जन के बाज ।।
मुनिगण सङ्ग बसू वन जाय । संयम नियम करू समुदाय ।।
मायामय जानू संसार । सभ जनलें[4] अछि ज्ञानविचार ।।
हम उपदेश कहै छी गूढ़ । काल-विवश ज्ञानी हो मूढ़ ।।
ताकब गय की देश विदेश । लोचन-पथ निज पुर परमेश ।।
रामचन्द्र विष्णुक अवतार । लक्ष्मण शेष धरणि धर भार ।।
सीता विष्णुक माया जानि । हठ परित्यागु हेतु की हानि ।।
हृदय-कमल प्रभु-ध्यान लगाउ । ई संसार-जलधि तरि जाउ ।।

---

1 करू (३), 2 यंव (१,२), 3 जक (१,२), 4 लैं (३) ।

भजु रघुनन्दन सीता-सहित । वैरि-भावनादिक सौँ रहित ॥
एखनहुँ धरि अछि विजयक आश । तूर भूर जनु लाग हुताश ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

ललकि उठल रावण खिसिआय । कालनेमि-मुह गेल सुखाय ॥
रामचन्द्र मे तोहरा[1] प्रीति । के न कहत थिक बहुत अनीति ॥
अभिप्राय हमरा किछु आन । ई शिखबय लगला अछि ज्ञान ॥
करह करह गय कहल उपाय । नहि तौँ यमघर देबहु पठाय ॥
कालनेमि मन कहि चललाह । उचित कहल लागल अधलाह ॥
तुहिनाचल पर तपवन कयल । मुनिसम[2] स्वाङ्ग सकल से धयल ॥
योजन-मित एक आश्रम नीक । बुझि पड़ जनु मुनि जनहिक थीक ॥
शिव शिव कहथि सुवेष विवेक । कालनेमि मुनि शिष्य अनेक ॥
से आश्रम देखल हनुमान । लगला करय हृदय अनुमान ॥
की भोथिआय गेल अछि पन्थ । कहता सभटा निकट महन्थ ॥
बाट सोझ हुनका सौँ जानि । जायब तखन पीबि लेब पानि ॥
आश्रम मध्य गेला हनुमान । ऐन्द्रयोग मुनि कर सविधान ॥
देखल शिव-पूजन-विधि वेश । मानल चित्त पुण्यमय देश ॥
मारुतनन्दन कयल प्रणाम । हनूमान सभ जन कह नाम ॥
रामकाज सौँ क्षीर[3]-समुद्र । जाइत छी पालक छथि रुद्र ॥
हमरा सहज त्रिकाल-ज्ञान । भाग्यहिँ भेट भेल हनुमान ॥
रामक दिव्य विलोचन गर्व्व । बचला लक्ष्मण वानर सर्व्व ॥
छोट कमण्डलु वारि न पूर्त्ति । तृष्णा होइति अद्भुत मूर्त्ति ॥
कतय जलाशय से दिय देखाय । सुख सौँ पान करब जल जाय ॥
मुनि-आज्ञा शुनि लेल बटु आगु । मारुतसुत तनि पाछाँ लागु ॥
आँखि मूनि[4] अहँ कय जलपान । सत्वर आउ निकट हनुमान ॥

---

1 तोहारा (१), 2 सभ (३), 3 छीर (३), 4 मुनि 5 ।

मन्त्र एक हम देब उपदेश । त्वरितहिँ देखब औषधि वेश ।।
गेला जलाशय लोचन मूनि । पिबयित पानि शब्द भेल शूनि ।।
महती मकरी पयरे धयल । पवनक पुत्र पराक्रम कयल ।।
तनिकर मुह देल हाथेँ फाड़ि । अन्तरिक्ष[1] गेलि से तन छाड़ि ।।

।। रूपमाला ।।

दिव्यरूप-धराङ्गना से रूपमाली नाम ।
कहल सभ हनुमान काँ जे कपट छल तहिठाम ।।
हे कपीश्वर अहँक चरणक परशँ छूटल शाप ।।
मुनि न थिक ओ विकट राक्षस कालनेमि सपाप ।।

ओकर जनु विश्वास-करु[2] मन मारु तनिकाँ जाय ।
जाउ द्रोणाचल त्वरित अहँ बाट विघ्न मेटाय ।।
ब्रह्म-जनपद हम चलै छी कयल पद-सय्योँग ।
तकर फल निष्पापिनी हम छुटल शापज[3] भोग ।।

।। चौपाइ ।।

शुनल देखल कपिवर से चरित । रुष्ट फिरल आश्रम मे त्वरित ।।
कालनेमि कह दहिना कान । लाउ निकट झट दय हनुमान ।।
अचित दक्षिणा जे अहँ देब । हम सन्तुष्ट पुष्ट भय लेब ।।
मुका एक मारल हनुमान । ग्रहण करू[4] दक्षिणा विधान ।।
प्रकट भेल खल मरइक काल । लड़ल भिड़ल कय मायाजाल ।।
कतय कमण्डलु मायाजाल । कालनेमि काँ धयलक काल ।।
गेल महाबल गिरिवर द्रोण । चिन्हल न पर सञ्जीवन कोन ।।
गिरि समस्त काँ लेल उठाय । पवनक पुत्र पवन जकँ[5] जाय ।।
उत रघुनन्दन सकरुण चित्त । करथि विलाप इ लोक निमित्त ।।
लक्ष्मण काँ लेल हृदय लगाय । कियक न प्राण प्रथम विधि जाय ।।
मसक-पक्ष-पवनक आघात । उड़ि बरु जाथि धराधर सात ।।
पन्नगेश काँ भेकी[6] खाय । चीटी[7]-उदर करीन्द्र समाय ।।

---

1 अन्तरीक्ष(१,२), 2 करू (१,२), 3 शापन (३), 4 करु (१,२), 5 जक (१,२) 6 धेकी(३), 7 चीठी (३)।

मेषी देखि सिंह वन त्याग । सुधा-अधिक मधु हो कटु साग ।।
ई बरु होय कथा थिक अल्प । मिथ्या नहि रघुकुल-सङ्कल्प ।।
रहल मनोरथ ठामहिँ ठाम । अस्त भेल रघुवंशक नाम ।।
लक्ष्मण सन नहि भेटता भाय । विधिहुक घर अतिशय अन्याय ।।
रावण जिबइत रहबे कयल । कथि लय बाण धनुष कर धयल ।।
चौदह वर्षक अछि अवसान । समय कयल विधि आनक आन ।।
जायब की घर बनल सशोक । शुनि शुनि कि कहत ओतयक लोक।।
शिव शिव जीवन हमरो व्यर्थ । रमणी-कारण मरण अनर्थ ।।
वैदेही ई शुनतिह कान । मरती विलपि होइछ अनुमान ।।
माता तकयित हयती बाट । नोरक लेल धरणि धुर पाट ।।
धिक धिक जीवन एहि[1] संसार । कुलकलङ्क बिगड़ल व्यवहार ।।
दुष्ट दैव[2] काँ कि कहब आज । भल जन बस[3] नहि तनिक समाज।।
उठु उठु सत्वर लक्ष्मण भाय । दिनमणि-कुलक कलङ्क मेटाय ।।
शिव शिव कतय[4] गेला हनुमान । जनि कर[5] अर्पल तन ओ प्राण ।।
देखि पड़इछ सभटा प्रत्यक्ष । ककरा केओ नहि दैव विपक्ष ।
की राक्षस हनुमान सौँ युद्ध । कयलक पथ मे हमर विरुद्ध ।।
महावीर काँ कयलक आँट । राक्षस-संघ कि रोकल बाट ।।
जौँ जौँ बीतलि रजनी जाथि । रामचन्द्र तौँ तौँ अकुलाथि ।।
केओ सेनाधिप प्रश्न[6] विचार । चढ़ि तरु भूधर उपर निहार ।।
औषधि सञ्जीवनक समीप । रविसम कान्ति अखण्डित दीप ।।
नभ मे शुनि पड़ धुनि बड़ गोट । हर्ष विषाद हृदय नहि छोट ।।
रविशशि विनु की गगन प्रकाश । क्षण मन हर्ष क्षणहिँ मन त्रास ।।

॥ सोरठा ॥

गिरि समेत हनुमान, प्रभु-सन्निधि आयल मुदित ।
शुनु रघुपति भगवान, गिरि आनल औषधि सहित ।।

---

1 यहि (१,२), 2 देव (३), 3 पाठ तीनूमे अछि तालव्यान्त "वश" परन्तु अर्थसँ दन्त्यान्त उचित बूझि पड़ैत अछि । कवीश्वरक लेख-पोथीमे सएह अछि । 4 करत (३), 5 जनिकाँ (३), 6 "प्रष्ण' ई पाठ तीनूमे अछि, लेख पोथीमे नहि ।

हर्षं कहल नहि जाय, करुण गमन वीरागमन ।
प्रभु लेल हृदय लगाय, जगत्प्राण-नन्दन बली ॥

॥ मत्तगजेन्द्र छन्द ॥

वैद्य सुषेणक सम्मति सौँ, रघुनन्दन दिव्य महौषधि लैकैँ ।
लक्ष्मण वीरक प्राण बचाओल, जे अनुपान[1] यथाविधि दैकैँ ॥
सूतल[2] जागल-रीति जकाँ, उठि ठाढ़ तहाँ रण हर्षित भैकैँ ।
गेल कहाँ रणसौँ खल[3] रावण, मारब आज धनुर्द्धर धैकैँ ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

ई कहयित लक्ष्मण लय अङ्क । लागल नहि रघुवंश कलङ्क ॥
महावीर रुद्रक अवतार । कपट-महोदधि कयलहुँ पार ॥
देखल निरामय लक्ष्मण वीर । अहँक प्रसाद भेल मन थीर[4] ॥
कष्ट नष्ट कयलहुँ हनुमान । ई उपकार-दक्ष के आन ॥

॥ रूपक ॥

॥ दण्डक छन्द ॥

जय जय अतिबल रघुवर सानुज
कहि कपि कयल तयारी, बड़ भारी ॥
रण-बाजा सभ बाजय लागल
गिरि चढ़ि देखथि[5] मारी, त्रिपुरारी ॥
चलल सकल दल लङ्कागढ़ पर
तरुवर लेल उखारी, गिरिधारी ॥
कपि सुग्रीव विभीषण अनुमति
रोकय चारू[6] द्वारी, रिपुहारी[7] ॥

---

1 पाठ अछि तीनूमे "अनुपाम" परन्तु से अर्थसँ संगत नहि बूझि पड़ैत अछि। अतएव कवीश्वरक लेख-पोथीक पाठ देल अछि। 2 शूतल (१,२), 3 खस (३), 4 वीर (३), 5 देखति (३), 6 चारु (३), 7 त्रिपुहारी (३)।

॥ जयकरी छन्द ॥

रामक शर सौँ जर्ज्जर काय । बैसल निज सिंहासन जाय ॥
सिंहक त्रासित जनु गजराज । पराभूत फणि गरुड़-समाज ॥
कहल दशानन जन सौँ खेद । शरपीड़ित तन मन निर्व्वेद ॥
मरण[1] कहल विधि मानुष-हाथ । सैह उपस्थित छथि रघुनाथ ॥
अनरण्यक हमरा अछि शाप । से दिन निकट हृदय बड़ काँप ॥
कहयित छा अनरण्यक उक्ति । से दिन लगिचायल सभ[2] युक्ति ॥
परमात्मा हमरा कुल आबि । लेता जन्म समय अछि भावि ॥
तोहरा पुत्रादिक जे हयत । राम-हाथ मृति पर-पुर जयत ॥
कहि अनरण्य गेला परलोक । तकरे कारण उपगत शोक ॥
रामक हाथ हमर अछि मरण । त्यागब हम नहि वीराचरण ॥
सभजन मिलि केँ तहँ अहँ जाउ । कुम्भकर्ण काँ जाय जगाउ ॥
कहबनि हमर दशा सभ गोट । बड़ गोट काय कर्म्म की छोट ॥
रावण काँ प्राणान्तिक कष्ट । अहँ की शयन-सुखी धिक भ्रष्ट ॥
सभ जन कयलनि बहुत उपाय । कुम्भकर्ण लग ढोल बजाय ॥
बहुत उपाय करय लगलाह । कुम्भकर्ण तैँ नहि जगलाह ॥
हुनकर वनिता देल उपदेश । लय आनू गायिनि जनि वेश ॥
उठता शुनि शुनि वनिता-गान । जे कहनीय कहब से कान ॥
एक दश कानन एक दिश नाँच[3] । भोग रहल लङ्का दिन पाँच ॥
कुम्भकर्ण उठला निज सेज । लय पहुँचल राक्षस गण भेज ॥
गिरिसम मासुक ढेरी कयल । तीव्र सुरा अगणित घट धयल ॥
मदिरा[4] मासु गेला पिबि खाय । कहल बजौलनि बड़का भाय ॥
जाय भूप काँ कयल प्रणाम । दीन वचन कह दशमुख नाम ॥
कुम्भकर्ण हम पड़लहुँ कष्ट । लङ्का-विभव-निवह हत नष्ट ॥
पुत्र पौत्र बान्धव हत समर । वानर कुशल बनल अछि अमर ॥
वानर राक्षस-भट संहार । समुचित की कर्त्तव्य विचार ॥

1 वरण (३), 2 सम (३), 3 नाच (३), 4 एहिठामसँ नओ गोट चौपाइ, एक गोट सोरठा ओ पुनि एगारह गोट चौपाइ तृतीय संस्करणमे नहि अछि। बूझि पड़ैत अछि जे प्रथम संस्करणक २६६ पृष्ट तेसरमे एकदम छुटि गेलैक ।

रामचन्द्र सुग्रीव-सहाय । लङ्का पहुँचल उदधि बँधाय ॥
हमरो दशा देखै छी नयन । अहँ चिर काल करै छी शयन ॥
सकल सुभट सौं लङ्का हीन । बचि रहलहुँ अछि गनती तीन ॥
वानर मरय करू से काज । काज जगाय मँगाओल आज ॥

॥ सोरठा ॥

अट्टहास शुनि कयल, कुम्भकर्ण भ्राता-वचन ।
नीति कान नहि धयल, पूर्वहि मन्त्र-विचार मे ॥

॥ चौपाइ ॥

उपगत शत शत जत तत पाप । दिन दिन छिन हो प्रबल प्रताप ॥
पूर्व कहल नारायण राम । सीता आदि प्रकृति श्री-नाम ॥
नगर विशाला वन गिरि सानु । हम देखल नारद जनु भानु ॥
कत चललहुँ अछि हे मुनिनाथ । हम पूछ करु एक न लाथ ॥
सकल देव काँ मन्त्र-विचार । होइछ ततय कयल सञ्चार ॥
अहँ सौं रावण सौं सभ अमर । पीड़ित कय न शकथि केओ समर॥
कहल विष्णु काँ होउ सहाय । रावण काँ मारू महि जाय ॥
त्राहि त्राहि हम धयलहुँ चरण । मानुष-कर अछि तनिकर मरण ॥
मानुष बनि प्रभु सुख-अवतार । हरण करू अवनिक सभ भार ॥
नारायण कयलनि स्वीकार । सैह थिकथि रघुवर अवतार ॥
भल भय भय सौं रहु घर बैशि । नहि तौं मरण समर-महि पैशि ॥
तनिक चरण-पङ्कज करु भक्ति । यावत अछि एतबो तन-शक्ति ॥
भक्तिभाव सौं पायब ज्ञान । भक्ति मुक्तिदा वेद प्रमाण ॥
सहज उपाय करब नहि[1] भाय । दुर्म्मति धरब मरब रण जाय ॥
नारायणक बहुत अवतार । कहयित कथा बहुत विस्तार ॥

1 ननि (३) ।

सभ सौँ श्रेष्ठ ज्ञानि अवतार । से आयल छथि लङ्काद्वार ॥
नहि उपाय सम्प्रति किछु आन । रामक शरण करण कल्याण ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ॥

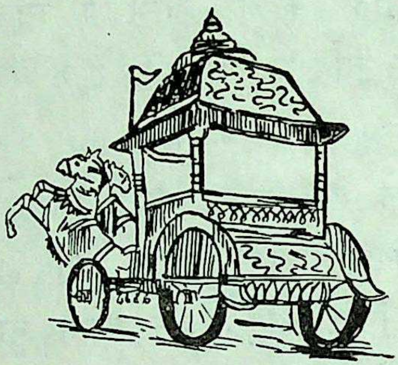

॥ अथ अष्टमोध्यायः ॥

॥ सोरठा ॥

शुनल वचन लङ्केश, कुम्भकर्ण[1] समुचित कहल ।
मानल हृदय कलेश, क्रोधातुर चहलनि उठय ॥
शिखइक नहि अछि ज्ञान, बजबाओल से काज करु॥
जाउ जौँ मन किछु आन, करु सुषुप्ति निद्रा-विकल॥

॥ चौपाइ ॥

कुम्भकर्ण शुनि रावण-उक्ति । कालविवश काँ नीति न युक्ति ॥
समुचित कहल कयल ओ कोप । पापक उपचय शर्म्मक लोप ॥
महागोट पर्व्वत सन काय । चलला समर विषाद विहाय ॥
रण-महि[2] कयल तेहन से नाद । सातो जलधि रहित-मर्याद ॥
अति भयकारक कपि-दल जान । कुम्भकर्ण थिक काल-समान ॥
झपटि झपटि वानर कैँ खाथि । गिरि सपक्ष सन सत्वर जाथि ॥
मुदगर लय कर तेहन घुमाब । कालदण्ड गुणि के लग आब ॥
बहुतक चूर चरण ओ हाथ । बहुत जनक भेटय की माथ ॥
जाय विभीषण कयल प्रणाम । गदापाणि कहलनि निज नाम ॥
भाय दया करु भय गेल भेट । रावण रहल न कहल समेट ॥
बहुत कहल हम नीति बुझाय । अनुचित मानल बड़का भाय ॥
कि कहब सहल बहुत अपमान । रहितहुँ निकट न बचयित प्राण ॥
मारल लात हाथ तरुआरि । असमन्धिक जकँ धिक पढ़ गारि ॥
राम-शरण हम धयल विचारि । सचिव-चारि-युत कुशल निहारि ॥
अमृत त्यागि विष तिष के खाय । चुम्बन करय व्यालमुख जाय ॥
कुम्भकर्ण लघु भ्राता जानि । मिलि कहलनि की तोहर हानि ॥

---

1 करण (३), 2 महँ (३) ।

महाभागवत थल भल पाय । कुल मे कमल भेलहुँ एक भाय ।।
नारद सौँ हमरा सभ ज्ञात । जाउ निकट सौँ सम्प्रति कात ।।
के थिक अपन बुझी नहि आन । सुरा हरल जतबो छल ज्ञान ।।
कहलनि कुम्भकर्ण जे भाय । कह सुग्रीव चरण लपटाय ।।
कनयित कनयित भेला विदाय । कयल निवेदन प्रभु-पद जाय ।।
कुम्भकर्ण किछु श्रम नहि लेथि । करपद सौँ कपि-दल पिसि देथि ।।
मुका[1] एक मारल हनुमान । खसला कटला गाछ समान ।।
कुम्भकर्ण रण उठल सम्भाहि । हनुमानक सङ्ग बजरल मारि ।।
हनुमानक पर मुका[1] चलाय । मूर्छित कय देल अवनि शुताय[2] ।।
नलनीलादि सहित कपिराज । पटकल छल सभ किछु नहि बाज ।।
मातल जेहन प्रबल मातङ्ग । कुम्भकर्ण से धयलनि रङ्ग ।।

।। सवैया छन्द ।।

कण्ठकूप मे कपिपति जाँतल, सभ[3] प्रधान सङ्ग्राम खसाय ।
कुम्भकर्ण घुरि लङ्का चलला, ककरो बुत[4] नहि बनय उपाय ।।
गमहि गमहि अति साहसि कपिपति, हुनकर काटल नासा कान ।
उड़ि[5] नभ अपन कटक चल अयला, कुम्भकर्ण काँ भेल न[6] ज्ञान ।।

।। बरबा[7] छन्द ।।

सूर्प्पनखा काँ समुचित, भेलथिन भाय ।
रूप[8] भयङ्कर तिनकर, कहल न जाय ।।

।। दोबय छन्द ।।

लय त्रिशूल कर फिरल भयङ्कर कालमूर्ति जनु आबै ।।
नाशा-श्वास-पवन सौँ कपिगण योजन बहुत उड़ाबै[9] ।।
एक जनक शक से नहि भेले, जे क्षण रण अटकाबै ।
प्रबल वेग चल प्रवह जेहन बह, कत कपि नभ लटकाबै ।।
नहि सुवाहु[10] खरदूषण नहि हम, नहि कबन्ध वनचारी ।
नहि हम शम्भु-धनुष जे तोड़लह, तथा ताटका नारी ।।

---

1 मुक्का (३), 2 सुताय (३), 3 सफ (३), 4 बुतै (३), 5 ३मे "नभ" नहि । 6 ३मे 'न' नहि । 7 वावर (३), 8 रुप (३), 9 उराबै (३), 10 मुवाहुं (३) ।

॥ सूर्पनखा मारीच नीच[1] नहि, जड़ जलनिधि नहि जानह ।
॥ रे रे राम विश्वबलमर्दन, कालमूर्त्ति मन मानह ॥

॥ चौपाइ ॥

वानर विकल देखल रघुनाथ । क्रुद्ध धनुष शर लेलनि हाथ ॥
फेकलनि अस्त्र एक वायव्य । अस्त्रसहित काटल भुज सव्य ॥
खमल हाथतर कपि जे पड़ल । रहि गेल ठामहिँ नहि संचरल ॥
राक्षस लय कर शाल विशाल । रघुवर पर दौड़ल तत्काल ॥
इन्द्र-अस्त्र प्रभु मारल ताहि । शालसहित कटि गेल तनि बाँहि ॥
भुजयुग-रहित चलल खिसिआय । रावण काँ प्राणाधिक भाय ॥
अर्द्धचन्द्र दुइ सौँ बुझि बयर । काटि देल प्रभु तनिकर पयर ॥
छिन्नचरण महि खसला ढेर । ओँघड़ायित[2] दौड़ल से फेर ॥
बड़वामुह सन मुह बड़ बाय । विधु लग राहु ग्रसय जनु जाय ॥
शिलाखण्ड प्रभु शरपर लेथि । कुम्भकर्ण-मुह भरि भरि देथि ॥
तदपि न मरय करय[3] सञ्चार । ओँघड़यितहुँ कपिदल संहार ॥
तखन ऐन्द्रधनु अशनि समान । राम धनुष पर कर सन्धान ॥
फेकल कयल तनिक संहार । वासव वृत्र समर व्यवहार ॥
कुम्भकर्ण शिर लङ्का—द्वारि । तनिक पतन तन वारिधि वारि ॥
धर तल जलचर जे पड़ि गेल । तनिकर मरण अकालहिँ[4] भेल ॥
देखल समर अमर-गण गगन । कयलनि सुमन-वृष्टि मन-मगन ॥
खग पन्नग मुनिगण गन्धर्व्व । अतिशय हृदय हर्ष भर सर्व्व ॥
नारद मुनि अयला तहिठाम । स्तुति कर धन्य धन्य प्रभु राम ॥
विजय सदवसर बजबथि वीण । धरणीभार कयल प्रभु क्षीण ॥
कुम्भकर्ण सन मारल शूर । सज्जन मुनिक मनोरथ पूर ॥
के छथि जनिकाँ देल न[5] कष्ट । सुखित आज छथि दिग्गज अष्ट ॥
अपनैँक तकलैँ हो संसार[6] । मुनलय आँखि सृष्टि-संहार ॥
प्रकृति पुरुष साक्षी से[7] काल । व्यक्ताव्यक्त त्रिगुणमय जाल ॥

---

1 नीव (३), 2 औँध···· (३), 3 कयल (३), 4 अकालहि(३), 5 देलनि (३), 6 संहार (३), 7 मे (३) ।

सबहिक मूलभूत अहँ राम । वार वार तैँ करी प्रणाम ॥
स्मरण नाम कीर्त्तन गुण करथि । कथा-कथन से संसृति तरथि ॥
सभ-ज्ञाता काँ हम की कहब । सुर मिलि नभ सौँ देखयित रहब॥
कृपा करू[1] जाइत छी आज । सिद्धि कयल धरणी सुरकाज ॥
चलल मनोगति विधिक समाज । सुरमण्डलि सुख गगन विराज ॥
जय अतिबल रघुवर भगवान । भूमि गगन[2] धुनि पूरित कान ॥
जय जय शब्द करय कय जेर । वानर अरिगण काँ नहि टेर ॥
कुम्भकर्ण काँ मारल राम । पर्व्वत सन शिर अछि एहिठाम॥
शुनि से रावण भूमि लोटाय । कहि भ्राता-गुण शोक समाय ॥
क्षण[3]-क्षण[3] मूर्छा क्षण[3] चैतन्य । बरनथि विशद सहज सौजन्य ॥
भेलहुँ आज उत्साह-विहीन । मानल गेलहुँ काल-अधीन ॥
निहत पिती विह्वल लङ्केश । शुनि मेघनाद पहुँचि तहि देश ॥
परिहरु शोच पिता एहिठाम । हमरा आगाँ के थिक राम ॥
अतिबल जिबितहिँ छी घननाद । अपनैँ काँ नहि उचित विषाद ॥
स्वस्थ चित्त सौँ रहु महिपाल । हम श्रम करब हरब जञ्जाल ॥
अपनैँक शत्रु-समूह संहारि । तौँ जानब हमरा शक्रारि ॥
मेघनाद रण चलल सकोप । करब समर रघुवर-बल-लोप[4] ॥
भोरहिँ वानर रोकल द्वारि । भेल परस्पर भारी मारि[5] ॥
मेघनाद अतिमाया धयल । रथ चढ़ि गगन महा-रव कयल ॥
रङ्ग एकर नहि लगइछ नीक । विकल सकल दल कह की[6] थीक॥
होइछ अस्त्र जते संसार । नभ सौँ बरिशय नानाकार ॥
अविरल वारिद बरिसय नीर । तेहने वरष गगन सौँ तीर ॥
समर राम सङ्ग करय प्रताप । शर तन लाग ससरि हो साप ॥
वानर दल भय थर थर काँप । सगर समर भरि सापहिँ साप ॥
साप लपटि सभहिक तन जाय । रह अवकाश न केओ पड़ाय ॥
तखन प्रकट भेल पढ़यित गारि[7] । परिकल छह[8] कय दिन कय मारि॥
एतगोट दर्प्प हमर पुर जार । अतिबल राक्षस काँ संहार ॥

1 तीनूमे पाठ ह्रस्व अछि। 2 मगन (३), 3 छण (३), 4 कोप (३), 5 भारी (१,२),
6 कहक (३), 7 नारि (३)। 8 छल (३)।

जाम्बवान कहलनि[1] रे दुष्ट । जयबह कतय समर-सन्तुष्ट ॥
मेघनाद शुनि कय मन क्रोध । रह रे वृद्ध वृद्ध-दुर्ब्बोध ॥
बुढ़ भनि छोड़ल साहस छोड़ । अपना बल काँ के कह थोड़ ॥
देखि प्रताप तदपि नहि ज्ञान । हम छी मेघनाद नहि आन ॥
शूल चलाओल वचनैँ झोँकि । जम्बवान लेल हाथैँ लोकि ॥
मारल शूल हृदय मे हाँकि । मूर्छित खसला शकथि न ताकि ॥
समर-भूमि पद धय घिसिआय । लङ्का फेकि देल खिसिआय ॥
हर्ष विषाद नगर भरि भरल । रजनि जानि नहि जन सञ्चरल ॥

॥ रूपक दण्डक छन्द ॥

॥ सरमाक उक्ति ॥

नागपाश सौँ रण मे बाँधल
सीता तोहर भर्त्ता, उद्धर्त्ता ।
प्रायः एको व्यक्ति नहि छूटल
जे सङ्कट[2] काँ हर्त्ता, अरि मार्त्ता ॥
त्यागू मन सौँ पति-प्रत्याशा
पड़लहुँ शोकक गर्त्ता, रुचिकर्त्ता ।
सरमा[3] कहल सत्य कहयित छी
हमहुँ भेलहु दुःखार्त्ता[4], शुनि वार्त्ता ॥

॥ वसन्ततिलका छन्दः ॥

॥ सीता उक्ति ॥

हा राम लक्ष्मण कहू कत की करै छी
माया-भुजङ्गमक बन्धन सौँ मरै छी ।
हा स्पष्ट कष्ट हमरे सभ हेतु प्राप्त
अम्भोजबन्धु-कुल-कीर्त्ति-शशी समाप्त ॥

1 कहलगि (३); 2 कङ्कट (१,२), 3 मरमा (३), 4 दुःखर्त्ता (३) ।

॥ नाराचिका छन्द ॥

॥ तिरहुति ॥

पतिगति शुनिय जिवन[1] थोर, फरकय वाम नयन मोर ।
मुनिजन देखल कहल जत, नहि वैधव्य लिखल तत ॥
समर-अजय रघुनन्दन, करता[2] अरि-बल-खण्डन ।
यदपि वचन शुनि दुस्सह, मन नहि अपन तेहन कह ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

गरुड़ावाहन कयलनि राम । चलल विहगपति[4] नभ बलधाम ॥
उड़यित उड़ि गेल बहुत पहाड़ । गलित होय पन्नग-कुल-हाड़ ॥
अयला ततय जतय रघुराज । तनि भय सौँ भेल निर्भय काज ॥
खगपति खयलनि माया-व्याल । गरुड़क पूर भेल नहि गाल ॥
पक्ष-पवन-स्वन प्रलय घटाक । अति दुर्गति लङ्काक अटा क ।
सभ जन सुखित दुखित नहि एक । कयल विहगपति अमृतक सेक ॥
गिरिवर तरु कपि-दल लय जाय । मारथि राक्षस-भट खिसिआय ॥
सकल पड़ायल राक्षस वीर । समर एक नहि रहले थीर ॥
नहि मुइला ओ वरक प्रसाद । मेघनाद मन बहुत विषाद ॥
रावण-मुख देखि लज्जा आब । मन मन जाम्बवान गुन[5] गाब ॥
त्रिकुटाचल-अन्तर-गिरि जाय । मेघनाद अभिचारि नुकाय ॥
अरुण वसन गल माला लाल । चन्दन सुमन विधान विशाल ॥
अर्द्धचन्द्र कुण्डक निर्माण । आमिष शोषित तत लय आन ॥
काठ बहेड़क कयल से ढेर । होम करय लगलाह सबेर ॥
होमक धूम गगन घन-रूप[6] । अनुष्ठान कर चूपहि चूप ॥
बुझल विभीषण से सभ कर्म्म । रघुनन्दन सौँ कहलनि मर्म्म ॥
प्रभु कहइत छी हम कल जोड़ि । आन लड़ाइ आइ दिय छोड़ि ॥
होमारम्भ कयल घननाद । जकर धूम अम्बर आछाद ॥
जौँ सम्पन्न होयत माख-काज । अजय होयत सुरपति-जित आज ॥

---

1 जीवन (३), 2 १ ओ २मे अछि 'करता', ३मे 'करताह' । कवीश्वरक लेख-पोथीमे अछि 'करता' जे सभसँ सुन्दर बुझि पड़ल । 4 विहंग (३), 5 गुण (१,२), 6 तीनूमे ह्रस्व 'रु' ।

लक्ष्मण चलथु सैन्य सभ सङ्ग । करथु प्रथम तनिकर मख-भङ्ग ॥
मारथु तनिका लड़ि सङ्ग्राम । आज्ञा देल जाय प्रभु राम ॥
राम कहल भल हमहीँ जयब । सुरपति-अरि रण-सन्मुख हयब ॥
अनल-अस्त्र तनिकाँ हम मारि । वन-दव सम तनिकाँ देब जारि ॥

॥ सोरठा ॥

कहल हाथ दुहु जोड़ि, शुनल विभीषण प्रभु-वचन ।
श्री लक्ष्मण काँ छोड़ि, मरत न रावण-सुत समर ॥
बारह वर्ष विहीन, निद्राहार-विहार सौँ ।
कयल विरञ्चि अधीन, जे तनि कर मर इन्द्रजित ॥
निद्रादिक परित्याग, अवधि अयोध्यागमन सौँ ।
लक्ष्मण-विषय विराग, रघुनन्दन-सेवा-निरत ॥
मरता लक्ष्मण-हाथ, मेघनाद लङ्केश-सुत ॥
शुनु शुनु प्रभु रघुनाथ, अपनैँक आज्ञा पाबि कैँ ॥
धराभार-हर्त्ता, अहाँ विश्व-कर्त्ता ।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

कहल विभीषण समय विचार । प्रभु सर्व्वज्ञ कयल स्वीकार ॥
लक्ष्मण काँ कहलनि अहँ जाउ । खल बधि समर अमर बनि आउ॥
हनुमदादि यूथप सङ्ग रहथि । सन्मुख तनिक प्रहार जे सहथि ॥
जाम्बवान सङ्ग रहता बूढ़ । तनिकहि डरय डराइछ मूढ़ ॥
सङ्ग विभीषण मन्त्री लेथु । सकल देखाय बाट ओ देथु ॥
पर्व्वत कतय विवर कोन ठाम । बुझल विभीषण कें निज गाम ॥
कपिदल कति अर्व्वुद[1] सङ्ग्राम । चलल सङ्ग कहि जय जय राम ॥
शुनि लक्ष्मण रघुवरक निदेश । प्रभु[2]-प्रसाद कहलनि से वेष ॥
कयल राम काँ जाय प्रणाम । सुरपति-अरि-मारण मनकाम ॥
जौं मोर रघुवर-किङ्कर नाम । तौं घननाद जितब सङ्ग्राम ॥
आज समर शर अरि काँ मारि । स्नान करब भोगावति-वारि ॥
सहित विभीषण कर शर चाप । चलल महाबल विजय प्रताप ॥

॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥

विदा भेलि आबैछ[3] लङ्केश-सेना ।
चतुर्दिक्षु देखू घटाटोप जेना ॥
करू यत्न सौमित्रि छत्री अहाँ छी ।
सुरारीन्द्र-संहारकर्त्ता जहाँ छी ॥
सुरेशारि ई क्षेत्र मे वीरगुप्ते ।
करैये[4] महामोह से होय लुप्ते ॥
दशग्रीव-भ्राताक से शूनि वानी ।
कहै छी समीचीन ई लेल[5] मानी ॥

---

1 अर्व्वुद (३), 2 प्रभु (१) । 3 अऽबैछ (३), 4 करै जे (३), 5 लेथ (३) ।

धनुर्व्वाण सन्धानि सौमित्रि मारै ।
चटाचट्ट दैत्यन्द्र-सेना-क्पारै ॥
हनूमान[1] ऋक्षेश यूथेश पक्का ।
महाशैल ओ वृक्ष लै मार धक्का ॥
तथा शत्रु-सेना महाअस्त्र मारै ।
महायुद्ध संघट्ट केओ न हारै ॥
हनूमान छी कौशलाधीश-दासे ।
महानन्द[2] सौँ भाषि विद्वेषि नाशै[3] ॥
महावीर सद्वीरता मध्य पूरा ।
कते शत्रु सेना मिलायोल धूरा ॥
कहाँ सौँ चलैयै महाधूम-धारे ।
त्वरा जाय देखी करू से विचारे ॥

॥ नाराच छन्द ॥

चलू चलू महागुहा कि होम ओ करैछ की ।
लगैछ आबि दुष्टगन्धि आगि मे धरैछ की ॥
तहाङ्गदादि जोर सोर मार आँखि कान मे ।
लड़ाइ सौँ पड़ाय इन्द्रजीत ठक्क ध्यान मे ॥

॥ चामर छन्द ॥

छोड़ छोड़ ठक्क बक्क-ध्यान होम गाढ़ रे ।
चापबाण हाथ लै अनन्त द्वार ठाढ़ रे ॥
आज वीरताक बेरि मेघनाद तोर[4] रे ।
बाप काँ बँधाय के पड़ाय पाप चोर रे ॥

॥ चौपाइ ॥

मेघनाद गञ्जन सह ढेर । इन्द्रादिक काँ जे नहि टेर ॥
सहि धिक्कार गारि ओ मारि । छोड़ल होम चलल शक्रारि ॥
धर धर धक्कंट मक्कंट गोल[5] । आयल पशु बिनु कौड़िक मोल ॥
होम बिघ्न कय वानर लोक । हँसि बहरायल एकहि झोँक ॥

1 हनुमान (३), 2 हमानन्द (३), 3 नाशे (३), 4 तीर (३), 5 लोग (३) ।

मेघनाद देखल बहराय । जय-जय-कार ध्वजा फहराय ।।
देखल निज दल अर्दित रङ्ग । वानर भालुक कटक अभङ्क ।।
रथपर चढ़ल धनुष शर हाथ । कहल कतय आबथु रघुनाथ ।।
क्षुद्र कीश थिक रह तोर भाग । वानर पर शर हमर न लाग ।।
सुरपति-वारण-कुम्भ विदार । लज्जावश न करय सञ्चार ।।
हे सौमित्रि हमर विष रोष । नहि देखल छौ की भरि पोष ।।
मेघनाद थिक हमरे नाम । जयबह कतय विषम संग्राम ।।
तहाँ विभीषण काँ देखि[1] ठाढ़ । निष्ठुर वचन कोप मन बाढ़ ।।
उचिती पिती कहू कत आज । कुलघातक पातक नहि लाज ।।
लङ्का जन्म ततहि सभ कर्म । छाड़ि देल निज वंशक धर्म ।।
लङ्केश्वर सन छोड़ल[2] भाय । की छी आनक भृत्य कहाय ।।
पुत्रक विषय विषम विद्रोह । केहन हृदय भेल नहि मन मोह ।।
अहाँ कयल निज वंश-विनाश । राजा बनब एहन मन आश ।।
करयित छलहु अजय हम याग । अहाँ देखाओल गत-अनुराग ।।
ई कहि लक्ष्मण देखल वीर । हनुमत्पृष्ठ[3] चढ़ल रण-धीर ।।
रथ-वर चढ़ल कुपित घननाद । उद्यत-अस्त्र कहल दुर्व्वाद ।।
वानर तोर रुधिर-पय-पान । करत हमर शर सर्प्पसमान[4] ।।
लक्ष्मण धनुष-बाण कर सज्ज । वृथा तोर[5] बल रे निर्ल्लज्ज[6] ।।
लक्ष्मण बाण मर्म्म मे मार । भेल घननाद रहित सञ्चार ।।
जागल एक मुहूर्त्त बिताय । मन-वैकल्य कहल की जाय ।।
लक्ष्मण काँ देखल छथि ठाढ़ । कहि कटु कथा कोप मन बाढ़ ।।
हमर[7] शूरता पहिला बेरि । बुझि नहि पड़लहु तोहरा फेरि ।।
समर-विभव हम देबहु देखाय । शपथ थिकौ नहि जाह पड़ाय ।।
कहि लक्ष्मण काँ शर से सात । कयल प्रहार ससरि किछु कात ।।
उग्र बाण हनुमानक काय । सात लगौलक मर्म तकाय ।।
द्विगुण विभीषण पर कय कोप । कत शर मारल जिब आरोप ।।

1 देख (३), तीनूमे अशुद्ध पाठ 'छोड़ल' । 3 पृष्ट (३), 4 शर्प्प (३), 5 तीर (३), 6 निर्ल्लज (३), 7 ई चौपाइ तृतीय संस्करणमे छुटल अछि ।

॥ घनाक्षरी[1] छन्द ॥

लक्ष्मण कहल ललकि मेघनाद तोर
थोड़ अछि आयु की समर मे समट्टबैँ ।
दशमुख-बाल बड़ गोट अछि गाल तोर
थोड़ काल मध्य महाकाल-गाल अट्टबैँ ।
हट्टबैँ न युद्ध सौँ विरुद्ध अस्त्र[2] कट्टबैँ[3] जौँ
चट्टबैँ महासुरा कतेक गप्प छट्टबैँ ।
ठट्ठबैँ कुठाठ तौँ समर भूमि लट्टबैँ[4] तौँ
बाण ओ[5] कृपाण सौँ काँकड़ि जकाँ फट्टबैँ ।

॥ चौपाइ ॥

मेघनाद शर कयल प्रहार । लक्ष्मण पर बड़ कोप हजार ॥
भेल कवच-विनु लक्ष्मण अङ्ग । लक्ष्मण कयल हुनक से रङ्ग ॥
युद्ध परस्पर केओ[6] नहि हार । तन शोणित बह निर्झर धार ॥
लक्ष्मण तखन हनल शर पाँच । सारथि रथ न तुरग एक बाँच ॥
धनुष आन से आनल हारि । लक्ष्मण काटल तिनि शर मारि ॥
मेघनाद काँ रहल न चाप । शर सौँ जर्ज्जर थर थर काप ॥
बड़ साहस सौँ धनु पुनि आनि । लक्ष्मण काँ शर मारय तानि ॥
रवि-सन्निभ शर लाख हजार । वानर भालु गोल मे मार ॥

॥ सोरठा ॥

जय रघुनाथ उचार, ध्यान राम-पद-कमल मे ।
मेघनाद काँ मार, कहि कहि लक्ष्मण ऐन्द्रशर ॥
धर्म्मात्मा रघुवीर, सत्यसन्ध दशरथ-तनय ॥
रण मे एकहि तीर, तौँ घननादक हो मरण ॥

॥ चौपाइ ॥

इन्द्रक शत्रु लड़ल भरि पोष । लगलनि लक्ष्मण-शर से चोष ॥
रोकि न शकला से उतपात । धर सौँ शिर भय गेलनि कात ॥

1 घनाक्षरि (३), 2 अख (३), 3 ३मे 'क' नहि । 4 लड़बैँ (३) लटबैँ (१), 5 औ (३), 6 क्यो (३) ।

रवि-मण्डल-रुचि कुण्डल कान । समर शयित से दैव प्रधान ।।
कत कह जिबतहिँ अछि घननाद । कत कह मरि गेल विविध विवाद ।।
अमर सकल नभ कर गुण-गान । जय रघुनाथ देव भगवान ।।
स्तुति कर बहुत वृष्टि कर फूल । देखल सृष्टि इष्ट अनुकूल ।।
दुन्दुभि-शब्द भेल आकाश । इन्द्रादिक मन छुटि गेल त्रास ।।
जिबितहिँ दशमुख शम[1] उतपात । जनि सापक टूटल विषदाँत ।।
स्थिरा धरा निर्म्मल भेल गगन । जय-जय शब्द करथि जन मगन ।।
लक्ष्मण वीर जखन श्रम-रहित । बालि-तनय मारुत-सुत सहित ।।
शंखक धुनि धनुषक टङ्कार । लक्ष्मण कयल विजय व्यवहार ।।
शुनि शुनि हर्षक नाद विशाल । मूर्छित उठल हटल श्रम-जाल ।।
अतिशय हर्षित कपि-दल सर्व्व । मारल मेघनाद बड़ गर्व्व ।।
जय-जय लक्ष्मण जय रणधीर । कालहु जित सित अपनैँक तीर ।।
हनुमदादि सेनाधिप-सहित । तथा विभीषण दूषण-रहित ।।
रामचन्द्र काँ कयल प्रणाम । कुशल सकल जीतल संग्राम ।।
अपनैँ चरणक मुख्य प्रसाद । रण मे शयित[2] अहित घननाद ।।
लड़ल निरन्तर भरि भरि राति । अतिमायाबल राक्षस जाति ।।
मारल खल काँ लक्ष्मण वीर । हृदय लगाओल कहि रघुवीर ।।
मेघनाद छल बड़ा लड़ाक । तनिकाँ मारल अहाँ[3] तड़ाक ।।
हिनकहि धरि छल अछि संग्राम । हिनि जितलय जीतल सभ ठाम ।।
शर-जर्ज्जर सभ सेना-गात्र । जिति अयलहुँ अहाँ विगत त्रिरास्त्र ।।
पुत्र-शोक सौँ दशमुख दीन । की कर पौरुष जल विनु[4] मीन ।।
रावण मन मानल सुत-मरण । अतिशय आकुल अन्तष्करण ।।
झट झट अट्ट-शिखर चढ़ि ताक । चढ़ल विकल चित चिन्ता-चाक ।।

।। घनाक्षरी छन्द ।।

जय-जय-कार धुनि अमर उचार कर,
शुनि पड़ कान हनुमान-हर्ष-हाक रे ।

1 १ओ २ मे 'समं' ओ ३मे 'सभ' अछि परन्तु 'शान्त्यर्थक' ई तालव्यादि उचित थिक ।
2 शहित (३), 3 ३ मे'क' वेशी । 4 विन (३) ।

ध्वज फहराय बहराय कैँ शिखर चढ़ि,
यन्त्र मे लगाय दृष्टि दूरही सौँ ताक रे ॥
आज मेघनादक समाद न शुनल शुभ,
जैह सूर्प्पनखाक काटल कान नाक रे ॥
सैह राम-भाय हाय कैलक अन्याय जनु,
अनुमान होइछ देलक शिर डाक रे ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

पक्ष-हीन जनु पड़ल पहाड़ । रावण महा-विपट पतझाड़ ॥
दुष्ट विभीषण खूनल मूल । सोदर भाय हाय[1] प्रतिकूल ॥
विधि भेल वाम इष्ट भेल ठक्क । कालपुरुष नहि ककरो शक्क ॥
जोर नोर बह वीशहु आँखि । खग भेल लोथ कतरलय पाँखि ॥
कि कहब मन्दोदरी-विषाद । जिबयित मरण शरण घननाद ॥
निर्भय भेल देवगण आज । ऋषि मुनि जन मन बनि गेल काज॥
धिक थिक हमरहु शत्रु कलङ्क । पड़ल गजेन्द्र विषम थल पङ्क ॥
तापस से[2] पुन दैत्य संहार । जिबयित रावण कपि-सञ्चार ॥
धिक धिक[3] मेघनाद बल तोर । उठि की कुम्भकर्ण भेल जोर ॥

॥ मत्तगजेन्द्र छन्द ॥

वास सदा मणिमन्दिर मे
तहँ खाट मनोहर सन्मणि-पाबा ।
गेलि विलास-कला सकला
उत धान धरी मुह होइछ लाबा ॥
कोटि विलाप करै वनिता
कहि भेलहुँ आज उपाय अभावा ॥
की लिखि देल ललाटक पट्ट मे
बूझि न से बुढ़बा विधि बाबा ॥

---

1 होय (३), 2 सै (३), 3 थिक (३)।

॥ चकोर छन्द ॥

लै कहु खड्ग दशानन दौड़ल रामप्रिया हम मारब आज ।
मन्त्रि सुपार्श्व बुझाब विपत्ति मे हे प्रभु ई नहि भूपति-काज ॥
वोर[1] अहाँ रणधीर महाशय तुल्य अहाँक कहाँ महराज ।
ई शुनि देखि कहू ककरा नहि स्त्रीबध उत्सव हो मन लाज ॥

॥ सोरठा ॥

सभ जन मिलि तत जाय, मारब लक्ष्मण राम काँ ।
अहँ पौलस्त्य[2] कहाय, स्त्रीबध अनुचित सर्व्वथा ॥
लज्जित भवन प्रवेश, कयल दशानन विकल-मन ।
पुछल सकल दनुजेश, प्रात सभा मे आबि पुन ॥

॥ चौपाइ ॥

मानव वानर दानव मार । आनब बल हम कोन अपार ॥
शलभ नाम मन्त्री बल बनल । चलल समर रघुवर शर-अनल ॥
जत राक्षस आबथि संग्राम । सभ काँ लोटपोट[3] कर राम ॥
अपनहु बहुत दशानन लड़ल । रघुवर-शर-जर्ज्जर भय पड़ल ॥
हृदय-मध्य वेधित एक बाण । लङ्का अयला मुर्छित प्राण ॥

॥ दोहा ॥

लङ्का सती सुलोचना, पति घननाद समाप्त ।
लक्ष्मण-शर-प्रेरित[4] सुभुज, तनि आङ्गन सम्प्राप्त ॥

॥ चौपाइ ॥

दासी एक देखल से नयन । स्वामिनि सौँ कहलनि से अयन ॥
आङ्गन मध्य गगन सौँ बाँहि । खसल बाणयुत भेलहु बताहि ॥
स्वामिनि चलु चलु देखू आज । आपत की मर्य्यादा लाज ॥
पन्नगेश-तनया[5] तत गेलि । भुज काँ देखि विकल-मन भेलि ॥
फरकै छल अछि दक्षिण अङ्ग । परिणत फल की लगइछ रङ्ग ॥
करु करुणा अरुणायतनयन । भुज-जित-विश्व[6] समर-महि शयन ॥

1 वार (३), 2 पौलस्ता (३), 3 लौटपोट (३), 4 प्रेरित् (३), 5 पन्नगेशयतनया (३), 6 विश्य (३) ।

लवणोदधि हो अमृत समान । कनकाचल त्यागथि स्वस्थान ॥
सुरगुरु मूक मूक वाचाल । झपटि सिंह काँ मार शृगाल ॥
अद्भुत नहि विस्तर संसार । वानर नर सुरवर-जित मार ॥
पतिभुज तन्त्रा करु परित्याग । हयब सती हम पूरण भाग ॥
जौँ हम सत्य सती मन साँच । लिखि प्रमाण कहु सभ जन बाँच ॥

॥ सोरठा ॥

भुज देल हाथ पसारि, देखल सती सुलोचना ।
सुमती चित्त विचारि, खड़ी धरायोल हाथ मे ॥

॥ चौपाइ ॥

मणिमय आँगन लिखलनि हाथ । परमेश्वर जानू[1] रघुनाथ ॥
धरा-भार-धर पन्नग जैह । जानक थिक लक्ष्मण काँ सैह ॥
तनिकहि हाथ हमर भेल मरण । सुखमय अभय स्वर्ग भेल शरण ॥
निद्राहार विहार विराग । मनस्पस्थहु[2] नहि दूषण लाग ॥
सति शुभमति चिन्ता नहि करिय । सङ्ग हमर सुरपुर सञ्चरिय ॥
राम समक्ष माथ अछि धयल । लय आनू लिखि मूचित कयल ॥
निरुपद्रव रघुनाथ-समीप । श्वशुर विभीषण छथि कुल-दीप ॥
की सुख राजयभोग अवसान । उत्तम गति देलनि भगवान ॥
सुरपति-जित-गृहिणी निज गेह । तन धन जन मन सौँ तजि नेह॥
सकल अनित्य विश्व मन मानि । चललि दशानन-तट गुरु जानि ॥
मणिमय यान पतिक भुज धयल । अपनहुँ चढ़लि शोक नहि कयल॥
अमरेश्वर-ज़ित-अबला सङ्ग । चलल पदाति महीपति-रङ्ग ॥
दासी सकल विकल भय कान । आज अभाग्य देल भगवान ॥
वैतालिक आगाँ एक जाय । विकल दशानन कहल बुझाय ॥

॥ सोरठा ॥

सती पुतोहु अहाँक, आइलि छथि कहतीह किछु ।
हुनि शिर पड़ि गेल डाक, मेघनाद-शिर समर अछि ॥

1 जानु (३), 2 मनस्पथहु (३) ।

॥ चकोर छन्द ॥

लै कहु खड्ग दशानन दौड़ल रामप्रिया हम मारब आज ।
मन्त्रि सुपार्श्व बुझाब विपत्ति मे हे प्रभु ई नहि भूपति-काज ॥
वीर[1] अहाँ रणधीर महाशय तुल्य अहाँक कहाँ महराज ।
ई शुनि देखि कहू ककरा नहि स्त्रीबध उत्सव हो मन लाज ॥

॥ सोरठा ॥

सभ जन मिलि तत जाय, मारब लक्ष्मण राम काँ ।
अहँ पौलस्त्य[2] कहाय, स्त्रीबध अनुचित सर्व्वथा ॥
लज्जित भवन प्रवेश, कयल दशानन विकल-मन ।
पुछल सकल दनुजेश, प्रात सभा मे आबि पुन ॥

॥ चौपाइ ॥

मानव वानर दानव मार । आनब बल हम कोन अपार ॥
शलभ नाम मन्त्री बल बनल । चलल समर रघुवर शर-अनल ॥
जत राक्षस आवथि संग्राम । सभ काँ लोटपोट[3] कर राम ॥
अपनहु बहुत दशानन लड़ल । रघुवर-शर-जर्ज्जर भय पड़ल ॥
हृदय-मध्य वेधित एक बाण । लङ्का अयला मुर्छित प्राण ॥

॥ दोहा ॥

लङ्का सती सुलोचना, पति घननाद समाप्त ।
लक्ष्मण-शर-प्रेरित[4] सुभुज, तनि आङ्गन सम्प्राप्त ॥

॥ चौपाइ ॥

दासी एक देखल से नयन । स्वामिनि सौँ कहलनि से अयन ॥
आङ्गन मध्य गगन सौँ बाँहि । खसल बाणयुत भेलहुँ बताहि ॥
स्वामिनि चलु चलु देखू आज । आपत की मर्य्यादा लाज ॥
पन्नगेश-तनया[5] तत गेलि । भुज काँ देखि विकल-मन भेलि ॥
फरकै छल अछि दक्षिण अङ्ग । परिणत फल की लगइछ रङ्ग ॥
करु करुणा अरुणायतनयन । भुज-जित-विश्व[6] समर-महि शयन॥

---

1 वार (३), 2 पौलस्ता (३), 3 लौटपोट (३), 4 प्रेरित् (३), 5 पन्नगेशयतनया (३),
6 विश्य (३) ।

लवणोदधि हो अमृत समान । कनकाचल त्यागथि स्वस्थान ॥
सुरगुरु मूक मूक वाचाल । झपटि सिंह काँ मार शृगाल ॥
अद्भुत नहि विस्तर संसार । वानर नर सुरवर-जित मार ॥
पतिभुज तन्त्रा करु परित्याग । हयब सती हम पूरण भाग ॥
जौं हम सत्य सती मन साँच । लिखि प्रमाण कहु सभ जन बाँच ॥

॥ सोरठा ॥

भुज देल हाथ पसारि, देखल सती सुलोचना ।
सुमती चित्त विचारि, खड़ी धरायोल हाथ मे ॥

॥ चौपाइ ॥

मणिमय आँगन लिखलनि हाथ । परमेश्वर जातू[1] रघुनाथ ॥
धरा-भार-धर पन्नग जैह । जानक थिक लक्ष्मण काँ सैह ॥
तनिकहि हाथ हमर भेल मरण । सुखमय अभय स्वर्ग भेल शरण ॥
निद्राहार विहार विराग । मनस्पस्थहु[2] नहि दूषण लाग ॥
सति शुभमति चिन्ता नहि करिय । सङ्ग हमर सुरपुर सञ्चरिय ॥
राम समक्ष माथ अछि धयल । लय आनू लिखि सूचित कयल ॥
निरुपद्रव रघुनाथ-समीप । श्वशुर विभीषण छथि कुल-दीप ॥
की सुख राज्यभोग अवसान । उत्तम गति देलनि भगवान ॥
सुरपति-जित-गृहिणी निज गेह । तन धन जन मन सौं तजि नेह ॥
सकल अनित्य विश्व मन मानि । चललि दशानन-तट गुरु जानि ॥
मणिमय यान पतिक भुज धयल । अपनहुँ चढ़लि शोक नहि कयल ॥
अमरेश्वर-जित-अबला सङ्ग । चलल पदाति महीपति-रङ्ग ॥
दासी सकल विकल भय कान । आज अभाग्य देल भगवान ॥
वैतालिक आगाँ एक जाय । विकल दशानन कहल बुझाय ॥

॥ सोरठा ॥

सती पुतोहु अहाँक, आइलि छथि कहतीह किछु ।
हुनि शिर पड़ि गेल डाक, मेघनाद-शिर समर अछि ॥

---

1 जानु (३), 2 मनस्पथहु (३) ।

देखल आँखि उघारि, लय आनू[1] तट पालकी।
बिश लोचन बह वारि, कहल विकल दशकण्ठ तहँ ॥
पति भुज देल उघारि, सती धरणि मूर्छित खसलि।
पुन उठि समय विचारि, श्वशुर-चरण लपटाय कह ॥

॥ गीत ॥

॥ वियोगि-मालव छन्द ॥

से पहु हमर गेला रे, रे परलोक।
हमरहि हृदय असह शोक ॥
जरब न पहु सङ्ग रे, रे यावत।
विरह-दहन-दुख तावत ॥
सकल-भुवन-राज रे, रे सभ सुख।
जखन देखब इन्द्रजित-मुख ॥
आब हमर मन रे, रे निरभय।
सुमति युगुति सति जीव दय ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

पतिसङ्ग हम जायब अनल समायब
घुरि नहि आयब पुनि धरणी ॥
शुनु गुरु दशकन्धर दनुज-पुरन्दर
सुन्दर पातिव्रत-सरणी ॥
पति-शिर दिय आनी अपनैं[2] ज्ञानी
शोक न मानी विधि-करणी ॥
अतलहुँ यहि आशा हत-जगदाशा
गत-पशुपाशा सुत-घरणी[3] ॥

॥ सोरठा ॥

शुनि सुतवधू-विलाप, रावण बहुत भरोस दय।
कहल हृदय-सन्ताप, सुमति विलम्ब दिनैक करु ॥

1 आनु (३), 2 अननैं (३), 3 सुतधारण (३)।

॥ चौपाइ ॥

उपगत विपति हयत की कानि । मारब शत्रु भेल मन आनि ॥
रामादिक शिर प्रथमहि काटि । देवि देब दिक्पति बलि बाँटि ॥
पति-शिर शमर सहज अहँ लेब । अरि-शिर वाम चरण अहँ देब ॥
शुनि दशकन्धर-वचन कठोर । क्षण चुप रहलि नयन भर नोर॥
पुन कहलनि गुरु आगाँ ठाढ़ि । सभ सौँ आशा काँ अछि बाढ़ि॥
जौँ कदाच अरि काँ लेव जीति । करब राज्य अरि-रहित सुनीति ॥
अपनैँ काँ भेटत जन सर्व्वे । एखनहु धरि मन मे अछि गर्व्वे ॥
श्वशुर-समाज मुख्य नृप-द्वार । रहल न आज लाज व्यवहार ॥
यावत गगन भानु रह चन्द । तावत सुयश रहत स्वच्छन्द[1] ॥
छल छथि दशमुख काँ एक पूत । जीतल अमर समर पुरहूत ॥
हमरहु नहि मन मे किछु शोक । हर्षित अमर रहथु निज लोक ॥
पहु विनु जीवन सुख की राज । बरु भल रौरव नरक समाज ॥
चलब आब गुरु-अनुमति पाय । विधिक रेख के शकत मिटाय ॥
शुनलनि वचन पुतोहुक कान । कि करथु दशमुख विधि बलवान॥
आशु शाशु-घर कनयित जाय । कहल सकल तनि पद लपटाय ॥
कहलनि श्वशुरक वचन विचार । ैव ज्ञान हर अस्त्र न मार ॥
हम कटु कहल न बड़ गुरु जानि । कालाधीन गुणल नहि हानि ॥
मन्दोदरी कहल वृत्तान्त । नारद जे कहलनि एकान्त ॥
समर-विमुख दशमुख नहि हयत । सकुल सदल कालक घर जयत ॥
सभ सौँ हुनका अछि अरि-भाव । दशकन्धर नहि बचता आब ॥
लङ्का लूटत वानर आबि । मुनि वृत्तान्त गेला कहि भावि ॥
एतय विभीषण नृपति कहाय । करता भोग वस्तु-समुदाय ॥
परमात्मा परमेश्वर राम । ज्ञाते छथि लक्ष्मण गुणधाम ॥
हनूमान[2] रुद्रक अवतार । मुख्य सकल दल रहित-विकार ॥
ततय विभीषण श्वशुर प्रधान । समदर्शी लग सकल समान ॥

---

1 तीनूमे पाठ 'छ' । 2 हनुमान (३)।

जाउ जाउ थिक मुख्य विचार । ओतय न लेश असत व्यवहार ॥
उप-लक्ष्मण[1] गति समुचित पूर । सती[2] आगु स्वर्गे कत दूर ॥

॥ रूपमाला छन्द ॥

चललि पति-भुज पालकी धय, रामचन्द्र समाज ।
कहल दल वनिता-सबारी, अबै अछि की आज ॥
जनु दशानन हारि मानल, मेघनादक नाश ।
जनकजा पठबाय देलनि, मानि रघुवर-त्रास ॥
चिन्हल दासी भृत्यजन काँ, तट विभीषण जाय ।
उतरि शीघ्र[3] सुलोचना, गुरुचरण गेलि लपटाय ॥
कहल अपनैँक कयल से नहि, कयल अति अपमान।
तकर फल परिणत अचिर[4] अछि, भेल आनक आन ॥

॥ सोरठा ॥

से कर्त्तव्य उपाय, पहु-शिर लय जरि जाइ हम ।
देल जाय मङबाय, आज्ञा वैदेही-पतिक ॥
कहल विभीषण जाय, श्रीरघुनन्दन सौँ ततय ।
भाय हमर अन्याय[5], कयल पड़ल साध्वीक शिर ॥

॥ रूपमाला छन्द ॥

मेघनादक थिकथि गृहिणी, देव शुनु रघुनाथ ।
सती नाम सुलोचना लिखि, देल स्वामी-हाथ ॥
शिर एतहि अछि मेघनादक, मुख्य अयबा काज ।
स्वामि मिलि पावक समाइति, शरण आइलि आज॥

॥ दण्डक छन्द ॥

जय महेश्वर-चाप-खण्डन, जनक-नगरी-कृत-सुमण्डन,
पालिताखिल-भक्त-सज्जन, दलित-दुर्ज्जन हे ॥
सत्य-सन्ध मनोज-सुन्दर, जनक-जननी-सत्य-धृतिकर,
महाराज मही-पुरन्दर, प्राप्त-निर्ज्जन हे ।

---

1 कवीश्वरक लेख-पोथीमे पाठ अछि 'उपलक्षण' । 2 सति (३), 3 शीघ्र (३), 4 अचित (३), 5 आन्याय (३) ।

जय धनुर्द्धर दनुज-नाशन, सदा-शासित-पाकशासन,
कृत-विहङ्गम-नायकासन[1], पन्नगासन हे ।।
जय महोदधि-सेतु-कारक, दशवदन-कुल विपुल-मारक,
विहित-मारुततनय-चारक, नुत-विषाशन हे ।।

॥ गीत ॥

जय रघुराज ।
मन मति वचनक पहुच जतय नहि, निग्गुंण ब्रह्म देखल आज ।।
हम राक्षसी इन्द्रजित-गृहिणी, विषयविलास सतत काज ।।
योगिनि[2] बनि अयलहुँ शरणागत, करिय प्रणाम रहित-लाज ।।
प्रभु जगदिष्ट[3] इष्ट-सम्पादक, तुच्छ[4] सकल पुर सम्राज ।।
अन्तर्य्यामी[5] रघुनन्दन अहँ, व्यर्थ बैखरी[6] के बाज ।।
अपनैँ कयल दनुज-कुल-भेदन, प्रभु समर्थ बड़ रण-शूर ।।
हमरा जन्य वीज-रवि भेदब[7], करब मनोरथ निज पूर ।।
देल जाय मँगवाय पतिक शिर, आज न हो प्रभु संग्राम ।।
जय रघुनन्दन दुर्गति-खण्डन, भव-जलनिधि-तारण नाम ।।

॥ चौपाइ ॥

शुनि सुलोचना साध्वी उक्ति । रघुवर कहलनि वचन सुयुक्ति ।।
करु जनु शुभमति चित्त विषाद । मन हो तोँ जीबथि घननाद ।।
निर्व्विषाद अपना घर जाउ । युवती सती वियोग न पाउ ।।
हाथ जोड़ि कर दण्ड-प्रणाम । कह सुलोचना शुनु गुणधाम ।।
एक गुहा भे दुइ मृगराज । समुचित नहि निर्व्वाहक काज ।।
पिती नृपति देखता शक्रारि । एक कोस मे दुइ तरुआरि ।।
जेहि[7] लय योग ज्ञान वैराग्य । सुलभ प्राप्त से हमर सुभाग्य ।।
प्रभु-पद देखि छुटल भव-राग । मन नहि कतहु विषय-सुख लाग ।।
गगन कइक थिक गगनाकार । जलधि जलधि उपमाक विचार ।।
राम-दशानन सम संग्राम । राम-दशानन उपमा ठाम ।।

1 नायकाशन (३)) 2 योगिनी (३), 3 दिष्ठ (३), 4 तीनूमे 'तुछ' । 5 अन्तरर्यामी (३), 6 बखरी (३), 7 भेदन (३), 7 ३मे 'हि' सानुनासिक ।

सुरपति-अरि हमरा प्राणेश । कोन वस्तु नहि तनिका देश ।।
निग्गुंण ब्रह्म-सगुण-तन धयल । भूप-रूप बड़ माया कयल ।।
जे जे निहत भेल संग्राम । से से पाओल उत्तम धाम ।।
धन्य धन्य थिक अपनेक कोप । पाप-पुञ्ज कर क्षण मे लोप ।।
कीर्त्ति-शरीर अचल युग चारि । बनल काज की देब बिगारि ।।
प्रभु-रुचि जानि आनि देल मुण्ड । देखयित कौतुक वानर-झुण्ड ।।
जेहन परशमणि पाबथि रङ्क । पति-शिर लेल हरषि भरि अङ्क ।।
आँचर सौँ मुह धूरा पोछ । भ्रमराली-निभ दाढ़ी-मोछ ।।
जीतल समर अमर अमरेश । आज हमर भेल योगिनि-भेश ।।
रामचन्द्र काँ कयल प्रणाम । जहि में सकल-विश्व-विश्राम ।।
रामाकार सकल थल भास । छुटल राग संसार प्रयास ।।
चलयिक समय हँसल से मुण्ड । हलचल माचल वानर-झुण्ड ।।
बाहु लिखल लक्ष्मण-गुण पूर । हँसिहि कयल जन-संशय दूर ।।
हँसल मुण्ड भुज-लिपि भेल ठीक । पति-सह-गामिनि धन्या थीकि ।।
चललि प्रदक्षिण प्रभुकाँ कयल । शिर-भुज पुन पालकि पर धयल ।।
बड़ बड़ बाजन चलल निशान । आर्त्तनाद सौँ पूरित कान ।।
सञ्चर बहुत निशाचर लोक । प्रभु-आज्ञा सौँ रोक न टोक ।।
सिन्धुक सङ्गम थल भल जाय । चिता बहुत विस्तार बनाय ।।
श्रीखण्डादिक लागल ढेर । वनिता पुरुष सकल दिश घेर ।।
घृत घट बहुत चिता मे ढारि । धय भुज शिर नागेश-दुलारि ।।
आहिताग्नि दय देलनि ताहि । मर्य्यादा कुल-युगल निबाहि ।।
पति सह सती परमगति गेलि । द्वेषराग सौँ रहिता भेलि ।।
सभ वृत्तान्त देखल लङ्केश । मन्दोदरी सहित तहि देश ।।
अयला कि करथु मन बड़ शोक । संसारक निन्दा कर लोक ।।
एहि संसारक ई व्यवहार । उतपति थिति होइछ संहार ।।
सभ जन घुरि लङ्का गढ़ प्राप्त । जय-प्रत्याशा भेल समाप्त ।।
अतिशय विकल दशानन कान । कर उपदेश आन काँ ज्ञान ।।
एहि संसारक भंगुर भोग । प्रपादेश संयोग वियोग ।।

ककरो विभव रहल नहि थीर । जेहन कमल-दल चञ्चल नीर ॥
वर्त्तमान कत कत कत जाय । कालपुरुष सभ सुख धय खाय ॥

इति श्रीचन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे नवमोऽध्यायः ॥

मिथिला-भाषा रामायण

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

रावण मन मन मानल हारि । महि नहि रहल शूर शक्रारि ॥
मारुत-सुत-बल हृदय विचारि । जनिक मुष्टि शत-अशनि प्रहारि ॥
शुक्रक निकट गेला अति दीन । बद्धाञ्जलि राजस-रस-हीन ॥
शुक्र पुछल कहु नृप लङ्केश । कोन हेतु अयलहुँ एहि देश ॥
शर-जर्ज्जर अति कृशतर काय । कियक रहल अछि वदन सुखाय[1] ॥
कयल प्रणाम बिनत शत[2] वार । कहल दशानन शोक अपार ॥
वचन एखन अछि ई कहबाक । नहि अछि राक्षसकुल रहबाक ॥
लड़यित लड़यित भेलहुँ आँट । एको[3] तरह नहि बाँचक बाट ॥
मृतसमान अयलहुँ एहि ठाम । असुर-शमन[4] सन जनमल राम ॥
विद्यमान अपनैँ जहिठाम । असुरक[5] हारि होइछ संग्राम ।
कहलनि शुक्र ग्रहण करु मन्त्र । सिद्ध हयत तौँ होयब स्वतन्त्र ॥
निकट न आओत[6] कालक दूत । कि करत समर अमर पुरहूत ॥
गुप्त करू[7] गय होमक कुण्ड । देखब बुझय न वानर-झुण्ड ॥
होमकुण्ड आगिक उठ धाह । तेहि सौँ उतपति रथ रथवाह ॥
नाना अस्त्र शस्त्र बहराय । तखन चलब[8] रण-ध्वज फहराय ॥
अजर अमर रहुगय सभ काल । करु गय दीक्षाविधि प्रतिपाल ॥
विघ्न मध्य नहि होमय पाब । शत्रु तकैत रहै अछि दाब ॥
बलि सन राजा वञ्चित कयल । स्वयं विष्णु वामन-तन धयल ॥
बलि-हित करइत गेल एक आँखि । मन्त्रशक्ति की होयत राखि ॥
मीनादिक तन धयलनि जैह । स्वयं विष्णु रघुनन्दन सैह ॥
मन्त्र लेल होमक विधि पाय । मुदित दशानन लङ्का जाय ॥
अपन भवन अन्तर दशभाल । गुफा बनाओल जेहन पताल ॥

1 शुखाय (१), वितत (३), 2 सत (१), 3 एकौ (३), 4 समन (१), 5 ३मे 'क' नहि ।
6 आयत (१), 7 करु (१) 8 चलय (३),

लङ्का-द्वार कपाट लगाय । होमक द्रव्य सकल मङ्गबाय[1] ॥
होम करय लगला लङ्केश । मौन दृढ़ासन सय्यँम-वेश ॥
देखल विभीषण अम्बर-धूम । राजभवन सौँ अविरल धूम ॥
हे रघुनन्दन देखिय धूम । रवि शशि-ग्रह-मण्डल काँ चूम ॥
सविधि होम-पूरणता पाय । रावण सत्य अमर भय जाय ॥
कयल जाय प्रभु शीघ्र उपाय । सिद्ध दशानन कर अन्याय ॥

॥ सोरठा ॥

शुनु अङ्गद हनुमान, जाउ सकल दल कहल प्रभु ।
करब विघ्न मतिमान, होम दशानन करै[2] अछि ॥

॥ रूपमाला ॥

दशकोटि वानर गेल लङ्का, लाँघि सभ प्राकार[3] ।
जाय रावण-भवन-रक्षक, सभक कयल संहार ॥
बाजि गजकाँ पटकि मारल, घोरतर चीत्कार ।
तत विभीषण-वधू शरमा, कयल सूचित द्वार ॥

॥ चौपाइ ॥

पाथर-पिहित[4]-गुहा दृढ़द्वार । अङ्गद जोर लात सौँ मार ॥
चूर चूर सभ कयल कपाट । कयल प्रवेश विदित भेल[5] बाट ॥
अङ्गद कहल सकल दल आउ । करू कोलाहल ध्यान छोड़ाउ ॥
रावण ध्यानलीन नहि वाक । दृढ़ आसन से अनत न ताक ॥
पकड़ि पकड़ि सेवक काँ मार । फेकल वस्तु होम-सम्भार ॥
उप-साधक काँ कुण्डहिँ झोँक । शक[6] के महावीरगण रोक ॥
स्रुव लेल खैँचि न दशमुख जान । स्रुवक मारि मारल हनुमान ॥
मारि बहुत रावण सहि लेथि । ध्यानदृष्टि नहि बाहर देथि ॥
अन्तष्पुर गेला युवराज । आनल मन्दोदरी समाज ॥
घिसिआबथि तनिकाँ धय झोँट । करथि उपद्रव कपि कय गोट ॥
फाड़ल वसन जेहन हो जाल । तदपि न ध्यान छोड़ दशभाल ॥

1 मगबाय (१), 2 करयि (१), 3 प्रकार (१), 4 विहित (३), 5 भल (३), 6 सक (३) ।

कानथि मन्दोदरी विषाद । हा सुत कतय गेलहुँ घननाद ।।
अहँ विनु एत गोट गञ्जन भोग । जीवित की नहि विधिसंयोग ।।
शुनु प्राणेश्वर विपति समाज । एखनहुँ धरि अहँ काँ नहि लाज ।।
उठु[1] उठु समर करूगय जाय । की बैसल छी घर घुरिआय ।।
शुक्रक एतय लाग नहि मन्त्र । परमेश्वर[2] रघुनाथ स्वतन्त्र ।।
मरण नीक बरु निस्संकोच । वानर धय धय आँचर नोच ।।
की बैसल छी आश विचारि । हा हतभाग्या भेलहुँ उघारि ।।

॥ सोरठा ॥

सहि न सकल दशमाथ, मन्दोदरि[3] विकला वचन ।
खड्ग लेल विश हाथ, कपिगण काँ मारय चलल ।।

॥ चौपाइ ॥

सहि तरुआरि बालि-सुत अङ्ग । हँसि सभ चलल होम कय भङ्ग ।।
कयल कटक रामक तट गमन । होमक धूम-धार कय शमन[4] ।।
देखल प्राणप्रिया लङ्केश । लगला करय ज्ञान-उपदेश ।।
रावण-भवन भालु कपि आब । ई सभ जानब काल-स्वभाव ।।
यम जेहि नगर पयर नहि देथि । कुशलक्षेम सीमहि बुझि लेथि ।।
जिबयित की नहि देखी आँखि । की लय करब प्राण धन राखि ।।
प्राणप्रिया परिहरु[5] मन शोक । सकल विनाशि दृश्य अछि लोक ।।
जत हम-हम तत दुःख अपार । जत निर्म्मम तत दुःख-उधार ।।
सम्प्रति हम चललहुँ संग्राम । आइ कि बचता लक्ष्मण राम ।।
जौँ कदाच विधि हो विपरीति । तौँ हमरा मे राखब प्रीति ।।
हमर चिता मे करब प्रवेश । सीता मारि लेब एहि देश ।।
मन्दोदरी कहल शुनु नाथ । सभ गति अछि रघुनन्दन-हाथ ।।
वनचर चारि एक अति खर्व्व । हरण करय[6] दुर्ज्जन-गण-गर्व्व ।।
तीनि राम मे दोसर राम । अवतरला अयला एहि ठाम ।।
राजस तामस रस दिय तोड़ि । राज्य विभीषण काँ दिय छोड़ि ।।

---

1 उठू (१), 2 परमेस्वर (१), 3 मन्दोदरी (३), 4 समन (१), 5 अब परिहरु (३)।
6 करयि (१)।

निर्ज्जन वन बसु मुनिक समाज । सानुकूल रहता रघुराज ।।
तनिक चरण मे ध्यान लगाउ । माया-सीता तत पहुँचाउ ।।
कयल बहुत युग राज्यक भोग । परिणत से प्राणान्तिक रोग ।।
कयल ककर नहि अहँ अपराध । वनिता-हरिणि-हरण बनि व्याध ।।
विषय मनोरथ-पुञ्ज हटाउ । अथवा रण मे माँथ कटाउ ।।
रावण कहल शोक-विस्तार । हम मानल मिथ्या संसार ।।
जाय करब जौँ वन मे वास । दुर्ज्जन करत बहुत उपहास ।।
साधन-योग्य न रहल शरीर । की हम की मारथु रघुवीर ।।
जानि जानकी आनल गेह । मरण राम-कर निस्सन्देह ।।
अपनहिँ पौरुष हम हठ ठानि । समर मरब[1] की होयत हानि ।।
ककरो रहल न मन मे रोच । रण लड़ि मरब कोन सङ्कोच ।।
हमर राज्य जौँ पाओत आन । हमहूँ होयब स्वयं भगवान ।।
जायब तनिकहि अङ्ग समाय । जनु कटु धूम जलद बनि जाय ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे दशमोऽध्यायः ।

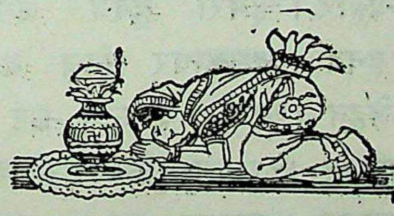

1 मरन (३) ।

॥ अथ एकादशोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

एहि चिन्ता मे भय गेल भोर । वानर भालु द्वार कर शोर ॥
रे दशकण्ठ लण्ठ बहराह[1] । राम-शरानल शलभ समाह ॥
चारू द्वार नगर घर घेर । रावण कँ तृणवत नहि टेर ॥
रावण शुनल कपिक किलकार । कहल प्रबल रथ कर तैयार[2] ॥
रथ मे चक्र एगारह पाँच । बहुत भयावह वदन पिशाच ॥
स्वर अनेक रथ जोतल जोड़ । सैन्य प्रधान चलल नहि थोड़ ॥
अस्त्र-शस्त्र सभ तहि पर धयल । दशकन्धर रणयात्रा कयल ॥
दुहु दल छल संघट्ट अमान । राति दिवस किछु हो नहि भान ॥
नभ मे भय गेल धूलि-वितान । बड़ गोट शब्द वधिर भेल कान ॥
रावण जेहन प्रलय-जीमूत । ओ नहि कपि-सामान्यक बूत ॥
कपिदल कँ रण मे ललकार । झपटि झपटि अन्तक जकँ मार ॥
पड़ल ततय हनुमानक दृष्टि । रावण-हृदय हनल एक मुष्टि ॥
ठेघुना भर रथपर खसलाह । मूर्छित कय मारुति हँसलाह ॥
क्षण मूर्छा रावण सौँ दूर । कहलनि पवनतनय तोँ शूर ॥
धिक धिक हमरा कह हनुमान । एखनहु धरि अछि तोहरा प्राण ॥
करह प्रथम तोँ मुष्टि-प्रहार । हमरा हृदय जते बलसार ॥
हमहुँ तखन एक मूका हनब । दशकन्धर निज बलकँ जनब ॥
पवनक तनय कहल पण[3] जेहन । कयल दशानन झट दय तेहन ॥
क्षण भरि अनमन सन हनुमान । रावण-मुष्टि सहत के आन ॥
पवन-तनय दृढ़ मुष्टि उठाय । चलला रावण चलल पड़ाय ॥
हनूमान अङ्गद नल नील । बड़ बड़ राक्षस मारण-शील ॥
अग्निवर्ण रावणक प्रधान । तनिक प्राण लेलनि हनुमान ॥
सर्प्परोम कँ अङ्गद मार । खड्गरोम कँ नल संहार ।

1 बहराय (१), 2 तइआर (१), 3 प्रण (३) ।

वृश्चिकरोम लड़ल घड़ि चारि । तनिकहु समर नील लेल मारि ॥
सिंहनिनाद कयल कपि धीर । गेला जतय छला रघुवीर ॥

॥ चञ्चला छन्द ॥

भालु ओ प्रचण्ड कीश जाय जाय झट्ट झट्ट ।
राक्षसेन्द्र वीर काँ पछाड़ि[1] मार पट्ट पट्ट ॥
शैलखण्ड वृक्ष हाथ सौँ उखाड़ चट्ट चट्ट ।
राक्षसेन्द्र-सैन्य-झुण्ड-मुण्ड फोड़ फट्ट फट्ट ॥
लाग अस्त्र मध्य अस्त्र आबि आबि चट्ट चट्ट ।
रावणोग्र-वीर-पेट-कुम्भ फूट भट्ट भट्ट ॥
नाचि नाचि योगिनीक वृन्द भाष हट्ट हट्ट ।
राक्षसावलीक[2] मुण्ड जाय खाय कट्ट कट्ट ॥
रामचन्द्र-तीर-विद्ध-मौलि-पात छट्ट छट्ट ।
योगिनीक वृन्द रक्त-ओघ घोँट[3] घट्ट घट्ट ॥
खाय की शृगाल[4] मासु नोचि[5] नोचि[5] गट्ट गट्ट ।
वस्ति-अस्थि-दन्त घोर जोर तोड़ मट्ट मट्ट ॥
जोर सौँ कबन्ध नाच वीरभूमि कोटि कोटि ।
भैरवी भभाय हँस्स भूमिमध्य लोटि लोटि ॥
नाचथि प्रसन्न गीत गाबि गाबि छोटि छोटि ।
हर्ष सौँ कपाल ताल देथि महा मोटि मोटि ॥

॥ अनुष्टुप् ॥

॥ देश ॥

महाकाली विशालाक्षी[6] मुदा गृह्णाति मुण्डालीम् ।
हसन्ती युद्धभूमौ तम्पिवन्ती शोणितं काली ॥
वहन्मुण्डालिभारन्ते महोक्षो विह्वलत्येषः ।
कथन्नाद्यापि सन्तृप्तो[7] भव्यान्व्यग्रश्च ते शेषः ॥

---

1 पछारि (१), 2 राक्षसावला (३), 3 घोट (३), 4 सृगाल (३), 5 नाचि (३), 6 विशालाक्षो (१), 7 सन्तृप्ती (३) ।

॥ चौपाइ ॥

लाखहि लाख सबार-विहीन । घोड़ दौड़ पिठ कसले जीन ॥
मुइले चढ़ल[1] पीठ असबार । कय चीत्कार भ्रमित दन्तार ॥
घोड़ा बहुतक डाँड़ टूट । लादल अस्त्र पड़ायल ऊँट ॥
शोणित-धार चलल बढ़िआय । गेलि दीर्घिका सिन्धु समाय ॥
भेलि तेहनि सूतहु नहि थाह । बहुत समुद्रक पहुँचल ग्राह ॥
तनिका भेटल भंक्ष्य कबन्ध । खाय खाय सभ भेल निर्धन्ध ॥
समरभूमि कत योगिनि नाँच । खाथि मासु निधुरायल काँच ॥
अगनित गृद्ध चिल्ह ओ काक । कङ्क श्रृगालक बनि गेल ताक ॥
भासल धर पर वायस बास । मांसाशी खग पूरित आश[2] ॥
लङ्का वनिता-गण जे कान । करुणा-गिरि-झरनाक समान ॥
भैरव मुण्डमाल लय आब । महाकाल गलमे पहिराब ॥
वृद्ध गृद्ध रण-महि मे भाष । आइ पुरल आमिष-अभिलाष ॥
आहि आहि हा हा धुनि कान । लङ्काधिप-पुर पड़ल मलान ॥
लङ्केश्वर से पढ़लनि पाठ । सगर नगर भेल राँड़क[3] ठाठ ॥
राक्षस-वृन्द-वधूटी कान । आज कयल विधि घर शमशान[4] ॥
मान्य विभीषण छथि कोन ठाम । जे राखल राक्षसकुल-नाम ॥
लय लय तीक्ष्ण हाथ तरुआरि । प्रिय-हीना केँ से देथु मारि ॥
धिक पति विनु जीवन संसार । अपनो प्राण लगै अछि भार ॥
पति-रण-मरण देखल सभ आँखि । की सुख जीव देह मे राखि ॥
आनु हलाहल सभ जनि खाउ । गर पाथर दय सिन्धु समाउ ॥
कतय कयल नहि राक्षस लूटि । हा स्वाधीन नगर गेल छूटि[5] ॥
त्यागथि विकला गहना अङ्ग । विधि विपरीत मनोरथ भङ्ग ॥
मणिमाला व्याली समतूल । लगइछ आइ[6] दैव प्रतिकूल ॥
केओ कह युवति चित्त कर थीर । सभ सङ्कट हर्ता रघुवीर ॥
तनिकाँ सौँ होयत नहि हानि । करुणामय तनिकाँ लिय मानि ॥
दाँतय[7] ओठ काट दशभाल । विकट कोप विश लोचन लाल ॥

1 चढ़ले (३), 2 आस (३), 3 राड़ (३), 4 समसान (१,२), 5 छुटि (३), 6 आब (३), 7 दातय (३)।

रामचन्द्र दिश रथ चढ़ि धाब । अशनि जेहन शर कोटि चलाब ॥
अविरल जलधर सम शर-धार । शरक निकर दशकन्धर मार ॥
राम-निकट जे वीर प्रधान । सभ जन आनन कयल मलान ॥
कनक-अलङ्कृत पावक जेहन । रघुवर बाण चलाओल तेहन ॥

॥ सोरठा ॥

देखि समर अमरेश, मातलि सारथि काँ कहल ।
रथपर अछि लङ्केश, रघुनन्दन रथ-रहित छथि ॥
रथ लङ्का लय जाउ, अस्त्र सकल तेहि पर धरू ।
हमर सन्देश शुनाउ, रथ चढ़ि मारू शत्रु केँ ॥
रथ पहुँचल तेहिठाम, हाथ जोड़ि मातलि कहल ।
चढ़ल जाय प्रभु राम, अमरेश्वर-साहित्य रथ ॥
अस्त्र शस्त्र सभ धयल, कवच अभेद्य अखेद्य विधि ।
प्रभु शुनि सम्मति कयल, नस्कार कय रथ चढ़ल ॥

॥ चौपाइ ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

महायुद्ध बरणय के पार । शेष सहस्र-मुख कहइत हार ॥
रावण अग्नि-अस्त्र लय फेक । अग्नि-अस्त्र सौँ प्रभु सभ टेक ॥
देव-अस्त्र दशभाल चलाब । दैव-अस्त्र[1]-बल राम फिराब ॥
पन्नग-अस्त्र चलाओल फेर । सापहि साप समर भेल ढेर ॥
दिश ओ विदिश विकल दल कयल । गरुड़-अस्त्र रघुनन्दन धयल ॥
पन्नगास्त्र जौँ जौँ फुफुआथि । गरुड़-अस्त्र गट गट गिड़ि जाथि ॥
रावण माया करथि अपार । श्रीरघुनन्दन कर संहार ॥
देखि इन्द्रक रथ सारथि निकट । रावण क्रुद्ध भेल मन विकट ॥
इन्द्रादिक कृत सभ उत्पात । बड़ प्रपञ्च अपनैँ रह कात ॥
इन्द्रक घोड़ा काँ शर[2] मार । मातलि सारथि शत्रु विचार ॥
पड़य न सारथि घोड़ा दृष्टि । कयल दशानन सायक-वृष्टि ॥
सुरगण नभ कर हा हा-कार । बिगड़ल देखि समर-व्यवहार ॥

---

1 ३मे सौँ बेशी । 2 सर (३) ।

सहित विभीषण वानर वीर । विकल मर्म्म मे वेधित तीर ॥
घोर युद्ध कर रावण एक । विश भुज धनुष धयल शर[1] फेक ॥
रामचन्द्र मन बाढ़ल कोप । करय चाह दश-वदनक लोप ॥
ऐन्द्र धनुष सायक लय हाथ । कालानल सन श्री रघुनाथ ॥
सुरगण सिद्ध[2] तथा गन्धर्व्व । देखथि युद्ध गगन सौँ सर्व्व ॥

॥ मिथिला-सङ्गीतानुसारेण भैरव-छन्दः ॥

॥ ध्रुपद ॥

रामचन्द्र-हाथ सौँ सायक छूट सन्न सन्न ।
राक्षसेन्द्र-देह सौँ शोणित[3] बह फन्न[4] फन्न ॥
देवी नाच मगन नूपुर बाज झन्न झन्न ।
देवताक वृन्द कहै रामचन्द्र धन्य धन्य ॥
वार वार मेदिनी[5] समस्त ऊठ[6] काँपि काँपि ।
अन्धकार चन्द्र सूर्य्य चक्र लेथि झाँपि झाँपि ॥
तारका-निपात उतपात बाढ़ अर्व्व खर्व्व ।
राहु-उपराग दृष्ट चन्द्र सूर्य्य विना पर्व्व ॥
गृद्ध वृद्ध आबि दशभाल-भाल-वृन्द नोच ।
आज छूटि गेल की जटायु धर्म्मशील शोच ॥
मौलि दशमौलि[7] मही आबि खस्स धम्म धम्म[8] ।
योगिनीक यूथ[9] लूट ताल-फल[10] हम्म हम्म ॥
रावण न मरय सकल माथ काटलहु ँ ।
सङ्ग्राम-अवनि मुण्ड-भुण्ड कोटि पाटलहु ँ ॥
चिन्तित बहुत चित्त भेल रघुनाथ काँ ॥
वृद्ध भेल देखि देखि[11] रावणक माँथ काँ ॥

1सर (३), 2 शिद्ध (३), 3सोणित(३), 4फम्न(३), 5 मेदिनि (३),6 उठ(३) 7 पाठ अछि तीनूमे 'दशलौलि' जेअशुद्ध प्रतीत होइछ। कवीश्वरक लेख-पोथीमे अछि 'दशमौलि-मौलि मही आबि खस्स धम्म।''अतएव हम एहन पाठ देल। 8 ३मे दोसर धम्म नहि। 9 पाठ तीनूमे अछि 'जूथ' परन्तु कवीश्वरक लेख-पोथी सँ एकर शुद्ध स्वरूप देल सछि। 10 ताल-भल (३), 11 ३मे दोसर देखि नहि।

महाकाल सहित समर शोभ कालिका ।
बहुत प्रसन्नतरा देवि मुण्ड-मालिका ॥
हाथ जोड़ि चण्डिकाक कयल देव वन्दना ।
जय जय जगदीश्वरी महेशि दक्ष-नन्दना ॥
सृष्टि उतपत्ति प्रतिपाल लय कारिणी ।
अम्बिका थिकहुँ अहाँ सर्व्व लोक-तारिणी ॥
तारिणी हमर चित्त चिन्ताजाल आज अछि ।
मर दशभाल से उपाय मुख्य काज अछि ॥
अट्टहास हसलि तखन मुण्डमालिका[1] ।
विजय पायब रघुनाथ कहै कालिका ॥
कयल कृतार्थ अहाँ मर्त्य[2]-अवतार सौँ ॥
योगिनी प्रसन्ना-मुखी भेलि रक्तधार सौँ[3] ॥
हमर क्षुधाक शान्ति[4] भेल नहि कतहू ।
भेलहुँ प्रसन्ना[5] हम महाकाल बतहू ॥
देखि लेब रावणक मृत्यु गोट नयन सौँ ।
तखन नाचति[6] योगिनीक वृन्द चयन सौँ ॥
रावण मरत कोना पूछू तनि भाय काँ ।
कहताह रावणक मरण-उपाय काँ ॥
देव नै विलम्ब करू मारू दशमाथ काँ ।
कहु की अभीष्ट-देनिहार सर्व्व-नाथ काँ ॥

॥ दोहा ॥

निकटहि छला विभीषण, पुछलनि श्रीरघुनाथ ।
रावण-मरण-उपाय कहू, सम्प्रति[7] हमरा हाथ ॥

---

1 मुन्ड (३), 2 मत्य (३), 3 नोँ (३), 4 सान्ति (१), 5 पाठ तीनूमे अछि "भेलहूँ प्रसन्नि....." हम कवीश्वरक लेख-पोथीक विशेष समीचीन पाठ देल अछि 6 । पाठ तीनूमे अछि 'तखना नाचती' परन्तु हम कवीश्वरक पोथीक विशेष समीचीन पाठ देल अछि । 7 सम्प्रति (३)

॥ चौपाइ ॥

शुनल विभीषण रघुवर-उक्ति । रावण-मरणक कहलनि युक्ति ॥
ब्रह्म-दत्त-वर छथि दशभाल । निकट न आबय तनिकर काल ॥
नाभि-प्रदेश कुण्डलाकार । सुधा-सरोवर प्राणाधार ॥
अनल-अस्त्र सौँ शोषल जाय । रावण-मरणक सहज उपाय ॥
अनल-अस्त्र रघुवर देल छोड़ि । रावण-नाभिकुण्ड देल फोड़ि[1] ॥
दुइ भुज एक शेष कय माँथ । काटल भुज शिर श्रीरघुनाथ ।
घोर शक्ति दश-कण्ठ[2] उठाय । मारल मरथु विभीषण भाय ॥
शक्तिक शक्ति हरल प्रभु बाट । कनकाञ्चित सिर शर सौँ काट ॥
रावण अतिशय भेला मलान । एक शिर दुइ भुज तदपि न ज्ञान ॥
रघुनायक पर सायक फेक । रघुनन्दन शर मार अनेक ॥
तुमुल युद्ध सुर हर्ष विषाद । सकल समुद्र रहित-मर्याद ॥
मातलि देलनि स्मरण कराय । दशमुख माथ न काटल जाय ॥
कयल जाय ब्रह्मास्त्र प्रयोग । दशकन्धर नहि जीतय योग ॥
रावण-मरण-समय अछि आज । कहथि रहथि नित देव-समाज ॥
ताकि मर्म्म मे हनिऔनि बाण । चट पट उड़ दशवदनक प्राण ॥
इन्द्रक सारथि कहलनि जैह । रघुनन्दन शुनि कयलनि सैह ॥
धयलनि हाथ दीप्त शर तेहन । कर फुफकार फणीश्वर जेहन ॥
जनिक पार्श्व मे मारुत बनल । तनि फल मे रवि राजित अनल ॥
देह गगनमय जनिकाँ सर्व्व । लोकपाल बस[3] तनिका पर्व्व ॥
गुरुता मन्दर मेरु समान । यहन अस्त्र लेलनि भगवान ॥
सर्व्वलोक-भय-नाशन नाम । अभिमन्त्रित कयलनि श्रीराम ॥
वेद-उक्त विधि सौँ लेल चाप । कयलनि रघुवर प्रबल प्रताप ॥

॥ षट्पद छन्द ॥

क्रुद्ध कहल रघुनाथ, दशानन खल काँ मारब ।
निर्भय कय सभ लोक, भार धरणीक उतारब ॥

1 पोड़ि (३), 2 कण्ड (३), 3 वश (१।, दश (३),

कयल धनुष सन्नद्ध[1] बाण, अरि-मर्म्म-विघाती।
वज्रकल्प उद्धर्ष धधक, दशकन्धर-छाती॥
लागल जाय कृतान्त जकँ, हृदय बेधि[2] प्राणान्त कय।
धसि धरणीतल राम-शर, आबि बसल तूणीर भय॥

॥ कलहंस-छन्दोभेदे माली-छन्दः श्रीछन्दश्च ॥

रावणक हाथ सौँ ससरि खस चाप।
घुमिकेँ खसल भूमि भूमिभार पाप॥
भेलहुँ अनाथ नाथ विना दशभाल।
छलहुँ कि सिंह आब भेलहु श्रृगाल॥
करत के रावण सदृश प्रतिपाल।
सूर्य्यवंश मध्य राम जनमल काल॥
दिश[3] गोट बाहु[4] दश गोट छल भाल॥
तनिकहु आबिकेँ ग्रहण कयल काल॥
प्राण सौँ रहित भय गेला दशमाथ।
नाचि नाचि कीश कहै जय जय रघुनाथ॥

॥ चौपाइ ॥

रावण-मरण विदित सभठाम। मन अति हर्ष विजय सङ्ग्राम॥
पूरल[5] आश देव-मन आज। रघुनन्दन कयलनि सभ काज॥
त्रिदश-दुन्दुभी बाजय लाग। नाच अप्सरा गाबि सुराग॥
रघुनन्दन पर फूलक वृष्टि। कय देल आज अपूर्व्व सृष्टि॥
स्तुति कर मुनिजन सिद्ध समस्त। धन्य कयल रावण-बल-अस्त॥
रावण-देह जोति बहराय। रघुनन्दन मे गेल समाय॥
से देखइत सभ देव छलाह। धन्य दशानन सुर बजलाह॥
हमरा सभ काँ सात्विक कर्म्म। सपनहुँ नहि पर-तरुणी-नर्म्म॥
बहुत कर्म्म रावण-कृत छोट। तामस-रूप भूप बड़ गोट॥
विष्णु-द्रोह तापस काँ मार। हरि हरि आनय अनकर दार॥

---

1 सन्नर्ध (३), 2 बधि (३), 3 यिश (३), 4 बांहु (३), 5 पुरल।

दैवी गति किछु कहल न जाय । मुक्तिलाभ तनिकाँ की न्याय ।।
नारद पहुँचलाह तहिठाम । कहलनि नाम बजावोल[1] राम ।।
बुझलनि अमरक हृदय-विषाद । नारद कहल बहुत आह्लाद[2] ।।
रावण-मरण शुनल प्रभु-हाथ । कोपहु कल्पवृक्ष रघुनाथ ।।

॥ रूपमाला छन्द ॥

मारि रावण विश्व-कण्टक, धनुष बामा हाथ ।
तथा धयलय दक्ष कर शर, भ्रमण कर रघुनाथ ।।
शोण-लोचन-कोण रिपु-शर-भिन्न श्याम शरीर ।
कोटि-सूर्य्य-प्रकाश रक्षा, करथु से रघुवीर ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे एकादशोऽध्याय: ।।

1 बजाओल (१),　2 अह्लाद (३)।

॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

देखि विभीषण ओ हनुमान । अङ्गद लक्ष्मण कीश प्रधान ॥
जाम्बवान आदिक रणधीर । सभकाँ तुष्ट कहल रघुवीर ॥
अहँ सभहिक[1] बाहुक बल पाबि । मारल रावण लङ्का आबि ॥
यावत रवि शशि नभ रहताह । यशोगान मुनिजन करताह ॥
ई चरितक जे कीर्त्तन करत । भव-वारिधि विनु श्रम से तरत ॥
रावण मृतक पड़ल रण-भूमि । गृद्ध काक विघसित घुमि[2] घूमि ॥
दुस्सह मन्दोदरिक विषाद । मुरछि मुरछि कर कुररी-नाद ॥
पति-गुण कहि कहि करथि विलाप । पाप-प्रताप असह सन्ताप ॥
भेलहुँ अभागिनि पहु विनु आज । धिक् विधवा-जीवन की काज ॥
तुम्बुरु प्रभृतिक शुन जे गान । काक नोच से प्रियतम-कान ॥
यम जे लोचन-ओतहि जाथि । हा[3] से गृद्ध नोचि कय खाथि ॥
शिव काँ माँथ चढ़ाबथि काटि । सञ्जीवन-साधन भेल माटि ॥
अहह नाथ नित नित अन्याय । एकदिन माँथा अवश बिशाय ॥
परमेश्वर सौँ भारी द्वेष । दण्डक गेलहुँ दण्डी-वेष[4] ॥
सीता हरि आनल जेहि काल । तेहिखन मानल नहि दशभाल ॥
शोक विभीषण-हृदय समाय । शीतज्वर जनु देल दलकाय ॥
कुल-प्रधान हा बड़का भाय । काल-प्रपञ्च वृथा नहि जाय ॥
अपनैक कि कहब गुण ओ दोष । के कर बारण कालक रोष ॥
विधवा-वनिता-वृन्द-विलाप । शुनि पर-मन[5] सञ्चर सन्ताप ॥

॥ दोहा ॥

शुनु लक्ष्मण रघुनाथ कह, सत्वर अहँ तहँ जाय ॥
विकल विभीषण शोक सौँ, सद्यः करू उपाय ॥

---

1 समयि (३), 2 घूमि (३), 3 हो (३), 4 भेष (३), 5 ३मे 'मन' नहि ।

लाउ विभीषण काँ एतय, तत्त्वज्ञान शुनाउ।
की राजा मन विकल अहँ, वनिता-वृन्द बुझाउ[1] ॥

॥ चौपाइ ॥

लक्ष्मण[2] कहल सुखद उपदेश। कनलैँ की भेटता लङ्केश ॥
देहादिक सौँ आत्मा आन। विश्व अनित्य मानि करु ज्ञान ॥
देखू रावण-देह समीप। भवन अँधार मिझायल दीप ॥
सगुण ब्रह्म रामहिँ काँ जानि। सेवा करू कतहु नहि हानि ॥
प्रभु कहइत छथि से शुनु कान। भ्राता रावण छथि नहि आन ॥
दाहादिक परलौकिक काज। करु गय सभटा अपनहि आज ॥
कनइत वनिता-गण करु चूप। लङ्का-राज्यक भेलहुँ भूप ॥
सभ जनि घुरिकेँ लङ्का जाथु। पानि पिबथु गय अन्नो खाथु ॥
लक्ष्मण[2] कहल कथा शुनि कान। गेला जतय राम भगवान ॥
कहल विभीषण शुनु भगवान। रावण पतित छला सभ जान ॥
तनिकर दाह करब नहि जाय। विदित छला अततायि कहाय ॥

॥ सोरठा ॥

वैर मरण-पर्य्यन्त, कहल राम उत्तर तकर।
भेल प्रयोजन अन्त, करु रावण संस्कार विधि ॥
तखन विभीषण कयल, लङ्कापति-संस्कार तहँ।
काष्ठ घृतादिक धयल, चिता धधक प्रलयाग्नि सन॥
कयलनि तखना[3] स्नान, देल तिलाञ्जलि हाथ कुश।
वनिता-गण काँ ज्ञान, कहल विभीषण हित वचन ॥
क्रन्दन की रहु चूप, सगर नगर घर बनल अछि।
हमहि भेल छी भूप, सुख सौँ रहबे पूर्व्ववत् ॥
दशमुख-धरणी जाय, बद्धाञ्जलि प्रभु सौँ कहल।
हो की हमर उपाय, दुर्म्मति पति-सुत-रहित छी ॥

---

1 शुनाउ (३), 2 लक्ष्मन (३), 3 तखन (३)।

॥ अहीर छन्द ॥

॥ तिरहुति ॥

छल छथि पति दशमाथ, हे माधव, तनि विनु विकलि अनाथ ॥
ओ अरि-भाव बढ़ाय, हे माधव, प्रभु तन गेलाह समाय ॥
हम पापिनि[1] सहि ताप, हे माधव, परिणत भेल फल पाप[2] ।
हम घननादक माय, हे माधव, जलनिधि-शोक समाय ॥
प्रभुक चरण भरि नयन, हे माधव, देखल मुक्तिक अयन ।
जय रघुनन्दन वीर, हे माधव, नूतन जलद शरीर ॥
भ्राता युगल उदार, हे माधव, करब हमर उद्धार ॥

॥ मिथिला-सङ्गीतानुसारेण कलहंस छन्दः ॥

॥ श्रीमालव छन्दश्च ॥

देवर अहाँक एत छथि महराजे[3] । सुख सभ अनुभव तनिक समाजे[3] ॥
दशमुख-घरणि[4] करणि[5] अछि नीके । पुर परिजन सभ अहँइक थीके ॥
देवर वदान्य सह करु सहवासे । मन न राखब किछु विपतिक त्रासे ॥
शुनि प्रभु-वचन सकल दुख[6]-हीना । लङ्का[7]-भूति मानल से अपन अधीना ॥

॥ सोरठा ॥

सभ काँ नगर पठाय, प्राप्त विभीषण प्रभु-निकट ।
पङ्कज-नयन उठाय, देखल भक्त-प्रधान काँ ॥
रामक दण्ड-प्रणाम, बहुत विनय मातलि कयल ।
चलला सुरपति-धाम, प्रभु-आज्ञा सौँ हर्षयुत ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

करु अभिषेक विभीषण माथ । लक्ष्मण काँ कहलनि रघुनाथ ॥
पूर्व्व कयल हम लङ्कानाथ । सुखशासन न विभीषण[8]-हाथ ॥
विधिपूर्व्वक ब्राह्मण सभ आब । हाटक-घटसौँ जलधि-जल लाब ॥
पुरजन वानर सैन्य अनेक । कयल विभीषण नृप-अभिषेक ॥

---

1 पापिन (३), 2 पात (३), 3 राजै....समाजै (३), 4 पाणि (३), 5 करण (३),
6 दुःख (१,२), 7 लङ्क (३) । 8 विभीषण (३) ।

प्रभुक प्रणाम विभीषण करथि । रत्न अमूल्य चरण पर धरथि ।।
देखि विभीषण प्रभु कृतकृत्य । बड़ गोट राज्य पाबि गेल भृत्य ।।
मिलि सुग्रीव सङ्ग रघुनाथ । भेल विजय-यश अहँइक हाथ ।।
मारल रावण लङ्का राज । देल विभीषण काँ भल काज ।।
विजय-लाभ भेल अहँक प्रसाद । राखल उचित मित्र-मर्याद ।।
लङ्का मारुतसुत अहँ जाउ । सीता काँ वृत्तान्त शुनाउ ।।
रावण-मरण प्रथम कहि देब । समाचार तनिकर बुझि लेब ।।
शुनि प्रभु-वचन गेला हनुमान । दनुजी[1]-जन मन कर अनुमान ।।
प्रथमहिँ लङ्का अयला जैह । मन अबइछ लगइछ रङ्ग सैह ।।
जनकनन्दिनी देखल जाय । दिन दिन गेलि बहुत दुबराय ।।
रामचन्द्र-पद मे दृढ़ ध्यान । चिन्हल न आयल छथि हनुमान ।।
हाथ जोड़ि तहँ कयल प्रणाम । दूर ठाढ़ भय कहलनि नाम ।।
स्वामिनि रावण काँ रघुवीर । मारल समर अमर-मन थीर ।।
भेल विभीषण नव लङ्केश । जय जय करथि अमर अमरेश ।।
प्रभु-आज्ञा सौँ हर्ष समाद । अयलहुँ कहय न रहय विषाद ।।
रावण-दशा कि अछि कहबाक । धर पर सञ्चर गृद्ध ओ काक ।।
गेला विभीषण आज्ञा पाय । अन्त-क्रिया कयलनि बुझि भाय ।।
जत छल लङ्का रावण-वंश । सभहिक भेल समर विध्वंस[2] ।।
श्रीरघुवर प्रभुवर जे दास । से सभ कुशल समर निस्त्रास ।।
वैदेही मन शुनि बड़ हर्ष । तन पुलकित लोचन जल वर्ष ।।
रघुवर-प्रिय-सेवक हनुमान । वचन अहाँक सुधाक समान ।।
प्रिय वचनक तुल की[3] वसु देब । सकल लोक उत्तम यश लेब ।।
शुनु वैदेहि कहल हनुमान । देवि-अनुग्रह सम[4] की आन ।।
रावण काँ मारल रघुवीर । मन छल कलुषित से सुख थीर ।।
हनुमानक शुनि वचन उदार । सीता उत्तर कहल विचार ।।
करुणा-सदन समीर-कुमार । कहल समाद प्रभुक दरबार ।।
आज्ञा देथि, दुखी-दुख-हरण । देखी श्री रघुनन्दन-चरण ।।

1 दनुजा (३), 2 विध्वंश (३), 3 कि (२), 4 सभ (३), 5 जेहि (३) ।

चलल अनिल-सुत कयल प्रणाम । पहुँचलाह रघुवर जहि[1] ठाम ॥
सीता-दशा कहल सभ कहल । गदगद कण्ठ नयन जल बहल ॥
जेहि कारण सागर मे सेतु । दशकन्धर मारल जे हेतु ॥
तनि सीता-मन छूटय शोक । देखल जाय मङ्गाय सुक्रोक ॥
रघुनन्दन-माया के जान । मन मे कयल तखन प्रभु ध्यान॥
सीता अनल-गता बहराथु । माया-सीता छाया जाथु ॥

॥ सोरठा ॥

मित्र नवल[2] लङ्केश, कहल रघूत्तम हर्षयुत ॥
लय आनू एहि[3] देश, सीता भीता छथि वृथा ॥

॥ चौपाइ ॥

स्नान वस्त्र सुन्दर नवरङ्ग । सकलाभरण-विभूषित[4] अङ्ग ॥
शिविका[5] पर लय आनू आज । प्राणेश्वरि काँ हमर समाज ॥
गेला विभीषण सङ्ग हनुमान[6] । करबाओल तनिका आस्नान[7] ॥
बड़ि बड़ि[8] वृद्धा काँ मङ्गबाय । तेल सुगन्धि देल लगबाय ॥
सभ सौँ उत्तम छल नव कोष । वस्त्र पहिरलनि से निर्दोष ॥
जनि पहिराओल गहना सर्व्व । वस्तु अमूल्य कि खर्व्व निखर्व्व ॥
शिविका चढ़लि कहार उठाय । चललि राजपथ सङ्ग सहाय ॥
सङ्ग पदाति न किछु पछुआथि । हट हट करयित आगाँ जाथि ॥
देखय दौड़ल वानर-ठठ्ठ । धक्का खड़गिक[9] सह निरहठ्ठ ॥
नहि हट पथ सौँ कपि जे झट्ट । बेँतक मारि सहथि पट पट्ट ॥
वानर-वृन्द कयल चित्कार । राक्षसगण वानर काँ मार ॥
राम समीप गेला सभ गोट । मन विषाद किछु लगलैँ[10] चोट ॥
देखि सबारी अबइत एक । अनुव्रजन कर लोक अनेक ॥
कहल विभीषण काँ तहँ राम । वैदेही आबथु एहिठाम ॥
उतरि सबारीपर सौँ लेथु । निज-पद-दर्शन जनकाँ देथु ॥
रघुनन्दन आज्ञा देल जेहन । जनकनन्दिनी[11] कयलनि तेहन ॥

1 जेहि (३), 2 ३मे 'ल' नहि 3 यहि (१,२), 4 ३मे 'वि' नहि । 5 शिवका (१,२), 6 हनूमान (१), 7 पाठ तीनूमे अछि 'अस्नान' जाहिमे 'अ' जनार्थक प्रतीत भय अनुपयुक्त अर्थदैत अछि । कवीश्वरक-लेख-पोथीमे ई पाठ अछि जाहिमे 'आ' समस्त-बोधक विशेषार्थक समीचीन अछि। 8 बढ़ि (३), 9 खडङ्गि (२), 10 लागल(३), 11 पुनि तीनूमे पाठ अछि 'नन्दनी' ।

राम असह्य कथा किछु कहल । सर्व्वसहा-तनया सभ सहल ।।
सीता काँ मन मे भेल आनि । लक्ष्मण काँ कहलनि शुनि कानि।।
करु करु देवर ज्वलित हुताश । करब सकल मन संशय नाश ।।
प्रभु-अनुमति बुझि जोड़ल अनल । देखइत लोक शोक सौँ कनल ।।
राम निकट भय[1] भेला ठाढ़ । धह धह धाह आगि मे बाढ़ ।।
पतिक प्रदक्षिण कय कय बेरि । बेरि बेरि चरणाम्बुज हेरि ।।
वैदेही सभ शक्तिक शक्ति । रामचरण मे अविरल भक्ति ।।
विकल लोक ओ राक्षसदार । कि होयत कि होयत वचन उचार[2]।।
सकल देवता भूसुर-चरण । कयल प्रणाम कष्ट सभ हरण ।।
सीता निर्भीता निज चित्त । साहस कर आमर्ष निमित्त ।।
करयुग जोड़ल अनल समीप । विधु-दिनकर-कुल-कीर्त्ति-प्रदीप ।।
जौँ रघुवर मे सत्य सनेह[3] । तौँ रह अनल बनल ई देह ।।
जौँ पति तेजि मन अनत न जाय । तौँ रह अनल बनल ई काय ।।
जाग्रत स्वप्नदशा मे आन । पुरुषक भेल न मन मे ध्यान ।।
सत्य स्वकीया जौँ हम नारि । पति-पद-व्रत मन गर्व्व विचारि[4] ।।
ज्वलित अनल मे पड़बे जाय । व्रत अन्यथा देह जरि जाय ।।
साक्षी पावक रक्षा करब । संशय सकल-लोक-गत हरब ।।
कयल प्रदक्षिण अग्नि-प्रवेश । जय-जय शब्द भेल नभ बेश ।।
सीता अनल-राशि मे ठाढ़ि । सीता-कान्ति कोटिगुण बाढ़ि ।।
सकल सिद्ध कह वारंवार । एहन[5] विशुद्ध आन के दार ।।
लक्ष्मी सीता करु जनु त्याग । सकल लोक काँ अनुचित लाग ।।
अनल कहल बनि दिव्य स्वरूप । शुनु जगदीश्वर माया-भूप ।।
छल छथि सीता सोपलि जतय । प्रकट भेलि छथि देखू ततय ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे द्वादशोऽध्यायः ।।

---

1 सब (३), 2 प्रचार (३), 3 सिनेह (३) 4 विचार, (१,२) 5 यहन (१, २) एँहन (३) ।

॥ अथ त्रयोदशोध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

ऐरावत पर चढ़ि सुरराज । समीचीन श्री-शची[1] समाज ॥
सहस्राक्ष अयला तहिठाम । सुरगण सहित गबैत गुणग्राम ॥
यम ओ वरुण कुवेर समेत । अयला रघुनन्दन-रण-खेत ॥
वृषभ चढ़ल अयला वृषकेतु । करब रघूत्तम-स्तुति तैँ हेतु ॥
रजताचल सन झलकय देह । चण्डी सङ्ग अखण्ड सिनेह ॥
त्रिनयन शोभित श्रीमुख पाँच । रघुपति-चरित सतत से बाँच ॥
गङ्गा पिङ्ग-जटा भल रङ्ग । भूतप्रेत-गण बहुविध सङ्ग ॥
ब्रह्मा अयला हंस-सवार । सङ्ग[2] शारदा सदगुणदार[3] ॥
वीणा पुस्तक अक्ष सुमाल । अयली जतय राम महिपाल ॥
मुनि ऋषि पितर सिद्ध गन्धर्व्व । उरगादिक मिलि अयला सर्व्व ॥
बद्धाञ्जलि अभिनत सतभाष । प्रभु पूरल[4] जन-मन-अभिलाष ॥
सकल-लोक-कर्त्ता भगवान । साक्षी सकल देह विज्ञान ॥
रावण सभक हरल धन धाम । तकरा अपने मारल राम ॥
भेलहुँ अकण्टक सुख सौँ रहब । निज निज सदन सुयश-चय[5] कहब॥
ब्रह्मास्तुति कयलनि अगुआय । आज कयल प्रभु समुचित न्याय ॥

॥ अनुष्टुप्[6] ॥

॥ देश ॥

स्तुवे कादम्बिनी-श्यामं धनुष्मन्तम्मुदा रामम् ।
युगान्ते सर्व्वलोकायामशोकानां हि विश्रामम् ॥

---

1 सची (१,२), 2 संङ्गु (१,२), 3 सद्गुण(१) संङ्गण (३), मुदा अर्थसँ सद्गुणदार समीचीन बूझि पड़ैत अछि। कवीश्वरक लेख-पोथी मे पाठ अछि 'शोभित-दार' 4 पूरण (३), 5 जय (:) 6 अनुष्टुप (३)।

खले मन्दोदरीकान्ते महच्चित्रं रणे शान्ते ।
हृताशेषावनीभारं रमादारं महोदारम् ॥
मुनीनां दुःखशान्त्यर्थं मुदा सम्प्राप्तकान्तारम् ।
सुमित्रानन्दनं वन्दे रणे शक्रारिहन्तारम् ॥

॥ सबैया छन्द ॥

वाक अगोचर चित्त अगोचर, के कह केहन कान्ति कहाँ छी[1] ।
सूक्ष्मसौँ सूक्ष्म विशाल विशालसौँ, ईश्वर छी विभु छी जे जहाँ छी ॥
सृष्टिक हेतु अनादि अनामय, ध्यान सौँ ध्येय-स्वरूप तहाँ छी ।
विष्णु अहाँ छी विरञ्चि अहाँ[2] छी, महेश अहाँ छी कहाँ नै अहाँ छी ॥

ज्ञान समाधि समग्र महातप, ध्येय सरूप जहाँ छी तहाँ छी ।
नाम विरञ्चि कहै छथि लोक से, गोचर ब्रह्म न[3] देव कहाँ छी ॥
व्योम समीर तथानल ओ जल, देखल जाइछ सर्व्व-सहा छी ।
श्री रघुनन्दन दुष्ट-निकन्दन, सद्गुण ब्रह्म अनन्त अहाँ छी ॥

॥ चौपाइ ॥

पावक प्रकट[4] भेल तहिकाल[5] । दिव्यरूप अति-दीप्ति विशाल ॥
वैदेही आरोपित अङ्क । क्षीरोदधि जनु रमा निशङ्क ॥
अरुण वसन विमलारुण कान्ति । दिव्य विभूषण सुन्दरि शान्ति ॥
सकलदेव जय-जय धुनि करथि । गगन[6] अवनि स्वेच्छा[7] सञ्चरथि ॥
पावक कहल राम भगवान । करयित यशोराशि-गुणगान ॥
सीता काँ सोपल वन राम । लेल जाय प्रभु से एहि[8] ठाम ॥
प्रमुदित राम कमल-कर धयल । वाम अङ्ग मे स्थापित कयल ॥
से शोभा[9] देखथि अमरेश । कह जय-जय सीता-प्राणेश ॥
सहस्राक्ष फल पाओल[10] आज । सीतासहित देखल रघुराज ॥
हम अमरेश्वर छल ई गर्व्व । से अभिमान रहित भेल सर्व्व ॥

---

1 की (३), 2 अहीँ (३), 3 ३मे 'न' नहि । 4 प्रगट (३), 5 तेहि (३), 6 नमन (३),
7 तीनूमे 'छा' । 8 यहि (१), 9 सीता (३), 10 पायोल (१) ।

श्रीप्रभु-चरणक हम लघु दास । रावणादि-कृत छूटल त्रास ॥
रामचन्द्र नूतन-घन-रङ्ग । जनक-सुता-सौदामिनि सङ्ग ॥
जहिलय योग ज्ञान तप करथि । गुहावास घन वन सञ्चरथि ॥
जहिलय शङ्कर करथि समाधि । तनिकाँ देखल छूटल आधि ॥
केओ कह कर्म्म काल केओ प्रकृति । केओ कह पुरुष सिद्धमुनि प्रभृति ॥
कहयित शुनयित अन्त न पाब । केओ कह सृष्टिक सहज स्वभाव॥
कर्त्ता कर्म्मादिक जत भाष । देखि प्रभु-चरण पुरल अभिलाष ॥
रहल न एको मन वैषम्य । सभहिक अपने केवल गम्य ॥

॥ दण्डक ॥

जय सदोद्यत-धराधारे, हृत-धरित्री-विपुल-भारे,
जगन्मातर्गुणागारे[1] महोदारे हे ॥
जनक-महि-महनीय-कन्ये, शिव-विरञ्चि-प्रभृति-मान्ये,
रमा-गौरी-जन-वदान्ये, यशोहारे हे ॥
सदानाहत-जलज-वासे, पाप-तूल-महा-हुताशे,
पूरिताखिल-सुर-जनाशे, निराकारे हे ॥
राम-घन-चपले सुकामिनि जय चराचर-वर स्वामिनि,
रूप जित-कन्दर्प्प-मानिनि, शक्तिसारे हे ॥

॥ चौपाइ ॥

राम कहल शुनु शुनु सुरराज । एकगोट अपनैँ सौँ[2] काज ॥
वानर रण मे मुइल बहूत । से सजीव करु[3] प्रिय पुरहूत ॥
से शुनि तेहन कयल अमरेश । अमृत-वृष्टि सौँ राम-निदेश ॥
प्राप्त[4] जीव से लाखहि लाख । जय रघुनन्दन आनन्द भाष ॥

॥ सोरठा ॥

शुनु करुणानिधि राम, हाथ जोड़ि शङ्कर कहल ।
हम आयब[5] ओहिठाम, अति उत्सव अभिषेक मे ॥

---

1 गुणगारे (३), 2 ३मे 'अछि' अधिक । 3 तीनूमे दीर्घ 'रू' 4प्राप्ति (३), 5 आयोब (१),

॥ जयकरी छन्द ॥

दशरथ नृप देखयित छथि ठाढ़ । अहँ मे प्रेम जनिक अछि[1] गाढ़ ॥
दशरथ काँ लगला प्रभु गोड़ । लक्ष्मण सीता हर्ष न थोड़ ॥
दशरथ कहलनि पूरल आश । संशय आधि[2] सर्व्व भेल नाश ॥
दशरथ गेला पाबि सन्मान । राग द्वेष गत पाओल ज्ञान ॥
तखन[3] विभीषण जोड़ल हाथ । एक विज्ञप्ति हमर रघुनाथ ॥
घर थिक अपन चलल प्रभु जाय । दिनेक रहब-शक के अटकाय ॥
स्नान अलङ्कृत मङ्गल वेष । सभ काँ मन प्रभु-छवि काँ देख[4] ॥
घर भेल अपन अहँक सन[5] भक्त । रघुवर कहलनि समय अशक्त ॥
अति सुकुमार भरत की हयत । अवधि एको दिन जौँ बिति जयत॥
वल्कल वसन जटा धर माथ । हमरा विनु शत्रुघ्न अनाथ ॥
तकइत हयता हमरे बाट । अनतय न बनब छन सम्राट ॥
करब स्नान[6] की तनि विनु आज । जायब सत्वर तनिक समाज ॥
सुग्रीवादिक हो सत्कार । हम मानब अपने उपकार ॥
शुनल विभीषण रघुवर-उक्ति । अति प्रसन्न मन मानल युक्ति ॥
कनकाम्बर वररत्न बजार । निज निज रुचि पाहुन व्यवहार ॥
यूथप-गणक कयल सत्कार । मुदित विभीषण परमोदार ॥
मणि लय वानर सादर चाट । स्वाद न पाब पटक झट बाट ॥
कनकाम्बर नख दसनैँ चीर । हसथि विनोद देखि रघुवीर ॥
पुष्पकरथ रवि-तेज विराज । लयल विभीषण रामक काज ॥
तेहि[7] रथ चढ़ला राम नरेश । अछि गन्तव्य शीघ्र निज देश ॥
सीता लक्ष्मण रथ चढ़लाह । मन उदास कपिगण पड़लाह ॥
सभ काँ राम वचन कहि वेश । भालु कोश काँ देल निदेश ॥
वानर भालु यथारुचि जाथु । स्वेच्छा[8] वन उत्तम फल खाथु ॥
कपि-पति अङ्गद नवलङ्केश । सभ काँ कहलनि चलइत[9] देश ॥
मित्र-काज अपने सभ कयल । ऋण उपकार सर्व्वदा धयल ॥

---

1 नित (३), २ आदि (३), 3 तषन (१), 4 देष (१), 5सव (३) 6 तीनू मे पाठ अछि 'अस्नान' जाहि मे 'अ'व्यर्थ अछि । कवीश्वरक लेख-पोथी मे से नहि अछि । 7 तहि (३), 8 तीनूमे 'छा' 9 चलईत (१) ।

आज्ञा दी तौँ चली सबेर । भेट घाट होयत कय बेर ॥
किष्किन्धा लय सैन्य अपार । कपिपति जाउ सिद्ध उपकार ॥
भक्त विभीषण करु गय राज । लङ्कापुर मे सहित समाज ॥
बड़ अगुताइ[1] कथा अछि ढेर । चलब अयोध्या होइछ अबेर ॥
शुनि शुनि सभजन जोड़ल हाथ । मानल जाय देव रघुनाथ[2] ॥
देखितहुँ रामचन्द्र-अभिषेक । रहल लालसा मन मे एक ॥
कौशल्या[3] काँ करब प्रणाम । घुरि घुरि सभ जन अयबे गाम ॥
प्रभु कह कथा देब नहि काटि । केओ न हमर भरत सौँ घाटि ॥
चलु चलु पुष्पक होउ सबार । अतिशय कठिन प्रेम व्यवहार ॥
लङ्केश्वर कपिवर हनुमान । वानर रथ पर चढ़ल प्रधान ॥
राजराज-रथ अतिशय राज । चढ़ल सकल दल हलचल काज ॥
आज्ञा[4] देलनि विश्व-निवास । हंसयुक्त रथ उड़ल अकास ॥
रघुनन्दन वर छवि काँ पाब । शोभा जेहन विरञ्चिक आब ॥
दिनकर-बिम्ब सुछवि काँ धयल । धनपति-रथ नभ-पथ गति कयल ॥

॥ सोरठा ॥

जय जय श्याम-शरीर, जय जय पङ्कज-नयन प्रभु ।
जय सानुज रघुवीर, जय सीतापति अमर कह ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे त्रयोदशोऽध्यायः ॥

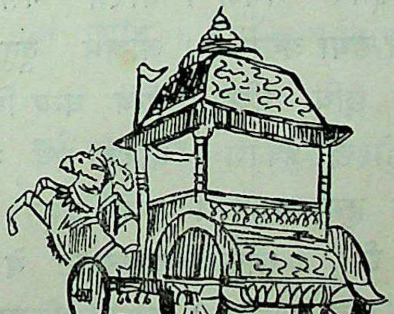

1 अगुताई (३) 2 रघुराज (३), 3 तीनू मे 'कौसलया' । 4 अज्ञा (१) ।

॥ अथ चतुर्दशोऽध्यायः ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

क्रम क्रम सकल देखाबथि बाट । रथ पर सौँ सीता काँ राम ॥
गिरि त्रिकूट लङ्का रण-भूमि । काक गृद्ध मड़ड़ाइछ[1] घूमि ॥
राक्षस वानर काँ एत मारि । मुइला एतहि दशानन हारि ॥
कुम्भकर्ण घननादक झुण्ड । बहुतक एतहि खसल छल मुण्ड ॥
ई बाँधल भेल सागर-सेतु । वानर-निकर उतरबा हेतु ॥
परम पवित्र पाप सभ हरथि । सेतुबन्ध दर्शन जे करथि ॥
हम रामेश्वर स्थापन[2] कयल । शरण विभीषण एहि[3] थल धयल ॥
दर्शन कयल जानकी जाय । जय शिव रटथि सैन्य-समुदाय ॥
किष्किन्धा ई कपिपति-ग्राम । कहि किछु काल कयल विश्राम ॥
तारादिक सुग्रीवक दार । चढ़ली पुन रथ उड़ल उदार ॥
सीता-प्रिय-कारण व्यवहार । करथि रघूत्तम विश्वाधार ॥
मुइला बालि बली एहिठाम । ऋष्यमूक गिरि हिनकर नाम ॥
पञ्चवटी अयलहुँ से ठाम । राक्षस सङ्ग जतय संग्राम ॥
भेला जे जे समर समक्ष । मारल गेला से से रक्ष ॥
मुनि सुतीक्षण मुनि तथा अगस्त्य । आश्रम दूतू परम प्रशस्त[4] ॥
तापसगण पड़इत छथि दृष्टि । धन्य धन्य थिक हिनकर सृष्टि ॥
चित्रकूट गिरि होइछ प्रकाश । बारह वर्ष जतय छल वास[5] ॥
होउ प्रसन्न शरण हम धयल । भरत बहुत हठ एतहि कयल ॥
भारद्वाजाश्रम[6] ई थीक । यमुनातट मे लगइछ नीक ॥
ई थिकि गङ्गा करू प्रणाम । परम पवित्रा कहलनि राम ॥
सरयू निकट अयोध्या धाम । थिक कर्त्तव्य नगर-विश्राम ॥

1 मड़राइछ (३), 2 थापन (१), 3 यहि (१), 4 प्रशस्त्य (१), 5 वाश (१), 6 भारद्वाज-आश्रम (३) ।

॥ सोरठा ॥

भरद्वाज-मुनि-धाम, अटकाओल[1] कौवेर रथ ।
अभिनत कयल प्रणाम, मुनि हर्षित पुछलनि[2] कुशल ॥
पूर्ण चतुर्दश वर्ष, तिथि भल आइलि पञ्चमी ।
मन मे बाढ़ल हर्ष, वार्त्ता पुर पहिलहि उचित ॥
जिबइत छथि सभ माय, भरद्वाज मुनि शुनल अछि ।
कुशल क्षेम दुहु भाय, पुरी सुभिक्षा[3] अछि कहू ॥
अति प्रसन्न सभ लोक, भरद्वाज हसयित कहल ।
अपनैँक[4] केवल शोक, आबि गेलहुँ देखबे करब ॥
कन्द मूल फल खाथि, माथ जटा वल्कल[5] वसन ।
अनतय कतहु न जाथि, भरत खरौँ सेवा करथि ॥

॥ चौपाइ ॥

तप-प्रताप अपनैंक पद ध्यान । रामचन्द्र हमरा सभ ज्ञान ॥
जे जे चरित कयल प्रभु जाय । आज्ञा पायब देब शुनाय ॥
नहि अछि आदि मध्य नहि अन्त । परब्रह्म छी देव अनन्त ॥
अपनैँक नाभिकमल-उत्पन्न । ब्रह्मा करथि सृष्टि सम्पन्न ॥
निर्गुण ब्रह्म सगुण अवतार । हरण करैछी पृथिवी-भार ॥
करु पवित्र प्रभु हमरो गेह । सेवक-विषय विशेष सिनेह ॥
अङ्गीकार कयल भगवान । अति आतिथ्य सुभोज्य विधान ॥
भेटय तीर्थ तहाँ तहाँ जाथि । तीर्थ-कृत्य-विधि तहाँ नहाथि ॥

॥ बरबा छन्द ॥

कहलनि श्रीरघुनन्दन, शुनु हनुमान ।
अयलहुँ से वार्त्ता पड़, भरतक कान ॥

॥ प्रज्झटिति छन्द[6] ॥

पुर झटिति पवन-सुत अहाँ जाउ । सभ कुशलक्षेम जनकाँ शुनाउ ॥
गृह शृङ्गवेरपुर हमर मित्र । तनिकहु कहि देबक सभ चरित्र ॥

---

1 भटकाओल (१) 2 पुछनि (१), 3 सुभीक्षा (३), 4 ३मे 'क' नहि 5 वलकल (३),
6 प्रज्झटिति (३) ।

छथि नन्दिग्राम मे भरत भाय । आगमन कुशल तनिकाँ शुनाय ॥
पुन हमर निकट अहँ शीघ्र आउ । कहु किछु विलम्ब नहि अहँ[1] लगाउ ॥
मानुष-तन धयलय[2] हनूमान । चलला उड़ि नभ जनु गरुत्मान ॥
से श्रृङ्गवेरपुर[3] प्रथम जाय[4] । अयला रघुनन्दन से शुनाय ॥
चौदह वर्षोत्तर अहँक मित्र । सभटा कहि देलनि तनि चरित्र ॥
अतिशय मन हर्षित गुह निषाद । छुटि गेल सकल संशय-विषाद ॥

॥ चौपाइ ॥

कहि हनुमान चलल उड़ि गगन । रामतीर्थ सरयू देखि मगन ॥
सरयू लाँघि गेला तहिठाम । भरत छला जहाँ नन्दिग्राम ॥
रामचरण-पङ्कज अनुराग । डेढ़ कोश निजपुर सौँ लाग ॥
अति कृश देखल भरत-शरीर । नहि सुखाय[4] पल नयनक नीर ॥
जटामुकुट बलकल भल चीर । दीन मीन संक्षीण सुनीर ॥
कन्द मूल फल भक्ष्य-विधान । रामचन्द्र-पद केवल ध्यान ॥
पुर-प्रधान काँ शोक अभङ्ग । वसन पहिर[5] से गेरुक[6] रङ्ग ॥
चौदहवर्ष जानि अवसान । पलपल हर्ष विषाद समान ॥
धर्म्मर्मूर्त्ति जनु देखल ठाढ़ । हर्ष हनूमानक मन बाढ़ ॥
कहलनि विनत हाथ दुनु जोड़ि । चिन्ता भरत अहाँ दिय[7] छोड़ि ॥
त्यागु त्यागु निज हृदय-महाधि । राम-वियोगज-शोक-समाधि ॥
गाछ सुखायल[8] · लता समूल । भेल सपल्लव नव फल फूल ॥
नाच मयूर पूरस्वर[9] गाब । षड्ज सु-मूर्त्तिमान बनि आब ॥
कोकिल-कुल कल करइछ गान । स्वर पञ्चम शुनि पड़इछ कान ॥
केकयि-नन्दन करु अनुमान । अयला रामचन्द्र भगवान ॥
राजराज रथपर रघुराज । राजा बनल अबै छथि आज ॥
रावण काँ मारल संग्राम । कर्म्म अमानुष कयलनि राम ॥
क्रम क्रम चरित कहल सभ गोट । नहि कर्त्तव्य भरत मन छोट ॥
सीता लक्ष्मण चित्त प्रसन्न । प्रभु सङ्ग मित्र सुगुण-सम्पन्न ॥
हर्षक कथा शुनाओल कान । करु उद्योग मिलन सन्मान ॥

1 अहाँ (३), 2 धयल (३), 3 सृङ्ग···· (१), 4 शुखाय (१), 5 पहिरने (३) 6 गेरुआ (३), 7 दिअ (३), 8 शुखायल (१) 9 पुरस्वर (३) ।

॥ आर्य्या दोहा ॥

॥ जाज तिरहुति ॥

पवन-तनय-मुखवाणी, शुनल भरत हित कान ।
सकल-कला-कल्याणी, ब्रह्मानन्द-समान ॥
फरकै छल अछि[1] दहिना, भुज ओ दहिना आँखि ।
सत्य-वचन प्रभु तहिना, मरइत लेलनि राखि ॥

॥ मिथिला-सङ्गीतानुसारेण कोडार छन्दः ॥

अयला भ्राता नरेश ।
केकयी-कुमत्रणा सौँ वनी [2]मुनिवेश[3]॥
विष्णु की विरञ्चि अहाँ की स्वयं महेश ।
मानव कि[4] कारुणिक लयलहु सन्देश ॥
हर्षकथा बराबरि वित्त नै विशेष[5] ।
रघुनाथ-सभ्य अहाँ लोभक न लेश ॥
आउ मिलि पाउ सुख कहू कि निदेश ॥
धन्य धन्य आज हम छूटल कलेश ॥

॥ दोहा ॥

ग्राम[6] देब शय गोट हम, शय हजार देब गाय[7] ॥
मुग्धा षोड़श कन्यका, मरयित लेल जिआय ॥

॥ चौपाइ ॥

भरत एक मन करु जनु शोक । कुशलक्षेम अबइत छथि लोक ॥
जनिक हेतु चिन्ता विस्तारि । अयला से रण रावण मारि ॥
अपनैँक कुशल बुझक[8] छल काज । आगु पठाओल श्रीरघुराज ॥
दारुण शोक करू परित्याग । जागल भरत इष्टजन-भाग ॥
देखब भाय मनोरथ पूर्त्त । किछु[9] विलम्ब नहि एक मुहूर्त[10] ॥
लक्ष्मण सङ्ग राम कृत-कार्य्य । आबि गेला अछि कुशल-सभार्य्य॥

---

1 अति (३), 2 सुनि (३), 3 वेस (१), 4 की (३), 5 विशेस (१), 6 नाम (३), 7 नाय(३);
8 बुझल (३), 9 किछू (३)। महूर्त्त (१)।

हरषनोर-सौँ गेला नहाय । रघुनन्दन सन अयला भाय ।।
खसि पड़ला महि हर्ष अपार । अति आनन्द कि तन सम्भार ।।
मारुत-सुत काँ हृदय लगाब । उजड़ल नगर बसाओल आब ।।
बहुत वर्ष शोचहिँ गेल बीति । वार्त्ता आइ प्राप्ति भल रीति ।।
जौँ जिब रह तौँ सहज स्वभाव । शय वर्षहु पर आनन्द आब ।।
कहु वानर रघुवर सतसङ्ग । कोन गत बाढ़ल प्रीति अभङ्ग ।।
क्रम क्रम सकल चरित हनुमान । कहल मगन-मन शेष समान ।।
भरत कहल शत्रुघ्न बजाय । अयला अरि जिति बड़का भाय ।।
देवी देव जते छथि गाम । तनिक समर्च्चन हो तहिठाम[1] ।।
वन्दी मागध प्रभृति जे लोक । आबथि शीघ्र रोक नहि टोक ।।
गणिकागण काँ शीघ्र बजाब । मङ्गलदायिनि गाइनि[2] आब ।।

।। गीत तिरहुति ।।

भरत निकट मे एक जन, बड़ परसन[3],
कहलनि शुभ सन्देश, आब प्रभु यहिखन ।।
जनिक वियोग सकल जन, अति अनमन,
देखब जनक-दुलारि, राम ओ लछमन ।।
हर्ष-नोर दृग बहयित, ई कहयित,
बीतल चौदह वर्ष, विषम दुख सहयित ।।
गीत सुन्दरी गाबथि, हरि आबथि,
रामचन्द्र घनश्याम, चातकी पाबथि ।।

।। जयकरी छन्द ।।

हाथी घोड़ा रथ पथ लागु । रानिक चलय[4] सबारी आगु ।।
चलल सकल पुरजन अगुआय । देखब राम इ नयन जुड़ाय ।।
ब्राह्मण वृद्ध कहथि सभ लोक । आज छुटत मानस जत[5] शोक ।।
मुक्तारत्नमयोज्वल गाम । तोरण विविध पताका धाम ।।

1 तेहि (३), 2 गामिनि (१), 3 परशन (१),, 4 चलल (३), 5 यत (३) ।

घर बाहर छवि[1] तेहन बनाब । वासव-मानस विस्मय आब ।।
वृन्द वृन्द चलली पुर-नारि । रम्भा रतिक गर्व्व देल टारि ।।
शय हजार घोड़ा रथ सङ्ग । एक अयुत तत मद मातङ्ग ।।
कनक-अलङ्कृत रथ पथ राज । स्वागत रामचन्द्र महराज[2] ।।
शिविका चढ़लि चललि सभ माय । बाल तरुण कि रहय पछुआय ।।
रामक खरौँ भरत धय माँथ । हाथ जोड़ि कह भेटता नाथ ।।
पयरहि चलल सङ्ग लघु भाय । गगन निहारथि दृष्टि उठाय ।।

॥ सोरठा ॥

आब कि अछि कहबाक, भुज उठाय हनुमान कह ।
सभ जन ऊपर ताक, रथ अबइछ जनु चन्द्ररवि ।।
सीता लक्ष्मण राम, ओ सुग्रीव कपीश छथि ।
भक्त विभीषण नाम, मन्त्री मान्य अनेक जन ।।

॥ मिथिला-सङ्गीतानुसारेण कामोद छन्दः ॥

मन बड़ हरष बरष दृग-वारि
सीता राम लक्ष्मण वदन निहारि ।
गेला वनवास ओ वरष दश चारि
अयला[3] अवधि-दिन रावण केँ मारि ।।
आनन्द-सुधावगाह सब नरनारि
मनोरथ-द्रुम कुसुमित सभ डारि ।
त्रिदश आनन्दमग्न नररूप धारि
मर्त्य देवलोकक टुटल जनु आरि[4] ।।

॥ जयकरी छन्द ॥

देखि कयल जन हर्षक सोर । अयला राम सुदिन भेल मोर ।।
लक्ष्मण सीता रथपर राज । भल भल हित जन तनिक समाज ।।

---

1 छथि (३), 2 पाठ अछि तीनूमे 'महाराज' परन्तु ताहिसँ छन्दोभंग होइत अछि । कवीश्वर 'महराज' पाठकय ठाम देलेँ छथि । ओ एहू ठाम लेख-पोथीमे सएह पाठ अछि ।
3 अयल (३), 4 डारि (३) ।

वृद्ध बाल वनितागण भाष । देखल राम पुरल अभिलाष ॥
उतरि बाजि गज रथ असबार । रामचन्द्र दिश गगन निहार[1] ॥
भरत ऊर्द्धमुख[2] जोड़ल हाथ । सानुज सजन देखल रघुनाथ ॥
स्यन्दनस्थ[3] रघुनन्दन केहन । गिरि सुमेरु पर दिनकर जेहन ॥
वन्दन करथि भरत अनुराग । बद्धाञ्जलि दृगपल नहि लाग ॥
रथ लय चलु एहि महि निज ठाम । अयलहुँ गाम कहल प्रभु राम ॥
भरत कयल वन्दन[4] कय बेरि । पुष्पक महिपर रघुवर हेरि ॥
भरत उठाय अङ्क आरोप । चिर-वियोग दुःखक भेल लोप ॥
लक्ष्मण सौँ मिलि मिलकेँ भरत । कहथि धन्य प्रभु-सेवा-निरत ॥
वैदेहीक उचारल नाम । चरण-सरोरुह करथि प्रणाम ॥
भरतक भक्ति-दशा सभ देख । धर्म्म देहधारी मन लेख ॥
हनूमान जन देथि चिन्हाय । सानुज भरत मिलथि तत जाय ॥
कपिपति जाम्बवान युवराज । मैन्द द्विविद ओ ऋषभ समाज ॥
मुदित विभीषण सौँ मिललाह । क्रम क्रम जे जन मुख्य छलाह ॥

॥ रूपमाला छन्द ॥

नल गवाक्ष सुषेण आदिक गन्धमादन नाम ।
शरभ पनश मनुष्य-तन सभ बनल छल तहि ठाम ॥
सकल जन सौँ भरत मिलला कुशल पुछलनि सर्व ।
सकल जन मिलि कर प्रशंसा भ्रातृ-भक्ति अखर्व्व ॥

कहल मिलि सुग्रीव केँ पुन[5] अहाँ मुख्य[6] सहाय ।
राम रण दशवदन जीतल अहाँ पाँचम भाय ॥
तखन पुन शत्रुघ्न रामक चरण कयल प्रणाम ।
लक्ष्मणक सीताक वन्दन कयल से तहिठाम ॥

॥ चौपाइ ॥

शोक-विकल जननी काँ जानि । राम प्रणाम कयल सन्मानि ॥
केकयि तथा सुमित्रा माय । लगला गोड़ सभहि काँ न्याय ॥

---

1 निहारि (३) 2 उर्ध्वं (१,२), ऊर्द्ध (३), 3 स्पन्दनस्थ (१), स्यनन्दस्थ (३), 4 ३में 'न' नहि 5 भुप (३) 6 सुख्य (३) ।

तखनुक कहल कि जाइछ रीति । हरषें कनयित गबयित गीत ।।
भरत खरौं से रघुवर-चरण । पहिराओल[1] सभ सङ्कट-हरण ।।
आइ सुफल भेल जीवन मोर । अयश मेटायल सञ्चित घोर ।।
सञ्चित द्रव्य सैन्य बल कोश । दश-गुण अछि प्रभु-चरण-भरोश ।।
लेल जाय निज राज्यक भार । किङ्कर हम कि करब उपकार ।।
शुनि कपिवर-लोचन बह वारि । अकपट भरतक विनय विचारि ।।
उतरलाह रथपर सौं राम । कहलनि अयलहुँ[2] अपना गाम ।।
पुष्पक-रथ अहँ धनपति-धाम । जाउ कुशल सौं रहु तहिठाम ।।

।। दोहा ।।

गुरु वसिष्ठ पद-कमल मे, रघुवर कयल प्रणाम ।
गुरु-आज्ञा आसन निकट, कयल राम विश्राम ।।

।। कवित्त ।।

रामचन्द्र-जननि पसारि आँखि देखु अहाँ,
जानकीसहित राम लछन किशोर कें ।
भूमि नाचै सुन्दरी गगन किन्नरी[3] ई नाचै,
बाट बाट भाट सुकवित्त पढ़ै शोर कें ।।
राग नाचै रागिनी भवानीपति नाचि कहै,
भल कैल मारल जे दशकण्ठ चोर कें ।
जननी प्रणाम राम करथि जानकीयुत,
कौसल्या हरषि लेल मुख चुमि कोर कें ।।

इति श्रीचन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे चतुर्दशोऽध्यायः ।।

1 पहिरायोल (१), 2 अयलह (३), 3 कीन्नरी (१), ।

।। अथ पञ्चदशोऽध्यायः ।।

।। चौपाइ ।।

केकयि-तनय विनय-सम्पन्न । किछु नहि मानस छल प्रच्छन्न[1] ।।
भरत कहल शुनु बड़का भाय । अपनैँ नृपति दुखी वन जाय ।।
चौदह वरष[2] छलहुँ वनवास । अयलहुँ अवधि[3] पुराओल आस ।।
जे कृति कयलनि केकयि माय । से प्रभु नहि मन पाड़ल जाय ।।
प्रभु-आज्ञा मानल सभ गोट । सेवक थिकहुँ भाय हम छोट ।।
राज्य-भार करु अपन अधीन । रविकुल शुद्ध रीति प्राचीन ।।
ई कहि चरण पड़ल लपटाय । देल जाय प्रभु आधि घटाय ।।
केकयि कहल सहल[4] उपहास । हरल हमहिँ प्रभु राज्य-विलास ।।
कहल नीक नहि विश्वक लोक । चौदह वरष सहल मन शोक ।।
भेल से भेल गेल दिन बीति । एखनहुँ राखक थिक कुलरीति ।।
हमहुँ अशक्य अहाँ काँ माय । देल कुमतिवश विपिन पठाय ।।
आज्ञा हमर यहन[5] लिय मानि । रीति सनातन करु जनु हानि ।।
कहल वसिष्ठ कहै छथि माय । भरतक कथा कयल प्रभु जाय ।।
राम कयल राज्यक स्वीकार । भेल सकल थल जय-जयकार ।।
परमात्मा की करता राज । सभटा होइछ माया-व्याज ।।
समय जानि लक्ष्मण लघु भाय । नापित निपुण देल बजबाय ।।
तनिकर कृत्य भेल सम्पन्न । सकल लोक मन होथि प्रसन्न ।।
अभिषेकक आयल सम्भार । रघुवर हेतु वृत्त सभ द्वार ।।
प्रथमहिँ कयल भरत असनान । लक्ष्मण तखना[6] स्नान-विधान ।।
सविधि स्नान कयल कपिराज । तथा विभीषण सभ्य समाज ।।
भरतक जटा केश फुटकाब । चित्र-माल्य अनुलेप लगाब ।।
वसन महोत्तम पहिरल भरत । छवि-तुलना त्रिभुवन के करत ।।

1 प्रछन्न (१), प्रसन्न (३), 2 वर्ष (३), 3 अपधि (३), 4 सकल (३), 5 बचन (३), 6 तखन (६) ।

भरत कराओल प्रभु प्रतिकर्म्म । मन मे मानल सेवक-धर्म्म ॥
रुचिशुचिमय-युत शोभाधाम । दिव्य-अलंकृति-धृत प्रभुराम ॥

॥ कवित्त ॥

कौशल्या कुशलमति हरषि श्रृङ्गार कर,
अपनहि कर सौँ पुतोहु विधुवदना ।
वदन निहार ओ उचार[1] शिवगौरीगीत,
हृदय लगाब[2] वारवार शोभासदना ॥
सकल शाशुक[3] सीता करथि प्रणाम आगु,
आशिष ओ देथि कहि कहि कुन्दरदना[4] ॥
जनकक कन्यका कनीनिका मे राखै योगि[5],
अयोध्या[6]-मिथिलालोक आधिक निकन्दना ॥

॥ सोरठा ॥

सभ रानी सीताक, कय शिंगार आनन्द कह ।
शिरोरत्न वनिताक, त्रिभुवन मे सीता अहाँ ॥

॥ दोबय छन्द ॥

आगत छली जते उत्सव मे, वानर-लोकक दारा ।
सभक शिंगार[7] कयल कौशल्या, धृतशोभा विस्तारा ॥
कहलनि धर्म्म-पुतोहु थिकहु अहाँ, हमरा[8] प्राणाधारा ।
लक्ष्मण रामचन्द्र हित युवती, लोचनतारा तारा ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

आज्ञा शत्रुघ्नक शुनि कान । रथ सुमन्त रवि-रुचि शुचि आन ॥
तेहिपर चढ़ला राम नरेश । देखितहिँ सभ जन विगत-कलेश॥
कपिपति अङ्गद ओ हनुमान । तथा विभीषण वरमति-मान ॥
कयलनि स्नान अलंकृत अङ्ग । गज बाजी चढ़ि चल प्रभु सङ्ग ॥
कपिपति वनिता काँ अतिमान । सीतासङ्ग चललि चढ़ि यान ॥
जेहन हरित-हय-रथ त्रिदशेश । चलल महत्पुर प्रभु रुचिवेश ॥

1 उचारे (३), 2 लगाय (३), 3 सासु (३), 4 चन्दरदना (३), 5 राखै जानि (३), 6 अयोध्या (३), 7 सिंगार (१), 8 हमरो (३) ।

रत्नदण्ड-कर सारथि भरत । छविमय के समता जग करत ॥
शत्रुघ्नक कर छत्र सु-धवल । पंखा लक्ष्मण कर लस नवल ॥
एक चामर शत्रुघ्नक हाथ । दोसर कर धर असुरक नाथ ॥
सिद्धसंघ कर जय-जय-कार । मधुर मनोहर वचन उचार ॥
वानर सुन्दर मनुज-स्वरूप । गजवर चढ़ल चढ़ल जनु भूप ॥
बाजन नानातरहक बाज । रामचन्द्र पाओल निज राज ॥
पुरवासी जन सकल निहार । दुर्व्वादल-श्यामल सुकुमार ॥
रत्नकिरीटालङ्कृत अङ्ग । शोणकमलदल लोचन-रङ्ग ॥
पीताम्बर वरमुक्ता-हार । भाग्य अपन मन प्रजा विचार ॥
सुग्रीवादिक कपि-प्रधान । सभ सौँ सेवित श्री भगवान ॥
कस्तूरी चन्दन घनसार । कल्पमहीरुह-सुमनक हार ॥
उच्च अटापर चढ़ि वरनारि । एकटक रघुवर-रूप निहारि ॥
निज गृहकाज देल परित्यागि । शान्ति कयल मन आधिक आगि ॥
हसि हसि करथि प्रसूनक वृष्टि । गेल पुरी सौँ शोकक सृष्टि ॥
इषत-हसित-मुख राम निहार । प्रजाचित्त छूटल दुख भार ॥

॥ रूपमाला ॥

अमरपति-पुर तुल्य शोभा, लसित दशरथ-धाम ।
सकल लोक कृतार्थ करयित, पहुँचला श्रीराम ॥
देवतामति मातृलोकक, कयल चरण प्रणाम ।
प्रभु-चुमाओन विविध उत्सव, भेल विधि[1] तहिठाम[2]॥
भरत काँ रघुनाथ कहलनि, हमर जे छल धाम ।
सर्व्वसम्पति-युक्त समुचित, वास हो ओहिठाम[3] ॥
मित्र कपिपति ओ विभीषण, राक्षसेन्द्रक नीक ।
सुख-निवास कपि-प्रधानक, आज देबक थीक ॥

1 घि (३), 2 तेहि (३), 3 १मे 'हि' नहि ।

॥ सोरठा ॥

सभक देल सुख-वास, भरत जेहन आज्ञा प्रभुक ।
भेल चित्त निस्वास, दिन जाइत जानथि न से ॥
थिक विचार इत एक, भरत कहल कपिनाथ सौँ।
करब प्रभुक अभिषेक, आबय सात-समुद्र-जल ॥

॥ कवित्त ॥

कहल कनक-घट सातहु समुद्र-जल
आनु गय झट दय कपीन्द्र प्रधान काँ ॥
अङ्गद सुषेण शुनि[1] बहुत हर्षित चित्त
प्रभुक निमित्त वेग मारुतसमान काँ ॥
आनल सकल जन जल सातो समुद्रक
दूर पथ कत जाम्बवान हनुमान काँ ॥
आयल सकल तीर्थ-जल से कहल जाय
मन्त्रिसङ्ग शत्रुघ्न वसिष्ठ वर-ज्ञान काँ ॥

॥ सबैया चकोर छन्द ॥

रत्न-सिंहासन शुद्ध मनोहर, संस्थित जानकि-संयुत राम ।
उत्सव-मध्य त्रिलोकिक लोक, प्रधान प्रधान छला तहिठाम ॥
रावण-गर्व्व-विनाशन सर्व्व, स्वरूपसौँ निर्ज्जित कोटिक काम ।
स्वस्ति-समस्त प्रशस्त विलक्षण, गाब-विरञ्चि मनोहर साम ॥

॥ कवित्त ॥

गौतम जावालि ओ वसिष्ठ वालमीकि वृद्ध,
ब्राह्मण बहूत वेद-विद्या-निधान सौँ ॥
ऋत्विज अनेक ओ कुमारी तथा मन्त्रिगण,
औषधि समस्त रस देब सन्मान सौँ ॥
लोकप सगण मन मगन समस्त लोक,
पाओल अभीष्ट फल राम भगवान सौँ ॥

---

1 सूनि (३) ।

तुलसी गन्ध पुष्प जल कोमल कुशाग्र-हस्त,
राम-अभिषेक भेल वेदक विधान सौँ ॥

॥ चौपाइ ॥

तत शत्रुघ्न छत्र कर धयल । श्वेतरङ्ग प्रभु-सेवा कयल ॥
चामर धयल धवल तहँ हाथ । वानरेन्द्र ओ राक्षस-नाथ ॥
स्तुति कर सकल देव तहिठाम । जय-जय वैदेहीपति राम ॥
जगत्प्राण देल हेमक माल । इन्द्रक अनुमति कान्ति विशाल ॥
सर्व्व-रत्न मणि कञ्चन हार । इन्द्र देल भक्तिक व्यवहार ॥
स्तुति कर पुन पुन सुरगन्धर्व्व । नाचथि किन्नर अप्सर-सर्व्व ॥
देव दुन्दुभी गगन बजाब । पुष्प-वृष्टि नभ सौँ भल आब ॥
नव-दूर्व्वादल[1]-सुन्दर श्याम । पङ्कजलोचन श्रीयुत राम ॥
कोटि-प्रभाकर-छवियुत-अङ्ग । नव-किरीटि[2] छवि-विजित-अनङ्ग ॥
पीताम्बर धर दिव्याभरण । सकल-लोक आनन्दित-करण ॥
सीता शोभित वामा भाग । श्री देवी काँ अति-श्री लाग ॥
अतिशय शोभा धृत-कर-कमल । सर्व्वाभरण-विभूषित बनल ॥
उमा-सहित सम्प्राप्त महेश । स्तुति कर अति आनन्दित देश ॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

नमो नमो रामाय सशक्तिकाय निर्गुणाय,
नीलोत्पलसुप्रभातिकोमलाय विष्णवे ।
मीनकमठादिरूपधारिणे धरित्रीधृजे,
देव-महि-कण्टक-समस्त-खल- जिष्णवे ।
किरिट[3]-हाराङ्गदविभूषण-विभूषिताय,
सिंहासनस्थाय- रामचन्द्र-भूप-वेधसे ।
लीलारूपधारकाय सर्व्वविश्वकारकाय,
सकलमहसामपि देवपूर्णतेजसे ॥

1 दुर्वा (३), 2 किरीट (३), 3 किरीट (३)।

॥ सोरठा ॥

स्तुति करयित अमरेश, बद्धाञ्जलि प्रभु सौँ कहल ।
जय-जय राम नरेश, वेश कयल सुरकार्य्य प्रभु ॥
रावण विधि-वर पाबि, देवताक सुख हरल छल ।
मारल खल काँ आबि, पाओल प्रभुक प्रसाद से ॥

॥ चौपाइ ॥

सकल देव कह निज कर जोड़ि । सङ्कट-बन्ध देल प्रभु तोड़ि ॥
रावण-कृत कि नियत छल वास । गमहि गमहि सहि अतिशय त्रास॥
रावण हरि लेल यज्ञक भाग । ब्रह्म-दत्त-वर सौँ के लाग ॥
रावण काँ मारल प्रभु जाय । सर्वसहापर[1] भेलहुँ सहाय ॥
पितरलोक कहलनि कलजोड़ि । शरण न आन चरण ई छोड़ि ॥
रावण-वध सौँ सुख बड़ गोट । खायब पिण्ड प्रमोद[2] सँ मोट ॥
रावण मख सभ हरि लय जाय । भाग गयादिक अपनहि खाय ॥
यज्ञ न रहल सहल बड़ कष्ट । रावण मुइल भेल दुख नष्ट ॥
गबइत गीत प्रीति सौँ सर्व्व । कहल राम सौँ गण गन्धर्व्व ॥
सहल बहुत दशकन्ध-अनीति । प्रभु-गुणगान छुटल सब भीति ॥
तनि गुण गाबि बचाओल प्राण । आज कयल सब सङ्कट त्राण ॥
प्राप्त महोरग किन्नर-लोक । स्तुति कर कह हम भेलहुँ अशोक॥
वसु मुनि गुह्यक पक्षी सकल । सहित प्रजापति छल[3] छथि विकल॥
बड़ गोट उत्सव देखल[4] नयन । दुःखैँ रहित सकल मन चयन ॥
पृथक पृथक स्तुति सभ जन कयल । रामचरण-पङ्कज मन धयल ॥
लक्ष्मण-सीता-सय्युँत राम । विधि-अभिषिक्त विराज सुधाम ॥
ब्रह्मादिक निज पद प्रस्थान । कयल कयल प्रभु वड़ सन्मान ॥

---

1 सहासहाया (१), 2 पाठ तीनूमे इऐह अछि, परन्तु 'प्र' जँ नहि रहैत तँ नीक छल । कवीश्वरक लेख-पोथीमे अछि 'रहब मन मोट' । 3 दल (३), 4 देखक (३) ।

॥ दण्डक छन्द ॥

नवघन-रङ्ग हे ।

राम भूपति थित[1]-सिंहासन, अवनिगत जनु पाकशासन[2] ।
कान्ति-कोटि-दिनेश-भासन, कृत-दशानन-भङ्ग ॥
जानकी-लक्ष्मण-मरुत्सुत, मुनि-निवह हरिगणसँ-संयुत ॥
रामचन्द्र-समीप बसि नित, भजन भाव प्रसङ्ग ॥
गगन-सङ्कुल त्रिदश बाजन, पुष्प वर्षण कर मुदित-मन ।
करथि प्रभु-गुण-गान परसन, विपुल-पुलक सुअङ्ग ॥
राम प्रभु गुण-धाम स्मित-सुख, सदा दायक भक्त जन सुख ।
कयल अर्दित दनुज-गण तुख, कान्ति-विजित-अनङ्ग ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे पञ्चदशोऽध्यायः ॥

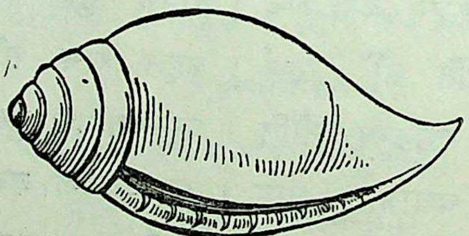

1 शुभ (३), 2 शानन (१) ।

॥ अथ षोड़शोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

रामक भेल जखन अभिषेक । महाराज काँ नीति विवेक ॥
सकल लोक काँ अति सुख प्राप्त । सकल शस्य सौँ धरणी व्याप्त ॥
भल भल सुफल महीरुह लाग । राम नृपति प्रकृतिक बड़ भाग ॥
जे छल सुमन गन्ध सौँ रहित । भेल अपूर्व्व सुगन्धिक सहित ॥
घोड़ा दान हजार हजार । धेनु दान कर परमोदार ॥
शत शत वृषभ विप्र काँ देथि । आशिष शिष्ट लोक सौँ लेथि ॥
तीस[1] कोटि पाओल भल दान । वर सुवर्ण ब्राह्मण गुणवान ॥
वस्त्राभरण रत्न वसु आन । नित नित ब्राह्मण जन काँ दान ॥
सूर्य्यकान्ति सम रत्न उदार । देल सुग्रीव-गरा मे हार ॥
अङ्गद काँ अङ्गद देल राम । लगला करय सुयश सभ ठाम ॥
चन्द्रकोटि[2] मणि-रत्न सुहार । वैदेही काँ देल उदार ॥
पहिरि हार निज कर मे धयल । दृष्टि पवन-नन्दन दिश कयल[3]॥
प्रभु-मुख वारहिँ वार निहार । हार-दान मे केहन विचार ॥

॥ दोहा ॥

जतय तुष्ट मन अहँक अछि, दिय तनि जन काँ हार ।
वैदेही काँ कहल प्रभु, हमरो सैह विचार ॥
हार देल हनुमान काँ, लेल से कण्ठ लगाय ।
बद्धाञ्जलि नत ठाढ़ तहँ, भक्ति कहल की जाय[4] ॥

॥ चौपाइ ॥

वर अभिलषित माँगु हनुमान । कहलनि रघुनन्दन भगवान ॥
त्रिभुवन सुर-दुर्लभ वरदान । देब अहाँक समान न आन ॥

1 तीश (३), 2 कीटि (३), 3 धयल (३), 4 ई दोहा ३मे अछिए नहि ।

कहि नहि हो हनुमानक हर्ष । गद गद कण्ठ नयन जल वर्ष ।।
यावत अपनैँक रह जन नाम । तावत हमहुँ रही तहि ठाम ।।
रहय निरन्तर नामस्मरण । प्रभुक चरण-वश अन्तष्करण ।।
ई वर छोड़ि न माँगब आन । छल सौँ रहित कहल हनुमान ।।
राम तथास्तु कहल तहि ठाम । जीवन्मुक्त[1] अहाँ गुणधाम ।।
कल्पान्तहु[2] हमरे सायुज्य । सतत सुखी रहु तन नैरुज्य ।।
वैदेही देलनि वरदान । जतय ततय बसु गय हनुमान ।।
ततहि मनोभिलषित फल पयब । आशिष हमर न चिन्तित हयब ।।

॥ सोरठा ॥

धरणी धय निज माथ, कयल प्रणाम समीर-सुत ।
वैदेही - रघुनाथ, सानुकूल रहु की कहब ।।

॥ किरीट छन्द ॥

वृक्षक पत्र जकाँ रघुनायक, जाय कहूँ अपनैँक कहायब ।
वानर छी मन मे बसि केँ, झरना-जल पान ततै फल खायब ।।
जीवन मुक्त निरन्तर ध्यान, विदेह-सुता प्रभु-गान शुनायब[3] ।
जाइतछी हिमवान मे[4] हे प्रभु, ई सुख-पुञ्ज कतै हम पायब ।।

॥ चौपाइ ॥

हाथ जोड़ि कहि कयल विदाय । गुह निषाद काँ हृदय लगाय ।।
घर थिक अपन निरन्तर आउ । मित्र अपन पुर सम्प्रति जाउ ।।
चिन्ता हमर चित्त मे धरब । विपुल भोग-सुख सुख सौँ करब।।
मित्र हमर सारूप्ये पयब । अन्त समय नहि दुर्ग्गति जयब ।।
दिव्याभरण राज्य कय देश । देल मित्र काँ राम नरेश ।।

1 जीवनमुक्त (३), 2 कल्पा……(१), 3 शुनाय (१), 4 मेँ ।

नयन सजल मिलि मिलि[1] चललाह । राम-वियोग न किछु बजलाह ॥
सुग्रीवादिक सकल प्रधान । सभ जन पाओल वर सन्मान ॥
वानर-निकरक कय सन्मान । वसनाभरण अमूल्य अमान ॥
सन्मानित सभ भेल विदाय । गदगद कण्ठ नयन जल जाय ॥
सभजन अपन अपन गेल गेह । अचल रहल रामक पद नेह ॥
किष्किन्धा कपि-पति सह-दार । चलल सैन्य सह भरिया भार ॥
लङ्का गेला निज जन सहित । भक्त विभीषण कण्टक-रहित ॥
रघुवर कयल बहुत सत्कार । जे पवित्र मित्रक व्यवहार ॥
लक्ष्मण काँ बल सौँ युवराज । कयल रघूत्तम सहित समाज ॥
कर्म्माध्यक्ष तदपि नहि बन्ध । परमात्मा मन सौँ निर्द्वन्ध ॥
स्वात्मानन्दहिँ प्रभु सन्तुष्ट । जन उपदेश करथि मन तुष्ट ॥
हयमेधादिक यज्ञ अनेक । कयल यथाविधि विमल-विवेक ॥
विपुल दक्षिणा जन सन्तुष्ट । त्रिभुवन जन मन रहल न रुष्ट ॥
प्राप्त ततय नहि विधवा योग । नहि सर्प्पादिक भय नहि रोग ॥
तस्करादि नास्तिक नहि लोक । प्राप्त न ककरहु पुत्रक शोक ॥
रामाचरित प्रजा समस्त । वस्तु प्रशस्त सतत सभ सस्त ॥
सकल प्रजाकेँ[2] धर्म्महिँ प्रीति । बड़ मन धृति नहि ईतिक भीति ॥
बरष वलाहक समय सुबेरि । व्रीहि व्रीहि मय महि मे ढेरि ॥
वर्णाश्रम-गुणयुत जन सर्व्व । ककरो नहि मन अंकुर गर्व्व ॥
प्रजा पुत्र सम कर प्रतिपाल । रामचन्द्र उत्तम महिपाल ॥
दशसहस्त्र वर्षावधि राज । कयल राम बसि अवनि-समाज ॥
चिरतर जीवन तन आरोग्य । धन धान्यादिक उत्तम भोग्य ॥
अतिपुण्यद श्रीरघुवर-चरित । पाठक श्रोता काँ नहि दुरित ॥
श्रीरामक अभिषेक चरित्र[3] । श्रवण पठन धन-करण पवित्र ॥
पढ़थि रामायण शुनथि समग्र । प्राप्ति सुपुत्र न मन हो व्यग्र ॥
समर-शूर रण निकट न आब । रामचरित काँ सहज स्वभाव ॥
वन्ध्या रामायण मन लाब । रजस्वला उत्तम सुत पाब ॥

1 मिसि मिसि 2 प्रजाकाँ (१), 3 चरित (१)।

रामायण जे पढ़थि विचारि । सुलभ तनिक कर-गत फल चारि ।।
रोग न रहय पाप क्षय जाय । ग्रह-विघ्नादिक दूर पड़ाय ।।
श्रद्धायुत जे पढ़ इ पुराण । ईश्वर तनिकाँ देथिनि ज्ञान ।।
करथि उमेश तनिक प्रतिपाल । निकट न आबै तनिका काल ।।

इति चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे लङ्काकाण्डे षोडशोऽध्यायः ।।

।। इति लंकाकाण्ड ।।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

मिथिला-भाषा रामायण

॥ उत्तरकाण्ड ॥

॥ दोबय छन्द ॥

जय रघुवंश-तिलक कौशल्या-नन्दन-दशरथ-बालक ।
दशमुख-नाशक पङ्कज-लोचन, जय मुनिजन-प्रतिपालक ॥

॥ चौपाइ ॥

एक समय गिरिराज-कुमारि । शिव काँ पूछल समय[1] विचारि ॥
रावणादि काँ मारल राम । राजा भेला अयोध्या-धाम ॥
भूतल रहला ओ कति वर्ष । श्रीसीता सह वास सहर्ष ॥
से कयलनि महि-मण्डल त्याग । तृप्ति न कथा सुधा-सम लाग ॥
शिव कहलनि शुनु प्रिया महेशि । कथा पुछल अछि अपनैं बेसि ॥
राम अकण्टक महि-सुरराज । मुनिगण अयला आशिष काज ॥

॥ दोबय छन्द ॥

विश्वामित्र[2] कण्व दुर्व्वासा, सित भृगु शिष्य अनेक ।
अत्रि अङ्गिरा वामदेव सभ, निर्मल सकल विवेक ॥
मुनि-मण्डली शिष्यसौँ परिवृत, अयला तथा अगस्त्य ।
द्वारपाल काँ कहलनि सभ मुनि, कोमल वचन प्रशस्त्य ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

प्रतीहार बुझि सभ मुनि नाम । कहबनि आयल छथि एहिठाम ॥
नृप काँ आशिष देबक काज । आगत छी मुनि-मण्डलि आज ॥
द्वारपाल से बुद्धि-विशाल । गेला जतय राम महिपाल ॥
बद्धाञ्जलि ओ कयल प्रणाम । मुनि-आगमन कहल तहिठाम ॥

---

1 समक (३), 2 विस्वामित्र (३) ।

मुनि अगस्ति छथि बहुत चिन्हार । आशिष देता वृत्त[1] छथि द्वार ।।
द्वारपाल काँ कहलनि राम । आदर सौँ आनू एहि ठाम ।।
नानारत्न-विभूषित धाम । पूजित मुनि गेला तहि ठाम ।।
मुनि-अभिमुख प्रभु जोड़ल हाथ । पूजा सविधि कयल रघुनाथ ।।
अर्घ्यादिक[2] उत्तर गोदान । पृथक पृथक मुनिजन सन्मान ।।
सभ काँ कयलनि राम प्रणाम । दिव्यासन देलनि तहि ठाम ।।
सभ काँ कुशल पुछल रघुवीर । दिनमणि-वंश-शिरोमणि धीर ।।
सभ मुनि कहल कुशल सभ ठाम । रावणादि मारल संग्राम ।।
नहि आश्चर्य धनुष धय हाथ । सकल-लोक-जित श्री रघुनाथ ।।
अति अद्‌भुत घननादक मरण । तनिक विजय रण साहस करण ।।
शुनि मुनि-वचन कहल श्रीराम । मेघनाद छल की बलधाम ।।
कुम्भकर्ण रावण अति वीर । कालहु काँ मन जतय न थीर ।।
काँपथि थर थर निकट न जाथि । देखयित तनिकाँ गमहि पड़ाथि ।।
मेघनाद तनिकहु सौँ शूर । कहल जाइ अछि नहि किछु फूर ।।

॥ दोहा ॥

कहलनि तखन अगस्ति मुनि, शुनु ईश्वर रघुनाथ ।
जन्म कर्म्म वरदान विधि, जे पाओल दशमाथ ।।

॥ चौपाइ ॥

मुनि पुलस्त्य विधि-तनय महान । मेरु निकट तप कर विद्वान ।।
तृणविन्दुक आश्रम मे जाय । कृतयुग मे एक धर्म्म सहाय ।।
सुर-गन्धर्व्व-कन्यका आब । अति रमणीयक आश्रम पाब ।।
गाबय नाचय वाद्य बजाय[3] । हसय बहुत नहि एक लजाय ।।
बड़ि निरहटि सटि मुनि लग जाय । अतिशय उनमति युवता पाय ।।
मुनि मन बाढ़ल अतिशय कोप । करति तपोविधि जनु ई लोप ।।
हमर दृष्टिपथ अयोती[4] नारि । गर्भवती हयतीह कुमारि ।।
बड़ दुःप्रथा[5] कथा जे शून । केओ हुनि मुनि लग आब न पून ।।
तृणविन्दुक कन्या अज्ञात । मुनि-दृग-गोचर भेली प्रात ।।
भेलि गर्भिणी मन सन्ताप । गेलि तहाँ जहाँ[6] छलथिनि बाप ।।

1 वृत (१), 2 अर्घादिक (३), 3 बजाब (३), 4 औती (३), 5 बड़ दुख (३) 6 तहाँ (३) ।

से राजर्षि बुझल वृत्तान्त । ज्ञान-नयन सौँ मुनिक नितान्त।।
कन्या लय तृणविन्दु उदार । मुनि पुलस्त्य काँ कयल सदार ।।
मुनिसेवा मे लागलि रहथि । करथि टहल से मुनि जे कहथि।।
सेवा-तुष्ट देल वरदान । कन्या काँ से मुनि भगवान ।।
उभयवंश-वर्द्धन एक तनय । हयतौ सदाचार सद्विनय ।।
विश्रुत-लोक विश्रवा नाम । तनिकाँ पुत्र भेला गुणधाम ।।
पिता-तुल्य तप ब्रह्मज्ञान । ख्यात महामुनि तपोनिधान ।।
देखल शीलादिक समुदाय । भरद्वाज तनि कयल जमाय ।।
तहि कन्या मे तनय धनेश । जनिकाँ अति प्रिय मित्र महेश ।।
विदित विरञ्चिक बहुत दुलार । पितातुल्य तप कयलअपार ।।
तनिकाँ विधि देलनि वरदान । वित्त अखण्डित वर विज्ञान ।।

।। सोरठा ।।

वर विरञ्चि सौँ पाबि, ब्रह्म-दत्त पुष्पक चढ़ल ।
विश्रवाक लग आबि, कहल तपस्या-फल सकल ।।

।। चौपाइ ।।

ब्रह्मा देल अखण्डित वित्त । वासस्थान न हमर निमित्त ।।
हिंसा-शून्य रही जत जाय । देल जाय सुखवास देखाय ।।
अछि सुत थल भल अहँइक योग । लङ्का बसू करू धन भोग ।।
विश्वकर्म्म-निर्म्मित ओ वास । परक कदापि परत नहि त्रास ।।
कहइत छी लङ्का वृत्तान्त । भेल सुरासुर-समर नितान्त ।।
विष्णुक त्रासित असुर पड़ाय । रहल रसातल जाय नुकाय ।।
सागरमध्य पुरी मे वास । कयल धनद सुखमय निस्त्रास[1] ।।
छला बहुत दिन ततहि धनेश । दिन दिन उज्वल भेल सुदेश ।।
राक्षस एक सुमाली नाम । अयला एक समय तहिठाम ।।
युवती कन्या तनिकाँ सङ्ग । जनु तनु प्रथम निवास अनङ्ग ।।
श्रीदेवी सम तनिकर रूप । चिन्तातुर राक्षस चुपचूप ।।
पुष्पक चढ़ल धनेश निहारि । राक्षस अपना चित्त[2] विचारि ।।

1 निस्तार (३), 2 चिन्त (३) ।

कन्या काँ राक्षस से कहल । तोहरा समय कहय किछु रहल ॥
कन्या कहल कहू हे[1] तात । करब न वचनक प्रत्याख्यात ॥
ब्रह्म-कुलोद्भव वर करु वरण । तनय हयत सभ सङ्कट-हरण ॥
धनदक सदृश रूप-सम्पन्न । करु गय पुत्रि पुत्र उत्पन्न ॥
विश्रवाक से आश्रम जाय । ठाढ़ि भेलि चिर समय लजाय ॥
धरणी लिखथि चरण सौँ ठाढ़ि । चिन्ता एकाकिनि मन बाढ़ि ॥
अये के अहँ मुनि पुछल कि[2] काज । कर जोड़ि कहल रहल नहि व्याज ॥
ध्यानहिँ विदित होयत वृत्तान्त । आइलि छी एकसरि एकान्त ॥
मुनि कहलनि कयलह उत्पात । पुत्रार्थिनि मानस हो ज्ञात ॥
अयिलिह आश्रम दारुण काल । दारुण दुइ सुत लाभ विशाल ॥
कहल केकसी अति अन्याय । लोह सुवर्ण परशमणि पाय ॥
अपनहुँ सौँ जौँ एहने हयत । मर्य्यादा धर्म्मक उठि जयत ॥
मुनि पुन कहलनि सभहिक छोट । महा-भागवत से सुत गोट ॥
करथि केकसी निज निर्व्वाह । बितल कतो दिन चलल प्रवाह ॥
रावण लेल प्रथम अवतार । बीश[3] बाहु दश गोट कापर ॥
धरणी-कम्प बहुत उतपात । कुम्भकर्ण दोसर सुत ज़ात ॥
पर्व्वत सन तन कहल न जाय । देखितहिँ के नहि लोक डराय ॥
सूर्प्पनखा भेली उतपन्नि । जेहने भाय तेहनि अनमन्नि ॥
लेल विभीषण वर अवतार । अतिसुन्दर सुन्दर व्यवहार ॥
कर्म्म-परायण नियताहार । स्वाध्यायी से परमोदार ॥
जन-भय-कर रावण तन बाढ़ । कुम्भकर्ण पर्व्वत सन ठाढ़ ॥
सञ्चर ऋषिगण काँ धय खाथि । कुम्भकर्ण नहि कतहु अघाथि ॥
कहल राम काँ गत वृत्तान्त । कि कहब अपनैँ लक्ष्मीकान्त ॥
साक्षी सर्व्व हृदय मे वास । नित्योदित निर्म्मल निस्त्रास ॥
प्रभु सर्वज्ञ कहल किछु आबि । अपनैँक दयादृष्टि केँ पाबि ॥

1 से (३), 2 की (३), 3 बीस (३) ।

॥ सोरठा ॥

अति प्रसन्न-मन राम, कुम्भज मुनि सौँ से कहल।
अपनहुँ छी निष्काम, हमर कृपा निर्भय सदा॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे प्रथमोऽध्यायः।

॥ अथ द्वितीयोध्याय: ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

अथ एक समय तहाँ वित्तेश । राजित पिता वास जहि देश ॥
पुष्पक चढ़ल भानु-सम राज । राज-राज सम्राज विराज ॥
तनिकर विभव देखल सतमाय । नाम केकसी अवसर पाय ॥
रावण काँ से देल देखाय । कतय अहाँ कहाँ धनपति भाय ॥
करु गय[1] सुत अहँ तेहन उपाय । होउ हुनक सन कर्म्म बढ़ाय ॥
शुनि रावण मन बाढ़ल कोप । कयल प्रतिज्ञा मन आरोप ॥
तनि सन होयब हम की बाढ़ि । करब तपस्या साहस गाढ़ि ॥
माता मन नहि चिन्ता करब । मनस्ताप सभटा हम हरब ॥
रावण सानुज बनि मुनिवर्ण । फल सिध्यर्थ गेला गोकर्ण ॥
तप दुष्कर मे दृढ़ मन धयल । निज निज नियम तिनू जन धयल॥
दश हजार गत भय गेल वर्ष । कुम्भकर्ण तप कयल सहर्ष ॥
कयल विभीषण तप बड़ गाढ़ । एक चरण-भर रहला ठाढ़ ॥
वर्ष बीति गेल पाँच हजार । सत्य-धर्म्म-रत सद्व्यवहार ॥
दिव्य सहस्र वर्ष हठ ठानि । कर तप रावण अन्न न पानि ॥
एक सहस्र पूर्ण हो वर्ष । होम करथि शिर अनल सहर्ष ॥
नव सहस्र वत्सर गत काल । नव शिर होम करथि दशभाल ॥
काटय लगला निज कर माथ । दौड़ि द्रुहिण तनिकर धर हाथ ॥
वर माँगू रावण हम वृत्त ।तप दुष्कर सौँ होउ निवृत्त ॥
होइ अमर वर समरहु मारि । देवासुर सौँ कहल विचारि ॥
नाग सुपर्ण[2] आदि जे यक्ष । समर न हारब हुनक समक्ष ॥
मानव तृण-सम हेतु कि लड़त । चिउटी गजक पाद[3]-तल पड़त ॥
कहल तथास्तु कयल ततकाल । वत्स सुमुनि अहँ छी दशभाल ॥

1 करुण्य (३), 2 सुवर्ण (३) । 3 पारतल (२) ।

जय गोट कयल होम शिर आगि । सभटा नव नव जायत लागि ।।
अक्षय हयत जाउ सुख वास । अहँ काँ सभक मिटायत त्रास ।।
गेला विभीषण भक्त समाज । कहल विरञ्चि माँगु वर आज ।।
विनत विभीषण जोड़ल हाथ । धर्म्महिँ बुद्धि रहय नित नाथ ।।
कहल विरञ्चि तथास्तु उदार । रावण-अनुजक सत्याचार ।।
विधि सन्तुष्ट अमरता देल । सज्जन वचन सत्य शुनि लेल ।।
कुम्भकर्ण-तट गेला जखन । सुरपति काँ वार्त्ता भेल तखन ।।
थर थर सकल देव-गण काँप । कुम्भकर्ण बुझि उग्र-प्रताप ।।
जौँ विधि हिनकाँ देल वरदान । एक मुनिक नहि बँचत प्राण ।।
जयता सभ काँ सत्वर खाय । चलु चलु जतय शारदा माय ।।
विधि करइत छथि बड़ अन्याय । देवि शारदा होउ सहाय ।।
कुम्भकर्ण काँ कण्ठ समाउ । हमरा सभहिक प्राण बचाउ ।।

॥ सोरठा ॥

कहल विधाता आबि, कुम्भकर्ण वर माँगु अहँ ।
मन-वाञ्छित फल पाबि, जाउ छोड़ि घर कठिन तप ।।
कण्ठ शारदा-वास, कुम्भकर्ण माँगल तखन ।
सभ सुर-मन हो त्रास, की मँगताह विरञ्चि सौँ ।।

॥ जयकरी छन्द ॥

निद्रा मे बीतय षट मास । एक दिन भोजन विषय-विलास ।।
विधि देलनि वर से तहिठाम । हृष्ट देव जपि देवी नाम ।।
गेलि सरस्वति मुख बहराय । कुम्भकर्ण लगला पछताय ।।
शुनल सुमाली विधि-वरदान । पलटल हमर भाग्य भगवान ।।
प्रहस्तादि काँ सङ्ग लगाय । भय सौँ रहित चलल बहराय ।।
मिलि मिलि रावण परिचय कहल । वत्स बहुत दिन दुख हम सहल ।।
आज पुरल अछि मन-अभिलाष । हरषैँ कनयित गदगद भाष ।।
लङ्कहि छल छी गेलहुँ पड़ाय । अहँक माय काँ एतहि नड़ाय ।।

---

1 मुख (३), 2 हाथ (३),

हम दुख सहब अहँक सन नाति । रक्षा करु राखू निज जाति ।।
क्रम क्रम सकल चरित[1] से कहल । बड़ सम्पति छल किछु नहि रहल।।
हमरा सबहिँ रसातल रहब । अपनैँक विभव पाबि दुख सहब ।।
धनदक ओतय समाद पठाउ । अथवा बल सौँ हुनि उपटाउ ।।
राजा काँ सम्बन्ध कि भाय । राजा दैवक दोसर न्याय ।।

॥ रूपमाला छन्द ॥

कहल दशमुख कथा शुनि शुनि, थिकथि धनपति भाय ।
ज्येष्ठ गुरुतर बड़ तपस्वी, करब नहि अन्याय ।।
हुनक सन के भाय हमरा, देखु आँखि पसारि ।।
अछि बनल घर विश्व भरि, अरि कर समर के मारि ।।

॥ चौपाइ ॥

तखन प्रहस्त कहल तहिठाम । शुनु प्रभु रावण अहँ गुण-धाम ।।
शुनल शूर काँ नहि सौभ्रात्र । अतिशय कठिन धर्म्म थिक क्षात्र ।।
सुर राक्षस थिक कश्यप-तनय । तनिकाँ एक घड़ी नहि बनय ।।
अर्थी काँ किछु अर्थ सूझ । शूर सहोदर काँ नहि बूझ ।।
कहइतछी नहि वचन अशुद्ध । देव असुर काँ हेतु कि युद्ध ।।
रावण वचन गेला पतिआय । मानल मन कहइत अछि न्याय ।।
रावण कोप नयन बड़ लाल । कहलनि करब असुर प्रतिपाल ।।
ई वृत्तान्त कहल नहि माय । ज्ञात भेल हम करब उपाय ।।
गिरि त्रिकूट पर रावण जाय । देलनि दूत प्रहस्त पठाय ।।
कहब धनाधिप निकट समाद । हमरा हुनका कोन विवाद ।।
हमरा मातामहक निवास । त्यागथु लङ्का जौँ मन त्रास ।।
कहलनि धनपति आबथु बेश । कतहु बसब गय बड़ गोट देश ।।
स्वस्ति स्वस्ति रावण लङ्केश । आबथु पुर मे करथु प्रवेश ।।
धनपति छोड़ल लङ्कागाम । रावण आबि गेला तहि ठाम ।।
दशमुख कयलनि लङ्का-वास । मन्त्री सहित रहित-मन-त्रास ।।
पुछलनि धनद पिता काँ जाय । लङ्का सौँ अयलहुँ बहराय ।।

1 चरित्र (३)।

छोड़ि देल रावण काँ धाम । कयल न एक वचन संग्राम ॥
जाउ कहाँ से भेट निदेश । कहल पिता जत देव महेश ॥
आज्ञा शुनि गेला कैलाश । कयल तपस्या कत दिन वास ॥
तुष्ट महेश देल वरदान । अलका तनिकाँ वासस्थान ॥
शिव-पालित भेला दिकपाल । मित्र महेशक भाग्य विशाल ॥

॥ सोरठा ॥

सकल लोक सन्ताप, कर रावण निज-गण-सहित ।
दिन दिन बाढ़ प्रताप, निश्शंसय मन नहि मरण ॥

॥ चौपाइ ॥

सूर्प्पनखा काँ भेल विवाह । कालखञ्ज सौँ बड़ उत्साह ॥
विद्युज्जिह्व[1] तनिक छल नाम । मायाविनि बड़ लङ्कागाम ।
मय देल रावण कन्या दान । मन्दोदरी नाम सविधान ॥
देलनि अमोघ शक्ति कर जाय । दितिसुत रावण जानि जमाय ॥
वैरोचन दौहित्री आनि । कुम्भकर्ण काँ देल सन्मानि ॥
वृत्रज्वाला कन्या नाम । लोक विदित छल अछि सभ ठाम॥
धर्म्मराज शैलूष महान । तनिकाँ कन्या देल भगवान ॥
सरमा नाम विभीषण-दार । सकल सुलक्षण शोभागार ॥

॥ सोरठा ॥

पुत्र भेल बलवान, मन हर्षित मन्दोदरी ।
गर्ज्जल मेघ-समान, मेघनाद तैँ नाम छल ॥

॥ चौपाइ ॥

कुम्भकर्ण कह बड़का भाय । निद्रा सौँ ताकल नहि जाय ॥
रावण देल गुहा बनबाय । कुम्भकर्ण सुख सुतला जाय ॥
रावण भ्रमण करय लगलाह । सभटा करथि कर्म्म अधलाह ॥
मुनि सज्जन काँ मारथि जाय । रावण करथि बहुत अन्याय ॥
धनपति शुनल दशानन कर्म्म । शिव शिव रावण करथि अधर्म्म॥
कहा पठाओल दूत देआय । करु जनु रावण अहँ अन्याय ॥

---

1 विद्यूजिह्व (३)।

शुनि रावण धनपति दिश टूटि । लेल जीति कत सम्पति लूटि ॥
पुष्पक रथक कयल से हरण । खल उपदेश करब थिक मरण ॥
यम ओ वरुण पुरी निर्भीति । रावण लेलनि सभ केँ जीति ॥
स्वर्ग्ग लोक रावण गेलाह । मघवा युद्धोद्यत भेलाह ॥
सकल देव सुरपति संग्राम । रावण काँ बाँधल तेहिठाम ॥
से शुनि मेघनाद तत जाय । देल पिताक बाँध कटबाय ॥
गञ्जन बन्धन बापक हेरि । देवराज काँ बाँधल फेरि ॥
सुरपति बान्धल सङ्ग लगाय । पिता सहित हर्षित पुर जाय ॥
ब्रह्मा अयला बुझि अन्याय । सुरपति काँ देल बाँध फोआय[1] ॥
वर दय ब्रह्मा अपना धाम । गेला जखना हे प्रभु राम ॥
रावण बहुत लोक काँ जीति । रण साहस से कयल अनीति ॥
भुज उठाय लेल गिरि कैलास । सकल लोक काँ बाढ़ल त्रास ॥
नन्दीश्वर तत देलथिनि शाप । रावण तोहरा बाढ़ल पाप ॥
हयतौ नर-वानर-कर मरण । काज न अयतौ दुष्टाचरण ॥
अति उन्मत्त गेला एक काल । हैहयपट्टन गर्व्वं विशाल ॥
रावण काँ से बाँधल ततय । बहु अन्याय फलित हो कतय ॥
तत पुलस्त्य मुनि तहि थल जाय । कहि शुनि केँ देल बाँध कटाय ॥
बालिक ओतय कयल बल लाख । ओ धय राखल अपना काँख ॥
चारु समुद्र समुद्र घुमाय । षन्मासावधि देल अटकाय ।
बड़ दुख काटल धयले धयल । बहरयला मिलि मैत्री कयल ॥
मारल रावण काँ प्रभु राम । रावणि काँ लक्ष्मण संग्राम ॥
कुम्भकर्ण गिरि-सन्निभ जीति । राखल विश्व चिरन्तन रीति ॥
अपनैँ नारायण भगवान । विभु विश्वम्भर सर्व्वंनिदान ॥
नाभिकमल ब्रह्मा उत्पन्न । मुख सौँ अग्नि वचन सम्पन्न ॥
बाहुयुगल सौँ सभ जन-पाल । नयनैँ रवि शशि भेला विशाल ॥
दिशा विदिश कर्णहि सौँ जात । घ्राण सौँ प्राण वायु विख्यात ॥
तथा अश्विनी युगल कुमार । जङ्घादिक सौँ लोकप्रचार ॥

1 फोलाय (३) ।

भेल उदर सौँ सागर चारि । स्तन सौँ वरुण तथा पाकारि ॥
त्रालखिल्य-गण भेल[1] उत्पन्न । उर्व्द्धरेत[2] सद्‌गुण-सम्पन्न ॥
भेल मैढ़ सौँ यम-उतपत्ति[3] । गुद सौँ मरणक सर्व्व विपत्ति ॥
अहँक कोप रुद्रक अवतार । अस्थि सौँ पर्व्वत अति विस्तार ॥
कच सौँ जलद रोम सौँ सर्व्व । औषधि भेल अनन्त निखर्व्व ॥
नख-संजात स्वरादिक भेल । अपनै विश्वरूपता लेल ॥
स्थावर जङ्गम जत संसार । सभ अपनहिँ बाहर व्यवहार ॥

॥ दोहा ॥

अपनैक बल पिब अमृत सुर, सकल यज्ञ मे जाय ।
भासमान रवि चन्द्रमा, अपनैँक भा काँ पाय ॥
सर्व्वग नित्य अनन्त प्रभु, ज्ञान-विलोचन-दृष्ट ।
नहि देखथि अज्ञान-दृग, रवि काँ लोचन-मृष्ट ॥
देखयित छथि निज देह मे, योगीजन परमेश ॥
भक्ति-भावना ज्ञान-बल, सकल वस्तु सभ देश ॥

॥ सोरठा ॥

क्षमब सकल अपराध, प्रभुक अनुग्रहवान हम ।
विरहित मायाबाध, अपनैँ सेवा-निरत रहि ॥
वारंवार प्रणाम, कयल सकल मुनि मिलि ततय ।
कयल वचन विश्राम, रामक छवि देखथि सतत ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥

1 गण भेद (३), 2 उर्द्ध (३), 3 उत्पत्ति (३)।

मिथिला-भाषा रामायण

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

कह सानुज बालिक उतपत्ति । जनिका छल अति बल सम्पत्ति ॥
रावण तनि तट तृणक समान । बालिक सदृश शूर के आन ॥
राम-प्रश्न मुनि शुनल अगस्त्य । चरित कहय लगलाह प्रशस्त्य ॥
कनक-सुमेरु-शिखर बड़ गोट । शतयोजन मणिमय मध्य[1] कोट ॥
योगारूढ़ शारदानाथ । आनन्दाश्रु बहल लेल हाथ ॥
से कर धयलहिं[2] धयलनि ध्यान । त्याग कयल पुन चरित के जान ॥
तहि सौं जनमल भल[3] कपिराज । कहल विधाता बसह समाज ॥
किछु दिन बितलय हयतौ नीक । सुखित रहह किछु दिन निर्भीक ॥
यहिगत गत भेल बहुतो वर्ष । ऋक्षाधिप रह सतत सहर्ष ॥
भ्रमयित गिरिवर फल-मूलार्थ । विधि-निवास मे सकल पदार्थ ॥
वापी एक पड़ल तनि दृष्टि । मणिमय तत जल अमृतक सृष्टि ॥
करय ततय गेला जलपान । दृष्टि पड़ल प्रतिबिम्ब समान ॥
भ्रम अन्तर अछि के ई आन । कुदि पड़ला जल कपि अज्ञान ॥
बहरयला पुन जल सौं फानि । स्त्री बनला पुरुषत्वक हानि ॥
अति विस्मय मन होइनि लाज । कि कहब ककरा रहित समाज ॥
पूजि चतुर्मुख काँ अमरेश । दूइ पहर दिन चलला देश ॥

॥ सोरठा ॥

देखल से वर[4] नारि, काम-विवश सुरपति ततय ।
नहि शकलाह[5] सम्भारि, वीज[6]-पतन हुनि बाल पर ॥
जन्म लेल एक बाल, बालहिं सौं संज्ञा तनिक ।
बालि[7] भेल तत्काल, स्वर्णमाल दय हरि[8] चलल ॥

1 मघ (३) मुदा कवीश्वरक लेख-पोथीअहुमे "मध्य" अछि । 2 धयलनि (३), 3 मल (३), 4 नर (३), 5 सकलाह (३), 6 वाज (३), 7 वाल (३), 8हार (3) ।

रविहुक तेहने हाल, वीज तनिक ग्रीवा खसल ।
जनमल बाल विशाल, ग्रीवा सौँ सुग्रीव तैँ ॥
देलनि तनि रक्षार्थं, हनूमान काँ भानु तत ।
वन-फलादि भक्ष्यार्थं, बहुत देखि[1] रवि नभ चलल ॥

॥ चौपाइ ॥

युगल पुत्र लेल सङ्ग लगाय । सुति[2] रहली[3] कहुँ से अलसाय ॥
भेल प्रात जौँ निद्रा भङ्ग । पुन बनि गेला पूर्व्वक रङ्ग ॥
युगल बाल सङ्ग बहु फल मूल । प्राप्त ततय जत विधि अनुकूल ॥
देल विधाता बड़ आश्वास । कीशराज काँ भेल विश्वास ॥
विधि एक अमर दूत बजबाय । कहलनि किष्किन्धा मे जाय ॥
कपिपति होथि तहाँ महाराज । सत्वर करु गय ई गोट काज ॥
सकल द्वीप जे वानर लोक । हिन[4] कपिपति-वस-वर्त्ति विशोक॥
रामक जखन हयत अवतार । असुर-विनाश हरण महि-भार ॥
तनिकर सभ कपि करब सहाय । देवदूत देल कथा बुझाय ॥
विधि सौँ जेहन बुझल ओ दूत । कपिपति ततक कयल पुरहूत ॥
तेहि दिन सौँ किष्किन्धा वास । बालि प्रभृति छल छथि निस्त्रास ॥
विधि प्रार्थित अपनैँ परमेश । भूमि-भार टारल अकलेश ॥
ब्रह्म अखण्डानन्द-स्वरूप । कोन पराक्रम नरवर भूप ॥
तदपि भक्तजन वर्णन करथि । गुणगण गाबि दुःख सौँ तरथि ॥
जे कीर्तन कर कपिपति-जनन । कथा[6] तनिक हो पातक-हनन ॥
अथ हम कथा कहै छी आन । श्रीरघुनन्दन शुनु दय कान ॥
रावण कयलनि सीता-हरण । प्रकट तकर फल दुर्ग्गति मरण ॥
सनत्कुमार प्रजापति-तनय । कृतयुग रावण कयलनि विनय ॥

1 दोष (२), 2 शुति (१), 3 रहला (२), 4 हिनक विपति····(२), 6 कया (२) ।

कयल प्रणाम जोड़ि विश हाथ । प्रभु सर्व्वज्ञ कहल हो नाथ ।।
जनिकर जनन मरण नहि एक । भर्त्ता विश्वक विशद[1] विवेक ।।
जनिकर बल सौं सुर-समुदाय । शत्रु जितै छथि अमर कहाय ।।
यजन करै छथि द्विजगण ककर । योगी ध्यान करै छथि जकर ।।
ई सभ संशय सनत्कुमार । कहल जाय प्रभु परमोदार ।।

॥ सोरठा ॥

शुनि पुन सनत्कुमार, योगिदृष्ट सौं मौन क्षण ।
प्रश्नोत्तर उच्चार, समुचित कयल दशास्य-हित ।।
शुनु शुनु सुत लङ्केश, अव्यय नारायण थिकथि ।
जतय न दुःखक लेश, विश्वम्भर तनि जन्म नहि ।।
तनि बल सौं संग्राम, अमर जितै छथि योगि पुन ।
ध्यान निरन्तर नाम, करथि जपथि संसृति तरथि ।।
पुन पुछलनि दशभाल, दैत्यादिक जे विष्णु सौं ।
निहत समर वश काल, जाइत छथि कहु कोन गति ।।
असुर मरथि सुर-हाथ, से जाइत छथि स्वर्ग्ग-पद ।
शुनु रावण दशमाथ, रहित-पुण्य सौं महि-पतन ।।
विष्णुक हाथ विनाश, जनिकर से हरिगति[2] पहुँच ।
जेहन शुद्धाकाश, निर्म्मल मन नहि वासना ।।

॥ चौपाइ ॥

रावण शुनल मुनिक मुख वचन । मन मन करय लगल भल रचन ।।
समर करब हम विष्णुक सङ्ग । रावण-मन सङ्कल्प अभङ्ग ।।
मुनि जानल रावण मन-वृत्ति । कहलनि भल थल चित्त-प्रवृत्ति ।।

1 मरण (३) 2 हरिगत (३) ।

सिद्ध अभीष्ट विगत किछु काल । चिन्ता करु जनु मन दशभाल ।।
तनिक स्वरूप कहै छी आज । स्थावर जङ्गम सभ सम्राज[1] ।।
एक वस्तु नहि हुनि सौँ हीन । अन्तर अन्तर सभ मे लीन ।।
नद ओ नदी जलधि जत नीर । पर्व्वत पृथिवी गगन शरीर ।।
ओ सावित्री ओ ओङ्कार । ओ पुन सत्य समस्ताधार ।।
कच्छप[2] शेष धरणिधर जतेक । अनल आदि जत ओ प्रभु एक ।।
जे जे पड़यिछ[3] अहँ काँ दृष्टि । से सभटा थिक से प्रभु सृष्टि ।।
ओ प्रभु सकल चराचर व्याप्त । हुनकहि मे पुन अन्त समाप्त ।।
नीलोत्पलदल-सुन्दरश्याम । चपला-वर्णाम्बर अभिराम ।।
जम्बूनद-रुचि श्री तन वाम । प्रेम परस्पर प्रभु गुणधाम ।।
हिनका देखि शकथि नहि आन । ओ प्रभु अपनहि अपन समान ।।
हुनकर भक्त ततहि रत-प्राण । ततहि निरन्तर मन सज्ञान ।।
मननादिक सौँ निर्म्मल नयन । तनिका हृदय करथि प्रभु शयन ।।
जौँ अछि हुनकर दर्शन काज । त्रेता मे हयता रघुराज ।।
दशरथ-सुत तनि आज्ञा पाबि । माया-लीला करता आबि ।।
निजमाया काँ लयोता[4] सङ्ग । दण्डक-वन मुनिजन-दुखभङ्ग ।।
अनुज-सहित वन वन सञ्चरत । कहु कत नरवर लीला करत ।।
अहुँ हुनि प्रभु मे भक्ति बढ़ाउ । सभ जनितहिँ छी कते[5] पढ़ाउ ।।

।। सोरठा ।।

कहलनि सनत्कुमार, रावण कयल[6] विचार मन ।
करब विरोध प्रकार, मरब समर कय वीरता ।।
रावण हर्षित-चित्त, युद्धार्थी सभ लोक फिर ।
सीताहरण निमित्त, अपनैँक[7] हाथेँ मरण हो ।।

1 साम्राज (१), 2 पाठ अछि तीनूमे 'कक्षप' परतु शब्दक शुद्धस्वरूप हम एतऽ देल अछि ।
3 पड़इछ (३), 4 लौता (३), 5 कतै (३), 6 ३मे 'ल' नहि । 7 अपनेक (३) ।

॥ दोहा ॥

पढ़थि शुनाबथि शुनथि जे, ई चरित्र सभ योग्य ।
सुख अनन्त आयुष्य बढ़, बढ़ अनन्त आरोग्य ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे तृतीयोऽध्यायः ॥

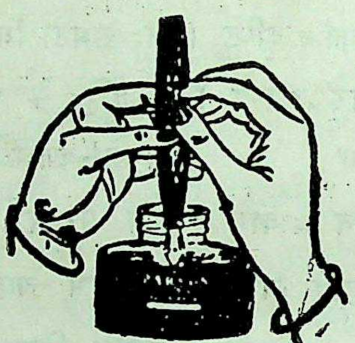

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

एक समय उन्मद लङ्केश । युद्धार्थी सञ्चर कत देश ॥
नारद मुनि सौँ दरशन पाबि । पुछलनि तनिकाँ तट मे आबि ॥
हमर समान कतय बलधाम[1] । जत हम करब घोर संग्राम ॥
मुनि कहलनि अछि श्वेतद्वीप । पुष्पक-रथ पथ सकल समीप ॥
विष्णुभक्त वा तत्कर-मरण । श्वेतद्वीप तनिक हो शरण ॥
एहन[2] सृष्टि नहि दोसर ठाम । जाय सकी[3] तौँ हो संग्राम ॥
शुनितहिँ रावण कयलनि गमन । हुनकर अनय करय के शमन[4] ॥
पुष्पक चलनहिँ[5] द्वीप समीप । उतरि चलल तत असुर-अधीप ॥
वनिता वृद्धा तनिकाँ धयल । पकड़ि घुमाओल दुर्गति कयल ॥
के तौँ थिका एतय की काज । ककर पठाओल कह नहि लाज ॥
दशकन्धर उत्तर नहि बाज । महा मनोदुख तनिक समाज ॥
बड़ अनुचित अयलहुँ एहिठाम । पाओल साहस-फल परिणाम ॥
जखना .पाओल किछु अवकाश । गमहिँ पड़यला बड़ मन त्रास ॥
धिक अमरत्व कि गञ्जन-ग्रस्त । दशमुख दुख-चिन्ता सौँ व्यस्त॥
विष्णुक हाथ मरण से करब । नहि पुनि अमर-समर सञ्चरब॥
तकरे हेतु दशानन जानि । सीता-हरण कयल हठ ठानि ॥
मातृ-बुद्धि ओ मन मे मानि । हुनि कर मरब असुरता हानि ॥
त्रिकालज्ञ प्रभु साक्षी राम । अन्त सकल विश्वक विश्राम ॥
स्तुति अगस्त्य[6] मुनि बहुविध कयल । राम-सुपूजित निज पथ धयल ॥
सीतासङ्ग विषय-अनुरक्त । भासित बाहर[7] चित्त विरक्त ॥

---

1 पाठ अछि तीनूमे 'बलवान' परन्तु ताहिसँ अन्त्यानुप्रासक भंग होइछ जे चौपाइमे आवश्यक। तेँ हम कवीश्वरक लेख-पोथीक विशुद्ध पाठ देल अछि । 2 यहन (१), 3 शकी (१), 4 तीनूमे पाठ अछि 'समन' जाहि मे तालव्य 'श' होयब उचित । 5 एतऽ तीनूमे पदच्छेद विचित्र अछि। 6 अगस्ति (१), 7 बारह (१) ।

अनासक्त[1] प्रभु कर गृह-काज । परमेश्वर लीला नर-व्याज ॥
रामचन्द्र काँ देलनि फेर । पुष्पक रथ पठबाय कुबेर ॥
पुष्पक रावण हरलनि जैह । तनिकाँ जीति छीनि[2] लेल सैह ॥
यावत पृथिवी-स्थित प्रभु रहत । तावत पुष्पक अहँ काँ बहत ॥
पुष्पक काँ कहलनि रघुराज । अपनैँक जखन होयत गय काज ॥
स्मरण करब तखना हम अयब । अन्तर्हित रहु बड़ सुख पयब ॥

॥ सोरठा ॥

कार्य्य अमानुष राम, करथि नृपति सन्नीति-युत ।
नहिं अनीति तहि ठाम, वसुधा शस्यमयी सतत ॥
रथ चढ़ि चढ़ि सभ देश, जाथि करथि सभ लोक सुख ।
ककरहु हो न कलेश, हनुमदादि सेवक सतत ॥

॥ चौपाइ ॥

एक समय द्विज-तनयक मरण । ब्राह्मण कलुषित-अन्तष्करण ॥
धर्म्मक पालक श्री रघुनाथ । सकल वस्तु अछि अपनैँक हाथ ॥
हम निष्पाप[3] कहल अछि आय । राजा-विषय पड़ल अन्याय ॥
पुत्र जिबथि तैँ होउ सहाय । विकल कहै छी करू उपाय ॥
लक्ष्मण रामक आज्ञा पाय । शूद्र एक वन देखल जाय ॥
विप्रक सन करइत आचरण । लक्ष्मण-कर तनिकर भेल[4] मरण ॥
ब्राह्मण-बालक उठि बैसलाह । द्विज से धन्य कहय लगलाह ॥
शिव-स्थापना कोटिक कयल । लोका चारक सत्पथ धयल ॥
एक समय क्रीड़ा-आराम । सीता-सङ्ग नवल[5]-घनश्याम ॥
कहल जानकी प्रभु किछु कहब । कत दिन महिमण्डल मे रहब ॥
देव देवगण कह कर जोड़ि । चलु वैकुण्ठ मर्त्यसुख छोड़ि ॥
वनि-मुनि-पत्नी काँ वसु देब । तनिकाँ सँ हम आशिष लेब ॥
होइछ मन वन देखी जाय । अबितहुँ गङ्गा तीर्थ नहाय ॥
जे रुचि हो से करु प्रभु काज । कयल बहुत दिन पृथिवी[6]-राज ॥

1 अनाशक्त (३), 2 छीन (३), 3 निष्याप (१), 4 भल (३), 5 बनल (३), 6 पृथ्वी (३) ।

अयलहु ँ जे मन कय सङ्कल्प । तकरो समय रहल अछि अल्प ।।
सीता-वचन शुनल प्रभु कान । की कर्त्तव्य धयल प्रभु ध्यान ।।

॥ सोरठा ॥

कहइत छी एकान्त, करब लोक-अपवाद छल ।
जनइत छी वृत्तान्त, त्यागब अहँ काँ देब वन[1] ।।
जनमत युगल कुमार, गर्भवती अहँ सौँ वनहिँ ।
होयत चरित उदार, शपथ करब अहँ आबि पुन ।।
भूमिक विवर समाय, जायब अहँ वैकुण्ठ पुन ।
किछु दिन हमहु ँ गमाय, जानकि तत अयबे करब ।।

॥ पादाकुल दोहा ॥

॥ तिरहुति ॥

हास्यप्रौढ़[2] कथा पण्डित काँ, पुछलनि जखना राम ।
कथा प्रसङ्ग पुछल की कहइछ, ग्राम-लोक सभ ठाम ।।
माता सभ काँ वा सीता काँ, जे छथि हमरा भाय ।
लोक कहै अछि की से कहु कहु, हमर शपथ अहँ खाय ।।
विजय नाम एक हास्य-सभासद, कहलनि शुनु रघुनाथ ।
शपथ खाय हम सत्य कहै छी, करइत छी नहि लाथ ।।
सीता काँ वन सौँ दशकन्धर, हरि लय गेल निज धाम ।
से पुन पटरानी छथि सम्प्रति, केहन हृदय छथि राम ।।
धोबिनि रूसि गेलि छलि घरसौँ, धोबि कहल खिसिआय ।
जेहने नृपति प्रजा-गति तेहनि[3], राजा कर से न्याय ।।
जन सभ चूप भूप रघुनन्दन, कहलनि सभकाँ जाय ।
नयन सजल लक्ष्मण काँ केवल, कहल रहस्य मँगाय ।।
लोकमध्य अपवाद शुनल अछि, सीता-कृत विस्तार ।
सीता त्याग करब हम सम्प्रति, हमरा चित्त विचार ।।
प्रातहि सीता रथ चढ़ाय अहँ, लक्ष्मण सत्वर जाउ ।
मुनि वाल्मीकिक आश्रम-वनमे, चित्रकूट पहु ँचाउ ।।

1 बत (३), 2 हास्पप्रौट (१), 3 तेहन (१) ।

जौँ अन्यथा करी तौँ हमरा, मारी अहँ तरुआरि ।
हा विधि-कृत हमरा छुटइत छथि, सीता सध्वी नारि ॥

॥ सोरठा ॥

रथलय प्रातहिँ जाय, लक्ष्मण सहित सुमन्त्र तहँ ।
प्रभु-अनुशासन पाय, वैदेही काँ कहल से ॥

॥ मणिगुण छन्द ॥

चढु चढु रघुवर-घरनि[2] सुरथ मे ।
कहब सकल हम चलयित पथ मे ॥
हठ रथ चढ़लि प्रभुक रुचि मन लै ।
अनमनिं सनि चललिह[3] विनु जनलैँ ॥
सुरसरि उतरि जइति मुनिवन मे ।
तखन प्रकट किछु लछमन[4] मन मे ॥
बुझथि न प्रभुरुचि वन-छविसदना ।
पुछल तखन लछमन[5] विधुवदना ॥

॥ प्लवङ्गम छन्द ॥

देवर जनु करु खेद नयन जलधार की ।
श्रीरघुवर-पद-कमल प्रेम-विस्तार की ॥
सत्वर घुरि घर चलब देखि मुनि-कामिनी ।
सुन्दर नव-घनश्याम थिकहुँ सौदामिनी ॥
जौँ जनितौँ हम एहन नाथ[6] सङ्ग आनितौँ ।
नारि-सहित मुनिलोक सकल सन्मानितौँ ॥
जौँ कानब एहिठाम कहब अहँ भायकेँ ।
ओत सभ मिलिमिलि[7] सभ्यमे रहब लजायकेँ ॥

---

1 गण (३), 2 घरणि (१), 3 चललिहि (३), 4 लक्षमन (१), 5 पाठ अछि तीनूमे 'लछमन कनलैँ' जे अर्थक दृष्टिसँ असंगत नहि बूझि पड़ैत अछि मुदा 'वनमे' क संग ओकर अनुप्रास नहि बैसत अछि । कवीश्वरक लेख-पोथीमे अछि 'लक्ष्मन कन मे' जाहिमे 'क', 'म' क हेतु प्रमाद बूझि एहन पाठ ऊह अछि। 6 साथ (३), 7 ३मे दोसर 'मिलि' नहि ।

॥ हंसी[1] छन्द ॥

॥ तिरहुति देश ॥

हा वैदेही हा वैदेही, वचन कठिन मुखसँ न किछु आबै ।
सीता साध्वी धीरा हंसी[1], अहँक सुकृत सुर नर मुनि गाबै॥
ओ राजा आज्ञा के टारै, विधिक लिखल छल जन न घटाबै॥
जे चाहै से से निर्व्वाहै, सुरपुर बस[2] अथ नरक पठाबै ॥

॥ अभिराम अहीर छन्द ॥

हा न हमर किछु दोष---जानकि---परिहरु मानस-रोष ।
शपथ देल रघुनाथ---जानकि---किछु न कयल हम लाथ ॥
की अपराध विचारि---जानकि---त्यागल गुणमति नारि ।
कत मन करब कठोर---जानकि---नयन सतत बह नोर[3] ॥
हमरे गुरु अपराध---जानकि---आनल वन बनि व्याध ।
चललहुँ हम कय त्याग---जानकि---जाउ जतय मन लाग ॥

॥ चञ्चरी छन्द ॥

की करू कत जाउ हाय उपाय सूझ न नारि कें ।
नाथ भास्कर-वंश-पङ्कज-भानु देलनि टारि कें ॥
भेल की अपराध से कह लोक के वन आबि कें ।
आढ्य की जन रङ्क की दुख भोग देह इ पाबि कें ॥

॥ अमृतगति[4] छन्द ॥

कहलनि जायक वन मे । रघुवर की गुनि मन मे ॥
झुकि झुकि ताकथि धरणी । बड़ दुख-सिन्धु न तरणी ॥
हम मन भेलहुँ विकला । गति थिक विरवक चपला ॥
कहब न दूषण अनकाँ । सकल शुभाशुभ जनकाँ ॥

---

1 हँसी (३), 2 तीनूमे अछि "वश" परन्तु ई दन्त्यान्त उचित । 3 नीर (३), 4 मति (३) ।

॥ विष्णुपद छन्द ॥

माय अवनि विष्णु-रमणि, वंश-तरणि शून्य-सरणि ।
हा मरब कष्ट तरब, शुष्क-वदनि साध्वि रमणि ॥
आश मनक नाश क्षणक, घोर वनक भीतिजनक ।
नेत्रकमल मेघ सजल, माँथ धुनथि "चन्द्र" भनथि ॥

॥ तिरहुति ललित विपरीत ॥

॥ हरिपद छन्द ॥

रघुवर बड़ महराजे[1], कयल उचित नहि सम्प्रति काजे ॥
हुनकर रमणि कहाये, दुखित बसब हम घन वन जाये ॥
हम कि कहब दुख-भारे, विधिक लिखल छल[2] जन के टारे ॥
समय न छुटय[3] समाजे, एखनहु धरि मन उपगत लाजे ॥
गर्भ-भरालस अङ्गे, नहि परिचारिणि जनि एक सङ्गे ॥
मरितौँ गरल हम खाये, होइत बड़ गोट कुल अन्याये ॥
आब बचत नहि प्राणे, रघुवर-हृदय कि भेल पषाणे ॥
यहन करत के आने, हित-जन-वचन न धयलनि काने ॥
कत दिन काटब कानी, कयल कुटिल जन बड़ मन-हानी ॥
भूपति होथि न मित्रे, शुनितहिँ छलहुँ से देखल चरित्रे ॥

॥ तिरहुति ॥

॥ पादाकुल दोहा छन्द ॥

करुणागार उदार प्राणपति, वन देल दोष लगाय रे ।
देवर-दोष विधिक हम की कहु, जनि घर धर्म्म न न्याय रे ॥
हमरहि हेतु दशानन मारल, कपिगण सङ्ग लगाय रे ।
तखन पतिव्रत हमर देखल सभ, अनल मे गेलहुँ समाय रे ॥
नैहर जौँ मिथिला चलि जायब, कहत बाप की माय रे ।
पुरुष-परशमणि-कर हम सोपल, अयली कि नाम हँसाय रे ॥
सिरिस सुमन बरुहोय अशनि सन, अशनि[4] तेहन भय जाय रे ।
से बरु होय होथि नहि अकरुण, अहँ काँ बड़का भाय रे ॥

1 महाराजे (१), 2 ३मे 'छल' नहि । 3 छुटल (१,२), 4 २-३ मे दोसर 'अशनि' नहि अछि।

कि कहब कहय योगि नहि रहलहुँ, भेलहुँ सबहिँ काँ भार रे।
कतहु रहब जानकि जन कहते[1], श्रीरघुनन्दन-दार रे ॥

।। वियोगि[2] मालव छन्द ।।

रघुवर देल विपिन वास, ओ हुनि हास, नारि मरब हम वन त्रास।
एकसरि नारि कतय जाउ, विष खाउ, विधि निर्दय कत गोहराउ ॥
रघुवर-मन की निर्दय, देल एत कय, हमरहि भाग कि दुखचय।
विधिहुक विधि ओ रघुराज, किछु के बाज, प्रभु छथिकयलनि भल काज॥

।। दोबय छन्द ।।

लक्ष्मण सीता काँ पुन कहलनि अपनैँकाँ की कहबे।
सर्व्वसहा जननी छथि अपनैँक, कठिन कष्ट सभ सहबे ॥
ई आश्रम वालमीकि मुनिक थिक, गेलि जाय तत माता।
दोष न हमर प्रणाम करैछी, साक्षी सकल विधाता ॥

।। बरबा छन्द ।।

लक्ष्मण कहि घर चलला[3], घुरि नहि ताक।
पहुँचलाह रघुवर-तट, नहि मुख-वाक ॥

।। रूपक चौपाइ ।।

जननि धरणि सनि रघुवर सन पति,
तिरहुति जनन सकल जन कह सति।
हयत यहन गति छलहुँ कि जनइत,
जनम बितत[4] विधि कनयित कनयित ॥

।। चौपाइ ।।

आश्रम निकट एक जनि नारि[5]। एहन[6] के होइति[7] भुवन दश चारि॥
विकला कनयित छथि एहि ठाम। के थिक के पुछ परिचय नाम ॥
शिष्य कहल मुनि कयलनि ध्यान। हुनकाँ सतत त्रिकालक ज्ञान ॥
मुनि वालमीकि कहल लय आउ। पूजा हुनकर सविधि कराउ ॥
थिकथि जानकी रघुवर-दार। जे हरलनि अछि अवनी-भार ॥
मुनि-पत्नी सह कयल निवास। नयन सजल मुख आब न हास ॥

1 कहने (३), 2 वियोगिनी (३), 3 पाठ अछि तीनूमे 'चललाह' परन्तु अन्तिम 'ह' बेशी बूझि पड़ैछ। कवीश्वरक लेख-पोथीमे से 'ह' नहि अछि। 4 विगत (३), 5 जननी (३), 6 एहेन (३), 7 हयति (१)।

वड़ आदर सभ कर नित आबि । किछु गुरु-कार्य्य एतय अछि भावि।।
मानस-ध्यान करथि मुनि जैह । बाहर सीता देखथि[1] सैह ।।
देखि देखि सीता-व्यवहार । मुनि-पत्नी काँ प्रीति अपार ।।
कनयित देखथिन करथिनि चूप । जनमत तनय होयत से भूप ।।
सोहर शुनब तनय-मुख हेरि । जन्म सुफल होयत से फेरि ।।
की घन सन दृग चुप कर बूढ़ि । सुता विदेहक होइछि मूढ़ि ।।

॥ सोरठा ॥

त्यागि देल सभ भोग, आदिदेव सीता-रहित ।
सतत ज्ञान की योग, अतिविरक्त मुनि-व्रत-निरत।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे चतुर्थोऽध्यायः ।।

1 देखयि (३) ।

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ सोरठा ॥

नहि अछि ककरो काज, राजकाज मन्त्री करथु ।
अहँ रहु हमर समाज, लक्ष्मणकाँ रघुनाथ कह ॥

॥ तिरहुति ॥

॥ वियोगि मालव-छन्दः ॥

[गतप्रत्यागतबन्धोयम्]

कथक कथक नहि तट आब, जलज जलज मन वन दाव ।
कनक कनक सन मद कर, नयन नयन धनि मन पर ॥
करक करक कय बैसलहुँ, मनमँ[1] मनमँ दुख पैसलहुँ ।
थिकथि थिकथि सति[2] जेहनि, कहक कहक की तेहनि[3] ॥

॥ दोबय छन्द ॥

अविकल भोग करू प्रारब्धक, करम लिखल परमान रे ।
के बुझ कोन छन देह सौँ जायत, चेतन अपन परान रे ॥
कालहिँ विनश अमर अमरावति, नभ ग्रहजण रवि चान रे ।
जाय सुमेरु प्रलय प्रलयानल, जल विनु उदधि महान रे ॥
विनशय धरणि कतय धरणोधर, विभु परिशेष न आन रे ।
क्षणिक देह मे नेह निरर्थक, दुख-कारण अभिमान रे ॥
परमेश्वर माया-रस-विलसित, नर पामर की जान रे ।
राम 'चन्द्र' कह वृथा चिन्तना, करु ईश्वर-गुण-गान रे ॥

---

1 पाठ अछि तीनू 'मनम' परन्तु कवीश्वरक लेख-पोथी मे दोसर 'म' सानुनासिक अछि ई सूचित करैत जे ई अधिकरणवाचक थीक । 2 पाठ अछि तीनूमे 'सती' परन्तु ताहिसँ छन्दोभंग होइछ । कवीश्वरक लेख-पोथी मे 'ति' ह्रस्व अछि । 3 पाठ अछि तीनूमे 'की ओ तेहनि' परन्तु ताहिसँ छन्दोभंग होइछ । कवीश्वरक लेख-पोथी मे विचला 'ओ' नहि अछि ।

॥ दोबय योगिया छन्द ॥

ममता काँ परित्यागू, नहि तौँ दुर्गति आगू ॥
यावत मलिन वासना रहती[1], तावत सुख नहि पयबे ॥
शुद्ध-वासना-युक्त जखन मन, तखन अभय-पद जयबे ॥
रजो-रेत-संयोग गर्भ मे, इन्द्रजाल की भारी ।
सकल[2] अवयव सहित चैतन्यक, बाहर बड़ व्यवहारी ॥
भव-सन्ताप-हरण परमेश्वर, व्यापक तन मे वासा ।
अपना मे अपनहिँ अपनायब, जायब गति निस्त्रासा ॥
राज्य दार सुत आदि देह[3] हठ, किछु संयोग न रहते ॥
क्षिति आदिक संघात विलय मे, मृतक लोक जित कहते ॥
जनिकर जनम मरण नहि होइछ, निर्गुण[4] ब्रह्म कहै छी ।
छथि अपरोक्ष मनन करु निश्चय, जौँ भवमोक्ष चहै छी ॥
तिल मे तेल दुग्ध मे घृत सन, भूत भूत विज्ञाने ।
मन सौँ मथन करू[5] सुख पायब, विदित उपाय न आने ॥

॥ सोरठा ॥

लक्ष्मण जोड़ल हाथ, देव-देव करुणा-भवन ।
क्षमाशील-रघुनाथ, आत्मज्ञान-विवेक कहु ॥
तखन देव रघुराज, कहल सकल छल रहित तत ।
लक्ष्मण-मन सभ काज, बनल विवेकी रहथि नित ॥

॥ रूपमाला छन्द ॥

मिहिर सन गत-तिमिर, रघुवर सतत शून्य-निवास ।
[6]अन्यदोषाभीत कर धर[7] तट, असीत विलास ॥
सरस सारस सन सलक्ष्मण, राज श्रीद्विजराज ।
चिरवन-प्रियवास-वनचर, लसित[8] सतत समाज ॥

1 रहत (१,२), 2 पाठ तीनूमे ओ कवीश्वरक लेख-पोथीमे सेहो एहने अछि परन्तु एहिसँ छन्दोभंग होइछ । ई पद यदि सन्धि कएल 'सकलावयव' रहैत तँ उत्तम होइत । 3 देल (२,३), 4 निर्गुन (३), 5 करु (१,२), 6 वन्य (३), 7 वर (३), 8 ससित (३) ।

॥ चौपाइ ॥

मुनिगण बहुत विकल एक समय । लवणासुर सौँ अनुखन सभय॥
यमुनातीर मुनिक आवास । मुनिवृत्तिहु भे बाढ़ल त्रास ॥
भार्गव च्यवन चलल अगुआय । मुनि असंख्य लेल सङ्ग लगाय ॥
राघव-दर्शन कार्य्य प्रधान । रघुनन्दन कयलनि सन्मान ॥
बड़ स्वागत पुछलनि की काज । सभ मुनिजन आयल छी आज ॥
ब्राह्मण हमर सतत छथि देव । हुनकर टहल करब यश लेब ॥
सभ मुनि कृपा कयल अछि आइ । आज्ञा पाबि टहल मे जाइ ॥
हम छी ब्राह्मण-सभहिक भृत्य । करबे करब कहब जे कृत्य ॥
शुनि मुनि वचन कहय लगलाह । लवणासुरक कर्म्म अधलाह ॥
कृतयुग मध्य दैत्य मधु नाम । सुर-द्विजगणक भक्त सभठाम ॥
तनिकाँ देलनि शम्भु त्रिशूल । होयता भस्म अनलवत तूल ॥
रावण-अनुजा भार्य्या तनिक । कुम्भीनसी नाम छल जनिक ॥
तनि सौँ लवणासुर उत्पन्न । मुनि-हिंसक यज्ञादिक बन्न ॥
अयलहुँ शरण अशक्य[1] पड़ाय । प्रभु रघुनन्दन होउ सहाय ॥
ई सङ्कष्ट[2] हरत के आन । अयलहुँ शरण ताकि भगवान ॥

॥ दोहा ॥

कहलनि सत्य-प्रतिज्ञ प्रभु, मरक दुष्ट निर्भीक ।
नहि भय नहि भय सकल मुनि, लवणासुरकी थीक ॥

॥ जयकरी छन्द ॥

मुनिजन काँ प्रभु कयल विदाय । तखन कहल प्रभु शुनु सभ भाय॥
के मारत गय असुर प्रचण्ड । के धर समर तीर कोदण्ड ॥

॥ दोहा ॥

भरत राम महिपाल सौँ, प्रणत सुवचन उचार ।
हम मारब खल लवण काँ, प्रभु-आज्ञा अनुसार ॥

---

1 अशक्त (३), 2 सभ कष्ट (३) ।

॥ रूपमाला छन्द ॥

कहल तत शत्रुघ्न करयुग जोड़ि कें तहिठाम[1]।
नाथ लक्ष्मण कयल बहु बेर असुर सौं संग्राम ॥
भरत नन्दीग्राम मे कृलश नियम-संयमवान।
हमहिँ लवणासुरक हन्ता होयब हे भगवान ॥

॥ चौपाइ ॥

शुनि शत्रुघ्नक वचन गभीर[2]। समुचित कहय देव रघुवीर ॥
तनिकाँ लेल अङ्क आरोपि। देल दिव्य शर[3] रघुवर सोपि ॥
कहलनि यहिसौं शत्रु विनाश। करु शत्रुघ्न लाभ मन आश ॥
लक्ष्मण सौं सम्भार अनेक। मँगबाओल कयलनि अभिषेक ॥
राजा भेलहुँ अहाँ मथुराक। सकल मनोहर धर्म्म-धुराक ॥
लवणासुरक विनाश-उपाय। जखना घर सौं कानन जाय ॥
नाना जन्तु पकड़ि कें खाय। के नहि तकरा डरय डराय ॥
तखनहिँ हुनकर रोकब द्वारि। धनुषबाणधर[4] लेबनि मारि[5] ॥
शङ्कर देल शूल घर धयल। लवणासुर हिंसापथ[6] अयल ॥
जेहन रघूत्तम कहल उपाय। से शत्रुघ्न कयल विधि जाय ॥
आओत क्रुद्ध लड़त तनि मारि। मुनिजन-मनक कष्ट देब टारि ॥
ओ वन सुन्दर मधुवन नाम।ततहि करब अहँ[7] सुन्दर धाम ॥
जायत घोड़ा पाँच हजार। तकर अर्द्ध रथ सहित सबार ॥
षटशत वारण वर सम्पत्ति। आओत तीनि अयुत तत पत्ति ॥
भ्राता काँ लेल हृदय लगाय। आशिष दय कहु[8] कयल विदाय ॥
जेहन रीति कहल छल राम। तेहने कयल जाय संग्राम ॥
मधुसुत काँ मारल संग्राम। मथुरा जनपद कयलनि धाम ॥
सीता काँ जनमल सुत यमल। विधुमुख लोचन सौं जित कमल॥
मुनि-वनितागण सोहर गाब। हर्षक नोर नयन भरि आब ॥
तनिकर नामकरण मुनि कयल। कुश लव नाम क्रमहि सौं धयल॥

1 यहि (३), 2 गम्भीर (३), 3 सर (३), 4 वान (३), 5 बारि (३), 6 लय (३), 7 अहाँ (३), 8 प्रभु (३)।

सीता-बालक युगल विनीत । भेला मुनिजन सौँ उपनीत ।।
क्रम क्रम विद्या पढ़लनि ढेरि । हो अभ्यास[1] शुनथि एक बेरि ।।
सीता-तनय रूप-गुण-अयन । विधि सौँ कयलनि वेदाध्ययन ।।
सकल रामायण देल पढ़ाय । मुनि वाल्मीकि सुप्रीति बढ़ाय ।।
स्वर-सम्पन्न सुयुगल कुमार । तन्त्रीलययुत गाब उदार ।।
वन चलयित मुनि-जन जे शून । अति आश्चर्य्यं मनहि मन गून ।।
वैदेही-सुत युगल समान । त्रिभुवन कतहु शुनल नहि गान।।
मुनिजन शुनथि सहित अनुराग । समय समय गाबथि से राग ।।

।। **सोरठा** ।।

प्रथमहि भैरव राग, मालकोश हिण्डोल पुन ।
श्रवण-मनोहर लाग, दीपक श्री ओ मेघ षट ।।

।। **पादाकुल दोहा** ।।

सुस्वर सरस सराग मधुरतर, सालङ्कार प्रमाण ।
स्वर पद छन्द सुताल सुलय युत, युगलकुमर कर गान ।।

।। **चौपाइ** ।।

स ऋ ग म प ध नी ई स्वर सात । स्वर-प्रस्तार वदन अवदात ।।
उच्च निषाद तथा गान्धार । नीच ऋषभ धैवत उच्चार ।।
स्वरित स्वर हो यहि सौँ आन । कुश लव शिव सुगीति काँ जान ।।
षड्ज स्वर रट मत्त मयूर । चातक रटय ऋषभ स्वर पूर ।।
अजा उचार[2] करय गान्धार । मध्यम स्वर काँ क्रौञ्च उचार ।।
कोकिल पंचम स्वर कर गान । धैवत मण्डुक-वचन समान ।।
स्वर निषाद गर्ज्जित गजराज । राग कुशीलव-कण्ठसमाज ।।
हास्य श्रृङ्गार गीत शुभ बेरि । पञ्चम मध्यम स्वर काँ टेरि ।।
वीर रौद्र अद्भुत[3] प्रस्ताव । षड्ज ऋषभ स्वर काँ से गाब ।।
गीति करुणरस रीति विषाद । स्वर गान्धार प्रचार निषाद ।।
गीत विभत्स[4] भयानक जखन । धैवत स्वर[5] उच्चारक तखन ।।

1 आभ्यास (१) 2 उच्चार (३), 3 अदभुत (३), 4 वीभत्स (१,२), 5 खर (३) ।

एकइश गोट मूर्छना नाम । बाइश श्रुति सम्मति तेहिठाम ।।
अथवा श्रुति कह चौदह गोटि । चौदह गोटि मूर्छना कोटि ।।
रामायण कर कुश लव गान । हरिण हजार शुनथि दय कान ।।
नहि तालक न राग अवमान । कुश लव कुशल सकल मत जान।।
अथ एक समय राम महिपाल । अश्वमेध मख करथि विशाल ।।
विधि आरम्भ करय लगलाह । सकल निमन्त्रित मुनि चललाह ।।
कनकमयी सीता निर्म्माय । यज्ञ कयल जन देखय जाय ।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यक जाति । मन घन उत्सव चल दिन राति।।
मुनि वाल्मीकि कयल प्रस्थान । कुश लव शिष्य सङ्ग भगवान ।।
ऋषि बाटक लग जखन गेलाह । सुमुनि समाधि-विरत भेलाह ।।
कुश पुछलनि गुरु काँ तत जाय । ज्ञात सकल गुरु-सेवा पाय ।।
देही काँ संसृति सौँ बन्ध । अथवा मुक्ति-युक्ति निर्द्वन्ध ।।
कहल जाय गुरु हमरा आज । सेवक शिष्य अनन्य समाज ।।
मुनि वाल्मीकि कहय लगलाह । दिव्य समाधि सुखी जगलाह ।।
थिकथि चिदात्मा सतत अदेह । देह दृष्ट ई तनिकर गेह ।।
मन्त्री थिकथि तनिक अभिमान । अपनहिँ तनिकाँ कयल प्रधान ।।
तन-तादात्म्य[1] चलल विस्तार । दृढ़ सङ्कल्प निगड़ व्यवहार ।।
पुत्र दार गृह आदि जतेक । सभमे ममता बढ़ल अनेक ।।
कय सङ्कल्प करथि पुन शोच । संसृति नाना तरहक रोच ।।
उत्तम मध्यम अधम शरीर । सत्त्वरजस्तम[2] सभ मे फीर ।।
तमोवृद्धि पर गुण हो ह्रास । कृमिकीटादिक होथि प्रकाश ।।
सत्त्व[2]-रूप सङ्कल्प प्रधान । सतत परायण धर्म्मज्ञान ।।
बड़ साम्राज्य अदूर सुमोक्ष । विद्यमान सुख हो अपरोक्ष ।।
रजोरूप सङ्कल्प प्रभाव । सद्व्यवहार विशुद्ध स्वभाव ।।
पुत्र दार धन सम्पत्ति पाब । रजोगुणैक नृपति बनि आब ।।
त्रिविध[3] त्याग सङ्कल्प-विहीन । मन सौँ मनन न होयब दीन ।।
वर्ष सहस्र बहुत तप करब । सुख दुख चक्र सतत सञ्चरब ।।

तादातमा (१), 2 सत्व (१,२,३), 3 त्रिविधि (१) ।

रहथि पाँच मन ज्ञान ममेत । मति न विचेष्टा चलथि निकेत ।।
कहथि परम गति श्रुति-सिद्धान्त । तनिके नाम कहथि बुध शान्त ।।
जखन छुटत[1] सङ्कल्पक जाल । जीव ब्रह्मता लह तत्काल ।।
कुश लव कुशल रहब सभठाम । वृत्त सुषुप्त चित्त विश्राम ।।

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे पञ्चमोऽध्यायः[2] ।।

1 छुटल(१), 2 तीनूमे एतऽ छठम अध्याय अन्त कहल अछि ।

।। अथ षष्ठोऽध्यायः ।।

।। जयकरी छन्द ।।

काज न करब एक अगुताय । ई देल मुनि वाल्मीकि शिखाय ।।
रामचन्द्र बड़ गोट महराज । आयल छी अहँ तनिक समाज ।।
शुनता जखना[1] अहँ मुह गीति । बाढ़त तनिकाँ अहँ मे प्रीति ।।
अनतय गायब पड़तनि कान । होयता बड़ प्रसन्न भगवान ।।
शुनता सभामध्य मँगबाय । गायब गीत चरित-समुदाय ।।
ओ सन्तुष्ट देता धन ढेरि । ग्रहण न अहाँ करब तहि बेरि ।।
बाहर बाहर कुश-लव-गान । रामचन्द्र काँ पड़लनि कान ।।
मन दय शुनल तनिक प्रभु गान । त्यागल मन प्रवृत्ति सुख आन ।।
पाठ अपूर्व्व जाति भल छन्द । गेय-समन्वित कर आनन्द ।।
प्रभु-मन भेल शुनब हम गान । करब सदस--दश मे सन्मान ।।
अथ[2] प्रभु काँ कर्म्मान्तिर काज । सभा बजाओल राजसमाज ।।
मुनि पण्डित पटुतर प्राचीन । पौराणिक संशय सौँ हीन ।।
सकल-शास्त्र-वेत्ता जन अयल । निज जन सहित सभा प्रभु कयल ।।
कुश लव गायन काँ अनबाय । स्वागत-सहित विहित जे न्याय ।।
कुश लव छथि देखल तहिठाम । अनिमिष-लोचन भेला राम ।।
सभा परस्पर सभ जन बाज । गायन-तुल्य रूप महराज ।।
वल्कलि ज़टिल न रहितथि बाल । तौँ समतूल राम महिपाल ।।
राघव सौँ नहि बुझि पड़ आन । कथा करथि सभ कानहिँ कान ।।

।। सोरठा ।।

कुश लव कयलनि गान, मधुर मधुरतर शुद्धस्वर ।
शुन गान्धर्व्व[3] जे कान, साधु साधु कह सभ्य सभ।।
यहन शुनल नहि साम, सकल सभा मन-हरण धुनि।
कहल भरत काँ राम, देबक हिनकाँ अयुत धन ।।

1 ज़खन अहाँ (२, ३), 2 अव (३), 3 गन्धर्व (३) ।

॥ चौपाइ ॥

जखन सुवर्ण देबय लगलाह । कुश लव तखनहि कहि चललाह[1] ॥
हम वन बसी कन्द फल खाइ । धनसंग्रह सपनहुँ नहि जाइ ॥
ई कहि मुनि-सन्निधि संप्राप्त । रामचन्द्र-मन विस्मय व्याप्त ॥
बुझलनि वैदेहीक कुमार । पुरुष आन के यहन उदार ॥
कहलनि प्रभु शत्रुघ्न बुझाय । हिनकाँ सभ काँ लाउ बजाय ॥
जनिकर जनिक कहै छी नाम । सत्वर आबथु सभ यहिठाम ॥

॥ सबैया छन्द ॥

मारुत-पुत्र सुषेण विभीषण, अङ्गद वालमीकि[2] बजबाउ ।
सीता-सहित रहित दुर्ज्जन सौँ, वैदेही सौँ शपथ कराउ ॥
रामक उक्ति कहल सभजन काँ, कहलनि मुनि पुनि शुनि केँ नीक ।
प्रातहि शपथ करति महि-तनया, न्याय नृपति काँ उचिते थीक ॥

॥ पादाकुल दोहा ॥

नारी सभ काँ परमदेव पति, गति नहि तनिकाँ आन ।
मुनि-रघुवर-संवाद सकल जन, शुनलनि कानहिँ कान ॥

॥ चौपाइ ॥

कहलनि रघुवर काँ मुनिराज । करती सीता शपथ जे आज ॥
सकल शुभाशुभ जानथु लोक । देखथु आबि रोक नहि टोक ॥
मिथ्या जन अपवाद लगाब । पापक रुचि जनु मन निधि पाब॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यक जाति । देखय आयल शूद्र जमाति ॥
अयला ततय महर्षि अनेक । वानर-वृन्द सुभक्ति विवेक ॥
मुनि वाल्मीकि शीघ्र अयलाह । वैदेही काँ सङ्ग लयलाह ॥
चललि अधोमुखि मुनि चल आगु । गदगदकण्ठ[3] सती भय त्यागु ॥
लक्ष्मी सनि अयली मख ताहि । साधुवाद बाढ़ल धुनि जाहि ॥
सीता काँ वाल्मीकि सहाय । सती-शिरोमणि समुचित न्याय ॥
कहलनि मुनि वाल्मीकि विचारि । सती शिरोमणि सीता नारि ॥
त्यागल पर-अपवादक भीति । अहह रघूत्तम कयल अनीति ॥

1 चलताह (१), 2 वालमीकि (३), 3 गद्‌गद् (१) ।

हमरा आश्रम छलनि निवास । पति-व्रत-रत मन छलि निस्त्रास ॥
ई कुश लव छथि अहँक किशोर । शुनथि रघूत्तम बह दृग नोर ॥
यमल जात एक तरहक गात । जेहने अपनैँ हिनकर तात ॥
वरुणक हम छी दशम कुमार । शपथ करै छी वारंवार ॥
तप-फल हमरा आब न काज । जौँ दुष्टा सीता महराज ॥
शुनि मुनि-वचन कहल पुनि राम । दृढ़ प्रतीति हमरहु एहिठाम ॥
अपनेक वचन शुनल हम कान । एहि सौँ प्रत्यय अछि की आन॥
पूर्व्वंहुँ सीता लङ्का-देश । जनित प्रतीति अनल-परवेश ॥
साधुवाद सुरगण-मुख शून । निज घर आनू सीता पून ॥
क्षमा करब मुनि नृपता दोष । त्यागल सती-शिरोमणि रोष ॥
थिकथि कुशीलव हमरे तनय । कयल बहुत हम साहस अनय ॥
ब्रह्मा इन्द्र देवगण सकल । देखथि राम-चरित निर्व्विकल ॥
प्रजा सकल मन नव सुख-सृष्टि । त्यागल राम आज दुर्दृष्टि ॥

॥ सारवती छन्द ॥

आइलि-जानकि देवसभा, श्रीमति चम्पक हेमनिभा ।
आनत[1] वारिज-श्रीवदना, प्राञ्जलि भाष जगत्सदना ॥

॥ मिथिलासंङ्गीतानुसारि माली छन्द ॥

शुनु शुनु सकल सदस्य सत्यकरणी ।
शपथ करै छी आज रघुवर-घरणी ॥
मनसहुँ आनक चिन्तना नहि कयलहुँ ।
रघुवर-पति-आश सर्व्व-शोक-हरणी ॥
सत्य प्रतिव्रत जौँ तनय दुहु प्रभुहिक।
हमरा विवर देती माता देवी धरणी॥
खल-उपहास-तम-शमन उदित भेल ।
सज्जन-मानस-कञ्ज-बोध सत्य-तरणी॥

1 वर (३), 2 आनय (३) ।

॥ सबैया छन्द ॥

फणिपति-फणपर-सिंहासन-वर, तेहि ऊपर भूदेवि विराज।
धरणी-विवर उपर जन देखल, बड़ अद्‌भुत मन मानल काज ॥
पुत्रि पुत्रि कहि कहि सीता काँ, ओ लेल अङ्क अपन आरोपि।
गेलि पाताल[1] सहित फणिपतिसौँ, विवर मृतिकासौँ दय थोपि ॥

॥ चौपाइ ॥

कयल अमरगण सुमनक वृष्टि। उठि गेल महि सौँ सीता-सृष्टि ॥
सतीशिरोमणि एहनि के आन। धन्या कहि कहि कर जन ध्यान ॥
सीता-गुण-गण सब जन गाब। रघुनन्दन मन चिन्ता आब ॥
प्रभुक स्रवित लोचन मुख ताकि। बाँचथि राम सभहि मन चाँकि ॥
मारुतसुत स्वामिनि कहि कान। सभ सौँ हा हत[2] विधि बलवान ॥
रामचन्द्र मूर्छित खसलाह। शोक-समुद्र विवश भसलाह ॥
रघुवर निकट विकल जन आब। कनइत प्रभु प्रभु कहथि जगाब ॥
क्षण मे भय गेल आनक आन। जगलहु[3] अनमन सन[4] भगवान ॥
करुण कलाप अश्व-क्रतु छन्न। विहित यज्ञ विधि भय गेल बन्न ॥
ऋषि ब्राह्मणगण बहुत बुझाब। नहि प्रभु उचित शोक-प्रस्ताव ॥
विद्यमान छवि युगल-कुमार। कनइत छथि करु नयन उघार ॥
नहि उन्मीलित होयत आँखि। विश्व सवन गिरि शक के राखि ॥
प्रभु पुन सजल उघारल आँखि। हा वैदेही सति सति भाखि ॥
क्षमा कयल अहँ कत अपराध। अनुचित वचन कहल नहि आध ॥
अहँक वियोग सहब नहि आब। मुख सुख कानन शोकज दाव ॥
सहा न सहल अवज्ञा आज। देखल कर्म्म होइछ मन लाज ॥
छल अधीन मे दिव्य विभूति। ततहु चलल खल जन छल जूति ॥
वन्धुक वचन धयल नहि कान। राजा घर मे दैव प्रधान ॥
जे छल मखविधि शेष सुकाज। कयल पूर रघुवर महराज ॥
ऋत्विक मुनि काँ कयल विदाय। धनरत्नादि-तुष्ट समुदाय ॥

1 पताल (३), 2 होएत (३), 3 जगलह (३), 4 मन (३)।

॥ तिरहुति गीत ॥

कत हम कहब हुनक गुण[1], हा पुन पुन,
भय गेल हमर विषय शुन[2] ॥
खलक वचन शुनि वन देल, की मन भेल,
रमणि परशमणि कत गेल ॥
एत छति जौँ हम जनितहुँ, की मनितहुँ,
अरजि अरजि दुख कनितहुँ ॥
लगइत छल गृह गृहसन, विधि परसन,
दुर्लभ पुन हुनि दरशन ॥
गुणवति रमणि बिसरलनि, दुख पड़लनि,
उचित धरणि धनि हरलनि ॥
आब कि हम सुख पायब, कत जायब,
चिन्तित जनम गमायब ॥
करब न हम नृपतिक सुख, बड़ मन दुख,
कत विधु कत जानकि-मुख ॥
धरणी-गर्भ चलक बेरि, ई मुख हेरि,
कयल प्रणाम बहुत बेरि ॥
सुखित[3] सतत ओ रहतीह[4], दुख कहतीह[5],
सर्वसहा सनि सहतीह[6] ॥
हमहिँ वियोग-विकल मन, नहि सुख छन,
विफल बुझल मन जन धन[7] ॥
रहितहुँ सुखित मिलित कोक, की सुरलोक,
विधिक लिखल के[8] जन रोक ॥

॥ दोबय छन्द ॥

पामर सङ्ग बसि बसि हँसि हँसि, हम कयल उचित नहि कर्म्म रे ।
वैदेही सनि वनिता त्यागल, नहि क्षति गुनल अधर्म्म रे ॥

1 गुण कहब हुनक (३), 2 सुन (३), 3 सुखिति (१), 4 रहतीहि (३), 5 कहतीहि (३), 6 सहतीहि (३), 7 घन (३), 8 तीनूमे 'के'क पछाति 'जन'सँ पूर्व 'हे' अछि जाहिसँ छन्दोभंग होइत अछि। कवीश्वरक लेख-पोथीमे से नहि अछि ।

बड़ अपराध कयल हम हुनकर, नहि हो महि सौँ माँगि रे।
वैदेहीक वियोग जन्म भरि, रहल हृदय मे साँगि रे॥
हा कत तेहन वदन हम देखब[1], कतय हुनक सन आँखि रे।
कतय शुनब ओ मधुर वचन हम, धिक धिक जीवन राखि रे॥
कत गोट क्षमा क्षमा-तनयाकाँ, कयल[2] मनहुँ नहि कोप रे।
आब आब सद्भाव चित्त मे, भेल मनोरथ लोप रे॥

॥ **चौपाइ** ॥

कयलनि यज्ञक्रियाक समाप्त। सीता-शोक हृदय दुख व्याप्त॥
चलला विमन अपन पुर राम। कुश लव सङ्ग लेल तहिठाम॥
सुख-निवास मे सुख नहि आब। चिन्तित सतत विकल पछताब॥
अयला राम धाम गत-राम। कयलनि तनय सहित विसराम॥
पौषक शर[3] सन[4] रघुवर-सद्म। तन भय कर थर थर गतपद्म॥
रहथि रहस्य विषय परित्याग। ब्रह्मज्ञान ध्यान मन लाग॥
कौशल्या गेली तहिठाम। नारायण बुझि कयल प्रणाम॥
प्रभु परमेश्वर कहू कतेक। अपनैँ पुत्र पुण्य-अतिरेक॥
आयल[5] समय आयु-अवसान। कहल जाय भव-नाशन ज्ञान॥
शुनि दयालु कहलनि शुनु माय। पूर्व्व तीन पथ देल शुनाय॥
कर्म्म ज्ञान पुन भक्ति सुयोग। तेसर सुलभ शमन भव-रोग॥
हिंसा दम्भादिक उद्देश्य। भेद-दृष्टि छथि सेवक वेश॥
से तामस जन हमर कहाब। गुण-कृत हुनकर उचित स्वभाव॥
चाहथि फलभोगक अभिलाख[6]। धन यश काम सतत मन राख॥
प्रतिमादिक मे पूजन करथि। राजस भक्त नाम अनुसरथि॥
परमेश्वर मे अर्प्पित कर्म्म। कर्म्मक्षय हो पाबी शर्म्म॥
करथि भेदमति थिक कर्त्तव्य। सात्त्विक भक्त नाम धर्त्तव्य॥
यहि सौँ योग देब की आन। भक्ति-पथक छथि योग प्रधान॥

---

1 देखल (३), 2 धयल (३), 3 पाठ सर्वत्र अछि 'शर' परन्तु अर्थसँ ई 'सर' होएब उचित बूझि पड़ैत अछि। 4 सम (३), 5 आवल (३), 6 अभिलाख (१)।

॥ तिरहुति गीत ॥

कत हम कहब हुनक गुण[1], हा पुन पुन,
भय गेल हमर विषय शुन[2] ॥
खलक वचन शुनि वन देल, की मन भेल,
रमणि परशमणि कत गेल ॥
एत छति जौँ हम जनितहुँ, की मनितहुँ,
अरजि अरजि दुख कनितहुँ ॥
लगइत छल गृह गृहसन, विधि परसन,
दुर्लभ पुन हुनि दरशन ॥
गुणवति रमणि बिसरलनि, दुख पड़लनि,
उचित धरणि धनि हरलनि ॥
आब कि हम सुख पायब, कत जायब,
चिन्तित जनम गमायब ॥
करब न हम नृपतिक सुख, बड़ मन दुख,
कत विधु कत जानकि-मुख ॥
धरणी-गर्भ चलक बेरि, ई मुख हेरि,
कयल प्रणाम बहुत बेरि ॥
सुखित[3] सतत ओ रहतीह[4], दुख कहतीह[5],
सर्वसहा सनि सहतीह[6] ॥
हमहिँ वियोग-विकल मन, नहि सुख छन,
विफल बुझल मन जन धन[7] ॥
रहितहुँ सुखित मिलित कोक, की सुरलोक,
विधिक लिखल के[8] जन रोक ॥

॥ दोबय छन्द ॥

पामर सङ्ग बसि बसि हँसि हँसि, हम कयल उचित नहि कर्म्म रे ।
वैदेही सनि वनिता त्यागल, नहि क्षति गुनल अधर्म्म रे ॥

1 गुण कहब हुनक (३), 2 सुन (३), 3 सुखिति (१), 4 रहतीहि (३), 5 कहतीहि (३), 6 सहतीहि (३), 7 घन (३), 8 तीनूमे 'के'क पछाति 'जन'सँ पूवं 'हे' अछि जाहिसँ छन्दोभंग होइत अछि। कवीश्वरक लेख-पोथीमे से नहि अछि ।

बड़ अपराध कयल हम हुनकर, नहि हो महि सौँ माँगि रे ।
वैदेहीक वियोग जन्म भरि, रहल हृदय मे साँगि रे ॥
हा कत तेहन वदन हम देखब[1], कतय हुनक सन आँखि रे ।
कतय शुनब ओ मधुर वचन हम, धिक धिक जीवन राखि रे ॥
कत गोट क्षमा क्षमा-तनयाकाँ, कयल[2] मनहुँ नहि कोप रे ।
आब आब सद्भाव चित्त मे, भेल मनोरथ लोप रे ॥

॥ चौपाइ ॥

कयलनि यज्ञक्रियाक समाप्त । सीता-शोक हृदय दुख व्याप्त ॥
चलला विमन अपन पुर राम । कुश लव सङ्ग लेल तहिठाम ॥
सुख-निवास मे सुख नहि आब । चिन्तित सतत विकल पछताब ॥
अयला राम धाम गत-राम । कयलनि तनय सहित विसराम ॥
पौषक शर[3] सन[4] रघुवर-सद्म । तन भय कर थर थर गतपद्म ॥
रहथि रहस्य विषय परित्याग । ब्रह्मज्ञान ध्यान मन लाग ॥
कौशल्या गेली तहिठाम । नारायण बुझि कयल प्रणाम ॥
प्रभु परमेश्वर कहू कतेक । अपनैँ पुत्र पुण्य-अतिरेक ॥
आयल[5] समय आयु-अवसान । कहल जाय भव-नाशन ज्ञान ॥
शुनि दयालु कहलनि शुनु माय । पूर्व्व तीन पथ देल शुनाय ॥
कर्म्म ज्ञान पुन भक्ति सुयोग । तेसर सुलभ शमन भव-रोग ॥
हिंसा दम्भादिक उद्देश्य । भेद-दृष्टि छथि सेवक वेश ॥
से तामस जन हमर कहाब । गुण-कृत हुनकर उचित स्वभाव ॥
चाहथि फलभोगक अभिलाख[6] । धन यश काम सतत मन राख ॥
प्रतिमादिक मे पूजन करथि । राजस भक्त नाम अनुसरथि ॥
परमेश्वर मे अर्प्पित कर्म्म । कर्म्मक्षय हो पावी शर्म्म ॥
करथि भेदमति थिक कर्त्तव्य । सात्त्विक भक्त नाम धर्त्तव्य ॥
यहि सौँ योग देब की आन । भक्ति-पथक छथि योग प्रधान ॥

---

1 देखल (३), 2 धयल (३), 3 पाठ सर्वत्र अछि 'शर' परन्तु अर्थसँ ई 'सर' होएब उचित बूझि पड़ैत अछि । 4 सम (३), 5 आवल (३), 6 अभिलाख (१) ।

॥ तिरहुति गीत ॥

कत हम कहब हुनक गुण[1], हा पुन पुन,
भय गेल हमर विषय शुन[2] ॥
खलक वचन शुनि वन देल, की मन भेल,
रमणि परशमणि कत गेल ॥
एत छति जौँ हम जनितहुँ, की मनितहुँ,
अरजि अर्रजि दुख कनितहुँ ॥
लगइत छल गृह गृहसन, विधि परसन,
दुर्लभ पुन हुनि दरशन ॥
गुणवति रमणि बिसरलनि, दुख पड़लनि,
उचित धरणि धनि हरलनि ॥
आब कि हम सुख पायब, कत जायब,
चिन्तित जनम गमायब ॥
करब न हम नृपतिक सुख, बड़ मन दुख,
कत विधु कत जानकि-मुख ॥
धरणी-गर्भ चलक बेरि, ई मुख हेरि,
कयल प्रणाम बहुत बेरि ॥
सुखित[3] सतत ओ रहतीह[4], दुख कहतीह[5],
सर्वसहा सनि सहतीह[6] ॥
हमहिँ वियोग-विकल मन, नहि सुख छन,
विफल बुझल मन जन धन[7] ॥
रहितहुँ सुखित मिलित कोक, की सुरलोक,
विधिक लिखल के[8] जन रोक ॥

॥ दोबय छन्द ॥

पामर सङ्ग बसि बसि हँसि हँसि, हम कयल उचित नहि कर्म्म रे ।
वैदेही सनि वनिता त्यागल, नहि क्षति गुनल अधर्म्म रे ॥

---

1 गुण कहव हुनक (३), 2 सुन (३), 3 सुखिति (१), 4 रहतीहि (३), 5 कहतीहि (३), 6 सहतीहि (३), 7 घन (३), 8 तीनूमे 'के'क पछाति 'जन'सँ पूर्व 'हे' अछि जाहिसँ छन्दोभंग होइत अछि । कवीश्वरक लेख-पोथीमे से नहि अछि ।

बड़ अपराध कयल हम हुनकर, नहि हो महि सौँ माँगि रे।
वैदेहीक वियोग जन्म भरि, रहल हृदय मे साँगि रे॥
हा कत तेहन वदन हम देखब[1], कतय हुनक सन आँखि रे।
कतय शुनब ओ मधुर वचन हम, धिक धिक जीवन राखि रे॥
कत गोट क्षमा क्षमा-तनयाकाँ, कयल[2] मनहुँ नहि कोप रे।
आब आब सद्भाव चित्त मे, भेल मनोरथ लोप रे॥

॥ **चौपाइ** ॥

कयलनि यज्ञक्रियाक समाप्त। सीता-शोक हृदय दुख व्याप्त॥
चलला विमन अपन पुर राम। कुश लव सङ्ग लेल तहिठाम॥
सुख-निवास मे सुख नहि आब। चिन्तित सतत विकल पछताब॥
अयला राम धाम गत-राम। कयलनि तनय सहित विसराम॥
पौषक शर[3] सन[4] रघुवर-सद्म। तन भय कर थर थर गतपद्म॥
रहथि रहस्य विषय परित्याग। ब्रह्मज्ञान ध्यान मन लाग॥
कौशल्या गेली तहिठाम। नारायण बुझि कयल प्रणाम॥
प्रभु परमेश्वर कहू कतेक। अपनैँ पुत्र पुण्य-अतिरेक॥
आयल[5] समय आयु-अवसान। कहल जाय भव-नाशन ज्ञान॥
शुनि दयालु कहलनि शुनु माय। पूर्व्व तीन पथ देल शुनाय॥
कर्म्म ज्ञान पुन भक्ति सुयोग। तेसर सुलभ शमन भव-रोग॥
हिंसा दम्भादिक उद्देश्य। भेद-दृष्टि छथि सेवक वेश॥
से तामस जन हमर कहाब। गुण-कृत हुनकर उचित स्वभाव॥
चाहथि फलभोगक अभिलाख[6]। धन यश काम सतत मन राख॥
प्रतिमादिक मे पूजन करथि। राजस भक्त नाम अनुसरथि॥
परमेश्वर मे अर्प्पित कर्म्म। कर्म्मक्षय हो पाबी शर्म्म॥
करथि भेदमति थिक कर्त्तव्य। सात्त्विक भक्त नाम धर्त्तव्य॥
यहि सौँ योग देब की आन। भक्ति-पथक छथि योग प्रधान॥

---

1 देखल (३), 2 धयल (३), 3 पाठ सर्वत्र अछि 'शर' परन्तु अर्थसँ ई 'सर' होएब उचित बूझि पड़ैत अछि। 4 सम (३), 5 आवल (३), 6 अभिलाख (१)।

गुणातीत भय हमरहि पाब । सतत कामना-हीन स्वभाव ॥
कर्म्मयोग थिक परम प्रशस्त । हिंसा दोषादिक हो अस्त ॥

॥ हरिपद छन्द ॥

हम अनन्तगुण-आलय[1] मे जनि, मनोवृत्ति दृढ़ जाय ।
गुणगण[2] शुनि शुनि जनि सुरसरि-जल, सागर मध्य समाय॥
निर्गुण भक्ति योग-लक्ष्मण से, भक्ति अहेतु विचरथी ।
सालोक्यादिक मुक्तिहु काँ जे, देलहुँ ग्रहण न करथी ॥
दर्शन हमर कथन गुण पूजन, मति वन्दन[3] जन भक्त ।
सकल भूत मे हमर भावना, सङ्ग असक्त विरक्त ॥
सभहिक मान दीन-अनुकम्पा, मैत्री सौँ सभ अपनैँ ।
सय्यँम नियम शील सन्तोषित, सन्मर्य्यादा थपनैँ ॥
श्रवण करथि वेदान्त-सुवाक्यक, कीर्तन हमरा नामक ।
ऋजुता सौँ सतसङ्ग निरन्तर, त्याग अहम्मति-गामक ॥
हमरा धर्म्मक अनुरत गुणगण, श्रवण करथि नित कान ।
जेहन वायुवश गन्ध निजाश्रय, नासा-युग मे आन ॥
सकल भूत मे रहथि व्यवस्थित, आत्मा केवल जान ।
योगाभ्यास चित्त[4] निर्म्मल हो, अनुभव दृढ़ विज्ञान ॥
एहि सौँ आन सकल पूजादिक, बाहर बाहर जानब ।
क्रिया-जनित कत भेद द्रव्य सौँ, हमरे तोषण मानब ॥
तावत प्रतिमादिक पूजा मे, स्थिति कल्याण निमित्त ॥
यावत सकल एक आत्मा मे, भासित हो नहि चित्त ।
जनिकाँ भेदबुद्धि होइछ मन, मरणक तनिकहि त्रास ॥
हमरा एक-बुद्धि सौँ देखू, पूरत सभ मन-आश ॥
ईश्वर जीव भेद नहि मानब, भक्ति ज्ञान शुभ योग ।
दुइ योगहु मे एक ग्रहण करु, पायब नहि दुखभोग ॥
सकल हृदिस्थित जननी हमरहि, पुत्रभाव करु मन मे ।
कौशल्या कुशला सति कयलनि, पड़लि न भव-बन्धन मे ॥

1 आयल (३), 2 गणगण (३), 3 नन्दन (३), 4 नित्य (३) ।

॥ सोरठा ॥

शुनि शुनि तिनु जनि[1] माय, पाय दिव्य उपदेश काँ ।
तन तजि तनवर पाय, जाय स्वर्ग दशरथ मिललि ॥

इति चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥

1 जन (३) ।

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

अथ एक समय युधाजित नाम । आबि अयोध्या भरतक माम ॥
रघुनन्दन-आज्ञा काँ पाय । निजपुर लय गेल भरत लेआय ॥
महती सेना समर अभीति । गन्धर्व्वक नायक जन जीति ॥
नाम पुष्करावति जे धाम । पुष्कर भेला नृप तहिठाम ॥
तक्षशिलापुर मे पुन तक्ष । सुत दुहु नर-वर भरत समक्ष ॥
भरत कयल सुत-युग अभिषेक । बड़ धन धन्य पूर सविवेक ॥
अपने आबि अयोध्या भरत । रामचन्द्र-सेवा मे निरत ॥
पुन लक्ष्मण काँ कहलनि राम । पश्चिम देश करू संग्राम ॥
महामल्ल दुर्ज्जन जिति लेब । तनिक राज्य सुत दुनु काँ देब ॥
अङ्गद चित्रकेतु जनि नाम । उचित निवास देब दुइ ठाम ॥
कय अभिषेक शीघ्र पुनि आउ । हमरा छोड़ि अनत जनु जाउ ॥
जेहन रघूत्तम-आज्ञा-वचन । सत्वर लक्ष्मण कयल से रचन ॥
रघुनन्दन-पद-सेवा-निरत । बन्धु यहन दोसर के करत ॥
अथ एक समय राम महिपाल । पुर तापस बनि पहुँचल काल ॥
लक्ष्मण द्वारपाल तहिठाम । मुनि पुछलनि कत छथिनृप राम॥
हमर आगमन ततय शुनाउ । प्रभु-रुचि पाबि ततय लय जाउ ॥
शुनि लक्ष्मण गेला तहिठाम । छल छथि देव-देव जत राम ॥
दर्शनेच्छ[1] तापस एक द्वार । आयल छथि हो जेहन विचार ॥
हुनि मुनि काँ सादर लय आउ । वत्स ततय सत्वर अहँ जाउ ॥
तेज-पुञ्ज मुनि बनल विविक्त । अनलराशि उपमा घृत[2] सिक्त ॥

1 दर्शनेछ (१), 2 घृत (३) ।

॥ दोहा ॥

दीप्यमान निज तेज सौँ, ओ देखल रघुवीर ।
मधुर मधुर कहलनि ततय, आशिष-वचन गभीर ॥

॥ चौपाइ ॥

बड़ स्वागत पूजन-विधि सकल । रामचन्द्र पूछल निर्व्विकल ॥
रघुवर दिव्यासन-आसीन । मुनि काँ पूछल वचन छलहीन ॥
अपने अयलहुँ एतय यदर्थ । बुझि उद्यम हम करू तदर्थ ॥
ओ कहलनि शुनु रघुवर भूप । कानहिँ कहब एकान्ते चूप ॥
शुनथि न जन पुन देख न नयन । शुनल वचन रह मानस शयन ॥
जौँ जन तेहि अन्तर हठि अयत । अपनैँक हाथ मरण तनि हयत ॥
यहन प्रतिज्ञा करु प्रतिपाल । तखन कहब अभिमत महिपाल ॥
लक्ष्मण काँ कहलनि रघुनाथ । द्वार सज्ज रहु असि लय हाथ ॥
एको व्यक्ति नहि आबय पाब । सम्प्रति पत्रादिक नहि लाब ॥
हठ सौँ जे करता सञ्चरण । हमरहि कर सौँ तनिकर मरण ॥
तखन कहल[1] प्रभु अछि एकान्त । कहल जाय मुनि की वृत्तान्त ॥
रघुवर सौँ कहलनि सद्भाव । चलल जाय निज धामहिँ आब ॥
कालपुरुष हम तापस-रूप । अयलहुँ विधिक पठाओल भूप ॥
रण-दुर्ज्जय दशमौलिक मरण । धरणीभार कयल प्रभु हरण ॥
निज मर्य्यादा राखल जाय । विधिक कहल हम देल शुनाय[2] ॥
रघुनन्दन कयलनि स्वीकार । यदपि सकल छल निज व्यवहार ॥

॥ सोरठा ॥

दुर्व्वासा तहिकाल, कालक प्रेरित प्राप्त तहँ ।
के बुझ कोप विशाल, लक्ष्मण काँ कहलनि यहन ॥

॥ चौपाइ ॥

लक्ष्मण सत्वर नृपतट जाउ । रामभद्र[3] सौँ भेँट कराउ ॥
से पुन उत्तर देल शुनाय । क्षण भरि क्षमा कयल मुनि जाय ॥

---

1 कहब (३), 2 सुनाय (३), 3 रामचन्द्र (३) ।

रामचन्द्र सौँ कहु की काज । से सम्पन्न करब हम आज ॥
राजा कार्य्यान्तिर-आरूढ़ । के बुझ नृपतिक आशय गूढ़ ॥
केओ सम्प्रति नहि करय प्रवेश । श्रीरघुनन्दन नियम निदेश ॥
नृप-आज्ञाक करब नहि भङ्ग । के हो हठ सौँ अनल-पतङ्ग ॥
से शुनि मुनि काँ बाढ़ल कोप[1] ! काल करय न ककर मति-लोप ॥
हमर अवज्ञा नृपतिक द्वार । मुनिजन काँ थिक अधिक अभार ॥
जौँ नहि कहल करब ई काज । कतय महीपति कत ई राज ॥
परिजन-सहित भस्म कय देब । नृपतिक द्वार अनादर लेब ॥
शुनि मन लक्ष्मण कयल विचार । बड़ सङ्कष्ट पड़ल व्यवहार ॥
जौँ जायब छूटत ई लोक । कालक दण्ड ककर[2] बुत रोक ॥
नहि जायब तौँ निकट अनर्थ । कालक निकट यतन हो व्यर्थ ॥
एक हमर जौँ होयत नाश । रघुनन्दन रहता निस्त्रास ॥
प्रजालोक आनन्दित रहत । अपयश पाप हमर नहि कहत ॥
यहन विचारि[3] राम-नृप-वास । कयल प्रवेश कहल निस्त्रास ॥
सावधान प्रभु परमोदार । आयल छथि दुर्व्वासा द्वार ॥
काल विसर्ज्जन मुनिक प्रणाम । शुनितहिँ जाय कयल प्रभु राम ॥
कि करब टहल कहल मुनि जाय । मुनि-सत्कार गृही काँ न्याय ॥

॥ दोहा ॥

कहल उपासल छलहुँ हम, शुनु नृप वर्ष हजार ।
सिद्ध अन्न भोजन करब, मानल मुख्य विचार ॥

॥ चौपाइ ॥

कहयित कथा पाक सम्पन्न । भोजन कयल अमृत सन अन्न ॥
मुनि सन्तुष्ट गेला निज धाम । स्मरण कयल आज्ञा से राम ॥
चिन्ता दुःख कहल की जाय । हा हत हा हत लक्ष्मण भाय ॥
स्नेह प्रतिज्ञा दुख मन व्याप । विह्वल विकल रहथि चुपचाप ॥
से देखि लक्ष्मण जोड़ल हाथ । चिन्ता तेजल जाय रघुनाथ ॥
कालक गति के रोकय पार । तत्त्वविचार वृथा-संसार ॥

1 काप (३), 2 ककरा (३), 3 विचार(३) ।

प्रभुक निदेश वृथा भय जाय । घोर नरक हमरा तन पाय ॥
हमरा विषय नाथ जौँ प्रीति । पालन कयल जाय नृप-नीति ॥
हमर विचार उचित यहिठाम । पालन कयल जाय नहि साम ॥
करु निश्शङ्क हमर परित्याग । नीति नृपति काँ दोष न लाग ॥
लक्ष्मण-वचन शुनल रघुवीर । चिन्तातुर मानस नहि थीर ॥
सभ मन्त्री काँ लेल बजाय । गुरु वसिष्ठ काँ पूछल न्याय ॥
काल-यतीक व्यवस्था-सार । दुर्व्वासाक ततय सञ्चार ॥
अपन प्रतिज्ञा कथा समग्र । लक्ष्मण-प्रीति नीति मन व्यग्र ॥
शुनि प्रभु-वचन सचिव गुरु सकल । कहल विचारक वचन अविकल ॥
कयल धराक भार सभ हरण । जायत अपन धाम ई चरण ॥
धर्म्म-प्रतिज्ञा राखल जाय । लक्ष्मण त्याग सकल मत[1] न्याय ॥
शुनलनि अर्थ धर्म्मयुत सार । रामचन्द्र मन ठीक विचार ॥
लक्ष्मण काँ कहलनि प्रभु सैह । करु गय धर्म्म-व्यवस्था जैह ॥
परित्याग[2] बध एक समान । सज्जन काँ कह धर्म्म प्रधान ॥

॥ दोहा ॥

शुनि लक्ष्मण रघुनाथ-पद, कयलनि विनत प्रणाम ।
दुःख शोक सौँ भरल से, गेला सत्वर धाम ॥

॥ सोरठा ॥

से सरयूतट जाय, कयल आचमन शुद्ध-मन ।
दृढ़ आसन सम काय, नव द्वार संयमित कय ॥
मस्तक पवन चढ़ाय, ध्यान निरन्तर ध्येय-पद ।
देखि देव-समुदाय, सुमन-वृष्टि कय स्तुति करथि ॥
लक्ष्मण काँ निजधाम, शचीकान्त[3] लय जाय तहँ ।
विष्णु-अंश[4] अभिराम, जानि करथि पूजा तनिक ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डे सप्तमोऽध्यायः ॥

---

1 मन (३); 2 परित्यागव (३), 3 पाठ अछि सर्वत्र 'सचीकान्त' तरन्तु ई तालव्यादि उचित थीक । 4 वंश (३) ।

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ चौपाइ ॥

शुनु गिरिनन्दिनि कहल महेश । पालल रघुवर अपन निदेश ॥
लक्ष्मण-रहित[1] पड़य नहि चयन । जनु निर्झर झर पङ्कज-नयन ॥
गुरुमन्त्री कें कहलनि राम । होथु भरत भूपति एहिठाम ॥
बन्धु-वियोग सहल नहि जाय । आज मिलब हम लक्ष्मण भाय ॥
शुनितहिँ प्रजा विकल खस केहन । छिन्नमूल सौँ तरुवर जेहन ॥
मूर्छित खसल भरत उठि भाख । राज्यभार के माँथा राख ॥
हम नहि करब राज्य-सुख भोग । जन्म अनेकहु छुट नहि[2] रोग ॥
अपनैक चरण शरण मे रहब । स्वर्ग्ग मर्त्य मे दुःख न सहब ॥
कुश लव कुमरक करु अभिषेक । कलकौशल उत्तर सुविवेक ॥
शुनल प्रजाजन मन अति भीति । कहल वसिष्ठ राम सौँ नीति ॥
विकल प्रजाजन देखक थीक । सेवक सबहिक हो जे नीक ॥
शुनल वसिष्ठ कहल भगवान । राम कयल सभ जन सन्मान ॥
कनइत सभ जन जोड़ल हाथ । आशापूर करू रघुनाथ ॥
जाइक इच्छा[3] अछि जे ठाम । जायब सङ्गहि सभ से धाम ॥
पुत्र दार जन एक न त्यागि । नीतिधर्म्म पदयुग अनुरागि ॥
चलब सङ्ग कहलनि प्रभु बेश । जाइक इच्छा[3] अछि जे देश ॥
कुश लव कुमरक कय अभिषेक । विदा कयल प्रभु दिव्य-विवेक ॥
देलनि दिव्य रथ आठ हजार । वन्दि हजार विरुद उच्चार ॥
साठि हजार सैन्य रण-धीर । एक एक काँ देल रघुवीर ॥
बहुत वित्त युत जन सङ्ग जाय । कयल प्रणाम चलल दुनु भाय ॥

॥ दोहा ॥

बहुत दूत[4] शत्रुघ्न कें, चलल बजाबय काज ।
जाय कहल वृत्तान्त से, जे रघुवीर समाज ॥

---

1 हेतु (३), 2 महि (३), 3 इछा (१), 4 दूर (३)।

॥ चौपाइ ॥

कालपुरुष-आगमनक भीति । अत्रिपुत्र अयला जे रीति ॥
राम-प्रतिज्ञा बन्धु-वियोग । कुशी-लवक अभिषेक प्रयोग ॥
प्रजा सहित कहु की हम आन । करता राम महाप्रस्थान ॥
शुनि शत्रुघ्न व्यथित मन त्रास । धैर्य्य धयल नहि दुःख प्रकाश[1] ॥
पुत्र दुहूक कयल अभिषेक । मथुरा विदिश[2] नगर एक एक ॥
तनय सुवाहु प्रजा-सुख-हेतु । यूपकेतु पालक श्रुति-सेतु ॥
गेला अयोध्या अपनैँ शूर । रामचन्द्र देखि आशा पूर ॥
देखल रघुवर दिनकर-कान्त । मुनिजन-परिवृत सुन्दर शान्त ॥
कयल प्रणाम कहल कल जोड़ि । चलब नाथ नहि हमरा छोड़ि ॥
बालक दुहुजन[3] काँ दय राज । सावधान हम अयलहुँ आज ॥
राम बूझि भाइक दृढ़ भाव । कहल सज्ज रहु दुपहर आब ॥
दिन दुपहर भल दिन प्रस्थान । सभ सौँ कालपुरुष बलवान ॥
वानर भालु देव-अवतार । समर सहायक बल-विस्तार ॥
शुनि अयला सुग्रीवक सङ्ग । रामचन्द्र-पद-प्रीति अभङ्ग ॥
पहुँचलाह सत्वर हनुमान । प्रभु-आज्ञाकर वीर-प्रधान ॥
भक्त विभीषण पहुँचि सबेरि । एक हरिजन क्षण कयल न देरि ॥
सभ काँ सँग[4] चलइक मन थीर । जानल करुणाकर रघुवीर ॥
तहँ सुग्रीव कहल कर जोड़ि । रहब न हम प्रभु मैत्री तोड़ि ॥
अङ्गद काँ राजा हम कयल । अपनैँक सङ्ग अचल-मति धयल ॥
कहल विभीषण काँ रघुनाथ । सुखित रहब करइत गुण-गाथ ॥
राक्षस राज्य करू गय जाय । यावत धरा प्रजा सुख पाय ।
हमर शपथ थिक करु स्वीकार । हठ उत्तरक त्यागु व्यवहार ॥
शुनु शुनु मारुतसुत हनुमान । रहु चिरजीवि कहब की आन ॥
आज्ञा हमर यहन लिअ मानि । एक तरह नहि होयत हानि ॥
जाम्बवान द्वापर परयन्त । रहु गय अकथ कतो वृत्तान्त ॥
सभजन काँ कहलनि पुन राम । चलु चलु सभ जन हमरा धाम ॥

1 प्रकास (१) 2 विदेश (३), 3 दुइ (३), 4 संग (३) ।

प्रातहिँ कमल-नयन भगवान । गुरु वसिष्ठ काँ कहल विधान ।।
अग्निहोत्र चल[1] हमरहि सङ्ग । तुष्ट वसिष्ठ कयल से रङ्ग ।।
रघुवर धौताम्बर[2] कुशहस्त । महा-प्रयाणक बुद्धि प्रशस्त ।।
चलला छोड़ि नगर ओ धाम । कोटि कलाकर-छवि-जित राम ।।
कञ्ज-करा कमला चलु सङ्ग । सुषमा[3] सुषमा-सिन्धु-तरङ्ग ।।
अस्त्रशस्त्र सङ्ग चलु धनु तीर । आगु भेल भल धयल शरीर ।।
धयल शरीर वेद सभ गोट । चलल महामुनि महिमा मोट ।।
श्रुति-माता प्रणवक सँग भेलि । व्याहृति मिलि रघुवर मिलि गेलि।।
पुत्रदार परिवृत[4] चल सङ्ग । प्रजालोक मन प्रीति अभङ्ग ।।
अन्तःपुर अनुचर सह नारि । चलल भरत शत्रुघ्न विचारि ।।
चलला राम चलल सुरलोक । बाल वृद्ध ककरा के रोक।।
चारू वर्ण शरण भल पाव । शान्त तपस्वी जन अगुआब ।।
चल सुग्रीव सदल सदभाव । श्रीअनन्त रघुवर गुण गाब ।।
सभ आनन्द गमन[5]-उत्साह । विषय मनोरथ अस्त प्रवाह ।।
स्थावर जङ्गम रहल न एक । सभ विरक्त बनि शुद्ध विवेक ।।
शून्य अयोध्या जनसौँ तखन । पुरसौँ चलल महाप्रभु जखन ।।
सरयूनदी देखल रघुवीर । अति प्रसन्न मन धर्म-शरीर ।।
अयला ततय विरञ्चि महान । सकल देव ऋषि सिद्ध सुमान ।।
गगन विराजय कोटि विमान । अतिथि काज रवि-कोटि समान ।।
अतिशय सुरभि पवन बह बेश । सुमन-वृष्टि-संकुल से देश ।।
विद्याधर किन्नर गण गाब । नानायन्त्र मृदंग बजाब ।।
परश कयल सरयू-जल राम । पयरहि सर्वशक्ति गुणधाम ।।
विधि तहिठाम जोड़ि दुहु हाथ । कहल समक्ष ठाढ़ रघुनाथ ।।
अपने परब्रह्म परमेश । सदानन्द विभु विष्णु रमेश ।।
जनता-पालक जगन्निवास । कहब तथापि थिकहुँ हम दास ।।
भ्राता सहित मिलल जत जाय । आदि देह निज इच्छा[6] पाय ।।
अथवा निजरुचि उत्तम देह । करिय प्रवेश भक्त-पर-नेह ।।

---

1 चलु (३), 2 पीताम्बर (३), 3 सुखमा (३), 4 परिबूत (३), 5 मगन (३), 6 इछा(१) ।

देव-देव वर-पुरुष पुराण । चरण प्रणाम कोटि कल्याण ।।
विनत-विरञ्चि-वचन बुझि राम । देव सकल देखइत घनश्याम ।।
महा-प्रकाश सुलक्षण सहित । भेला चतुर्भुज चिन्ता-रहित ।।
लक्ष्मण शेष-नाग-तन सैह । धयल धराधर छल छथि जैह ।।
शङ्ख चक्र शोभा विस्तारि । भरत भेलाह तथा लवणारि ।।
सीता रमा[1] रमेश्वर राम । तन प्राचीन सुछवि गुणधाम ।।
बलाराति-गण विष्णु विलोक । परमेश्वर-गति जन के रोक ।।

।। गीतिका छन्द ।।

आनन्द लोचन नीर निर्झर, निरख निर्जर रूप से ।
जन यक्ष देव समक्ष लक्षण युक्त सुन्दर भूप से ।।
मुनि पितर प्रभृति प्रशंस गुण-गण तितल आनन्द-नोर सौँ।
तन पुलक-निचय उचार जय जन, देखु लोचन-कोर सौँ ।।

।। सोरठा ।।

देखल द्रुहिण-समाज, कहल दयामय समय शुभ ।
सेवक जन सभ आज, जयता हमरहि[2] सङ्ग सुख ।।
जत वानर जत भालु, जत राक्षस सेवक सुखद ।
कहलनि दीन-दयाल, हमर धाम सङ्गहिँ चलथि ।।

।। रूपमाला ।।

कहल विधि शुनु विष्णु गुण-निधि बुझल शासन नीक ।
नाम जपि भवसिन्धु तर नर, इ तौँ समुचित थीक ।।
वन्द्य वानर-वृन्द वर-गुण, भालु भाग्य-उदार ।।
भक्ति-महिमा देख सुर-गण, केहन करुणागार[3] ।।

।। दोहा ।।

अज्ञानहुँ जे करय नर, राम नाम उच्चार ।
अन्त पाब गति उत्तमा, घुरि न आब संसार ।।

---

1 राम (३) 2 हमरे (३), 3 करूणा (३) ।

॥ सोरठा ॥

परसथि सरयू-नीर, हृष्टपुष्ट नहि कष्ट मन ।
पाबथि प्रथम शरीर, जय जय धुनि कपि कोटि कर ॥

॥ चौपाइ ॥

दिनकर-देह विमल कपिराज । देखथि सुचरित देव-समाज ॥
सरयूजल नर कर असनान । दिव्यरूप बनि चढ़ल विमान ॥
स्वर्ग चलल भल कीट पतङ्ग । विष्णुक नगर अमर सन रङ्ग ॥
देखय तमासा अयला जैह । तनिकर गति भेल उत्तम सैह ॥
उत्तर-राम-चरित गिरिजेश । श्री गिरिजा सौँ कहलनि वेश ॥
पढ़थि शुनथि जे चरित उदार । उत्तम गति पाबथि संसार ॥
की कर यमकिङ्कर खर-रोष । हर गिरिजार घुवर सन्तोष ॥
रामायण पढ़ एको चरण । पातक-चय निश्चय हो हरण ॥
अति प्रसन्न रह उमा-महेश । एतय ओतए नहि रहय कलेश ॥
आदि-काव्य रामायण थीक । पढ़थि शुनथि जन रह निर्भीक ॥
विष्णुसदन पाबथि से अन्त । श्रद्धासहित पढ़थि जे सन्त ॥

इति श्री चन्द्रकवि-विरचिते मिथिला-भाषा रामायणे उत्तरकाण्डेऽष्टमोऽध्यायः ॥

॥ श्रीरामायण समाप्त ॥

॥ श्री रस्तु शुभमस्तु ॥